वंशभास्करमें

को

बुधसिंहचरित्र

जाकौं

श्रीमन्महाराजाधिराजमहाराबराजासाहि

बश्री१०८रामसिंहजूबहादुरजीसी,ऐस,आई,

सी,आई,ई,

की

आज्ञातें

कविसूर्यमल्लआवारविलासिनीह

एकविचण्डीदानात्मजमिश्रणने

ने सुललित

छन्दोंमें

बनायो

सोअबश्रीमन्महाराजाधिराज

हिजश्री१०८रघुवीरसिं

मूल्य १ नाणसन्ना

बिलाजिल्द्र.२॥

॥श्रीपरमेश्वरायनमः॥गीर्वाणभाषा
शालिनी॥ वन्देथाहंसाञ्जलिःप्रीतिपू
र्वंचण्डीदानंस्वीयवंशावतार्यम्।द्वैता
रण्यप्रस्फुरद्घोरदावंतीव्राद्वैतंपण्डिता ५
ब्धुनाथम्॥ १ ॥प्रायोमिश्रिताप्राकृता
भाषा॥दोहा॥जुगलबानमुनिइंदु १
१७५२ मितविक्रमअब्दविवेक।जरा
भीरुतिथिपोसबदिबुद्धसिंहअभिसे
क॥ २॥षट्पदी॥तीरथसलिलसम
स्तउचितनिजमस्तकसिंचियओषध
बिहितउपेतनिगममंत्रनपबित्रकिय
हवनवस्तुहबिरसनमध्यआज्यादिअक
हुत॥ध्रुवगुनगायकनबिबिधबंदी
नबिरुदकृत दियदानद्विजनभूसमसुरस
लखिसुरीतिसुरपतिलजिय बुंदिबजं

हतीजोप्रमानिचुंडाउतिउरपहितोबखा
नि॥ ८ ॥उम्मेदसिंहचोथोकुमारञ्रु
दीपसिंहबड्डोउदार॥तिमदीपकुमारि
दूजीकनीसुतियतीजीनोत्रितयीजलीसु
॥ ९ ॥पुनिचंद्रसिंहपंचमजुसोहित्र्म
पंचमरानीजनितजोहि॥कन्याबड्डीजुस
रजकुमारिचौथीरानीभवजोबिचारि॥१०
॥व्याहीजयसिंहहिंजनकबुद्धञ्रामेर
धीसहिंसबिधिसुद्ध॥दूजीकनीसुउमेद
भ्रातमरुपतिबिजयहिंदियमहमचात॥
११॥बुधञ्रनुजजोधकियच्यारिव्याहक
न्यादुवबिधिबसलहियलाह॥जयसिंह
रानकोञ्रनुजभीमजोभूपबनहडाकूंमसी
म॥ १२ ॥कन्यातदीयजालमकुमारिधव
जोधसिंहबामांगधारि॥ञ्रग्रजकेसंगहि

हिमृतच्यारि॥ १८ ॥ भावीसानुजभूपकी
व्याहप्रजादिकबत्त॥ बर्त्तमानपट्टराभधि
धिश्रबजानकुअनुरत्त॥ १९॥ पद्धतिका॥
इमलियउबुद्धपट्टाभिषेकथपिराज्यअं
गबसिक्कुकमएक॥ सितरोमगुच्छ हरि
दुदिससीसकनकातपत्रभूषितमहीस॥
२०॥ आवापतंत्रचिंतनउपेतसुभबलबि
दग्धधीसरवसमेत॥ षट्टुसंधियानबिग्रह
बिलासद्वैधासनआश्रयगुनप्रकास॥
२१॥ प्रभुमंत्रसक्तिउत्साहपूरसमचतुरुपा
यसामर्थ्यसूर॥ सबिचारब्यसनसप्तकनि
षेधिबानैतबानबिनलेतबेधि॥ २२॥ बि
धिच्यारिहेतिकोबिदबिनोदचतुरंगचक्क
साधनसमोद॥ जुतधर्मनीतिअरु सरजमा
यलोकानुरागनयरीतिलाय॥ २३॥ इत्या

दिराजपुत्रजोरजगिबुधसिंहबहियजनु
ष्ट्रनिलक्ष्यगि ॥ कुवबिदितकिन्निदिस
दिसनहालकक्ष्याकिबंकिञ्चरातिरकिबहन
नाक ॥ २५ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपू
स्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहच
रित्रेप्रथमो १ मयूखः ॥ छ ॥ छ ॥
॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ दो० ॥ उदयनैरजयसिंहनृपरानांअ
ध्यंबंस ॥ तासवासतनुजाचतुरमईइंदि
राअंस ॥ १ ॥ पज्झटी ॥ कुवमंजुसुतारा
नौनिकेतउपेदकुमारसुभगुनऊपेत ॥
वयरंचपंचहायनविधानसौंदर्य्यरूपगुन
गनसमान ॥ २ ॥ लखितातिभूपजयसिं
हआपउछाहकरणचिंतामवाप ॥ लखि
गुरविद्वबनसबनिहारिबिधिसहितक

नीव्याहनबिचारि॥ ३ ॥दियदूतदेस
देसनपठायजंघालचतुरमतिचउउपाय
॥मरुमालवडाहलशाल्वअंगटक्ककेरल
कुंतलमगधवंग॥ ४ ॥जालंधरलक्लिंग
कासमीरकर्णाटद्रविडमैथिलसुवीर॥
इत्यादिबिसयउत्तमअपारतिनमांहिंग
नपउयेसंचार॥ ५ ॥कहिहेरकुंवरममव
चनमानिजामातृवर्यपदयोग्यजानि॥भू
पालतथाभूपतिकुमारइनसूरराजगुनश्रु
तउदार॥ ६ ॥दसअब्दतावबयरूपदे
खिबरबरनरवबरिआनक्कबिसेखि॥अनि
रुद्धपद्दबुंदियसुथानबुद्धहिंसुनियलगुन
रूपवान॥ ७ ॥तासोंकुरूपगुनअधिकभू
पकोउहोयताहिहेरहुअनूप॥सुनिबानि
चलियदिसदिसनदूतखोजियअसेसनृप

कुलसपूत ॥ ८ ॥ कथितादिदेमलखि
नृपकुमारबुंदीपुरी कुचरचयच्चार ॥ लखि
प्रकृतिससम्प्रति सावधान बुधसिंह राज्यप
तिसंसमान ॥ ९ ॥ बुधधर्मनिपुन खुरली
लितोदहृदय हत्थिचढन सह बहसमोद ॥ र
नवीरदान उत्सव उदार लावण्यललितमा
रावतार ॥ १० ॥ क्रमबुद्धसिंह लखि बितजि
हैरसानंदयायेनृप उदयनेर ॥ सबकहिउदं
तप्रति दसदेसहुयसिंह कित्ति पुनि किय
लिसेस ॥ ११ ॥ कहिहमकुलरिवयजनप
दक्खिनेव बुंदीससमान अन्यनराक ॥ कुमरी
सललायकसएव तत्रैव रच्चहु संबंधदेस
॥ १२ ॥ बुंदींद्र कित्ति सबसों बिसेस कृमस
सुरवंशवनसुनि सुनि नरेस ॥ संबंध चिंति
तमहि बिचार आत्मीयपुरोहित कियलय

र॥ १३॥ संतोखराम नामासु बिप्रतिहिं कहियतत्र गंतव्यछिप्र॥ दियसगभर्म लगालिमढायसामजचतुष्कहयसतसुभाय ॥१४॥ बरबिबिधबस्त्ररत्ननसमाजभूषनादिचंद्रघुसृणादिसाज॥ इत्यादितिलकमंगलअसेस द्विजसंगदयेलखिकालदेस ॥१५॥श्रीकृष्णनामइकगणकराजसमधीतत्रिबिधज्योतिषसमाज॥ दाधीचजनमवजो द्विजेन दियसोकुपुरोहितसंगतेन ॥१६॥अरुकहियउभयतुमबुद्धिमानबुंदींद्रनिकटबिचरकुपयान॥ मिलिमारवकुआशिखअसमदीयसबिनयउदंतपुनिकहिसुकीय॥ १७ ॥सबबस्तुसमाजहयनहिसुबेरकरीतिलकनिवेदकुनालिकेरचीकारकरहिंजो तिलकबिप्रतोलखकु

लग्नलैनक्षिप्र ॥ १८ ॥ जोलग्नप्रथमआ
गामिल्होहु सोकारअनलिरिविदेहुसोइ ॥
यहसुनिद्विजबुंदियआजगामजाहिरकि
यआशिरवपदललाम ॥ १९ ॥ सुनिस
चिवद्विजागमसावधानसनमानियसाथ
नखानपान ॥ पुनिलदनुयस्नकतिपयबि
हायबुंदीद्वारचियमदबुद्धराय ॥ २० ॥
संतोखरामलियबुल्लितामदाधीचबङ्करि
श्रीकृष्णनाम ॥ तिनपूछिअनामयदिय
असीसक्षन्हबुंदियदेउबिमर्दईस ॥ २१ ॥
लहिमिसलबैठिकहिसबनसारबिधिसु
नहुसभासगापन बिचार ॥ चीतोरसोरजय
सिंहान तिनगेहलेहतनयासुजान ॥ २२
॥ बुंदियनरेसकहं यह बिबाहिसंबंधइस
नसीसोदचाहि ॥ तुरकानसिंधुबिच्जे

सरोजतिनगेहउचितसंबंधमोज॥२३॥
भटसचिवसबनसुनियहसुमंतहियफुल्ल
सिकह्योउचितहिउदंत॥लवजननलखेहे
उज्वललसातज्योंजननयहैचंडासिजा
त॥ २४॥स्वीकारसबहिजुल्लियसुजानि
मानसप्रपुल्लआल्हादमानि॥संतोखरा
मइमलहिसुबेरकरितिलकनिवेदियना
लिकेर॥२५॥बरबरियबकुरिनिजअनु
जजोधराणानुजकन्याकहिसुबोध॥दुव
बंधुनकरिसंबंधएमदेरव्योमुहूर्त्तसुभप्र
थितप्रेम॥२६ ॥संवतद्विपंचरुषिइंदु
१७५२मानमेचकतपस्सनवमीविधान
॥गणकनबिचारिसुभलग्नतत्थइकमा
सअवधिअंतरसमत्थ॥ २७ ॥करिसी
खतबहिद्विजबरसुजानकोटाप्रतिसत्नर

कियप्रयान ॥ चहुवानराम कोटा धिईस भु
जमेटि बंदितन दियअसीस ॥ २८ ॥ अरु
कहिल गुरुअनो हतरान तुमरो सुलमान्यों सं
प्रदान ॥ चहुवानराम यहसुनिसनाह ॥ उ
पयम अप्रमत्यकी नो उछाह ॥ २९ ॥ इमबुंदि
यकोट बरि उमंगसंतोरनराम गयउदय दुंग
॥ सब कहिउ दंतसांगो पअंगउ पयमबि
धाननिज हित अभंग ॥ ३० ॥ बुधसिंहबि
वेदा अलिउदार बिकांतसुभग पटुसब प्र
कार ॥ तिनसों सचिउ पयमनी तिबो धहुव
अनुजबरियणुनि भीमजोध ॥ ३१ ॥ अब
चहुव्याह बिधिजो अजातचौहैं निरूप
सुरसजि बरात ॥ उत कुव बिबाह उपक्र
न ए मह्त सजिबरात परिकरसप्रेम ॥ ३२ ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचंपूस्वरूपे दक्षिण

यनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रेद्वितीयोमयू
खः॥ २ ॥ष॰प॰॥ घमघमंकिघुग्घरनबा
जिचल्लियमगझंपत। धमधमंकिनउब्बलि
षजतअतलादिनकंपत। तमलसंकि
गजराजसुंडिसुरपथफटकारत। झमझमं
किभूखननरोचिरविरोचिबिगारत। बाने
तबिहितखुर्लोरमतकमतबीरबिरुदन
बलिय। बुधसिंहबिदितबुंदियनृपतिसजि
सानुजदुल्लहचलिय॥ १ ॥दो॰॥ बुल्लिबि
दितकबिबिबुधलियभूसुरचारनभट्ट। धनु
नहुत्यागउमंगधरि। अनाहूतचलिथट्ट॥
२ ॥सेवकजातिसिरोहिया। भारव्योभट्टप्र
ताप॥उदयनैरममहेयनृप। लैनचलहु
सँगआप॥ ३ ॥ष॰प॰॥ कबिप्रतापयह
कबहुपत्तकुलभट्टउदैपुर। राजसिंहजँहरा

बजिमृदंगदुंदुभियबिजयमर्द्दलपणवान
क॥ हेसाबृंहितहाकभद्दजिमतजितभया
नक। रसरंगरागगायकरच्चतभनलबंदिभो
गावलिय। बुधसिंहबिद्दिलबुंदियनृपतिवि
रविनीतसंक्रमिबलिय॥ ८ ॥फुट्टिफुट्टि
हयखुरनगिरिनपाखानगरदमिलि। छुट्टि
छुट्टिछितिसंधिसिथिलभोगीससीसझिलि
। तुट्टितुट्टितरुडुगमपृथुलपद्धतिहुवभ्भर॥
कुट्टिकुट्टिआघातपटहरवपूरिदिग्गंतर। थि
त्थरियकथानकदिसबिदिसबिदितवत्तहु
वनरनरन। बुधसिंहजातबुंदियनृपतिउद
यनैरउपयमकरन॥ ९ ॥गजनफरकिबहु
रक्कथरकिआकासबिराजत। धरकिछोनि
बमथूनझरकिभद्दवघनसाजत। बरकिद
ड्डभूदारलरकिफनमालनागइन॥ धरकि

धरकिनिसदीहदरकिछत्तियआरातिन।
गहगहनसंकअंतरउपजिकरतमंत्रसचि
वनकालिक।हहुनहमेसकुलरीतियहस
मितिव्याहउच्छाहहक॥ १० ॥गरदभू
कअच्छादियसरदघनकुमुदनाथजिम।
गगनतोमतोमरनप्रदरखुरवनकलापतिम
।मज्जतमज्जतबनजंतुकटकअंतरथकिहु
हुत॥बिदितबीरबानैतबिसिखबिकिरन
बहुहुत।इमपिक्खिअप्पबिरुदनसुनतम
नतदैनसंकनाबिभव।संचरतसरनिसारुज
समुखरटतनकोकजलेबरव॥ ११ ॥उलटि
उलटिदलओटपवनसज्जतप्रत्यागम।सु
गमहरोलनसलिलहुगमचंदोलनकद्दम
।ध्रुवासपासइहिंचासआसमबासप्रपन्नी॥
हेलुनहासकुलासबाससेतुनजसबन्नी।

कोटाधिनाथसुतभीमकी मिलिबरातसंग
द्दिहलिय। प्रतिगामगामबंधतकलसधा
मधाममंगलछ्लिय॥ १४ ॥ भागधेयभुम्मि
यननिकरलैलैप्रतापनत। आतजोरिकु
जलियनातसिरभेटनिवेदत। कहतनाथ
किंकरनपूतकरिआदरधानी॥ मग्घरदे
हुमिलानमानिस्वीकृतमहिमानी। लखि
भीतकडुंकदुल्लहललितभानुहारिय। रत
मुदित। मनबढिउछाहआवरिमनुजहोत
निछावरिपरसहित॥ १५ ॥ दो०॥ कूमबरा
तसुखसरानिचलि। पहुंचिउदैपुरपास॥
नटनगानपातुरिनिकर। बिधिबिधिरचिय
बिलास॥ १६ ॥ ष०प०॥ पृथुलदारुपहुरि
यरंगचित्रितफुलवारिन। कंधनरनसंक्रम
[illegible]

झोकरागनझुम्मावत॥चंडातकचलचरनघे
रघुम्मरघुम्मावत।श्रुतिजातितालबादनकु
सलमोहतरसगीतनसुमति।अवरोहग्राम
मध्यमउद्धतग्रामप्रथमआरोहगति॥ १७॥
घुरिनेउरघंटिकनझनकिसिंजितमहनाव
त।बिधिक्रमतालबहायबहुरिप्रतिलोमब
नावत।मिलिसंक्रमपुच्छननमोदनिकसं
तनादमय।कंदुकआहिगतिक्रमनचहल
उलरतअलापचय।आनद्धतंत्रबादनउदि
तमादनमुदितनरेसमन।बसिबासआय
सायकबिरमनिजनिवासगावननटन॥
१८॥दो०॥कोटाकीहुंबरातबनि।मि
लिमथसंक्रमिसंग॥पहुंचेदुल्लहउदयपु
र।महलसहउदितउमंग॥ १९॥पद्धतिः
॥अतिमोदयानमनमुकवआइबिधिजुत

जामातालियबधाइ ॥दलउतरिदुंगढिग
सरसमीप।दुतिबढिगत्र्प्रारतीकलसदीप
॥ २० ॥पधराइसमयमहलनसप्रेम।तनि
सुचितउचितउपहारतेम॥बुधसिंहहिंच्या
हियरक्किवरीति।बिंदाबयबाल्यसुभ्रथि
तप्रीति॥ २१ ॥परिनायसोदरकुजोधनाम
पुनिभीमपितृव्यकरामजाम॥मक्कुकम्मबंस
भटबंधुबर्ग।परिनाइनामसालमकुसर्ग॥
२२॥इत्यादिरानबरबरित्र्पनेक।त्र्प्रट्ठरु
सतव्याहलग्गएक॥बुंदींद्रसंगबिधिउचि
तसाजिदुल्लहसभोत्तरसतबिराजि॥२३॥
दो॰॥छप्पनदेसनरेसकी।तनयात्र्प्राहीरा
न॥प्रेमरीतित्र्प्रंतरप्रिया।सोहीरहियमुजा
न॥ २४॥ ताकेउरसुंदरसुता।कुवउम्मेद
कुमारि॥सोदुलहनिबामांग बिधिबुद्धसिं

हस्त्रबधारि ॥ २५ ॥ ष॰ प॰ ॥ कुमरीजेठेकुम
रनाम उम्मेदसिंह जिहिं। प्रियरानियसुत
जानिरान लगि राज दैन तिहिं। सत्रुसल्लनंदि
नियन अग्गज गुन गाई ॥ भावसिंह भगिनी सु
बुद्धरान हिं परिनाई। अमरेस कुमर ताके उदर
प्रथम भयो कुलपट्टपति। तुरकान तेज संगति
प्रबल घर घर हिंदुन अनयरति ॥ २६ ॥ लखि
यह अमर कुमार राज लघु बंधव पावत। कु
पित अनय उपज्जिय जनक उप्पर भुव जावत
। ह्वानि धरम हिंदून लाय घर घर दूमल मौं ॥ अ
गुरुके सासित अनय थिर दुग्ग गृह पट्टय भौं। अ
मरेस उदित आहव रचन बल बिसेस धनवि
सुकठिन। यह सो चिन्ताय मातुल निलय बुंदि
य गढ तिहिं मंत्र रचिन ॥ २७ ॥ यह सो उम्म
दि राज देत अनर्ह नृप हैन। तीन लक्ख बत

बदम्मगाय निद्दहिमातुलसन। अरकुमार अ
मेरस आय बेधमपुर ओसरि॥ राउत अनुप
मसिंहपग्ग पलटि रुधीसरवकरि। बस्वसी
सच्यारि चामर बिरचि संगर उचित अनीक
सजि। पुर उदय जाय घेरिय प्रबल ह्रुंहित्ति ह
षानिनदबजि॥ २८ ॥ सुसुनिरानजय
सिंहपुत्रलघुसहित पलायो। किल्लाकुंभि
लमेरु बसिरु वहकाल बितायो। सुतहल्ला
लखिसत्य मातगंगा सकोपमन॥ खेटक
खग्ग उचाय आय ठड्डी गृहतोरन। पठई क
हि अनुपमसिंहपँहँ तुमभटबरधारतधर
म। समुझावहु कुलनय बिनयसन जो चोंडा
घरतुमजनम॥ २९ ॥ यहसुनि अनुपमसिं
हसुमिरि निजपुब पितामह। अधम मिल्यो
चलबुद्धि अबसु बदल्यो डर दुस्सह। साजि

अपनौं सत्थ समुख प्रतिभट क्वैधायो॥ चो
सर चलत उदय नैर लुट्टन नहिं पायो। समुजा
य कुमर अप्प मेसकहँ तुल्य सुभट एकत्र जुरि
। कुलधरम सथ्थ मिसु तजनक कैं सुनय सास्मकि
न्नो बहुरि॥ ३०॥ दो०॥ रहैं तरवत जयसिं
ह नृप। लौलौं अप्पर हिं अप्पि॥ राजसमुद्र त
डागतट। राजनगर गढ़ थप्पि॥ ३१॥ इम
गंगापहिलेसमय। पुरच्यप तिब्रत पाय॥ मे
दिपु अनुपम सिंहभट। लियस्वपुत्र समुझाय
॥ ३२॥ गंगा सम गंगा कही। सुधरम सतिय
सुजान॥ और बम सम कैसैं कहौं। अनई अ
प्पर अमान॥ ३३॥ लहि प्रसंग कछु
यह कहौं। चोडा कीनय बन्न॥ जाहि सुमि
रि अनुपम भयो। गंगा बच अनुरत्त॥ ३४॥
ष०प०॥ इक्क समय चीतोर रानल स्वपति

खेतलसुत। तरुनकुमर इक तास नाम चौं
डानयजयजुत। नृपरनमलरट्ठोर गेह तन
यामंडोवर॥ चौंडासौं संबंध करन आयेलख
कग्गर। सुनि पत्र रानलखपति कहिय तरु
ननकौं हेरत जागत। यह जनक बैन सुनि सु
निकुमर कियमन लिहिं ब्याहन बिरत॥३५॥
कहि चौंडा कर जोरि सुनहु मरु बर सुज्ञाता।
ब्याह पिताको रचहु वहै कन्या मम माता। य
ह सुनि मरु बासीन कह्यो लिखि देहु सु अप्प
कर॥ रट्ठोरनको भागिनेय चीतोर पट्ट पर। य
ह सुनत लिखित निज हत्थ करि मरु बासिन
सौंप्यो कुमर। लखपति हु रान है मंद मति ब्या
हि लइय वह बुड्ढबर॥ ३६॥ कछु दिनन के
अंतगर भरट्ठौरि ग्रहन किय। समय अंत सुत
जनमि नाम मुक्कल बिप्रन दिय। लखपति

क्षज तिल दिनन काल कंठीरव मास्यो ॥ चौं
डा सौं रट्ठोरि रहि पीहर बल धास्यो । बुलवाय
ता तारन मल्ल सुनि जोध भ्रात चीतोर गढ़ । ति
न हत्थ द्वार कुंचिय अरपि किल्ला करिय अपं
च दढ़ ॥ ३७ ॥ नारि बुद्धि रट्ठोरि सुज्झि नहि
णारिग पल्ला पल्ल । तब सुरवर नमल कहिय त
जैं चौंडा न वय यह थल । यह सुनि चौंडा रान
जुन्ति निकस्यो भीसम धुर ॥ मुलक छोरि मेवा
र गयो मालव मंडूपुर । मारव नदाव लग्यो त
बहि जोधा रनमल्ले मंत्र जपि । करि भागिनेय
सुक्कल कलन थिर रहि लैन चीतोर थपि ॥ ३८ ॥
इक्क रान अनुचारि यत नेह मंड्यो जोधा सम ।
इक दिन आसव पान जोध बुल्यो मति विभ्र
म । सुक्कल कों अब मारि दुग्ग दल देस कोस
लि ॥ इक्क [illegible]

रि॥ यहबत्तडारिदासियदईमुकुलकीमा
ताश्रवन। सुनिसोच्चितबहिरदुवारिकौंचौं
डाआयउचिंतमन॥ ३९ ॥पत्रमंडिप्र
च्छन्नदूतमंडुवपठवायो। सुनिचौंडासजि
सेनअक्कूरजनोगढआयो। करिहल्लारादि
कोटधस्यो बीराधिबीरबल॥ कुमरजोध
भजिकढिगमारिलिन्नोनृपरनमल। मुकु
लहिंपट्टगद्दियअपिरहितटस्थजगज
सलियउ। हिंदवानबत्तधारकुह्रदयकर
कुजेमचौंडाकियउ॥ ४० ॥ दो॰॥ बहुचौं
डाकरिचिंतमनअनुणमधरमबिचारि॥कि
योसामसुतजनककैं। निजपुरछूटनिवा
रि॥ ४१॥ रानअनयमनठानिकैं। राजदे
नलगिजाहि। ताकोबरसोदरसमा। बु
न्दनेससहिंब्याहि॥ ४२॥ तीजीरानीकी

सुता। भीमहिं दइय बिचारि ॥ भ्रात भीमकी नंदनी जोधसिंह अवधारि॥ ४३ ॥ मुक्क महरसालम अरथ। सुभटसुता परिनाय॥ बहुरि सीर खंडेरन दई। सबहिन मोद सुनाय॥ ४४ ॥ जुल्लहडेरन आय किय। बिहित निल्य सु बिहाय॥ गोरन असन निमंत्र कों। रहे रान मग जोय॥ ४५ ॥ रान केफ संडल बहुत। आत आत अलसाय॥ गोरन दिवस अतीत कै। समय निसीथ सु आय॥ ४६ ॥ छ· प·॥ सु पहुरान जयसिंह मद्दिमा द्दकसरा गमन। भंगि अरक भुल्लैं सु प्रमित हुव बीस पहीमन। प्रिय रानिय हप्पनिय मौन पग धारि नित्यमल। असन अप्प अद्दर हिं फेर खट रितु हिमंबफल। इमप नमातुल्ल। नियअरक दसमी निस ससिके

उदय। चहुवानसिविरसीसोदचलिमानु
हारिगोरनसमय॥ ४७ ॥ मिलिउपेतस
नमानरावरानाँ अनंदरजि। चढिगयंदच
हुवानस्वसुरमहलनप्रथानसजि। परिक
रसहपरिपंतिप्रसनकिन्नो अधिराजन॥
अतिसुखदेरन आयसयलमंडियप्रमोद
सन। जयसिंहरानतीजेदिवसजनकदोस
मेटनजहर। परतापभट्टडेरानप्रतिमुदित
आयमंडियमहर॥ ४८ ॥ दो०॥ आगैंरा
नाँराजसौं। रुट्ठोभट्टप्रताप॥ अबजय
सिंहप्रसन्नकिय। आयपटालयआप॥
४९ ॥ इतिश्री वंशभास्करेमहाचंपूस्व
रूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहच
रित्रेतृतीयो ३ मयूख:॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ष. प.॥ दिनचउत्थदीवानबुल्लिरघुप
तियपुरोहित। उच्चारनआनंदभट्टपर
तापहुडुकिल। च्यारिलकववनिजचलनद
सरवज्जूरसंगदिय॥ हयबरइक्कहजारदो
यदससमल्लेदंतिय। सिरुपावउच्चद्वादसस
हंसकातिदिधिभूस्वनसंगकिय। मंगनन
भागयनपतिमनहुंदैनत्यागइमहुकमदि
य॥ १॥ दिनपंचमहुवनृपनसजियचीतो
रसमागम। पिक्ख्योदुग्गसुप्रथितसमरजुं
हंडुवअकबरसम। पुत्तिमदिनकरिगोरि
फागकोतुकविक्खापर॥ होरियउच्छवहा
निबहुरिआयेपत्तनबर। आतित्यागउफ
लसुनिसुनिसुजसहरखिरानजयसिंह
लिय। बिधिउचितपुज्जिबरबरनि हलिर
हिरसहुंदियसिरुदिय॥ २॥ चलिब

रातप्रतिपंथभीमकरजोरिभ्रातधुर। कोट
प्रतिकियसिक्खअप्पआयउबुंदीपुर। दि
यमिलानसबसेनजैतसागरतडागतट॥
दइवजोगनिससमयअग्गिलग्गियडेरन
पट। सरसेतुमध्यगृहपिहितइकभजिरुत
त्थबरबरनिरहि। हुवधारह्समडेरनसहि
तमनुजतुरंगहुकछुकदहि॥ ३ ॥ इहिदा
रुनउतपातदानसतदोयसाबिधिदिय। सु
हुसमयनिजनगरद्वारउत्तरप्रबेसकिय।
पुरजनमंगलपुब्बबिबिधउच्छाहबधारे॥
हट्टाचत्वरचोकसउधप्राकारसिंगारे। दिवि
निगमसाधिबरबरनियमनीराजितरहग
मनकिय। कछुदिननअंततजनकनेसकेचर
नआयफरमानदिय॥ ४ ॥ दिल्लियप
तिअवरंगतपतइकछत्रतीनदिस। दक्खि

नद्दहुन काज चढ़ि गअति बल अप्रतीवरि
स। पहिलैंरैवा धार नाम निज नगर बसायो
अकुल धरस रहित त्य कछु क अरि अमल उ
ठायो ॥ हजारि समस्त हिंदुव तुरक जो नअ्प
वरहिंसमुझल्यो। तुरकान तहस्जाल मज
हरलो पिलहरका हुनरुल्यो॥ ५॥ दो०॥
काबल रखबा झाल बसि। सुनि अनिकहज
रूर॥ अफसेवन अंतर समुझि बुल्लिय बुद्ध
हजूर॥ ६॥ अहदीत बअवरंग के अतिज
लहुं किय आय॥ सिर धरि साहन बंदगी चल
कहो हित चाय॥ ७॥ जाय समुख फर
मानकैं करि सलाम लियझेलि॥ उमड्योच
लन अपंन अब। देत हुकम को पेलि॥ ८॥
सुनि कुमार परिकरसबहि। मिलि इकंत
किय मंत। स्वामि बाल सेवा कठिन। आलो

चहुमतिअंत॥ ९ ॥ इहिंअंतरअवरंग
सुत। जेठोआलमसाह॥ बंदीगृहतैंकढि
चल्यो। चिंतिआगराचाह॥ १० ॥ पद्धति
का ॥ कुवपुत्रपंचअवरंगधाम। सुलतानमु
हुम्मदप्रथमजाम॥ सुतदूजोआलमसाह
एह। सुततीजोआजमपितुसनेह॥ ११ ॥
सुतचोथोअकबरनामधार। कुवकामबख्श
सपंचमकुमार॥ जेठसुतहैमनकरिउदास।
बंदीगृहडारेबिसमबास॥ १२ ॥ सुलतान
मुहुम्मदमरियतत्थ। आलमबच्योसुआ
युहिसमत्थ॥ याकेसुपुत्रकुवप्रथमच्यारि।
आयेंबयजुब्बनकैदडारि॥ १३ ॥ कैदहि
मैंपायेपलितकेस। अपमानितदीनकुसों
बिसेस॥ बरसावधिपावैंदगलइक्क। परि
हुसहदहैंजुकारुलिक्क॥ १४ ॥ नहिंबाप

नन्द्यानन हि प्रसन्न दृष्ट। जूकान जनितस
स्थित अरिष्ट ॥ इक समय दुक्ख अरजीक
राय। जो मह रन यो मिलि दगल जाय॥ २५॥
अवरंग हुकम पठयो अनेह। उलटा करिया
रहु दगल एह ॥ इक समय मिल्यो सरदा नि
सारि। तिहिं छेदन छुरिका हित उचारि॥
२६॥ सुनि कहियसाह भरि कोपभार। सि
रसौंह फोर हु नाहि हथ्यार॥ इमकुपित सा
ह सुतसरिस आहि। इक समय सभासों कहि
य चाहि॥ २७॥ जो मिलहिं हमारे हुकम
आज। तो पावहि अाजम साहराज॥ जो
मिलहिं तुद्दा के हुकम पाय। लहिहैं तो आ
लम साह आय॥ २८॥ सुनत हि इम आ
जम कहिय एह। बंदीगृह वासी मोहि देहु
॥ यह सुनत साह हिय सद्दिबिखाद। कोपारु

नआजमप्रतिजगाद॥ १९ ॥सुतज्येष्ठ
ममायसधरलसीस।वहकैदीअरुतुमतख
तईस॥यहकहिबुलायआलमउदास।नि
कस्योतजिकारागृहनिवास॥ २० ॥करिगु
सलबपनमंजुलकराय।अतिदिव्यबसन
धरि आमआय॥लखिसाहछिप्रहि
यसोंलपेटि।भुजदुवगहिलीनोंभुजनभेटि
॥ २१॥ चिरकालकंठगदगदबढात।दुव
घाँहुवअश्रुनअधिकपात॥तहँदियउरी
फिअवरंगसाह।अकबरपुरसूबाजुतउछा
ह॥ २२॥बारहहजारमनसुबलिखाय।
दियसीखआगराहितबढाय॥लहिसीख
चलनमनकरिबिचार।कुलचढिगसाहआ
लमकुमार॥ २३॥रेवाउलंघिअतिदल
अमान।पुरआयअवंतीदियमिलान॥

अप्पनौं अप्पवंतिसहआपधारि। कछुकामपीर
अपर्नेनउचारि॥ २४ ॥ कुलकैदजोगवह्र
हियसेस। अबकारिबआयपूरनसुदेस॥ रेवा
तटदिबसुबिबिधनाम। क्रमिमगगअग्ग
रापुरजगाम॥ २५ ॥ नृपबिष्णुसिंहअप्पसे
रनाथ। निजबंससुभटहरिसिंहसाथ॥ अप्प
बंसकुलसोलहिजरूर। कुवआयसाह
आलमहजूर॥ २६ ॥ दो० ॥ अप्पनौंइकअप्प
बंसको। सीसममीपबिचारि॥ बिष्णुसिंह
नृपसौंकुकम। कुबमारनजटवारि॥ २७ ॥
बिष्णुसिंहनृपसुभटनिज। लियहरिसिंह
बुलाय॥ कियउबिदाजटवारिपर। संगरसे
नसेनपठाय॥ २८ ॥ प०प० ॥ हरियसिंहक
हलाहजायजटवारिबिंटिलिय। बहुजह
नसिरकाहिरवानिलयबहुनप्रबिष्टकिय।

वहलंबापुरनाथबंसरवंगारसंगसजि॥से
वनआलमसाहआयकूरमनरेसरजि। है
दलमिलानजमुनापुलिनसंचरिअसस
लामकरि। हरिसिंहमहिलठड्डुमिसलरचि
अंजलिआन्याबधरि॥ २९ ॥ दो॰ ॥ हरिसिं
हहिंआलमदयो। रीझिखिलतहयराय॥
कूरमपतिकेकथनकरि। जहकदनहित
लाय॥ ३०॥ इमआलमकाढकेदमन।
अकबरपुरद्रुतआय॥ कूरमनिजताबीन
करि। बासरकछुकबिहाय॥ ३१ ॥ यहउ
दंतभटसन्धिवसुनि। नृपहिंअलपबयजा
नि॥ अरुदक्खिनअवरंगको। सेवनकूरम
मानि॥ ३२ ॥ आलमप्रतिपुरआगरा। पठ
ईअरजलिखाय॥ लेहुहमहिंकहिसाह
सों। निजसेवनमनलाय॥ ३३॥ इतिश्री

बाहनथप्पि॥ दयेतिन्हग्रामपटागजबा
जि।दयोभुजभारबिचारबिराजि॥ ९ ॥
सजीतबबुद्दबलापतिसेन।दियैंभटतारक
अप्पहिजेन॥रहेनिजआलयसोदरजोध
।चल्योदलहोलप्रभंजनरोध॥ १० ॥रबु
लेउडिकुंभिनकंधनिसान।तिरोहितकैर
बिरेणुबितान॥हरोलनहाकनकीबनछो
ह।बडेगजखैंचतलंगरलोह॥ ११ ॥रहीफु
किपीतपताकनपंति।मरातबमाहियभा
सिगभंति॥अकब्बरपुत्रदयोलहिकाज।
बज्योवहराजतदुंदुभिराज॥ १२ ॥मलंग
तफांदतुरंगनजूह।चलेउडिनोबतिनारकु
रूह॥चल्योदरकूंचनयौंचकुवान।दयेम
थुरापुरजायमिलान॥ १३ ॥लईसनइक्क
सअष्टकगाय।समानहिहाटरुहूनमिलाय

॥ बिधीरितयौं बहुधा करि दिन्न । अकब्बर प
त्तन आय प्रपन्न ॥ २४ ॥ मिले कम आलम
साह हजूर । कियो सनमान कह्यो हित पूर ॥
रह्यौ हम साह कथा अवंतिय जेन । रह्यो तुमरो ह
मसौं हक लेन ॥ २५ ॥ करौं पलटा हमहूं तस म
त । लहो हमहूं अजिरि द्दिन ब्बात । करो सुनि
यौं अरजी नरनाह । भली करिहै सब ज्यान पना
ह ॥ २६ ॥ परस्पर प्रीति उभै सनमान । रहे इम
हूंस अनेक चकुवान । उहां दिन बित्तत के अव
रंग । सुनी सुत आलम कित्ति अभंग ॥ २७ ॥
हुते बिच सोर सुन्यो मुलतान । बढे सिख लु
पत साहन आन ॥ तबैं सुत आलम कों जव
नेस । दई मुलतान सम्हारि सुपेस ॥ २८ ॥
यहै सुनि आयस आलम साह । सजे दल हिं
दुव मिच्छ सिपाह ॥ भयो बिधि सौं चतुरंग

भयान। गयेदरकूंचधरामुलतान॥ १९॥
कुबिग्रहमेंटिरच्योनयराज। भजेसिखतित्तिरज्यौंजुरबाज॥ दयैकरिदेसप्रजादुखदंद। रहैंइमआलमतत्थअनंद॥ २०॥ रचैंदुवभूपनसोंअतिप्रीति। सबेदलकोंसुखआदरनीति॥ करैंदिनइक्कनदीजलकेलि। चलेचढिनावप्रवाहनपेलि॥ २१॥ रजूदुवभूपतिसेवनलार। सजैंजलकुक्कुटबंधिसिकार॥ कहीतँहँकूरमसोंसुलतान। करोइमसोंदुहितानिजब्याह॥ २२॥ कहीतबकूरमयोंकरजोरि। कनैंदुहिताजबहोयबहोरि॥ सुताइकआहिसुतोकरिनेम। दईदुधसिंहहिंपुब्बकप्रेम॥ २३॥ कहीबुधसिंहहिंआलमतत्त। करोतुमसोंइनब्याहनबत्त॥ कहीतबबुंदियरावसहास। कहीइनजोसु

भईकथतास ॥ २४ ॥ यहैसुनिजंपिगआ
लमसाह । ततोहमहीकरिहैंतवब्याह ॥ क
रीसुनियोंबुधसिंहसलाम । कह्योनिजआ
असहेसिरकाम ॥ २५ ॥ यहैसकचोवनस
त्रह १७५४ साल । नईकथब्याहबनीबसिका
ल ॥ भईवय द्वादसहायनबुद्ध । सजैंखुरली
नयसाधनसुद्ध ॥ २६ ॥ दयोलखिबुद्धहिं
बीरसिपाह । परग्गान टोंकसुआलमसाह ॥
कहीतबयोंकरिबुद्धसलाम । लह्योपुरटोंक
लह्योसमनाम ॥ २७ ॥ परंतुकह्योहमरो
हककेस । ततोकरियेपुरपहनिषेस ॥ गईय
हपट्टनिपूरबकाल । बढ्योजबजङ्गनबैरक
राल ॥ २८ ॥ सुनीअवरंगहुखूनपुकार । कि
योसुतआजमकोसुलत्यार ॥ दयेसँगबुद्धिथ
तैंअनिरुद्ध । बन्योंसमयोगुनगोरिम्रबुद्ध ॥

२९ ॥ रहेतिहिँकारनदेदिनगेह। नकाबलयें
पहुँचेतियनेह॥ भईतुरसीइहिँकारनआय।
समासरबेदरुसत्रह १७४५पाय॥ ३० ॥ल
ईलबपट्टनिसाहउतारि। दईनृपरामहिँकाम
बिचारि॥ छुटीलबकीअबसेवनपाय। दई
इलआयससाहमँगाय॥ ३१॥ जम्योंनिजदें
कपरग्गनराज। लज्योमहँहँदीपुरइक्कअकाज
॥लरेमहँहँदीपुरकेकछवाह। तजीसुरतानषि
नातिनराह॥ ३२॥ भईमहँदीपुरतोपनभा
र। लयेंसबजीतिकियोगदछार॥ रमूरूपदें
कजिलाकरपाय। रहेंमुलतानसुछंदियरा
य॥ ३३॥ दो॰॥ कुंदभूपनकों बरसइक्का ग
योरहतमुलतान॥ सेवतआलमसाहकों।
इमकूरमचकुवान॥ ३४ ॥ इतिश्रीवंशभा
स्करेमहाचंपूस्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौ

बुधसिंहचरित्रे पंचमो ५ मयूखः ॥ ७ ॥
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
दो० ॥ इक्कनबाब अमीरखाँ । अग्रगैं कहि अवरंग ॥ थप्पोदै भुजभार निज । सूबा काबुल संग ॥ १ ॥ तोटकम् ॥ इतनैं वह खान अमीर मर्‍यो । अवरंग यहै सुनि सोक पर्‍यो ॥ कहि साह अमीर रह्यो जितनैं हम मोगल है अब कुक्कस नैं ॥ २०२ ॥ लहि काबुल साह यहै समयो । उत दिल्लिय राजसुदक्खिलयो ॥ तब साह हिये तस थान बसी । धर काबुल आलम कौं नखसी ॥ ३ ॥ इन हू मुलतान जमाय जिला । लियकाबुल काम कमान खिला ॥ रूतुसार हजार दनक्षमये । सरिता सपि पद्धति पंक्य ये ॥ ४ ॥ सरबान तुरंगम ७५५ इक्क सला । सुत साह चल्यो इसमास अमा ॥ अतिआ

खभेरिन के गरजैं। पबिपात कि पब्बय दैदरजैं ॥ ५ ॥ खुलि दण्ड पताकन पंति लसी। रसना जनु कालिय की निकसी ॥ बढ़ि कोरन फौज हलोल चली। बहु जंग उछाह हिसे पाह बली ॥ ६ ॥ चहु वानर कृप्पम संग चलैं। बर बीर पठान रुलैं ॥ मन मैं बल मोद रजू नमैं। उरमात सदा गति पैलन मैं ॥ ७ ॥ धनु पंहि सेटक खग्ग कसैं। बपु हान हियें तन मानव सैं ॥ इम हिंदुव मिन्छ चलेरन कौं। छवि निंदत भद्दव के घनकौं ॥ ८ ॥ सननं किय प्रोघन लब्हैं। हननं किय हींस हिमीस दहैं ॥ खननं किय कोच करी करकैं। फननं किय नाग फटा लरकैं ॥ ९ ॥ गननं किय गौल घराय मकैं। छननं किय नेउर है झमकैं ॥ रुननं किय पक्खर भार मिरैं। खननं किय नाल लनक्ख मिरैं

रिवैं ॥ १० ॥ ठननंकियकुंभिनघंटघसैं। भननंकियभेरियद्दूरहसैं॥ बजिश्चारबश्चार चकूहचली। बहुभाँतिश्चनीकरमैंखुरली॥ ॥ ११ ॥ भटकेकनिभागनद्यावञ्चरैं। कमनै तबिहंगनबेधकरैं॥ रुपटायतुरंगनबाहल सैं। श्चसिसम्गउदग्गकितेदिरसैं॥ १२ ॥ भट केकबंदूकनलच्छयलहैं। बहुवारकटारगहा निवहैं॥ करटीननवीनघटाबहुधा। बरही लश्चनीलश्चकासमुधा॥ १३ ॥ खुरलालन खेहवितानजुरयो। नदतालनपंकिलनीर पुरयो॥ कुलसेइमकोबलकीधरपैं। दलश्चा लमकेजयसंगरपैं॥ १४ ॥ ष० प० ॥ श्चटक सरितउल्लंघिकटकश्चालमबढिश्चायो। का तलपतिप्रतिपत्रप्रथमलिखवायपठायो। भरतहिखाँनउमीरछिन्नतुमतकतनिहारयो॥

॥ दिल्लियथाँनाँखंडिअमलअप्पनउपचा
र्‍यो। अबछोरिपहुमिअवरंगकीकरनजो
रिलग्गहुचरन। दिल्लीससेनजानहुडुसह
इक्कइक्कलक्खनलरन॥ ५५ ॥ काबल
पतिदलबंधिसमयबलखानसोथिमति
रहिअप्पुननिजगेहसेनपठयोआलमप्र
ति। आयसेलअतिबेगमिरलतुरकनम
नबड्डे॥ लटालधुअभिधानअद्रिमांटा
रुकिठड्डे। इतउमंगिसाहआलमचमू सी
मासंगरसज्जहुव। तिनदिननभालदिल्ली
सकैबिधिमंडोजयपत्तधुव॥ ५६ ॥ इत
तोपनजुरिपंतिइक्कतोपनउत्तरकैं। इत
परिमितआहारइक्कलक्कारउतचक्कैं। इत
लाखनबहुरंगउतसुअयुतलिक्करंगी॥
इतबलबुद्धिअपारउतसुबपुजोरअभंगी।

दिल्लियसुहागइतभारपरिउतगरलगीग
ज्जनिय। दुवदलनजुद्धजालमजुरिगपरि
गरोरमातकिपविय॥ १७ ॥ गिरिनच्चूरहय
खुरनमग्गउब्बटधरपद्दर। खुंदिकमठखुण्प
रियउरगफनमालथरत्थर। दिक्पालनउर
संककंकगिद्धन परब्भैं गहकिचिल्लगोमायु
भारभैरुन्नगनभज्जैं। दुवदलनबीरबत्थ
नविलगिमनहुमित्रचिरकालमिलि। बि
चिच्चारिहेतिउडुतावसमथारनधारमहार
झिलि॥ १८ ॥ बजिआयुधरनरीठफूटिह
नपलछुट्टैं। कवचरंडअसिकरकितर।
किअंत्रावलितुट्टैं। सरनसोकसननंकिपर
तझरिदंडपताकन॥ झुकतबीरघनघायम
नहुँघामरमदछाकन। इमबिरचिमुक्कआ
युधकलहअबलअमुक्कगाहिछोरिहय। कारि

हल्लदुदलगिरिसिरचढि । जुरिजुरिजंपत जयतिजय ॥ १९ ॥ दो॰ ॥ बुंदियपति आमैरपति । दुहुहय असवार ॥ आलमग जआरुहिरह्यो । उत्तरिअवरअपार ॥ २० ॥ उतइततैं नाहिं चढिसके । त्तउततैं नाहिंक म्म ॥ इक्कपहरवह गिरिरह्यो । बाजीगरको दम्म ॥ २१ ॥ ष॰प॰ ॥ तबदुवदिसतजिह यनचढिगगिरि सिरवरमहाभट । कहिकरी मरबतुरकहोतहरिहरहिंदुनरट । बुद्धनृपति कोबंधुराजसिंहहकुलजायो ॥ नामसुअनु पमसिंहतबाहिंमधुसुबनचलायो । दससस हँससेननिजसंगकरिनृपपिल्ल्योगिरिबि कटपर । मिलिबत्थलुत्थिकटिकटिपरतम नहुबिबंधवबंटिघर ॥ २२ ॥ दो॰ ॥ बुं दियदलआमैरदल । पल्लयचढिगिरिसाय

॥ कलहमिरेभटकाबली। उततैंबढिअप्रति
काय॥ २३ ॥ छप्प०॥ पहरइक्कदिनसेस
बहुरिआलमदलपिल्ल्यो। दुदिसछोहछकि
लोहवीरबत्थनबलढिल्ल्यो। उडतफुट्टिना
गोदयंत्रजावकसमलोहित॥ धपिधावत
बिनुमत्थहोतअच्छरिगनमोहित। बाहु
लसिररुकंकटकटतफटतमुंडभेजनभर
कि। खिलखिलतभि तजुग्गिनिजटिय
किलकिलातकालियकरकि॥ २४ ॥ घ
टियदोयदिनरहतजोरदिल्लियदलजि
त्यो। कल्योकटककाबलियबिसमप्रल
यानलबित्यो। गोपीनाथवतंसपरयोअ
नुपमजधुनंदन। माधवहरगुमानदोयह
ढहनिदुज्जन। इत्यादिबहुतआलमचमूं
पल्लयपरकटिकटिपरिय। करितत्थबहुरि

अप्पनअमलकाबलदलहनिबिजयी
य॥ २५॥इमआलमलहिबिजयसीम
काबलकरिपद्दर। बिधसिंहबुधसिंह
सहितरहितहँबहुबच्छर।सुरिसुतको
जयसुजससाहअवरंगसुखकिन्नौं॥ना
मबहादुरसाहरीझिआलमकँहँदिन्नौ।
इमजीतिबहादुरसाहबहरमिकाबल
सूबारह्यो।चहवानबुद्धिरुरमइनहुप्रेम
परसपरनिब्बह्यो॥२६॥खटरुपंचहय
इक्क१७५६सालआगमसकबिक्रम।रु
किजुबनकछुरुलकबुद्धभूपतिबयउत्तम
।बुंदियतेंबुलवायअप्पअंतहपुरलिन्नौ
॥साहबहादुरसंगजंगजित्तनजसकिन्नौ
।मुलतानसतासगपनमयोतबतैंनृपअ
मेरपति।बुधसिंहहिंतुमंडतबिनयगिन

तसिंहजामातगति ॥ २७ ॥ दो० ॥ खर
वकबंधसुतकृ यह । ब्याह्योपूरबकाल ॥
संततितिकि कैभयो । ढुंढाहरधरपाल
॥ २८ ॥ पुत्रप्रसवपुत्रियप्रकटि । नामसु
अमरकुमारि ॥ जयसिंहसुदूजेप्रसवती
जेविजयविचारि ॥ २९ ॥ कन्याअरुपहि
पकुमर । अंतरहायन तीन ॥ नृपआयसदो
ऊरहत । पुरआमेरप्रवीन ॥ ३० ॥ विजय
सिंहलघुपुत्रअरु । कछुपातुरिगनसंग ॥
इमकाबलआमेरप्रति । रहतबुद्धरसरंग ॥
३१ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूकेउत्तरायणे
दक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रेष
ष्ठोमयूख: ॥ ६ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥
॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ॥
प्र०प० ॥ प्रीतिखसुरजामातसाल ॥ मिप

मंडतअति। गृहबिधिहुवअवनीसजात
आवतडेरनप्रति। कूरमपतिकेसंगपानआ
सवनृपलग्गो॥ नत्तनबादनगानमानता
नमनपग्गो। जिनदिननपातसाहनस
भाजातनसायुधइक्कजन। लेजातसबहि
केवलफलकबिनुबुंदियहिंदुवजवन॥ १
॥अग्गैंअकबरबेररावसुरजनयहरक्खी।
कसिकटारइहिंहेतुरहैंबुधसिंहसमक्खी।
बसुसायकहयइंदु १७५८ जेठग्रीरवमरजर
त्तो॥ साहबहादुरधामआमअवसरनृपप
त्तो। जवनिकाद्वारलंघेजुगलतींजे द्वारस
मीपभुव। पहुंचतनरेससुबुधसिं प्रतिजवन
इक्कभटभेरहुव॥ २ ॥वहैजवनआ... र्षि
साहआलमकोकिंकर। सहसाबिरनप्रसं
गबक्योअप्रियकुबादपर। रानिकुबैनसंभ

रियकुणिमारीयकत्तारिय॥ कालखंजहि
यत्तकिय श्रथप पहुंची श्रनियारिय। रीठ
कबिदारिनिकसीतुवतमनहुं बिज्जुमानि
कनमत। कैतियसहीयपरकीयकोबाता
यनकरजावरत॥ ३ ॥ पटबेगुकप्रांका
रश्रश्रुतहत्थनचतुरायत। सालफेरसंसु
दितदिवतोरनबनिसायत। कलबिछाति
कुंकुमियनीरजलजंत्रननच्चैं॥ उडिउसीर
श्रामोदरागगायकबहुरच्चैं। सोहतघुला
बसालियमहकिज्जंद्रविमवसोहतश्रजब।
दिल्लीसप्रुवनजहंथितप्रुदिततहंनृपथ
हडारियराजब॥ ४ ॥ जहंजमीनजोज
ननसेनसंकुलिनहिंसुज्झत। तीनसहंस
तुरक्कारपरिथिचोकियबाहिबुज्झत। सहं
सतोपसाथलजालचहुंदिसजंजीरित॥

रुंडनकेतुरुपेटपौंनक्कंदतपथपीरित। अस
वारअहोनिसपंचसतप्रतितोरनजामिकर
हिग। बुंदियनरेसबुधसिंहकीलंहअकुपिथ
पदिसबहिग॥ ५ ॥चूकचूकचहुंकोद
कूककड्डतकटारपरि। बहतभीरुचलढिंच
लगिरततुरकानगरबगरि। मारिजवनकुम
रावचुवतमहिसधकिठ्ठो॥ साहबहादुर
संकगंजिचाहतरनगड्डो। सुतसाहहिंतुभा
खीसबनआनिअरजउप्परअरज। कुणप
हिसदोसआलमकह्योगुनहआपिहेरिय
गरंज॥ ६ ॥ दोहा॥ कहिआलमसाग
सहन्यो। नहिबुंदियपतिदोस॥ रद्दलक
इलाहीकुबचसुनि। कौनहिंगतरोस॥
७॥ गीर्व्वाणभाषा॥ इन्द्रवज्रा॥ और
ङ्गिरेवम्प्रविचार्य्यकृत्यंबुन्दीन्द्रमाहूय

सम्मक्षमास्तु ।। आम्नायलीलाऽनुजनिंत्रि
गीषुर्दिल्लीमरम्भूपभुजेबबन्ध ।। ८ ।। शा
लिनी ।। भोजाचारं रत्नसेवान्तथैवन्दिल्ली
शत्रं शत्रुशल्यञ्चभावम् ।। कृष्णाञ्चद्माऽव
न्तिकाम्रामभृत्युं स्मृन्योरङ्गिः शुद्धभावन्द
धार ।। ९ ।। आ० मि० ।। दो० ।। यहउदंत
दिसदिसउडिग । जसहुंदियपतिजग्गि ।।
इसकाबलसूबाथपनि । लगनस्वामिभट
लग्गि ।। १० ।। कूरमपतिकोलघुकुमर ।
बिजयसिंहरुचिरंग ।। जावतअवसरअ
सके । सुजनकजामियसंग ।। ११ ।। बाल
बेसकोतुकबिरचि । लगिछोनियकछुला
ह ।। पृथकपायहिंडोनिपुर । सेवतआलम
साह ।। १२ ।। कूरमपतितत्थहिमरिय ।
लघुसुतरहियसमीप ।। पहललहियजयसिं

हनृपपुरआमेरमदीप॥ १३ ॥ हरिगीत
म्॥ लहिपट्टनृपजयसिंहयौंबयअट्ठ
दशमैंलहौं। भटमंत्रिबर्गबुलायकैंकहिको
नमंत्रअप्पेंयहौं॥ करिकैंसमस्तनमंत्रभा
रिवयकालदेसप्रमानिये। अवरंगसाहस
मीपसेवनमैंसबैंसुखजानिये॥ १४ ॥यह
एप्पिकैंजयसिंहलैदलदेसदक्खिनकोंग
यो। दरगाहसाहसलामकैंमिलथानअप्प
नपैंगयो॥ बुलवायसाहसमीपआेहुवह
त्थअंजलिसंग्रह्यो। करिहैकहाअबजेरहू
इमब्याजकोंपितुकैंकह्यो॥ १५ ॥जयसिं
हयहसुनिउच्चर्योममभागआजउदोतुहैं
करइक्कथंभतसाहजोनरसर्वउप्परहोतुहैं
॥अवरंगयहसुनिमोदमन्निरुछोरिआय
सत्रप्पयो। नृपमानकेकुलमानसोंजयसिं

भूपतिहुभयो॥ २६ ॥बयबालअरुबच
हहुतोनृपमानसौंहुसिबायहै।यहसिवा
ईजयसिंहनृपअबनामएहकहायहै॥
यह बलअंकरु बानसमतरुक्क संवत
१७५८ मैंमईपच्छमीसइक्कहिंरत्तअक
छुहोतजातनईनई॥ १७ ॥दो०॥हिंदु
नकीपच्छमीप्रिया।भोगीतुरकनआय।ज
हांगीरजाराहिंमरत।रतिरसअबनअघाय
॥ १८ ॥कछुअवरंगहुतरुनपन।भोगीस
कतिनिहारि॥अबयहजरठजईफभो।
नित्यनईयहनारि॥ १९ ॥ष०प०॥सर
ससिहयइक १७१५ सालअत सराहनि
जिह्यो।जित्तियोलपुरसमरतखतअवरं
गबह्यो।बसुरुबेदमितबरसपातसाहीनि
रबाही।गुनरलटहयससि १७६३ सालआ

यअबसमयइलाहि। इकदिन बुलाअसुत
आजमहिंकीरहस्यअवरंगकहि। जंपतानि
माजममसिरअलगकरहुपुत्तरधारिगहि
॥ २० ॥ दो० ॥ मुग्गिजराबयसाहअब। ल
योमृत्युनिजजोय॥ जान्योंदिल्लरबमेरहैंजो
निमाजबधहोय॥ २१ ॥ म० प० ॥ सुनिआ
जमयहसकुचिचत्तमनसोंथिबिचारिय।
इहिंउद्यमसंधानहोतसंदेहजियनहिय।
कहतसाहकछुओरकरतकछु [illegible] सय
॥ यहदृढकरिउच्चारियहोयमोसोंनयहैनय।
जोचहतअप्पममसुखजनकतोयहहुकम
अलीककरि। दिल्लियसमेतअकब [illegible] नगर
सबाअप्पहुमहरधरि॥ २२ ॥ दो० ॥ सुन
साहअवरंगइम। पियसुतआजमसेन॥
अकबरपुरदिल्लियअरपि। सूबासुन [illegible]

न॥ २३ ॥षट्प०॥ कियआजमयहमंत्रसा
हपरिहैंअवरंगजीवन। मैंदिल्लियपुरजायबै
ठिगहियप्रपंचघन। साहबहादुरसुतअजी
मसंजुतहनिसंगर॥ कामबक्सपुनिअनु
जमारिहूंछत्रतपौंधर। यहसौंचिसीरवदि
ल्लियलई। आजमउचितअनीकसजि। चढि
चलियचाहिगहियगरज। लबअवरंगा
बादलजि॥ २४ ॥ साहबहादुरसुतअजी
मअभिधाननेकनर। पूरबपुरपटनासुरहत
अवरंगहुकमबर। कछुककाजतिनदिनन
साहबुल्योअजीमवह॥ बंचिपितामदपत्र
चल्योदक्खिनदरकूंचह। खटमिजलतरक्कि
अलह्नगरमैंनपुरीसुअजीमरहि। उतस
मयपायआजमचल्यो। दिल्लियआयससा
हलहि॥ २५ ॥ प्रथमसाहकैंपुत्रभयोमुर

तानमुहम्मद।कारागृहसंकटियमरयोदुख
पायमितंबद।दूजोआलममाहसोकुकारा
गृहडारयो॥जबआजमजय्योसुलबहिंकुत
साहनिकार्यो।।आजमयहैसुतीजोलनयता
हिसाहहितकरिचहैं।सुतकामबरवसन्दो
योसुपैसाहकुकमअतिनिबहैं॥ २६ ।।तुर
कनकैंनहिंबरनअवधिचंडालइकलव।का
मबरवसयहकुमरभयोगणिकापिचंडमव।
याहिसाहकीरीझधरादक्खिनसूबाधुर।।
भागनगरअप्योरुबहुरिदिन्नोबीजापुर।पंच
मौंपुत्रअकबरमकटिअतिजुबनउद्धतब
ह्यो।परघरनतक्किमंडतअनयकुपिसाहब
ध्यहिकह्यो॥ २७ ।।दो०।।अकबरमारनकज
नकमुनि।भजिमारवधरआय।।रट्ठोरनतकि
रक्खयउ।पुनिभयगयउपलाय॥ २८ ।। ।।

इतिश्रीवंशभास्करे महाचंपूस्वरूपे दक्षिणा
यने नवमराशौ बुधसिंहचरित्रे सप्तमो ७ म
यूखः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ
॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥
दी॰भा॰ ॥ अनुष्टुप्पथ्याविपुला ॥ सिंहाव
लोकिनीगाथा । प्रबन्धेषु प्रबध्यते ॥ योज
नीयोऽन्वयोवाक्यमहावाक्यावसानयोः
॥ १ ॥ द्रुतविलम्बितम् ॥ अथ तथा कथ
यासिन कोप्यऽकृतगतिशाहनिदेशपरा
ङ्मुखः ॥ स्वशरणं सचिवार्थ्यथयासनागक
नरोगलवानपि धत्वनि ॥ २ ॥ प्रा॰ सि॰ ॥
पद्धतिका ॥ अवौंनेरसजसवंतनाम । उज्जे
नजंगतजिमजिंगधाम ॥ द्रुवजनकरौहि
अवरंगसाह । लइजायसंदमंग्योगुनाह ॥
३ ॥ रवजुवापुरसंगरसाहकीन । रज्जाभ

१ सिंहावलोकनरीत्याकथयामीतिकविवचनम

जायनिजभ्रातदीन ॥ तत्थहुक बंधलजिस्वामि
प्रीति। अवरंगहसममलुहियअप्रनीति ॥ ४ ॥ध
नकोसजमाँननलूटग्गनि। मरुधरधजिग्घा
यउत्रासमानि ॥ तबसाहमरुस्थललियउ
तारि। जसवंतनिमज्जिगबिपतिबारि ॥ ५ ॥
बहुअब्दमरुस्थलबिनुबिहाय। पुनिदुखि
तआयलगिसाहपाय ॥ सकुटुंबरचियदि
ल्लीनिबास। बहुकालखंचिसेवाबिसास ॥
६ ॥ दैसाहबहुरिधरधन्वराज। काबलधर
पठयोत्रानकाज ॥ नहिसोहुसधीसूबासम्हा
रिंबहुकालरह्योउद्यमबिमारि ॥ ७ ॥ किस
बिदिसपरनदबीजमीन। सुनिअलसकोप
पुनिसाहकीन ॥ रनवासकुलोदिल्लीसुसाह।
अटक्योजरिफोजनइहिंगुनाह ॥ ८ ॥ इक
रानीधारतगर्भआस। कुवअजितसिंहजनि

अठरजास॥दलसाहहवेलीफिरिदुरंत।अं
तहपुरथेस्योनदुरवअंत॥ ९ ॥रानिनपँहँ
पठयो हुकमसाह।सुतजन्मसुन्योंनृपकेउछा
ह॥सोदेहुसौंपिजोमुलकचाह।लैहैं बिसा
सिअखबाहिंसाह॥ १० ॥जसवंतजोधपुर
जोग्यनाँहि।सुलदेहुभयेजोअबआँहि॥रन
वासंसबहिसुनियहनिदेस।उमरावबुलाये
निजअसेस॥ ११ ॥आहूतसबहिरट्टौर
आय।करिमंत्रतत्वरानिनकहाय॥पठयेनृ
पकाबलदेसधाम।सोपैनसुधारनसाहका
म॥ १२ ॥सुतजोभयेसुनहिगुप्तअत्थ।अ
बतोहिसाहिमँगातसमत्थ॥भारवतइहिं दैहों
धन्वराज।अरुकोपलरवनदरसतअकाज
॥ १३ ॥ततउचितनाँहितुरकनबिसास।छै
लहोनलगेबहुआसपास॥अबकाढिकुम

रजिहिंतिहिंउपाय।कन्हुहन्निजिवा बन्धुथ
न्वजाय॥ १४ ॥प्रच्छन्नजन्यों अप्पन अप
त्य।तसमालकहहुभोयह असत्य॥तहँअ
हियभटगो इंददास।कापालिकबनि लिय
कुमरपास॥ १५ ॥भहियरघुनाथसुपतिल
वेर।सजिदुर्गदासरट्ठोरफेर॥एवनिसहाय
दुवभट अमान।कुमरहिंनिकासिगयइष्ट
थान॥ १६ ॥कियजंग अप्रवरसुभटन अछे
ह।लरिहड्डारानीतजियदेह॥इमभावसिंह
भगिनीसुभाय।निरबाहिपतिव्रतस्वर्गपा
य॥ १७ ॥जसवंतकुमरकसिकरुदेस।ल
हिकालक है वेबदलिबेस॥तिनछल्लसाह
सौंधन्वजाय।इकबिप्रगेहरक्ख्योछिपाय॥
१८ ॥मरुधररह्योनरट्ठोरराज।हिजगेहकु
मरवसिदुखदराज॥दिल्लीसौंसाहन हुकम

पायमरुधररनबासहुअकबरआय॥ १९॥
लहिमिलतमालसुतबिपतिबास।तपउग्र
साहतअवरंगनास॥इहिंअंतरनृपजसवं
तअंत।लसिकालभयोकाबलबसंत॥ २०
जसवंतसुवनलखहुबुलाय।इनकुपितजा
नलकवेदुराय॥नृपअजितसिंहजसवंत
जात।मनसूरहिहूमविसधाम॥ २१॥ग
जसिंहजंननयहँनासहोत।भदुर्गदासर
ख्योउदोत॥नवयुगनहसमइक १७३६ क्रु
ष्णमान।जसवंतभूपकियदेहहान॥ २२॥
तिनदिननयहेअकबरकुमार।मरुदेसराये
भयसाहमार॥रट्ठौरनहिंनअपैसमत्थ।
॥२३॥
अवरंगखूनिरकेवैंसुअत्थ॥तबतिनहुद
येअकबरनिकारि।ईरानगयोवहदल
निवारि॥अकबरसुमरयोपुरइस्पहान।सु

रहैंप्रतिइक्क बतीसजवान। परैंलगिगोल्ल
ककोसप्रमान॥ ललक्कतआजमकेदल्ल
लार। हलीह्वमडाकिनिदोयहजार॥ २६
चलीगजपंचसहस्त्रनपंति। भयंकरकज्ज
लपब्बयभंति॥ लगैंमगनिट्ठिकरेंगुनलो
भ। डगैंडग डाकन छक्कतछोभ॥ २७ ॥
मरोरतसाखिनजुत्थपसत्त। परीगलब्या
लरिसावनरत्त॥ बडेबपुभद्रमृगादिकबं
स। सजेगुडसाजनअंतकअंस॥ २८ ॥
बहेंफटकारतसुंडिनव्योम। प्रभापरिपक्क
कजुबनजोम॥ अहारतइच्छितपैनअपु
घात। जनेंजलपीवनकोंघटजात॥ २९ ॥
उडैंजिमकंदुकअंदुकपाय। जरेंत्रिपदी
नखुलेसमजाय॥ घुमावतजेंसिरवीतन
घाव। पयप्रतिमंडलअंगदपाव॥ ३० ॥

कसेमरखतूलकलापककंध।बरत्तननद्ध
हुवद्दनबंध॥जरीकुथजेवरजोतिचमक्क
।उथेअसितान्वलपैंमनुअक्क॥करैंपथ
पंकिलदानप्रवाह।लगैंतनतोमरचुक्कत
राह॥सिरीमनिहाटकमंडितसीस।मनों
ग्रहमंडलभर्मगिरीस॥ ३२ ॥करैंनभचा
रनसंबलचोट।उडैफटिफेटकपाटरुको
ट॥घटाघनभद्दवकेअनुकार।हलेगिरिजं
गमपंचहजार॥ ३३ ॥जुरेहयभ्रंपतजाल
ललक्ख।तरारननिंदतमारुतलक्ख॥ज
रेवरजेवरपक्खरजीन।तरंगतिनीरकिमं
डलमीन॥ ३४ ॥धपैंधरिधोरितआदिक
धाव।फरैंछितिपातुरिकीगतिपाव॥प्रबज्ज
ललासननासलधोंनबटानटकेजिमलुफ
लटौंन॥ ३५ ॥बनावतनालनभुम्मिबि

भाग। मनोगतिमप्पनमप्पतमाग॥ उडैं ग
जगाह मलंगतअच्छ। परोहिगजालिअच्छ
पाकतपच्छ॥ ३६॥ चलैं निज छाँहजअक्क
लचित्त। घलैं बरघुम्मर मानसमित्त॥ पदीप
रफूरलगावतलीह। मनोभ्रतगोतमपाठक
जीह॥ ३७॥ थरक्कतघुम्मतनीरकिथा
ल। फलंगतचित्रकलैं बढिफाल॥ लसैंगल
यालनमालउदोत। सुचंदनचापकिपल्लग
पोत॥ ३८॥ उडैं फुकिनद्दुतंगनअंग।
कमाननडारतकंठकुरंग। कढैं छिपिहत्थिन
मैंधपिधाव। बनैं जनु बारिदबिज्जुसलाव ॥
॥ बहैं छिति छेकतबत्थनघल्लि। कसीसल
कंधरअैंडुउफल्लि॥ कुसानुगजेपदकैं जित
जाय। रहैं लखिलोभपतंगहुपाय॥ ४०॥
घमंकियपक्खरघुग्घरनद्द। छमंकियनेउर

भेक किमद्द ॥ दिसा बिदिसा बढि हिं छत
हेस । सजैं जिन आसन आस सुरेस ॥ ४१
॥ छुटैं पलटैं कुलटा जिमि दिट्ठि । चलैं चर
ज्यौं परिपन्निय पिट्ठि ॥ खलीनन लेहन भै
अनुरत्त । सदा जय सूचक जे जव जत्त ॥
४२ ॥ बनैं चकरी सकरी बिसिखान । महा
गति द्वीप दिसैं पटमान ॥ बडे तरु साखन
द्वैकढि जात । बरच्छिन पैं उडि लंघत बा
त ॥ ४३ ॥ भिरैं खुरभोगिय भूमरभेर ।
फिरैं गजफेटनतैं चकफेर ॥ सजे इम आ
जमके दलसंग । तरोमय जा मल लक्खत
रंग ॥ ४४ ॥ अमेलक जुब्बन बेग बिसेस
। बनैं जिनतैं घर देस बिदेस ॥ बजावत ग
ह्वन हल्ल बितंड । चलैं धरि पब्बय पिट्ठि प्र
चंड ॥ ४५ ॥ भरे सलजे दल डेरन भार । ह

लेजुरियुम्मतसट्ठिहजार ॥ सजेबरबेसरबी (ससहस्र । तथासकटावलितीससहस्र ॥ (४६ ॥ जनाँननकेजनवाहनजुत्त । सज्जे (सिविकारथइक्कअयुत्त ॥ चलीभुवडोरिनमप्पतफोज । उदैहुवआयप्रवीरनओज ॥ ४७ ॥ हजारनहोरियहेलिसमान । दिसाबिदिसाफहरायनिसान ॥ सहस्रकपंचनकीबजलेब । चलीपृतनारच्चिजेवरजेब ॥ ४८ ॥ समातनसेलनकेगनगैना । बईभुवपक्वरलकवरलेन ॥ विभागनबंटतसत्तुनबंस । उमीरनबीरनकेअवतंस ॥ ४९ ॥ हरोलनचंडनकीबनहाक । करैंमगलुट्टनबाजिकजाक ॥ चलेइमदिल्लियपैंरच्चिदाव । उमंगतआजमओउमराव ॥ ५० ॥ दो० ॥ इतआजमहूस

सजिकटक। प्रभुबनिकिन्नप्रयान॥ उत
आलमप्रभुनिउक्कल्यो। सावनमुदिरसमा
न॥ ५१॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपू
स्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहच
रित्रेनवमो ९ मयूख:॥ ✿ ॥ ✿ ॥
॥ ✿ ॥ ✿ ॥ ✿ ॥ ✿ ॥ ✿

छं० ५० ॥ आलमसाहवकीलहुतेअवरंग
निकटजिन। समयसाहअवसानपत्रलि
खिअत्तप्रपंचिन। जतुगुटिकाबिरचिकिव
दूतकरिबेसदिगंबर॥ काबलधरसुक्कलि
यअप्पनिअप्पटकियरेवापर। उनमग्गहोयस
रिताउतारिगतिसवेगकाबलगयो। निद्दि
तजगायअप्पियरजनिआलमप्रतिदल
अप्पयो॥ १॥ लुल्लोदैक्कगारहिंछत्रभग्गा
तासुलभग्गी। अबनिवारिनिंदरियपिक्खि

पब्बयदवलग्गी। घरफुट्टाजरिफुट्टिकुहिहिं
दुवमिलिआवत॥ आजमअनयसिचान
परतदिल्लियपारावत। बंधहुप्रपंचमंडहुवि
हितयहनबेरफिरिआयहै। तिनुजतनगये
लवलवब्बुरिदूजेकलपदिखायहै॥ २॥
निश्शाणी॥ छ्द्दीकेधरियारपैंचरफत्रलगा
या। धृजिथरत्थरनाजउँअसरोधत्रलाया॥
साहबहादुरसैंनसैं बरजोरजगाया। जिनकैं
धैंसुखनिंदतेपरलोकपलाया॥ ३॥ जि
नकीबाहरचाहतेतिनधाटबनाया। अबतु
ट्ठैंहीअप्पनानहिछत्रपराया॥ यौंसुनिवे
गमअप्पनीकरखैंचिउठाया। जाकौंकंतक
हावतेवहबासरआया॥ ४॥ लायसि
लग्गीभक्खरौंतुमनिंदलुभाया। यौंसुनि
आलमजग्गिकैंअवरोधउराया। कग्गरलैं

हिम्मतपंचकैं बुधसिंह बुलाया। नैंन मिलाया
नेहसैं भुजभार मिलाया॥ ५ ॥ बंससता
के बीर लूक हियैं बिरुदाया। हिंदूभूप हराम
के सब फोरि मिलाया॥ दिल्लीके कुचकुंभपैं
कर आजम लाया। जोर जनानेजार कानहिं
जाल पसाया॥ ६ ॥ अबतेरे भुजदंडपैं र
नबीर बढाया। बाजीमैं अरु रनरह्या पणआ
ण लगाया॥ हारैं भुम्मनहू रहे जिनैं जसमा
या। यौं सुनि राव उछाहकैं करमुच्छ मिलाया॥
७ ॥ बुद्धिसमुद्दि सरी संभरी रससत्त उडाया।
थाह बीररउ हकाहकैं छकछाया॥ ज्यौं कंद
लकुन उज्झके भट संजसजाया। कैं गोरी सु
रतानपैं सजिकलधकाया॥ ८ ॥ ज्यौं स
भासुरजंगपैं सत सत्त सुहाया। कै द्रोणाच
लालैनकौं कपिराज कसाया॥ पीवनपारा

रहैं अति इक्क बतीस जवान। परैं लगि गोलक कोस प्रमान॥ ललक्कत आजमके दललार। चलीइम डाकिनि दोय हजार॥ २६

चलीगज पंच सहस्त्रन पंति। भयंकर कज्जल पब्बय भंति॥ लगें मगनिट्टि करेणुन लोभ। डगैं डग डाकन लक्कत छोभ॥ २७ ॥

मरे रत सावन अत्थ प्रमत्त। परी गल ब्यालरि सावन रत्त॥ बढे बपु भद्र मृगादिक बंस। सजे गुडसाज न अंत कअंस॥ २८ ॥

बहैं फटकार तसुंडिन ब्योम। प्रभापरि पम्मक जुब्बन जोम॥ अहारत इच्छित पैन अघात। जनैं जल पीवन कौं घट जात॥ २९ ॥

उडैं जिमकंदुक अंदुक पाय। जरे त्रिपदी नखुले समजाय॥ घुमावत जे सिर वीतन घाव। पयप्रति मंडत अंगद पाव॥ ३० ॥

कसेमखतूलकलापककंध। बरत्तननद्ध हवहनबंध॥ जरीकुथजेवरजोतिचमक्क। ज्योंअसिताचलपैंमनुअक्क॥ करैंपथ पंकिलदानप्रवाह। लगैंतनतोमरत्रुट्टत राह॥ सिरीमनिहाटकमंडितसीस। मनों अहमंडलमंगिरीस॥ ३२॥ करैंनभचा रनचंचलचोट। उडैफटिफेटकपाटरुकोट॥ घटाघनमद्दवकेअनुकार। हले गिरिजंगमपंचहजार॥ ३३॥ जुरेहयजंपतजालललक्ख। तरारननिंदतमारुतलक्ख॥ जरेखरजेवरपक्खरजीन। तरंगतिनीरकिमं छुतमीन॥ ३४॥ धपैंधरिधीरितआदिकधाव। परैंछितिपातुरिकीगतिपाव॥ अकज्जललासननासनपौनबटानटकेजिमगुंफ नगौंन॥ ३५॥ कनावतनालनभुम्मिबि

भाग। मनोगतिमप्पनमप्पतमाग॥ उडैंग
जगाहमलंगतअच्छ। भरोहिगजानिअ
पाकृतपच्छ॥ ३६ ॥ चलैंनिजछाँहजरुक्क
तचित्त। थलैंवरघुम्मरमानसमित्त॥ पटीप
रपूरलगावतलीह। मनोमतगोतमपाठक
लीह॥ ३७ ॥ थरक्कतघुम्मतनीरकिथा
ल। फलंगतचित्रकतैंबढिफाल॥ लसैंगल
यालनमालउदोत। सुचंदनचापकिपल्लग
पोत॥ ३८ ॥ उठैंरुकिनडुदुतंगनअंग।
कमाननडारतकंठकुरंग। कढैंछिपिहत्थिन
मैंधपिधाव। बनैंजनुबारिदबिज्जुसलाव॥३९
॥ बहैंछितिछेकतबत्थनघल्लि। कसीसत
कंधरऐंडुउरुल्लि॥ कुसानुगजेपटकैंजित
जाय। रहैंलखिलोभपतंगकुपाय॥ ४० ॥
घमंकियपक्खरघुग्घरनद्द। छमंकियनेउर

भेककिमहू ॥ दिसा बिदिसा बढि हिं छत
हेस । सजै जिन आसन आस सुरेस ॥ ४१
॥ ढुरैं पलटैं कुलटा जिमि दिट्ठि । चलैं चर
ज्यौं परिपन्थिय पिट्ठि ॥ खलीनन लेहन मैं
अनुरत्त । सदा जय सूचक जे जव जत्त ॥
४२ ॥ बनें चकरी मकरी बिसिखान । महा
गति ह्रौ पदिकेपट मान ॥ बडे तरु सारवन
हैं कढि जात । बरच्छिन पैं उडि लंघत बा
त ॥ ४३ ॥ भिरैं खुर भोगिय मूसट भेर ।
फिरैं गज फेटन तैं चकफेर ॥ सजे इम आ
जम के दल संग । तरो भय जामल लक्ख
तुरंग ॥ ४४ ॥ अमेल कजुब्बन बेग बिसेस
। बनैं जिनतैं घर देस बिदेस ॥ बजावत गा
ल न हल्ल बितंड । चलैं धरि पब्बय पिट्ठि म
नंड ॥ ४५ ॥ भरे मल जे दलडेरन भार । ह

लेज्जुरियुम्मतसट्ठिहजार ॥ सजेबरबेसरबी
ससहस्र। तथासकटावलितीससहस्र ॥
४६ ॥ जनाँननकेजनवाहनजुत्त। सजे
सिविकारथइक्कप्रयुत्त ॥ चलीभुवडोरि
न मण्यतफोज। उदेहुव आयम बीरनओ
ज ॥ ४७ ॥ हजारनहोरियहेतिसमाल
। दिसाबिदिसाफहरायनिसाल ॥ सहस्र
कपंचनकीबजलेब। चलीपृतनारचिजे
वरजेब ॥ ४८ ॥ समातनसेलनकेगन
गेन। छईभुवपक्खरलक्खरलेन ॥ बिभा
गनबंटतसत्रुनबंस। उमीरनबीरनकेअ
वतंस ॥ ४९ ॥ झरोलनचंडनकीलनझा
क। करैमगलुट्टनबाजिकजाक ॥ चलेइम
दिल्लियपेंरचिदाव। उमंगतआजमसओ
उमराव ॥ ५० ॥ दो० ॥ ... आजमकुं

सजिकटक। प्रभुबनि किन्नप्रयान॥उत
आलमसुनिउज्झल्यो।सावनमुदिरसमा
न ॥ ५१ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपू
स्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहच
रित्रेनवमो ९ मयूखः ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ आलमसाहवर्कीलहुतेऔरंग
निकटजिन। समयसाहअवसानपत्रलि
खिछन्नप्रपंचिन।जतुगुटिकाविचरकिव
दूतकरिबेसदिगंबर॥काबलधरमुक्कलि
यआनिप्पटक्रियरेवापर।उनमत्तहोयस
रितउतरिमालिसवेगकाबलगयो।निद्रि
तजगाय आडियरजनिआलमपतिदल
अप्पयो॥ १ ॥खुल्लोदैकगारहिंछत्रसम्म
तहुवसभी।अवनिभारिनिंदारियपिक्खि

पव्वयदवलग्गी। घरफुट्टाजरिफुट्टिफुट्टिहिं
दुवमिलिआवत॥ आजमअनयसिचान
परतदिल्लियपारावत। बंधहुअपंचमंडदुरि
हिनयहनंबेरफिरिआयहे। बिनुजतनगये
लवलवबकुरिहूजेकलपदिखायहे॥ २॥
निश्शाणी॥ अद्धीकेघटियारपैंचरपत्रलगा
या। धूजिथरत्थरनाजरूंअवरोधचलाया॥
साहबहादुरसैंनसैंबरजोरजगाया। जिनकं
धैंसुखनिंदतेपरलोकपलाया॥ ३॥ जि
नकीबाहरचाहतेतिनघाटबनाया। अबक
ढ्ढेंहीअप्पनानहिछत्रपराया॥ यौंसुनिबे
गमअप्पनीकरऔंचिउठाया। जाकौंकंतक
हावतेवहबासरआया॥ ४॥ तायसि
लग्गीभकवरौंतुमनिंदलुभाया। यौंसुनि
आलमजग्गिकैंअवरोधउठाया। कम्मरबं

वारकैघटजातघुमाया।कैबनसुत्ताबिंटि
कैंमृगराजजगाया॥ ९ ॥कैकाकोदरखंप
तैंफनफेलबनाया।सोरकिधौंसाबातमैंद
वदुंगमिलाया॥जमकाअंरवलजानिकैक
हिपावदबाया।यौंसुनिवत्तैंसंभरीमनजंग
लगाया॥ १० ॥सोकसिलग्गासाहकाक
हिबैंनसमाया।सोसिरजोलौंकंधपैंसुरवअ
प्पकुमाया॥गद्दीज्यौंनपनाहकीहमबीरसि
वाया।धर्महरामीसेरहू कोऊनकहाया॥११
अग्गैंपंडवजित्तिकैंकुरुबंसनसाया।रावन
कित्रीरामसौंसोहीफलपाया॥पापनपक्की
होनदेदलहेहुसिवाया।अैंचौंआजमकंठ
मैंधरिचापअधाया॥ १२ ॥यौंसुनिसाहसि
राहकैंतवआमबनाया।भावीभूतसुनायकैं
तजबीजलगाया॥सेनानीसंभरकियाचहु

रंगसजाया। बढेप्रात भयानकौफरमानबढा या॥ १३ ॥जंगलगारौंनछ्है धरकाबल छाया। सिंधूरागरनंकियाबहिसोरसिवाया ॥डेरौडेरौसज्जह्नैनरबाजिकसाया।तौलग तीजेजामकाधरियारबजाया॥ १४ ॥किंग नघेरौंघल्लिकैंचैरौगरदाया।काहूच्यालभपं चकैंबिरुदायमिलाया॥ अंगरुमालौंमंजि कैंरजरंगउडाया।हैहैसनकेमानकेसंजाव खिलाया॥ १५ ॥केजलदेगौंपायकैंसुख लोसलगाया। अगैर किंवगजीनकौंबिस वासबढाया॥जंपिमहाउतकंधपैंगतिबंदर आया।जंगीहौदनमंडिकैंगुडनहुबनाया॥ ॥ १६ ॥ धायघसारीघोरज्यौंघलिघंटझि लाया॥नाणतुपकौंआदिकैंसबहेतिसजा या॥लंधिबरत्तौंसज्जकैंबड बाकलगाया।

फोजोंनायकभारएसिरतेरेआया ॥ १७ ॥
योंकहिकंधाथप्पिकैंरनरंगरचाया॥जंगीअं
दुकडारिकैंआलानछुराया॥बारीबाहिर
बाकतैंरच्छिडाकडगाया।केकमतंगोंतुंगके
धुजदंडफुकाया ॥१८॥ मेघाडंबरकेकसे
सिरअंबरलाया।केकहवद्दों सज्जह्वैगल
गज्जमचाया।योंनभअंबरअम्मपरिमान
गिनाया।हत्थीआलमसाहकेरनराहसजा
या ॥ १९ ॥ लक्खतुरंगोंलैनपैंबरसाजब
नाया।देतरवलीनोंदोरपैंनचिकंधनमाया
॥जंगपलानोंडारिकैंकसितंगमिलाया।
घोरधमंकीपक्खरोंछोनीतलछाया॥२०॥
रंगबिरंगेराहकैंगजगाहलगाया।छोरिदुब
गोंथानतैंचरबाहिरलाया॥तुक्किमलंगों
तुंगपैंरबिरुक्किलुभाया। तोपहजारांतीर

कैंसहकालचलाया ॥ २१ ॥ डारिदवाली
दौरजेसजिजंगलुभाया।साहबहादुरस
उठेअबबाहिरआया ॥ बारनपहआरो
हिकैंफरमानलगाया।कुंचनकीबौंछुहिकैं
हरवल्लबढाया ॥ २२ ॥ एतेमानबिहान
काथरियारबजाया।पायरकाबौंमंडिकैंच
हिबीरचलाया।छोनिमचक्किभारकैंफनना
गडगाया।त्यौंकेदिग्गजचिक्कोरैंउरकल्पभ
लाया ॥ २३ ॥ ध्यानसमाधीछोरिकैंमन
निम्नबढाया।तादिनधूरिबितानकेघनमान
पिघाया ॥ सारदपुन्निमप्रकाससीजिमबद्दर
छाया।दक्खिधरित्रीपक्खरौंइकओथलरघा
या ॥ २४ ॥ सेलौंअंबरढंकियानभचार
रुकाया।उडेबातरूपेटकैंफीलौंफहराया
॥ताराउन्नरिपोदकौंसुभसौंनबताया।दक्खि

नभारह्माजनैंहुतलाभदिखाया ॥ २५ ॥
यौंदरकुंचञ्चनीकनैंलाहोरनिराया। पंजाबी
दलबुल्लिकैं कछुतत्थमिलाया ॥ आलम
साहसिपाहयौंसजिसेरसिवाया। दिल्लीके
सिरदावपैंकरिचावचलाया ॥ २६ ॥ इति
श्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्वरूपेदक्षिणायने
नवमराशौबुधसिंहचरित्रेदशमो १० म
यूख: ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥
गीर्वाणभाषा ॥ वसन्ततिलका ॥ लाहोर
नामपुरतोपिकृतेप्रयाणे। मेघानुकारब
हादुरशाहचम्वा ॥ आयातमाशुदलभी
षितमागरातोऽजीमस्यभूतयुतभाविवि
द: स्वसूनो: ॥ १ ॥ उपजाति: ॥ श्रुत्वाव
रङ्गःकृतकायहानम्मयासमागत्यमनोजपु

र्या: ।। तत्रत्य भूतिर्द्रविणादिराशत्तादुर्गस्त्र

स्त्रीकृत सागरायाः ।।२।। स्वास्थ्यं गृहाणे

ति विचार्य वल्लर्जहीहि तत्सोदर चक्रचि

न्ताम् ।। विरच्यतेऽपि मया प्रयत्नः मल

स्यते चाजम शाह मार्गः ।। ३ ।। आग

स्यताऽ‍न्नागमवतापि विट्ठलसेनाभृता बुन्दिन

पेण साकम् ।। व्यस्यात्र सुद्धान्त मुरवां विभ

ति आल्पो रिपुर्जाजवसीम्नि जय्यः ।। ४ ।।

शुद्ध प्राकृत भाषा ।।गीतिः।। इअ पत्तं (१) से

ऊणं अईम लिहिअं जयाय मेण सभम् ।।

साह बहादुरजोहा हरिस समद्धा जिईसवो

हूआ ।। ५ ।।

(१) इति पत्रं श्रुत्वा अजीम लिखितं जयागमेन सभम् ।। शाह बहादुरयोधा हर्षसमृद्धा जिगीषवोभूताः ।। ५ ।।

(१) जैहस्सु समाणरिक्खे बुट्ठो मेहो परूढसालिम्मि ॥ अहव दिणयरो उइओ निसा। दिसा मूढ वि हलपहिअगणे ॥६॥ वैरो (२) आम्मि असज्झे मिलिओ धन्नंतरी छुहाइसमम् ॥ अह वा कुणवसरीरे अब्बो पच्चागया अप्पु णो ॥७॥ प्रा० मि० । प्र० प० ॥ कियउच्छाह इमसाह बंचि कच्छार अरूरा सम। बुल्लिनृपति बुधसिंह कह्यो तदु दंत बिहित क्रम। इक्क इक्क संजोग होत जिहिं बिधि राकादस ॥ इम अजीमगढ लेत दइव दीसत अप्पन बस ॥ अल्लाह महर सूचक यहै अबन बीच अरि भय अटक। आगरा ओर पद्धति उच्छिल [illegible]

(१) यथा सुष्यमाणक्षेत्रे वृष्टो मेघ: प्ररूढशालिके ॥ अथवा दिनकर उदितो निशि दिङ्मूढे विहूलेपथिकगणे ॥ ६ ॥ (२) वारे गेऽसाध्ये मिलितो धन्वन्तरि: सुधया समम् ॥ अथवा कुणपशरीरे अहृहम त्यागता असव: ॥ ७ ॥—

गहंकहुकटक ॥ ८ ॥ यह प्रपंच अनुकूल पिक्खि बुधसिंह चमूपति। कियफोजन दर कुंच मंडि अहून बिदग्धमति। सेनमध्य सुरतानह्हु नरनाह हरोली ॥ सुवनसाहके ती नबासद किवन चंदोली। जयसिंह अनुज कूरम बिजयलघु बयलारि बलप संगलिय। इहिं भसउपेत दक्षत अवनि चलि सबेग चतु रंगिनिय ॥ ९ ॥ काकोदरकलमलत फनन फुंकरि पलटावत। कच्छपहियअकुलात तल रवतपुत्तहिं लचकावत। त्यों बिनताउरति कवपुत्त चिंतल दासीपन ॥ यह कौतुक अद भूतफैलिकरयपघरफोजन। संकरसमाधि तजितजि सहजकारनलखतबिचारकरि। नवमालहेतुकहिकहिइनहिंगहकिमोद बाढतगवरि ॥ १० ॥ मिजलइक्कसाहस

नअग्गचोकीत्रिसहस्रन। अरिन छन्नउप
चारप्रबल बिसआदिपरकवन। निधि तृन
अन्न निवानमग्गमैदानमुकामिक॥ खगमृ
गलरुउद्यानजातसोधतक्रमजामिक। प्रति
दिस जिहान खलभल परिगमन कुबज्रभुव
फोरिहे। पाथिन निदान आयकिप्रलयछ
लिसमुद्रहदछोरिहे॥ ११॥ कमठभंगगि
लिअंगप्राननारिनपरिबुड्डिय। भिरिहम
त्तभुवभार पिट्ठिपावकघसिउड्डिय। फगिंद
मंगबढिफालजातकच्छपपतंगजरि॥ दरि
तटारिदंतुलियटिकतसूकरतुंडाकरि।
आतंकसुरनउतपातइहिंकंपतजगकार
नकहिय। बुधसिंहमनकुंआगम विजय
अकूपारआहूतिदिय॥ १२॥ अहिक
च्छपभूदारद्रुहिन दिग्गज दिगपालक। भू

लोकरु तिमभुवर बहुरि सुरलोक। बिसालल
हत समस्त भूतल। दिति महि सागर इत
आसहिं ॥ इक्कहिं परि आयास अवर आ
तंक उपासहिं। संकित बिलास धुज्जत स
कल चकित चेत भूलन भजिय। प्रियजिय
डुलत नारिन धरि गभ्भदन नेह नारिन तजिय
॥ २३ ॥ इम अनीक दर कुंच आय उत्तरिहुं
दालन। संभरपति बुधसिंह मंत्र मंडिय मंप
त्रमन। रानिय रानाउत्ति आदि अप्पन अंते
उर ॥ काम बिपिन ब्रज बीच तत्थ रक्खिय
जुद्धातुर। सज्जि कुंच बहुरि आलम सहित
नृपति आय अकबर नगर। मिलत हि आ
जीम संबोधि मुद्द जटित पिक्कि बीर नज
गर ॥ २४ ॥ तेरी बेर आजीम न्याय रहौरि
सहिय बुरल। तेरी बेर अजीम थाल बख्यो।

सुसबनसुख। तेरीबेरअजीमपट्ट दिल्लिय
चढिपानी॥ तेरीबेरअजीमजन्यौंओरनतुर
कानी। इमलिहिंसिराहिबुंदियअधिपरस
बदलदुग्गसम्हारिलिय। मिलिसुतहिंसा
हमंडियमहरकहितुमबिजयप्रपंचकिय
॥ १५ ॥ कछुकालरहितत्थसेनपिक्खि
यसेनापति। दलसारधदुवलक्खतोपहू
ज्जारबिबिधतति। सवालक्खतुक्खारजं
गपक्खरजिन्हडारिय ॥ दुवदीननबरबी
रबरखुसिगजगामबढारिय। इमसहँसक्कू
कत्रैंचतनिगडबहुनिसानफहरानिलनि
। इमसबसम्हारिबुंदियन्नृपतिप्रतिजवने
सप्रयानभनि॥ १६ ॥ दो० ॥ अंतहपुर
धनआदिसब। राजबिभवरखितत्थ॥
त्रंबकडकबज्जिगबहुल। संगरपढतसम

स्थ ॥ १७ ॥ अप्पन दल रु अजीम दल । सबर कत्त सम्हारि ॥ करिय कुंच तजि आगरा । रोपन जाजव रारि ॥ १८ ॥ इति श्री वंशभास्करे महाचंपूस्वरूपे दक्षिणायने नवम राशौ बुधसिंह चरित्रे एकादशो ११ मयूख: ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दो० ॥ मेच्छक फागुन साह मरि इन सुनिय पुरुष वदात ॥ आवत बित्ते मास दुव । अब्ब आषाढ प्रभात ॥ १ ॥ आजम कछु क बिलंब किय । साह बहादुर भाग ॥ दल निवाहि आतप दिनन । आवत पुव अनुराग ॥ २ ॥ तपत जेठ दिनकर दुसह । आजम कटक दुरंत ॥ चलत पंगु जय च्युतिजिम । वसुधा तल दबंत ॥ ३ ॥ इमप

त्तोग्वालेरपुर। आजमबिभवउपेत॥स
जिकिल्लाबनितादिसब। रक्खिवयतत्थनि
केत॥ ४ ॥ ष॰प॰ ॥ अग्रजअवरंगी
यसाहदाराअभिधानी। ताकीतनयाव्या
हिलईआजमअभिमानी। यहअग्गैंहू
कैबरपकरिबंधीमरहट्ठन। तबअनिरु
द्धनरेसजित्तिआनीभुजदंडन। दीदारब
खसजाकेउदरताहिनगरग्वालेरधरि। उ
ततैंउफानसागरउपमआयोआजमको
पकरि॥ ५ ॥ अकबरपुरइनतजियतजि
यग्वालेरनगरउन। रदक्खिनसम्मुहरुवें
सुउत्तरपरआरुन। इमआवतदुवकटक
मिलेजाजवदिनअत्थैं॥ रहिमुकामबल
रातिकलहउग्गतरबिकत्थैं। दुवदलस
पातसोहतसहजमनहुसिंधुबीचिनभरि

ग। बद्दलउदीचिञ्अवाचिकेप्रबलबात
भेटकिपरिग॥ ६ ॥ दो॰ ॥ सकचउरव
टसम्वत् १७६४ समय। ञ्असित
गाढ॥ दियसुकामदुवदलनइम। मिलि
जाजवगाहिगाढ॥ ७ ॥ पद्धतिका॥
द्वैदलसुकामबुंदियनरेस। कियमंत्रपि
क्खिञ्अरिदलबिसेस॥ रतिबाहबाह
रोकनबिचारि। निजदलप्रबंधबंधियनि
हारि॥ ८ ॥ परवैरलसहंसह्वादसप्रवीर
। सजिथप्पिसेनबाहिरसधीर॥ निजभट
रनपंडितजेतनाम। तिनमांहिमुख्यकरि
रक्खिताम॥ ९ ॥ यहवैरिसल्लकुलभव
ञ्अभंग। निजबंधुजेतदियसोधिसंग॥ क
हिनेहवचनसनमानकीन। ञ्अबकाकादि
ह्लीतवञ्अधीन॥ १० ॥ जोरचहिंसम्मुरति

वाहजाल। तोफेलिचासभेजहुउताल॥
इमभाखिछबीनाँकियतयार। हयजैलसंग
द्वादसहजार॥ ११ ॥ दलपरिधिजाथ्थनि
नचक्रदिन्न। क्रमइमप्रबन्धचहुवानकिन्न
॥ पुनिकहियनीतिसाहहिंप्रबोधि। सुख
सैंनकरहुअबकालसोधि॥ १२ ॥ निसजा
गरहतनिंदहिंनिवारि। पिकवहुबिहान
रनभटप्रचारि॥ सुनिसाहसैंनमंडियसतो
स। भूपालबुद्धभुजहुवभरोस॥ १३॥ स
बसाहहसमडेरनसम्हारि। नृपसितिरक्षा
यकटिपटनिवारि॥ लियसबहिफोजना
यबबुलाय। समुझायकहियआगमसुना
य॥ १४॥ अगेंप्रमादसमुपेतसुत्त। पा
ड्वदलमारयोद्रोनपुत्त॥ निससुत्तसाह
गोरियअनीक। कइमासइकंकियकांति

सीक ॥ १५ ॥ तसमातअसनअल्पहि
विधाय। सज्जहि समस्तसो बहु सुभाय॥
करि तीन लच्छ परिकर बिभाग। कहहु निज
जालजयर कि बिराग॥ १६ ॥ गज हय धन दे
हु बिश्राम बंधि। अम पिक्खि अल्प आहा
र संधि॥ बहुमंजि सजहु हय गज बहोरि।
जंगी पलान संधान जोरि॥ १७ ॥ निसर
हत जाम तजित जिनिकाय। पतनासुरका
लन देहु पाय॥ सुक्किय बिदग्ध लोपन चला
क। करि विविट दल हिं मंडहु कजाक॥ १८ ॥
पंच हहजार पायक तुरंग। आरोपि साहतो
र अभंग॥ इम मंडि ब्यूह जामिक अनूप
। सहु साल असन किन्नौं चमूप॥ १९ ॥ हुत
पुनि प्रोहि हैवर दिवान। सब ढिग फिरि
किन्नैं सावधान। इम सिविर पिक्खि निज

थानआय।सुखसयनकिन्ननयबलसुभाय
॥ २० ॥ यहसुनिअनीकब्यूहनबिबेक।
आजमहुरचिजामिकअनेक॥ झूमकिय
मुकामहुदलअमान।दुवधौंनिघातब
ज्जतनिसान॥ २१ ॥ रनमाहताबउद्दित
दुओरबकिन्नौंछिपरतजिनलखिचकोर॥
बढिदुदलचंद्रजोतिनविकास।पुस्सिमम
यंकबहुछिपुरिपास॥ २२ ॥ दुहुँओरबा
जिगजरथतुरंत।दुवसेनउच्छुडेरनदिपंत॥
दुहुँओरसहजामिकदुरूह।सजिसजिअने
कबिचरतसमूह॥ २३ ॥ दुहुँओरलखत
पच्छन्नदूत।दुवदलनकीइआरकअभूत॥
फंडनझपेटमच्चतदुओर।सिंधुवअप्लापदुव
दिसमजोर॥ २४ ॥ दुहुँओरकरतजामिक
दुराव।दुहुँओरछबीनौंलखतदाव।दुहुँओ

रवाजिफौदलकुबंध।दुकुंओरदंतिगजआत
मदंध॥ २५ ॥दुकुंओरसुइसेलनचमक।
दुकुंओरधंरपकलरधमक॥दुकुंओरसरकु
रनउछाह।दुकुंओरहोलहरिहरइलाह॥
॥ २६ ॥दुकुंओरसुतरसंघालजात।दुकुं
ओरचारपलपलदिखात॥दुकुंओरकरत
बहुरीतिदान।दुकुंओरहोलबिधिजुतबिधा
न॥ २७ ॥गुनजासरलिकुवइमअपतीत।
गहिकियखुजंगआरंभगीत॥ निंदहिनिवा
रिबुंदियनरेस।करिनित्यबंदिप्रभुहरिकेस
॥ २८ ॥जासिकनसाहआलमजगाय।बु
धसिकृतबहिलियदूतबुलाय॥ कहिउचि
तमंत्रमइकुनरेस।अबनहिंबिलंबकुवसब
अपेस॥ २९ ॥सुनिनृपउबाचनयकछु
सनर्म।अबहोतजंगबिधिबिधिअधर्म॥

बहुतेपकरनदूरहिबिनास। बीरकुसकैनयहटारित्रास॥ ३० ॥लैजातसबनधरिसिलथोर।मनमाँहिरहतसुभटनमरोर॥तसमातप्प्यदलपिट्ठिदूर।रहिछन्नकालकटुकुजरूर॥ ३१ ॥हमसुभटजुद्दपडितहरोल।बिधिसबनिबाहिनयधर्मबोल॥मथिदलसमुद्रभुजमंदराग।निजबलकृपानरचिचंडनाग॥ ३२ ॥जयरत्नकड्डिजलनजरूर।हैंख्यातनिवेदहिंनिजहजूर॥छलिहीतिछन्नसाहहिंनिकासि।बलसजियप्पहियजयबिकासि॥ ३३ ॥दलचहलबेगदैनिजनिदेस।बिधिकरिबिहानसंध्याबिसेस॥साजउनहुचढनआयसप्रसारि।नरगजतुरंगकलकलनिहारि॥ ३४॥

दो० ॥दुवदलइमरवलभलपरिग।गहिकि

नकीरियगाल ॥ किलकनकीबनकुवकहर
।पक्करपलालपलाल॥ ३५ ॥भुजंगप्रयात
म् ॥जमीसेन दोऊरहीजामरत्ती।ऊजेबंब
मेरीबृहीहल्लबत्ती ॥दुहूंश्रोरहैसुद्दकेनि
त्यमंडै।दुहूंश्रोर संसारतैंप्यारछंडै॥ ३६॥
दुहूंश्रोरगंगोदकैंश्रंगमंजैं।दुहूंश्रोरगी
तादिगीतादिरंजैं ॥दुहूंश्रोरबानेतुनागे
ललंधैं।दुहूंश्रोरकेटोपसन्नाहसंधैं॥ ३७
॥दुहूंश्रोरजालीदवालीनडारैं।दुहूंश्रो
रधारालधारालधारैं ॥दुहूंश्रोरसिंधूलऊ
च्छाहजग्गैं।दुहूंश्रोरबाजीनपैंजीनलग्गैं॥
॥ ३८ ॥दुहूंश्रोरमुंडालसुंडालगज्जैं।
दुहूंश्रोरढिंजीरजंजीरबज्जैं ॥दुहूंश्रोर
उच्छूलनेजाफरक्कैं।दुहूंश्रोरकेजोरढोली
मचक्कैं॥ ३९ ॥दुहूंश्रोरधानुक्कटंकार

पूरैं ।दुहूँ ओर देखैं लगी लोभ हूरैं ॥ दुहूँ ओ
रमैं दूतह्वै भूत मिल्लैं ।दुहूँ ओर बेताल खेता
लखिल्लैं ॥ ४० ॥ दुहूँ ओर के भीरु उच्चाव
मंडैं ।दुहूँ ओर के बीर बानैत तंडैं ॥ दुहूँ ओ
र बदीन कोसोर बड्ढैं ।दुहूँ ओर तोपैं दरावी
न चढ्ढैं ॥ ४१ ॥ धरैं कुंतबंदूक तुल्लैं बरच्छी ।हुलैं
हं कि हत्थी खुलैं सज्ज कच्छी ॥ चढी
सेन दोऊ बढी जंग चाहैं ।अवाची उदीची
घटाज्यौं उमाहैं ॥ ४२ ॥ दो० ॥ बुंदियप
तिसन्नद्ध बनि ।नय निकासि निज साह ॥
दलमार धदुवलक वली ।चल्यो तुरग जय
चाह ॥ ४३ ॥ उत आजम आरो हि गजले
दल सम्मुह आय ॥ मुलक मलय आगमन
मकु ।उदधि सत्त उफनाय ॥ ४४ ॥ इति
श्रीवंशभास्करे महाचंपूत्तरूपे दक्षिणाय

10956

...नवमराशौ बुधसिंह चरित्रे द्वादशो मयूख: ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

दो० ॥ सक चउ संवट सत्रह १७६४ समय । मिलि चउ त्थि सुचैमास ॥ अमिल पक्ख उमाल अग्ग । बढ़ि दल बिजय बिलास ॥ १ ॥

मुक्तादाम ॥ बढे दल तोपन कौं करि अग्ग । मिले भट उद्धत संगर मग्ग ॥ इते बिच कोटु कज्जंग अछक्क । उग्यो उदयाचल के सिर अक्क ॥ २ ॥ लख्यो रबि कोटउ नंदि बिसेस । भयो तब तोपन पुष्ट निदेस ॥ पलहनि पिक्खि कमालन सैंन । लगी कुहुं ओर अलातन दैंन ॥ ३ ॥ मिली तहं तीन हजार नश्रेनि । बही अफ लैल तहं दिस स्रेनि ॥ भयो नभ धूमित धुंधुरि भान । लगे द्रगमीच

नदेव बिमान ॥ ४ ॥ परे अय गोलक विद्यु
लपात । जुरे नग ऐवर है उडिजात ॥ उगाल
त फेरहिं फेर अखंड । चलैं चटकारिन के
मित चंड ॥ ५ ॥ भुजंगम के सिर नच्चत भु
म्मि । धरैं फनतै फन धायन घुम्मि ॥ नचे जि
म कन्हर कालिय कंध । बनैं द्रुम छोनिय तंड
व बंध ॥ ६ ॥ लगे डगमग्गन अद्रिन शृंग
गिरैं जिन तैं मृग भ्रामित भृंग ॥ निवानन आ
कुलि तुट्टत नीर । परयो द्रुम आतप धीरन भ
पीर ॥ ७ ॥ तजैं बढ़ि बीचिन सागर सीम
। भ्रमैं मलयानिल मैं जिम भीम ॥ जुरयो दि
न दद्धि कुहूतम जग्गि । अलात लगैं जनु
प्रेतन अग्गि ॥ ८ ॥ परैं दृग वउत सोर प्रका
स । लखैं इन हूइत फेर उजास ॥ दुहूं दिस
यौं लखि मारत दाव । भयो दुहुं घाँइ मसार

अस्साव ॥ ९ ॥ मज्योल द्धिधूममुरालयसंग
। अज्जौं नभवद्दल रजिहिंरंग ॥ गिरैं बिन्ध
गोलक गोलक फेट । मनौं पबिलैं पबिन्द
द्रुचपेट ॥ १० ॥ गिरैं गजमत्थ छिन्न छिन्न
छूट । कटैं पबि पानकि अच्छिन्न कूट ॥ गिरैं
गजगंडन कुंगोलन गोन । गिरैं तरु तोल कि
पक्ख पपोन ॥ ११ ॥ लरयो रबि उग्गत ज्यौं
तमलाल । किते अबकुल्लत अच्छि कि का
ल ॥ बिहान क कोकन लग्गि बियोग । बि
नां नरजान तजामिनिजोग ॥ १२ ॥ परैं
जगंडन गोलक पात । करैं जनु अद्भुक जाति
नख्यात ॥ परैं डुकुं अच्छो रतु पक्कन पंथ । प
अच्छो रवध्याघ्रक ज्यौं हरि संथ ॥ १३ ॥ चहुँ दि
सचंड चलयोरज चूर । पत्योरज ता चलतों
उडि पूर । जटी जटजूट कु पंकिलजात । ल

तोपनकोमगटारि ॥ ३० ॥ इमकहायबुंदिय
आंथप। मंड्योतोपनजंग ॥ इहिंअंतरदूतन
कह्यो। भोआजमअसुभंग ॥ ३१ ॥ बलहिंअ
चारतभटनखिच। होहत्थियआरूढ। गोला
लगिदोजरगये। महाअनयरतमूढ ॥ ३२ ॥
अबताकोसुतसज्जकुव। तथासचिवनृपती
न ॥ नरउरपतिदतियानृपति। कोटापतिइक
कीन ॥ ३३ ॥ ष॰प॰ ॥ सुनतएहबुंदीसमंत्र
निजदलसहमंडिय। अरिआजमउद्धतहिल
रनतससुतहरोललिय ॥ अरकजाप्रअबलेस
तोपचल्लतत्रिजामगय ॥ अबहयदेकुरसाय
जानिहरिहत्थजयाजय। इमकहिनरेसभु
टनउचितहयनहंकिसम्मुहहलिय। नीरद
उदीचिदिसतेंमनहुंचंडपवनदक्खिनचलिय
॥ ३४ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूरस्व [illegible]

लिखायने नवमराशौ बुधसिंहचरित्रे त्रयोद
शो मयूख: ॥ १३ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥
॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

नराचम् ॥ उठाय जंग यौं तुरंग बुद्धसिंह उप्पलो
। पचीद जाक हक्कहाक बीरबाक बित्थर्यो । म
हाग धीर धीरबीर नीर छीर ज्यौं मिले । हमल्लको
कमु खिलोक खंदखंड ह्वै खिले ॥ १ ॥ कनंकि
तंति सिंधवी अलाप रागफुक्कयो । रनं किजी
नपक्खरी नपौंन गौंन रुक्कयो ॥ खनंकि धार
ह्वैप्रहार अंग अंग उल्लटैं । सनंकि स्वास सेस की
फनालि फुक्करैं फटैं ॥ २ ॥ छनं किबान लैउ
डान आसमान छक्कयो । दनं किधं दजंग जोम
नाग तोम नक्कयो ॥ तनं किरच्च रंच तैं सलंच्च चा
पटंकरैं । मनं किपच्छ धारि भच्छ गिद्धनी करप्फ
रैं ॥ ३ ॥ ख्याली मली छपान सान सुद्धराव बुद्ध

की॥ अरीनजुद्धकीउमंगराजरंगरुद्दकी॥ म
च्छो अनीकसंभरीकआजमीकअंगच्छो। च
लैंकुचक्क भोगिभोगभोगपैंभच्छोभच्छो॥ ४॥
ऋहारखग्गधारमारलुत्थिलुत्थिपैंपरें। बिरें
बितंडगंडरुंडखंडखंडह्वैररैं॥ दिसा दिसान
मैंकृपानबिज्जुमाननिक्कसी। भिरेंगरूरपूर
सूरपिक्खिकूरकुक्कसी॥ ५॥ सुबाजिसोक
ओकओकभीरुलोकमग्गये। लरैंनिघातस
स्त्रपातइक्करीठलग्गये॥ रुरैंसरुंडगेंडुरुंडकं
धबंधतेंकटैं। अटैंसुरुंडगोलकुंडफाटिमुंड
उच्छटैं॥ ६॥ छिकेंबिछेकबानकेंपलान
हानबित्थरें। गिरेंउलहिसूरपिक्खिकूरकूर
रुग्गरें॥ जमातिजुग्गिनीनकीपिवंतपेयप
त्तकें। किलक्किबीरबावनीफिरेंअमत्तरत्तकें
॥ ७॥ चलैंसमग्गखग्गकेकटारपारनिक्क

सैं। सुबीर सीस संचयी गिरीस कुल्ल सैं हसैं॥
दरारि बारि जंत्र ज्यौं छुलक्कि धाय उब्बकैं।
अनीक नारि के छइल्ल छोह छाक मैं छकैं॥
८॥ दुरैं बिमान मुक्कि दान कुक्कि रुक्कि
केसरी। बजंत हेति हेति कैं मनो कि दंड च
क्री। जरैं बितंड पिट्ठि झंड अद्रि कूट ताल
ज्यौं। बृहंत रत्न खाल के बिसाल ताल नाल
ज्यौं॥ ९॥ सिलग्गि सोर ओर ओर ज्वा
ल जोर संचर्‌यौं। भयो निसान ध्वान जो दि
सा दिसान मैं भर्‌यौं॥ पिधाय भानु रेनु को बि
तान व्योम बित्थर्‌यो। लखै परै न अप्प पार
अंधकार यौं भर्‌यो॥ १०॥ चलज्जलीम
लीह सेन आज मीर खलब्भली। कलक्कली
किलक्क झाल ज्वाल की झलज्झली॥ गिलं
तमूह गिद्धनी फिकारि फिक्करी फिरैं। रिव

गेकुवकंजनपुंजलसात ॥ १४ ॥ भज्योससि
भीरुकभालहिं छोरि। रहैं रजलेतसुधासव
चोरि ॥ अकंजसकंजभयेइमईस। समात
नसादभयोभरसीस ॥ १५ ॥ महानदयोंल
हिखेदसमाज। निमीललनैंनसमाधिकव्या
ज ॥ जलंधरबंन्धितचंडियञ्ञग्ग। लखैंधव
संकिमहाभयलग्ग ॥ १६ ॥ भयोयहविग्र
हसंकरभौंन। गिरैंपृतनाइतगोलनगौंन ॥
थरत्थरभुम्मिजथाजलथाल। बन्योंरनलोप
नयों बिकराल ॥ १७ ॥ सिलग्गहिंतग्गहिं
गज्जहिंसोर। लरज्जहिं बज्जहिंसिंधुहिलोर
॥ भजैंगजसंगरलंगरतोरि। महाउतराउतल
वतमोरि ॥ १८ ॥ दिसाबिदिसाजगिजार
तज्वाल। मनोंकुकुउज्जदसैंधनमाल। चलैं
उडिसोरसिखाचमकात। परैंजिमभद्दवलि

पनइतदग्गिय। उड्डत पिक्खि अनीकिला यसत्रुनउरलग्गिय। आजमगजआरूढ हुतोनिजकटक हरोली॥ गैलीलगिलैगय उपरिदलमध्यप्रतोली॥ इमतोपजनकआ जमउडत निजदललखिखरभरनयो। दीला खबरवसतस सुलहुसहहूंहै नायकहरवलभयो ॥ २५ ॥ आजमसुतइमकहियमरनमंगल भटसंगर। करहुसोकजिनबीरधरहुपायनल जलंगर। इमबिसासिसबसेनआगठहुंआ जमसुत॥ गतिअंगदपयगहिमरनमंड्योज नूंनजुत। दै पुनिनिदेसतोपनदगन नृपनबा बहलकारिसब। दीलारबरवससज्ज्योहुजन गुमरटेकमंडलगजब॥ २६ ॥ दतियापति राउत्तनामदलपतिबुंदेलह। नरउरपतिग जसिंह बंस कछवाह समेलह। रामसिंहच

कुंवानअनयआकरकोटापति ॥ लगिबुंदि
अथरलोयगिनतभोरोनकालगति ॥ सचिव
हठतेनआजमसुवनगजारूढहरवल्लगहि।
तनमंत्रअबहिंआजमउड्योसुवनस्यासअ
नसेसरहि ॥ २७ ॥ इमआजमउड्डुतहिसुव
नछुंनदिसिंधुर। दगतलोपदुकुंओरउगत
वीरनरसअकुर। इहिंअंतरजयसिंहनगर
आमेरनरेसुर ॥ निजनकीबमुक्कालियबुद्ध
पतिमतिआतुर। गृहबिधिकहायप्रच्छन्नग
भीमपतुमएवलजवन। कुलस्वसुरटारि
ढकुकलहहोततोपसालकहवन ॥ २८ ॥ दो०॥
बुंदियपतियहसुनिबिनय। मतिउरपठ
यो ॥ घरअपनसंबंधधन। यहरनछडअपा
य ॥ २९ ॥ तातेंतुमसाहसतजकुं बयनयस
बिचारि ॥ अचकुबामदक्खिनबदलि।

लंतकंकस्थाररवग्गधारधारतैंरिवैरैं ॥ ११ ॥
उडैंदुम्भोरबीरयौंतुपक्कतोपत्यौंचलैं ॥ जरैं
दुकूलकेहठीहकारिसम्मुहेहलैं ॥ छिकेंबि
लंडकालखंडरवानसिद्धनीधसैं । गिरिंद्र
स्यामकीगुफामहामुनिंद्रज्यौंबसैं ॥ १२ ॥
सिलग्गिअग्गिकीसिखाचमंकिगेनलौं
चढैं । बिमानअच्छरीनकैंउछाहदाहयौं
बढैं ॥ उडैंअलातओकओककोकसोक
संकुलैं । खुलैंसमाधिईसकीधुतीदिगीस
कीडुलैं ॥ १३ ॥ उदीचिबातकेप्रपातसेन
आजमीचली । हरोलचंडबुद्धकीकरालकु
द्धकीहली ॥ डरातडक्कडिंडिमीडमंकिडा
किनीनकी ॥ १४ ॥ बिकत्तघत्तरत्तकीछ
छक्किछिछिउच्छलैं । चलैंकिजंगजाव
कीसिखाकिपावकीच्चलैं ॥ हबक्किधाय

नचैंडआंगिसाकिनीनाकिनीनकी ड्डिं३

नह्केककपोलभायउच्चौरैंपलहिकहिकेउल
हिङ्कूकाइक्कोपैंपरैं ॥ १५ ॥ दो० ॥ लरतमर
तन्खुँ दिससुभट। मिलिपयभत्तमिलाप ॥
कछुकछुतोपनदगनक्रम। धपतइक्कच्चसि
थाप ॥ १६ ॥ प०प० ॥ कोटापलिबारनबढा
यरसबीरच्चघायो। बरखलबाननबिंदुनिबि
डनीरदबानिच्चायो। सुंडिबीचइहिंसमय
धायगोलालगिग्रह्यो॥ इभपोगरउडिज्जा
तचकितच्चिक्कारिभजिचह्यो। गजभजतकु
द्दिरबीरगतिकाढ्ढिच्चसियदारुनकलह। ह
यमथ्थचरनडारतहलियपरनमंडिच्चतिको
पमह ॥ १७ ॥ त्रिभंगी ॥ कोटेसक्रपानी
चंडच्चलानीघेरघलानीसेनघटा। तंडैंर
च्चितालीज्जुग्गिनिज्जालीभूरिभटालीकरत
कटा ॥ कालीकिलकारैंबीरबकारैंचंडच्चिका

रैंकुंभिकौरें। अतिपानइसारें बोधबिसारें
मुंडनमारें प्रेतपरें॥ १८ ॥ असवारउल
हैं कंकटकहैं पूरपलहैं सूरसजैं। पन्नगफन
फट्टैं अवनिउछट्टैं बंबबिकट्टैं त्रंबबजैं॥
बुंदीपतिबारी कालकरारी तेगदुधारी बेग
चली। कोटेसअबाहन उग्रउछाहन मंडि
महारनबीरबली॥ १९ ॥ गिद्धीगहिअंती
अब्भउडंती झोकझिलंती चंगनिभा। सूरम
सिरछायारचनरचाया बेसबनायाछत्रबि
भा॥ सुंडिनभरिफुंकैं भैरवभुंकैं चोसट्ठिचुंकैं
नच्चनसा। हल्लीसकमंडैं तालिनतंडैं खाय
अखंडैं बीरबसा॥ २० ॥ गद्दगद्दबढ्ढिबानी
भटनभयानी धारधपानी मारमचैं। ढ्ढालन
लगिढल्लरिके असिकल्लरिरावसुझल्लरिभा
वरचैं॥ कटिहड्डुकरक्कैं पिप्फपरक्कैं तेकतरक्कैं

राकउडैं।चोटनअसिचंडैं खंडैं खंडैं छोरि बि
तंडैं गिरतगुडैं॥ २१॥ बिनुमत्थहु बाहे सं
भुसिराहे चंडियचाहे उड्डिअपैं।डोलैं गजडा
रे कुट्टिनगारे पत्थहठारे बत्थपरैं॥ गजदंत
उपारैं कोपकरारैं मीरनमारैं बीरबढे।कटि
धारकृपाननगातसुगानन बीरबिमाननके
कढे॥ २२॥ जुम्मिजिजंग्गजंपैं कातर
कंपैं बाजि बिजंपैं बेगबली।लुत्थिनभुवछा
यैं बीरबढावैं मिज्जुनमावैं छोहछली॥कोटे
सबिनों हय छंडि महागयरुट्टि बडेरथरारिरू
प्यो।गजबाजिगहम्महकूहकेहकोह त्रंबक्र
हम्महलोकलुप्यो॥ २३॥ दो०॥ कोटाप
ति किलकतपरयो।आलमदलसिर आय
॥करिसुसंध चंडासिकुल।तुट्यो आसिन आ
याय॥ २४॥ षं०प०॥ तजिमतंगभुवकु-

द्दिकड्डि असिवरथकिकुप्यो। नटमलंगनटि
अंगरंग अंगदजिमरुप्यो। रतनभोजरविम
ल्लमग्गउज्जलकरिमानी॥ तिलतिलआर
नतुट्टिभये अमरनआवानी। पैंतीसब
ससिखवत भकटधारततदपिनधर्मधर।
चंडासिबंसरनभजिचलननन लिक्खौपि
क्खोनिडर॥ २५ ॥ चक्ख्योकछुचिल्ह
निनकछुक गिद्धिननिजकिन्नौं। कछुकल
ह्योबिसकंठकछुककालियलगिलिन्नौं।
खायकछुकरिवत्तालडमरुधरितालड
ल्यो॥ भरिवजुग्गिनिकछुभागबकुतअ
नुरागबढ्यो। अटिअटिहड्डुफगुन
उप्पमकटिफटिफोजनउप्फन्यौं। कोसल
रेसकटिकटिअसिनबटिबटिबद्दुपोल
कबन्यौं॥ २६ ॥ दो० ॥ कोटापति

भौंह फद क्कत। उत्तमग कहुं उडत गहत हर उडुमोद गत। कालखंज कहुं कटत बुद्धि बुक्क न कहुं बुट्टत॥ कहुं फुल्लत हिय कंज मधुपमा नस उडि उट्टुल। करपय बिभिन्न तरफलक कुंकमन कुं मीन जल तुच्छ मत। दीदारबख सबुधसिंह द्दुव रसिक प्रानबाजियरमत॥ ६ ॥ रुहिर रंग बढिब हत छेद छत्तिय पिचकारिन। डफ मद्दल डिंडिमिय तानमं डत सिव तारिन। पातगुस्ज पुट्ट लिय पुह पत्र शृंगार प्रकासत॥ खग्ग रखग्ग मिलि रव रतबूर अब्बीर बिभासत। जुग्गिनि जमाति पन नारि जिम आलापन रुकि उच्चरत। दीदारबख्स बुधसिंह दुव कलह फग्ग कौतुक करत॥ ७ ॥ पक्कमि छत्र कटि परत जरत चामर ज्वालानल। बरत बीर अच्छ

रियझरतहेतिनकृसानुझल।कोसनक
लहदुरंतबाढअसिबरइकबज्जत॥ब
ढुनिषंगबिकवरतचापतुट्टतसरसज्जत
।तरफंतप्रमत्तहिंदुवतुरकआलमदल
जालमजम्यों।नवबयरिवल्हारबुंदिय
नृपतिआजमसुतबढिअंगम्यों॥ ८ ॥
॥ तोटकम् ॥ धरसंगरआजमपुत्तध
कयो।पाजउप्परलोहनछाकछकयो॥द
तियापतिआदिकरीनचढे।बकुअग्गप्र
वीरउमीरबढे॥ ९ ॥ रसघोरनिसानन
ज्वालरच्यो।बिदिसानदिसानकृसानुम
च्यो॥ मिलिसूरझरैंपरपैनमुरैं।जिमतक्कि
यसाट्टियबादजुरैं॥ १० ॥ खगधारनधा
रसभारिवरैं।फलभोजनचोसठिसंगफि
रैं॥ नटकेबटकैभटकेलटके।झटकेनझरैं

बटकेबटके ॥ ११ ॥ किलकारतभैकरि
भूतमिलैं । हलकारतखिच्चरपालखिलैं ॥
उमडेअसिबिज्जुवअंकनसे । घुमडेदल
भद्दवकेघनसे ॥ १२ ॥ गहिभैरवनर्त्तक
कीगतिकौं । मिलिबंचतकालियकीमति
कौं ॥ करितुंडसतुंडसुसुंडकसैं । । बनिआ
खुगसंकरअंकबसैं ॥ १३ ॥ सुतजानिप्रचं
बनईससजैं । भयधारितबैंकिलकारिभजैं
॥ छहजोजनफोजनभुम्मिछई । अतिपाउ
सज्जानिघटाउनई ॥ १४ ॥ पवमानदिगुत्त
रकोप्रसम्यो । सुमनोंघनपोसकहोयसम्यो ॥
चहुंघांतरवारिनकीचमकैं । तिदिपैंमनुबि
ज्जुवकीदमकैं ॥ १५ ॥ मिलिभूरवनओ
जइरम्मदलौं । लगिसिंजितदद्दुरकेनदलौं ॥
बकुरंडसुरोहितचापबनैं । तनितारवदुंदु

मिढोलतनैं ॥ १६ ॥ करकावलिहड्डुनखं
डकैं । फटिटोपउडेबकपंतिफिरैं ॥ चमकैं
जोड्डसिरगलौंचिनगी । उदसोनितबुद्धिफ
रैंउमगी ॥ १७ ॥ रनजाजवपाउसयौंबिर
च्यो । मुगलानचुलालनदावमच्यो ॥ भटख
ग्गानकेकटिमुंडिभ्रमैं । अहिज्यौंजनमेजय
अध्वरमैं ॥ १८ ॥ करकैंकटकावलिकोच
कटैं । फरकैंकटिकालिकबक्षफटैं ॥
खरिनहड्डुलुटैं । छरकैंछितिछिंछिनरत्त
छुटैं ॥ १९ ॥ लटकैंअसवारतुखारलरैं ।
पटकैंगहिइक्कहिंइक्कपरैं ॥ चटकैंकटिटो
पनकीन्चटकैं । छुटकैंभटबाजिनलोहुलकैं
॥ २० ॥ गटकैंपलगिद्धनिभूतगिलैं । खट
कैंअसिसुप्पारिखंडखिलैं ॥ भटकैंकिरका
ननपायअरे । भटकैंभटगज्जहिंछोहभरे ॥

॥ २१ ॥ लगि कोसन जंगन की लरसैं। बर खानर अंगन की बरसैं ॥ सननंकत भोथन भानसरैं। भननंकत आयुध अग्गि भरैं। ॥२२ तननंकत ते गन की तरकैं। थरकैं रननंकत लो हथकैं ॥ रन होत मुहूरत भान रह्यो। बल तें बल लोह सुमार बह्यो ॥ २३ ॥ दो० ॥ बल बल लोह सुमार बहि। घोर मचिग घमसान ॥ आजम सुत अधार भो। चंड किरन चकुवान ॥ २४ ॥ ष०प० ॥ घटिय दोय रबि रहत प्रथित आजम सुत पिल्ल्यो। नर उरद तिय अनूप तिय गनि हरवल दल ढिल्ल्यो। कुक्क परिग चक्कु को दटुक्क टुक्कन दल तुट्टत। कूरन मोह कुल सच्छोह सूरन असुछुट्टत। निज साह भाग रन रीति नव प्रबल नीति फल पक्कयो। बुंदियन रेस पावक बिसम तून आजम दल तक्कयो।

॥ २५ ॥ मुक्तादाम ॥ घटानिभफोजनभो
घमसान । उलैं जवनेसइतैं चकुवान ॥ बजैं
असिहडुन अड्डु बिदारि । किधौं तरु कट्टहिं
कूरकुठारि ॥ २६ ॥ अस्योदतियापतिसम्मु
हआय । पर्यो झरि बीर लयो फल पाय ॥ रुप्यो
गजसिंह कुकूरमराज । सज्यो कुलहड्डुन कोसि
रताज ॥ २७ ॥ बढी बुध भूपतिकी हत बाह
कटे भट ओर भज्यो कछवाह ॥ धरा नभ संगर
संकुलि धुंधि । लयो नृप आजमको सुत रुंधि
॥ २८ ॥ रुपे इम जाजव द्वै दलरारि । झरैं अ
सि झल्लरि लौं झन कारि ॥ महा नट नच्चत मुंड
न मोह । करैं किलकारल कालिय कोह ॥ २९
॥ रुकैं बिहसैं चउसट्ठि न छुंड । रचैं असिवार
नचैं बहु रुंड ॥ अरैं इकतैं इक बत्थन आय ।
परैं गजन पक्खय ज्यौं पबिपाय ॥ ३० ॥ थरत्थर

भुम्मि चलच्चलथान। लग्यो अहिभोगनकौं
लचकाम ॥ कुलालकचक्रभयोभ्रमिकच्छ
। बरक्कृतसूक्कदड्डुबिलच्छ ॥ ३१ ॥ लगे
अतलादिककंपनलोक। इतैंअकुलातत्रि
बिष्टपओक ॥ रमैंपलचारकुआरुनरंग। स
बैइनसूचतसो निजसंग ॥ ३२ ॥ चढ्योगज
आजमपुत्तसचाव। धप्योनृपसम्मुहउद्धत
धाव ॥ कमाननकैं चलकाननकानि। तजे
इमआरलबाननतानि ॥ ३३ ॥ लगैंसरख
त्तिलकूँइमलीन। मनों बिलसप्पकिसंबर
मीन। सजैंबजिपन्नगसायकसोक। उडैंस
लभाजिमअंबरओक ॥ ३४ ॥ चलैंअसि
कुंतबरच्छिनचोट। असूरदुरैंबकुहत्थिन
ओट। उडैंबकुअंबरअग्गिअलात। जरी
गिरिगिद्धनिचिल्हनिजात ॥ ३५ ॥ फिरैं

रन्धिफेरव फेरनफाल। बिबुल्लत कंकउडैं बि
कराल ॥ कमान फटैं रुहैं कमनैत। पलान
कटैं उलटैं परवैत ॥ ३६ ॥ हरैं कहुँ मानल
रैं कहुँ हक्कि। जरैं कहुँ मुच्छ परैं कहुँ जक्कि॥
बरैं कहुँ हूर फरैं कहुँ बाढ। गिरैं कहुँ भीत धरैं क
हुँ गाढ ॥ ३७ ॥ रुलैं कहुँ मत्त खुलैं कहुँ रो
स। फुलैं कहुँ हत्थि डुलैं कहुँ होस ॥ बकैं कहुँ
प्रेत छकैं कहुँ बीर। धकैं कहुँ ज्वाल हकैं कहुँ
धीर ॥ ३८ ॥ चढैं कहुँ बाजि बढैं कहुँ चाव।
पढैं कहुँ बंदि कढैं कहुँ पाव ॥ धमैं कहुँ स्वास
नमैं कहुँ धूल। भ्रमैं कहुँ गिद्ध रमैं कहुँ भूत ॥
३९ ॥ मचैं कहुँ रीठ जचैं कहुँ मुंड। रचैं कहुँ
सामन नचैं कहुँ रुंड ॥ बजैं कहुँ प्रोथ सजैं कहुँ
लाह। लजैं कहुँ भीत भजैं कहुँ लाह ॥ ४० ॥
खसैं कहुँ घुम्मि हसैं भटमग। त्रसैं कहुँ रोय

कसैं कडुं तंग ॥ चटैं कडुं सोनघटैं कडुं चेत। हटैं कडुं पिक्खिवरटैं कडुंहेत॥ ४१॥ बहैं कडुं संगिरहैंकडुं बेर। खहैं कडुं भिटिच्चहैं कडुं खेर॥ चबैं कडुं उट्टफबैं कडुं चोट। अबैं कडुं मिच्छदबैं कडुं ओट॥ ४२॥ झिलैं कडुं वार खिलैं कडुं झुम्मि। भिलैं कडुं घुम्मिमिलैं कडुं भुम्मि॥ लगैं कडुं मोहबगैं कडुं लोह। दगैं कडुं तोपजगैं कडुं द्रोह॥ ४३॥ गिनैं कडुं घायबनैं कडुं गाय। हनैं कडुं दोरिभनैं कडुं हाय॥ चिपैं कडुं सोन लिपैं कडुं चेल। छिपैं कडुं भज्जिदिपैं कडुं छेल॥ ४४॥ तनंकत चापप्रतंचन तुट्टि। खनंकत खग्ग सुमुट्ठिन खुट्टि॥ सनंकत बानन प्रानन संकि। झनंकत पक्खररोचिझमंकि॥ ४५॥ बढैपणवानकन द्विहद। महाबलबुद्धरच्योअवमद्द॥

परयो अरिसेन उपक्रम पूर। सज्यो इम संभर पुं
बस्तर ॥ ५६ ॥ थेइ त्थेइ नच्च हिं उद्दिक बंध
। मलप्प हिं दै करताल मदंध ॥ निसा दिन जा
दिन हिन्न अनंत। भिरैं गज तैं गज मत्त अमंत
॥ ५७ ॥ अटै बकुवी लिबिना असवार। उल
हहिं खुट्टहिं जीन अपार ॥ गिरैं द्रुम पाल क
दारित गात्त। भनौं तरु लैं कपि निंद प्रमत्त ॥
५८ ॥ पता किन होत सदंड प्रपात। बडे तरु
ताल सको सकि बात ॥ किरैं बकु मस्त कल
स्तकक्काहि। गिरैं पुन तुट्टि फिरैं धनु फाहि ॥ ५९
॥ खवैं बिखवैं सरछोरि निखंग। जथा
बकु भीम भुजंग ॥ इ लीअ सिधे तुनद्धि अ
पार। किधौं मलयाचल नाग कुमार ॥ ६० ॥
लहैं परिवालन कुंल सवेग। त्रिसी सकि संमि
रहहि सलेग ॥ अरैं कति अम्बन मंडि निसु

द्ध। करैं तुमुलाहवके भट क्रुद्ध ॥ ५१ ॥ परैं फ
टि दुंदुभिभेरिनपूर। गरज्जहिं केनरमंडिगरूर
॥ परैं फरिबग्गकबीरुपलान। कटैं खुरप्रोथहृ
यच्छटकान ॥ ५२ ॥ रची इमसंभरजाजदरा
रि। हनी अरिसेनघनी हलकारि ॥ घटागज
मध्यसुदे घनघाय। लयो नृप आजमपुत्त नि
राय ॥ ५३ ॥ भयो जबही असु आजमभंग
। सबै नृपतत्थ टरे तजि संग ॥ भज्यो इक भूप
रुद्दै हनि भिंटि। लयो अब आजमको सुत बिं
टि ॥ ५४ ॥ चढ्यो गज हो अब हारि बिचारि
। रची सुत आजम बाननरारि ॥ सुसंभर हे
लि सबै बरसाय। दयो अरि निब्बल पारि दबा
य ॥ ५५ ॥ कुती हयलकवचमू हमगीर। भ
यो अवसानन इक्क कुभीर ॥ रच्यो जिहिं बि
ग्रह भुग्गनराज। बचैं वह तिन्नि रिक्यों लहि

बाज ॥ ५६ ॥ फित्तूर दपै करि मंडल फेरि। घ
नी निज सेन लयो गज घेरि॥ कियो तउ बानन
जंग कराल। कहाँलग जोर करैं लहि काल ॥५७
अधर्म न होत सहायक अंत। लगे बुध आयुध
सर्व सिलंत ॥ भयो सुल आजम मोहि बिभान
। चल्यो समलंग हिलै चकुवान ॥ ५८ ॥ दो० ॥
घटिय इक्क खिलर बिरहल। घल्लिय संभर घत्त॥
आजम सुत इभपाल सह। मोहित भय उप्रमत्त
॥ ५९ ॥ इभ समेत लै तिहिं अधिप। उमडि सु
कासन आय॥ साह बहादुर ढिग सजव। पत्र बि
जय पठवाय ॥ ६० ॥ सरिता इक ढिग सजत
हो। सफरन बडिस सिकार ॥ आयो डेरन बि
जय सुनि। कहत बुइ जयकार ॥ ६१ ॥ इति
श्री वंशभास्करे महाचंपू स्वरूपे दक्षिणायनेन
बलराशो बुधसिंह चरित्रे पंचदशो १५ मयूख:

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥
७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

दो०॥ आजम दलअबलग बज्यो। पृथक
लोभगतिपाय॥ अबटरि टरिसबउत्तरे आल
मदलबिचआय॥ १ ॥ष०प०॥ चरमाच
लरबिन्चढतन्चिलप्रमुदितनिसचारन। आ
जमसुततजिमोहबक्करिबुल्ल्योथितबारन।
कोजित्त्योदलकोनसुसुनिइनकहियकुसी
लित॥ जित्त्योआलमसाहकटकवाकोतुम
कीलित। दीदारबरवसयहसुनिदुचितहोइ।
सोंसिरहनिमरिय। अतिलोहछकितइभपाल
हू। परिभ्रमत्तअसुपरहरिय॥ २ ॥दो० ॥
जिहिंउप्परआजमसुवन। मरिगफोरिउलमं
ग॥ बारनवहसोनितबमत। आयुधभेदितअं
ग ॥ ३ ॥ आजमसुतमृतसुनिअधिप।इभ

सु सम्हारिय आनि ॥ कोटिइक्क जेवर कढिय। पृथक सु धरिय प्रमानि ॥ ४ ॥ खचर भेजि निज साह ढिग। कथ सब बिदित कहाय॥ आ जम सुत गत असु भयो। प्रभु अप्पन जय पाय ॥ ५ ॥ कोटि इक्क जेवर कढ्यो। सो थित फौ ल समेत ॥ आय सबसि प्रात कि अब हि। आऊं सकल समेत ॥ ६ ॥ ष०प० ॥ सुनि बुद्धि दित साह खास निज दास खिनायो। मंडि बिबिध अनुहारि कथित अति नम्र कहायो। बल तेरे बुंदीस उमंडि आजम पर आये ॥ काब ल जैतें कहिय बैन करि सत्य बताये। अब प रियरन्नि तुम अमित अति बपु बिसल्य करि बिधि बिहित। सेना सम्हारि मंडहु सयन। आवहु मात नरेस इत ॥ ७ ॥ दो० ॥ तब यह सु निसन्नाह तजि। निज बपु सल्य निकारि ॥

कियाविधानभिसकनकथित। सबदलप्रथमस
म्हारि॥ ८ ॥क्रमसबसायंकृत्यकरि। संभरसंडि
यसैन॥भीर्सानिसाआगमभयो। इहिंअनरतिहिं
अैंन॥ ९ ॥ तोटकम् ॥ छपिभानुछपासुजि
हानभई। मिलिकंजबिरंजकुसोकमई॥ बि
बुधालयझल्लरिघंटबजे। सुरभौनसबन्धनमे
नसजे ॥ १० ॥ दिनमूकनघूकनहूकदई। चि
तचक्कनचौंकितजोचकई॥ चिलकारिनपि
गलिकाचहकी। निधिसीनिसचारनधारनकी
॥ ११ ॥ लकुंओरनचोरनचायचढे। बकुजारन
दारलमोदबढे॥ दिनचारभयारअगारदुरे। कहि
व्योमनछत्रनचित्रफुरे॥ १२ ॥ जुरदीपनिवा
सनभासजगी। दहनोदयचुल्लिनहेलिदगी॥
रचिगायकगोरियगानरहे। गनिकानउमंगनि
जंगगहे॥ १३॥ रसपीयस्वकीयनतीयउमंग

कीयनतीयनपीयतजे ॥ भयमुद्दनवोढनचि
तभरयो। हियहच्छयमध्यनबोधहरयो ॥ १४
॥ लसिप्रोढनकेलित्रपाबिसरी। कुधधारित्र
धीरनशारिकरी ॥ छमिआगसधीरननाहछले
। चहिचालबिदग्धनश्रावचले ॥ १५ ॥ रसमूलि
रहूलिनऊतिरची। वचमारिनलच्छितिका
नवची ॥ कुलटालजिगेहसनेहक्रमी। जिय
मैंमुदितानसुप्रीतिजमी ॥ १६ ॥ अनुपुब्बस
यानर्भातिभरी। पियसंगसहेटनभेटपरी ॥
परभोगदुखीनसखीपरखी। हियरूपरुप्रेमव
तीहरखी ॥ १७ ॥ पतिप्रोषितकानबिलाप
परयो। कुथमानसखंडितिकानकरयो ॥ दिनटे
रुनिबाहिअबेंद्दरिता। तजिमानउठीकलहं
तरिता ॥ १८ ॥ जगिबिप्रसलब्धनसोकझि
ल्यो। मनसेटसहेटनआनिमिल्यो ॥ उतकंठि

निपुच्छिनिदानअली। लखयोमगबासक
सज्जलली ॥ १९ ॥भरदर्पअधीनइनानभज्यो
।अभिसारिनिबेसनयोउपज्यो ॥बकुगंधकु
बेलनकोबिकस्यो।ससिहूबउदेगिरितैंनिक
स्यो ॥ २० ॥ससिकेबसिओषधिपोषलह्यो।ग
हकायचकोरनमोदगह्यो ॥भुवपैंइमहोतनिसी
थभयो।रसप्रेतनहासनयोरचयो ॥ २१ ॥थित
निदअजाब्यवहारथके। जिमसंजमइंद्रियजो
गिनके ॥गतियाभतिरत्तिसुबित्तिगई।भलब्र
ह्ममुहूरतबेरभई ॥ २२ ॥बिरुदारवबंदिनसो
बियर्यो।क्रमजग्गितहाँनृपनित्य कर्यो॥छ
कतैंकसिआयुधजोमछल्यो।चढिबाहरुसाह
हजूरचल्यो ॥ २३ ॥इतआगमप्रातलुभेअह
के।चटकीरचनायुधहूचहके ॥दिकप्राच्चिय
आरुनरंगदिपी।लगिअंबरभुम्मिसुरोचिलि

पी ॥ २४ ॥ लघुदिट्ठिन छत्रननिट्ठिलहैं। चि
तज्यौंतजिभोगनज्ञानचहैं॥ भजिकैंतम॰
गुफानभयो। जिमतल्वलहैंग्रहदंदजयो॥
२५ ॥ दुतिपूरजरूरइतैंदमक्यो। चढिअक्क
दें॰ ँचमक्यो॥ छकमैंतिंहिंबेरनरेसछ
यो। गतिअर्जुनसाहसमीपगयो॥ २६ ॥ दो०
॥ साहबहादुर तिंहिंसमय। बेगेआसबना
य ॥ नगरिनिछावरिलेतनिज। परिकरलैंन
सपाय ॥ २७ ॥ सुनिआगमबुंदीसको। दारू
अटाचढिदेखि ॥ प्रमुदितआयो तर त
। लोअबिजयहियलेखि ॥ २८ ॥ मनोहरम्
रतिमैंनेरसआयअंदरप्रवेसहोत । उअ डल
कीवकीनीसूदनाअक्रतीहै। जायकरिन
रिनिछावरिमिसललेत निकटबुलायसाह
बरवसीलिमृतीहै ॥ दोऊहाथहियलौंलगायसु

सिकाय कह्यो मरदबलीतैं रारवी खूब मजबूती
हे दिल्लीपुरगादीमैं लहीजोय हबादीबीरमहा
रावराजा रावरीसपूतीहे ॥ २९ ॥ पादाकुलक
म् ॥ महारावराजा इम अक्ख्यो भूपहिं छिनक
लाय हियरक्ख्यो ॥ पुनि बरवसीस करी दिल्लिय
पति । राम नृपति बहुसुनक्कुरक्खिरति ॥ ३० ॥
कोटादिक चोखनगढ दीनें । कहतनाम जे सबह
म चीनें ॥ कोटा बक्कुरि झल्लरापट्टनि । गागरोनि
तीजो तुम मनमनि ॥ ३१ ॥ साहाबादसेरगढ था
नक । अरु बडोद चेचत अभिधानक ॥ छबडा
अरु गूगोर दुर्गबर । पंचपहाड पडावडग नगर ॥
३२ ॥ मधुकरगढ केथोन प्रमानहु । रेबट अंत
रारंड बखानहु ॥ मांगरोल बारौं बैदुबलर । अं
ता अरु कनवास सुभगधर ॥ ३३ ॥ गढ मुकुंद
दीगोद रु अनता । रामगढ सु कुंजेड़ नानता ॥

आटोनीसाँगोदअल्यावा। भीलबातचाचरनि

बधावा॥ ३४ ॥ सीसवालिघाटीघाटोली। खे

राबादमऊगलजोली॥ नरसंगढकोकिलपुर

ल्योंवर। बासथौंणमोहीसुवफावर॥ ३५ ॥से

रगढरुछौंपाबडोदसह। देवीखेटरींछवाअरिद

ह॥ पर्णवाटिगागरिटलाई। अठरोईरुवका

रिआई॥ ३६ ॥ खातारवेरीबक्कुरिबखानकु।

मालतोरुमारैलोमानकु॥ काकुरनीकूंडीरुरवा

नपुर। रामपुदियआसन्यआनिउर॥ ३७ ॥

साहसिकखंडेसलदिल्लीजब। बिन्नतिनृपकर

जोरिकरीतब॥ कूरमनृपजयसिंहहरामिय।

पैसेवकभंगीलसजामिय॥ ३८ ॥ तातेलिं

हिंसंबंधअरजयह। आजमदोसआहिजरव

सीलह॥ जोआलसातिहिंढिगलोजाऊँ। सेव

कतारिअपमनसमुजाऊँ॥ ३९ ॥ सुनियहअ

रजसाहकछुप्रकवैं।तवसंबंधमहरहमरक्वैं
॥पुरप्रामेरसुतोफिरिपावहु।प्रबतवसंगस
लैंढिगप्रावहु॥ ४० ॥यहसुनिनृपकूरम
ढिगप्रायो।प्रदरघायसिक्कतवहपायो॥
तीरएकनुजसब्बलग्यो।तस।जाजवरनइक
कंठलहनजस॥ ४१ ॥सोजसभयोबुद्धसरना
गत।छकिकूरमपायेकेवलछत॥तिनसिक्क
तजायरुनृपतक्क्यो।करिमनुहारिमोदहियछ
क्यो॥ ४२ ॥कहीबहुरिनृपनेहकहाई।प्रा
जमबसिप्रामेरबिहाई॥प्रालमसेबाप्रब
हिप्राराधहु।स्वरूपजोरदुल्लभसुखसाधहु॥
॥ ४३ ॥डेराप्रबप्रालमदलमंडहु।रखमिक
छुदिननबिपतिदुखखंडहु॥कूरमकोंलेसं
गयहेकहि।चाहुवाननिजदलप्रायोचहि॥
४४ ॥प्रप्पनढिगकछवाहउतारे।सालक

जासिपबिनसुसम्हारे ॥ बिधिइहिंकदनअ्
पूरबकिन्यो । जाजवरनकुलमनृपजिन्यो ॥
६५ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूउत्तरायणे द
क्षिणायनेनवमराशौ बुधसिंहचरित्रे षोडशो
१६ मयूखः ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥
॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥
ष०प० ॥ भरतसाहअवसांमअसंडियरट्ठो
रत । अलनसाहअवनीसमूढतससुतममा
दअल । इहिंअंतरयहपिक्खिआनिबंभन
शृंगारसन ॥ पट्टतरवतजोधपुरनृपहिंरकव
कुनिसंकमन । यह मिसलअवुउपजायउर
छिजग्गहतैंतबआनिदुत । नृपअजितसिंह
दकल्योतरवतसबनतत्थजसवंतसुत ॥ १
॥ दो० ॥ इतआलमहिबिजयअरु । अम्रप
नसत्यप्रमानि ॥ मृतजरवमिलआजमभट

न। नृपनहरामीजानि ॥ २ ॥ इहिंअंतरमरु
धरखबरि। पहुँचीबिबिधपुकारि। रट्ठोर
नजसवंतसुव। दयोतरवतबैठारि ॥ ३ ॥
ष० प० ॥ यहसुनिआलमसाहकहरहिंदुन
परकुप्यो। प्रलयरुद्रजिमप्रबललज्जधीर
जसबलुप्यो। दियआयसलिहिंबेरनगर
आमेरुनरउर ॥ कोटापत्तनबद्धरिपुरीदति
यारुजोधपुर। आमेरआदिचउराज्ययेआ
जमदोरखउतारिलिय। रट्ठोरहुकमबाहिरर
हतधन्वसीसअमरखधकिय ॥ ४ ॥समर
जित्तियहसाहरहियचउमासभुसावर। इसद
सपीअबदालअनखिमारवधरउप्पर। पीर
नजारतिकरनबुझ्झिअजमेरबहानौं ॥ करि
फौजनदरकुंचआयआमेररहानौं ॥ बुधसिं
हहितुजयसिंहतबकहियएहपारनयसमय

।इतसाहसंगअनवधिगमन बहिनिभईइत उचितबय ॥ ५ ॥ दो० ॥ साहजेरकरिजोधपुर। करिहैंदाकिवतजेर॥ वेगनपुनिआवनबनें। ब्याहनकोयहबेर॥ ६ ॥ लग्गीहमरीरवालसे। रजधानीरनरोस ॥ अंतहपुरसामोदगह। रक्ख्योभटनभरोस॥ ७ ॥ तातेंद्वैदिनसिक्खले। बहिनीलेकुबिबाहि ॥ संगहिऐहैंसाहहिंग। चित्तबकुरिभुवचाहि ॥ ८ ॥ बुंदियपतियहसुनिकहिय। सुनकुअरसजमसाह ॥ मुलतानकुसंबंधभो। जानतज्यानपनाह ॥ ९ ॥ कूरमनृपयातैंकहत। सहरनिकटसामोद ॥ द्वैदिनअंतरलगनहे। बिरचकुब्याहबिनोद ॥ १० ॥ तातैंजोआयसलहौंआऊंकरिउदबाह ॥ द्वैदिनकीयहसुनिमुदित। सिक्खदईतबसाह ॥ ११ ॥ संभरकूरमसि

कवलै। आयेदुकुंसामोद॥ बनिदुल्लहबुध
सिंहनृप। सद्दिलगनसबिनोद॥ १२ ॥जासि
बडीजयसिंहकी। अमरकुमरि अभिधान॥
बुंदियपति हियहितबिरचि। ब्याही बिहित
बिधान॥ १३ ॥ इतआलमअजमेरपुर। ध
कुंच्योगजबगरूर ॥बुंदियपतिआमेरपति
। आयेबहुरिहजूर॥ १४ ॥ छं॰ प॰॥ इम
आलम अजमेरआयपूजनपीरनकरि। र
चिमारुनपररीसहल्योदरकुंचअलसहरि।
अजितसिंहसुनिएहलमितमरुदेसनरेसुर
॥बेगआयकरबंधिपर्योपायनअल्हनपुर
। इमसाहधन्नकियनिजअमलसत्थरविरज
सवंतसुव। उप्परिउफानसागरउपमदक्खि
नपरगज्ज्योगरुव॥ १५ ॥ रहिकछु दिनअ
जमेरसज्जिसंभरसेनापति। दक्खिनपरदर

मभुहय हत्थियपठये कुलसि। मिलवाय हमहिं
यहभेट अव त्रिदित निंदक्कु समय बासि ॥ १९
॥ दो० ॥ सुनि संभर तिन्ह संगले। जवनईस
ढिग जाय ॥ मिलवायेदसत्रह मित। कमसं
लाम करवाय ॥ २० ॥ सीसोदन अवरईस
बहिं। सुनि जु कहाई रान ॥ आलम अंगीका
र किय। सुनि संभट सनिदान ॥ २१ ॥ बुंदिय
पति करि सिक्ख तब। लेतिन्हडेरन आय ॥
नृप कूरम रट्ठोर हू। लिन्हे अभय बुलाय॥ २२
॥ अजितसिंह जयसिंह कों। इक संभर अव
लंब ॥ पुच्छियमंत्र नरेस प्रति। कहिकहि
निकदंब ॥ २३ ॥ प० प० ॥ बद्दकु मन्नबुंदी
स आय रुक्कत हम आतुर। लियउ कुप्पि अव
नेस छिन्नि आमेर जोधपुर। नहिं निबाहि अ
बसकत बिभव गज बाजि बिमन अति ॥ओ

तस्कर जिम साह ॥
। सुनिय ह नरेस अक्किवय उचित वासर कछु
धीरज बहहु । सेवन बढाय कछु
महीस निज निज गहहु ॥ २४ ॥
को कुक्कम साहदल मोंहिं सबन सिर । सीसो
दन यह पिक्खि जानि ज्ञामिप जग जाहिर ।
सुभट राउल देवसिंहह बेघम पति ॥ सभर
प्रति करजोरि बिहित अक्खिय यह ।
। करि नेह गेह पावन करहु मंजु बिबाहहु
मम । सुनिय ह नरेस स्वीकार किय सिक्ख
मंगिय साहसम ॥ २५ ॥ दो॰ ॥ दस
रकी सिक्ख दिय । साह बिहित सनमान ॥
अजितसिंह जयसिंहसौं । तबअ
कुवान ॥ २६ ॥ बेघम ब्याहन जात हम ।
तुमरहि साह समीप ॥ मनन गिनहु

महर।उरबिचारिअवनीप ॥ २७ ॥ष०प०
॥सुनिकूरमट्टोरदुकुनअकिवयसनेहसधि
।साहकितवकेसंगअबहुजैहैंरेवावधि।इहिं
अंतरकछुहोयततोरहिहैसंगतिसर।।नाहि
तोऐहैंमुररिआप्पकरियोकछुउप्पर।यहसु
निनरेसपुनिउच्चरियहउचितनतुमकों
अबहि।जोलौंबिजाहिंआऊंसजवतोलौंपु
निरकवकहितहि॥ २८ ॥दो०॥इमप्रबोधि
बुंदियअधिप।मनजयजुबनमच्च॥दसउर
तैंदरकुंचकरि।पुरबेधमदुतपत्त॥२९॥पुत्री
अनुपमसिंहकी।फूलकुमरिअभिधान।देव
भ्रातसबिनयदई।कुहहिंबिहितबिधान॥
३०॥बानतक्कमुनिइंक्क १७६५ सक्क।पु
स्सिममाधवमास॥चुंडावतिब्याहीचतुर।बुंदि
यपतिसबिलास॥ ३१ ॥इतिश्रीवंशभास्करे

महाचंपूस्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुध

सिंहचरित्रेसप्तदशो १७ मयूखः॥ ॥

॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

छ०प० ॥ चोखनगढजबसाहदयेजाजबरन
जिन्नत। कोटाहुतिनमाहिंनृपहिंदिन्नौंग्रि
विन्नत। जयउद्धतचक्कुवाननाँहिंसमन्निसमा
चारयो। आलनसुवलरिलैनप्रथमदलउतहि
हकारयो। कग्गरपठायलिखिअप्पकरवेग्रम
सनबुंदियनगर। कारिलेहुप्रथमकोटाअमल
भटसंचियसम्मालिसमरं॥ १०॥ यहकग्गरद्रुत
बंचिमंत्रमंडियइतबुंदिय। जोधराजपरधानव
निकलयहृद्धप्रपंचिय। धावरगंगारामसूरसु
भटनकुकातकरि। कोटाउप्परकटकवेगमंडि
यबीरनबरि। सुहकम्मबंसकनकेससुतजोगी

रामहिंमुख्यकिय। यहबीरधीरहड्डुमुउमंगि
चलिसम्हारिचतुरंगिनिय॥ २ ॥ दो०॥को
टापतिजाजबमर्‍यो। तासतनयनृपभीम॥
देसतरुनलैएहबल। सोनतजतनिजसीम॥
३॥ बालकृष्णनिजब्यासअरुफतेचंदकाय
त्थ॥ बुंदियपठयेभीमनृप। करनसामनयक
त्थ॥ ४॥ आयडुँडुँनकिन्नीअरज। कोटाइ
कानलेहु॥ मुलकआरसबहीनजरि। निजगि
निधरहुसनेहु॥ ५॥ नाथाउतिनृपमानलब
। अरजनमन्नीएह॥ हिंदुनकेदिनपल्लरे।
उपजतलोभअछेह॥ ६॥ तमकितत्थदो
ऊसचिव। पच्छेनिजपुरपत्त॥ भकबीभूप
तिभीमसों। रनमंडहुअनुरत्त॥ ७॥ इतबुं
दियतेंउमंडिदल। चम्मलिउत्तरिचंड॥ गज्जन
जोगियरामगो। भिरतअब्भभुजदंड॥ ८॥

मुक्तादाम ॥ सज्योउतभीममहादलसूर।
गज्योइतजोगियरामगरूर ॥ कचोंदियरवे
टमिलेदुवभाय।दयेदलदोउनबाजिउठाय
॥ ९ ॥ वजीरनरीठमचीधमचक्क।खलक्ख
लखोनियलग्गिलचक्क ॥ खटक्कियहड्डु
नहड्डुनखग्ग।सत्तक्कियपक्खयलेडगमग्ग
॥ १० ॥ लडेवलभीमकरीहतवाह।कटे
वहुबुंदियसेनसिपाह ॥ तिलत्तिलतुट्टि
गस्वामियकाम।परयोकनकाउतजुग्गिय
राम ॥ ११ ॥ इयोसबबुंदियसेनबिगारि।
जयोनृपभीमहजारनमारि ॥ उतैंसुकबय
रकूरमनत्थ।गयेदुवमेकलजालगसत्थ॥
॥ १२ ॥ तथापिनसाहभयोअनुरत्त।दल्ये
दरकूंचनजातउमत्त ॥ वहैसरितातबसाह
उतारि।फिरेदुवभूपतिडेरनजारि॥ १३ ॥

उदैपुरईदरकुंचनपत्त। मिल्योनृपरानइहाँ
अनुरत्त ॥इतैंदुलहीनृपबेधमच्याहि। च
ल्योजवनाधिपसेवनचाहि ॥ १४ ॥लयौं
अथरानिनसंभरसंग। मिल्योजवनेसहिंधा
रिउमंग ॥ गयोदरकुंचनदक्खिनसाह। स
जेदलसब्बलसूरसिपाह ॥ १५ ॥ इतिश्रीवं
शभास्करेमहाचंपूस्वरूपेदक्षिणायनेनवम
राशौबुधसिंहचरित्रेअष्टादशो १८ मयूख:
॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥

दो॰ ॥ कामबखसनिजभ्रातहो। दक्खिन
धररखवार ॥ भागनगरबीजापुरप। हुव
तिहिंसिरकुसियार॥ १ ॥ बिक्रमनृपपर
मारभो। उज्जइनीपुरईस ॥ तापिच्छैंनृप
भोजभो। धारानगरअधीस ॥ २ ॥ इनल

गहिंदुलअहरयो।छोड्डिउचितरनथोभ॥

इनपिच्छौंनयधरमतजि।लग्गोकेवललो

भ॥ ३ ॥पृथ्वीराजचुहाननृप।जयचंद

हरद्दोर॥इनलगहकछुअनुसरी।हिंदुन

धरमहिलोर॥ ४ ॥तिनपिच्छौंतुरकान

कुल।निजनयधरमनिधान॥ भीहिनकछु

अंतरपरत।छंडीतिनकुरान॥ ५ ॥इ

लहंदियपतिअहरिय।कोटाउप्परकोप॥

इतआलमरनअंकुरयो।लाजधरमकरिलो

प॥ ६ ॥कामबखसआलमअनुजा।अ

गौंतिहिंअवरंग॥सागानगरबीजापुरह।सू

बादियहितसंग॥ ७ ॥ष०प०॥तुरक

नदिनविपरीतआयआलमतिहिंउप्पर।

धरदक्खिनधमचक्कसजियबीजापुरसगर

।कुंथसिंदहिंवलईसबिरचिआलिकोपब

तिनतैंअबलगनहितको।सीसोदन
साह॥यहकुलराउलबप्पको।रक्खैंहिंदुन
राह ॥ १२ ॥ पुरआमेररुजोधपुर।
पटसरसाय॥आलमतैंअबतोरिकैं।उभ
उदैपुरआय ॥ १३ ॥ अमररानअ...
दकारि।सिंदोसनमुरवआय॥ कू
यसिंहकछु।चरननहत्थचलाय॥ १४ ॥
एकरिहत्थहियलायतब।कहियरान...
स॥ भूपतिमैंपावनभयो।...
सेस॥ १५ ॥ षट्०प०॥ इममिलापकोर
नआयतिनसहितउदैपुर।महलन
दमोहिउभयहुल्लेअवनीसुर।बाहिरप
लंघिरानसम्मुहपुनिआयो॥करिजुहार
सीसरकिवहुमोदबढायो।
निजसंगकारिकुलासिरवासपरिसद

उमगव बुद्धि निज निज उचित करन मंत रक्ख
न किय ॥ १६ ॥ बहिनी बुद्धहिं ब्याहि दूत ।
देवसिंह तरवैस ॥ बेघमतैं द्रुत आयकैं ।
भिंडोरान नरेस ॥ १७ ॥ दिलखुसाल आसा
हकै । गोरव मध्य पग धारि ॥ बैठे भूपति तीन
ही चोरी गद्दर डारि ॥ १८ ॥ मध्यरान आस
रेस अरु । कूरमनृप दिस बाम ॥ दक्खिन दि
सरद्वोर नृप । इमरहि सज्जि गसाम ॥ १९ ॥
छप्पई ॥ कूरमपति कर जोरि कहिय सीसोद
नृपति प्रति । तुरकन को नहि तोर भयो सब
जोर मंद गति ॥ राजाकुल तुम रो सु हद्द हिंदुन इक
रक्खैं ॥ जोरवा दिल्लिय जोर प्रबल आनन
तुम पक्खैं । साहसों तोरि हम आय इत राज
धरम साहस परखि । हिंदुन हकारि हिंदुन
अवनि हिंदुनपति भुगहु हरखि ॥ २० ॥

॥दो०॥ इतबुल्ल्योरह्वोरनृप। हमरावरेसु
भट्ट॥ पुमकुम्भार्यावर्त्तभुव। लहिदिल्लि
यपुरपट्ट॥२१॥ मुक्तादाम॥ यहैसुनि
रानकही अमरेस। नमैंपुरदिल्लियजेअ
नरेस॥ सुनैंहमदिल्लियकोदसतूर। रहो
सबसांजलिसाहहजूर॥२२॥ सबैसत
सारुधधूफ्फनघाल। लजौंसबबाहिरंबार
सलाम॥ जहाँबिनुआयससुल्लिसकौं।
नहींइफकटक्कोनिहारतनैंन॥२३॥ जहाँ
नहिंबैठककुल्लपदृहिह। तरज्जततंडिन
कौबनजूह॥ चलौंसबपैदलआननअ
गा। प्रसूत्रिकमल्लिपलोटतपग्ग॥२४॥
पलावतनारिनकौंनवरोज। उठावतपल्लि
नकौंहरओज॥ बनावतबंबनजावत
जार। सजावतपुन्निनआहिसिंगार॥२५

॥ सुनौं यह साहन को दसत्तर । हलै सबहिं
दुगयुज्जि हज्जर ॥ समुप्पन मिच्छन औनिप
हिरह । लिख्यो ख्यिहिं दुलगो थिन लेह
॥ २६ ॥ इक्को उकरैं इम हिंदुव राज । भिरैं
तब जाति असयन भाज ॥ हमैं तस मालन
दिल्लिय हौंस । इहैं परकब्बल हीं निसयौंस
॥ २७ ॥ रुज्झो दृढ है उन को मतराह । मिलौं
तब दिल्लिय हीय उमाह ॥ रजूतुम साहउथ
प्पन राज । उदैपुरहीं तब दिल्लिय आजौ ॥ २८ ॥
पुरान नृपक्रम मान जु किल्ल । पथ्यारि सुभा
रि लहै तुम लिल्ल ॥ अलैं दृढ अप्पन ज्यौं जं
स होय । जयौं अकरिये वल कालहिं जोय ॥
॥ २९ ॥ बच्यो पुनि कूरम भूप वतंत । भलौ
सबहीं करिहै भगवंत ॥ अबैं करि हिंदुन
इक्कत अत्थ । सजैं पुनि आलम पैं निजस

त्य ॥ ३० ॥ दो० ॥ हिंदुवाकररानके। इक परंतुयहँश्रोर ॥ श्रालमतैंहमतोरिकैं। लि यउरावरोजोर ॥ ३१ ॥ देसदुहुनकेरवाल से। श्रोरनलीनउपाय्य ॥ तोहमजिनतैंजुल कनिजंजोदलदेकुसहाय्य ॥ ३२ ॥ जिनि मुलकपुनिकटकसजि। है दुवरानहजूर ॥ दक्खिनपरदरकुंचकरि। जित्तहिंसाहजरू र ॥ ३३ ॥ रानकहियकछुदिनउभय। रह हुश्रत्थरहमानि ॥ पुनिजोजोभवितव्य है। लैहैंसबहिप्रमानि ॥ ३४ ॥ यादिनउ रनसिक्खदिय। दोउनतैंकहिएह ॥ इक हुकगजहैहैश्ररब। दोउनश्रप्पिसनेह ॥ ३५ ॥ श्रतरपानपुनिबुल्लिकैं। इनादिग रखरान ॥ तबदेउनकरश्रोडिकहि। दे हुश्रप्पकरदान ॥ ३६ ॥ रानतथापिन

पानदिय । भानदानगहिहत्थ ॥ जिहिंअंतरक रघुकुलके । संग्रहिधरियसमत्थ ॥ ३७ ॥ दोउ नृपइअपानलै । निजनिजडेरनआय ॥ दूजे दिनकियगोठिलब । रानअमररसभाय ॥ ॥ ३८ ॥ दोउनृपबुल्लियबक्तरि । पंतिपरियव हुंओर ॥ करियअरजतहँरानप्रति । पुनिकूर मरठोर ॥ ३९ ॥ इककथालविचअप्पनौं । हम सहभोजनहोय ॥ अबतैंसंततएकता । कर हुनसंसयकोय ॥ ४० ॥ सुनिबुल्ल्योभटरान को । हृदसनगंगादास ॥ सगताउतपुरबानसी पतिकछुरेसप्रकास ॥ ४१ ॥ कूरमपतियह रावरे । पुरुखनअगैंकीन ॥ तोहूकुलउज्जल यहे । मोनहिधरमविहीन ॥ ४२ ॥ षु० ५० ॥ अगैंअकबरसाहलैनगुजरातलुआये । भगव तसिंहरुमानपितासुतउभयपठाये । दरकुंचन

झलदोरिजोरजिनीगुज्जरधर ॥ पलटेपुनिसु
तजनकमिजलपंचककेअंतर । भगवंतसिंह
आयोप्रथम दिल्लियआवलसानधर । जिनदि
ननछत्ररानाउदयधारतहिंदुनधर्मधर ॥४३
॥ नृपभगवंतहिंरानजायसम्मुहपहलायो । उ
तहूभोजनकरनरानजुतप्रसमरचायो । दियउ
तारतबरानदेनतुरकनतुमपुत्रिय ॥ इम । कुप
अकलंकधरमइहिंडनजातजिय । तसमातसुन
कुलेउनअसलहूकोथालनांहिंलउचित । यह
सुनिनरेसभगवंततबपृथककिन्नेबुल्योवि
दित ॥ ४४ ॥ पद्धतिका ॥ नृपसुनहुपंचवा
सरविहाय । सुलमानइसोंअैहेंसुभाय ॥ का
सोंनरेसकैहैंप्रसन्न । जुल्लहुनभुल्लिअैसोकु
चन्न ॥ ४५ ॥ यहकहिनरेसभगवंतचल्लि द
ल्लुंच्चन दिल्लियनगरपन्न ॥ दिनपंचकअंत

र कुमरमान। भिंट्योपुनिसम्मुहजायरान॥४६॥मिलिनामबिरचिप्रतिमानुहारि।पुनि रानरसयुत्तिनजुतपधारि॥रचिगोठिबिबिधव्यंजनरसाल।बैठायोमानहिंपृथकथाल॥४७॥रहिरानदिट्ठिपरुसनलगाय।तबकुमरमानबुल्यौहिताय॥तुमकोंजु उचितबैठनन्‌पाल।भुज्जैंतुवभुज्जनइकथाल॥४८॥तबकहियरानराजाधिराज।रकासनक्रतमैंकरियआज॥कूरमतथापिवुल्योनिहोरि।सागतनहोतअलद्दकछोरि॥४९॥हमरोकुवअागमसमयपाय।हैंइकथालभोजनहिताय॥इमप्रसभपुंजमानहिंनिहारि।पटुरानउदयवुल्योप्रचारि॥५०॥तुमलोभधारिलियजवनरीति।हमरेघरहिंदुनधर्मभीति॥तुमअध

प्रजासिदुहिताकलत्र। तुरकनसमर्प्पिकुव
सचिवतन्त्र ॥ ५१ ॥ अकलंकयहैइकलिं
गओँन। तरसमानसंगभोजनबनैंन ॥ यहसु
नतमानकुप्योकराल। कुप्योसुउद्दिकलि
छोरिखाल ॥ ५२ ॥ तुम्हतियनपारितुरक
नप्रसंग। कछुदिनअंतरैहैंवसंग ॥ यह
कहिहुतदिल्लियथानजाय। अकबरहिं
अप्पअप्पनौंकुपाय ॥ ५३ ॥ बहुबरसर
हियचित्तोरजंग। रानननतथापिछंड्योस्वर
ग ॥ बिनुबलनलहियबरसनविपत्ति। छि
तिहितलथापिकैंधीनकत्ति ॥ ५४ ॥ यह
कुलवहैहिनिजनसंयंत। दुहितादितुमसु
तुरकानदेत ॥ इनकुपानअसननातैंबनैंन।
मलमनिसंकमिथ्याभनैंन ॥ ५५ ॥ यहसुनि
कछंपकलवाहसाय। रबिनिसभयजानिरोस

नदिखाय ॥ करजोरि कहियवुव नृपन फेरि । हिंदुन नेरसतुम धर्म हेरि ॥ ५६ ॥ हमकियत्र्प्रधर्मगिनि विभवहानि । मरुजीसुकरहु भटहमहिमानि ॥ अमरेसरानयहसुनिउदार । बुल्योसुव्यावहारिक बिचार ॥ ५७ ॥ ममगेह ओरनहिं तुमहिंदेय । इकबत्तसुनहु दुवनृप अजेय ॥ सोंपहु जोनिजकर लिखितसत्य । अबतैंनदैंहितुरकन अपत्य ॥ ५८ ॥ तोदुवसुतासुदेउनबिबाहि । देसहु लैदैहैंअरिनदाहि ॥ सहभोजनतोनहिउचितआहि । पत्रावलिजिमतहमसदाहिं ॥ ५९ ॥ तुमडारिरजतबिष्टरबिसाल । नभजितमधिधरिकनकथाल ॥ इमसुजततुरकनराधमान । इत्यादिहेतुसहआसनहान ॥ ६० ॥ करिलिखितदेहुजोकथितचा

हि। तोदैंहिँसिक्खपुत्रिन बिबाहि ॥ दुक्ख
पनयहैसुनिच्यसनकिन्न। रानसुपक्ससाधन
रहियभिन्न ॥ ६१ ॥ न्रपकुंवजिमायइम
सिक्ख आपि। डेरनइन आयरुमंत्र थापि ॥
यहँउभयसाहसोंतोरिआय। करिलिखित
दैंनइतइनकहाय ॥ ६२ ॥ अबकरहिँसा
हकुमहरअजेय। तसमातरानकथिलहिजि
येय ॥ यहसोधिलिखियनयदुकुँनआदि।
तुरकननदैँहिँअबतेंसुतादि ॥ ६३ ॥ क
हिहैंजुरानधरिहैंसुसीस। इमलिखितदा
निदुवभुवअधीस ॥ यहलिखितरानकर
दियउआय। प्रभुरानसुनतबिस्वास पाय॥
६४ ॥ दुहितादुहूँन ब्याहन बिचारि। बिर
चियबिबाहिउच्छवबढारि ॥ कूरमनरेस
यहसमयपाय। अच्छूनरानप्रतिकथकहा

य ॥ ६५ ॥ संग्रामसिंहपट्टपकुमार। सुहिंता
सजामिंदैहोउदार ॥ सुनिरानबहुरिपच्छीक
हाय। इक लिखितओरअप्पकु लिखाय ॥
॥ ६६ ॥ याकेजुपुत्रजगदीसदैंहिं। वहमुख्य
राजआमेरलैंहिं ॥ आमेरईससुनियहउ
पाय। लिखिस्वकरपत्रदिन्नौंपठाय ॥ ६७॥
दुहितास्वकीयजनिहैसुपुत्त। आमेरपट्टल
हिहै अयुत्त ॥ यहलिखितरानबंचिरुबिचारि। नि
जपुत्तिउचितकूरमनिहारि ॥ ६८ ॥ दो०॥
निजपुत्तियसंबंधतब। कूरमसनकियरान
॥ जिनकाकासुतपुत्रिका। दियरट्ठौरहिंदा
न ॥ ६९ ॥ चंद्रकुमरिकूरमलहिय। रुप्पा
कुमरिरट्ठोर ॥ इमबिबाहिदुवभुवअधिप
। जच्चियसिक्खइनजोर ॥ ७० ॥ हाटक
दोलाजंत्रतब। दुहुंनरानन्नृपदिन्न। दुकू

नतुल्यह्रायज अरपि। कुसलसिक्खतब

किन्न॥ ७१ ॥सत्तसहँस निजदलसबल।

करिदुवभूपनसंग ॥रान सिक्खदेसन दई।

अवनीलैन अभंग ॥ ७२ ॥ तबदुवभूपति

सिक्खकरि। बढिचक्कियबरजोर ॥ छोनी

दब्बतसाहकी। उमँडियसंभरओर ॥ ७३ ॥

दुवनृपसमदरकुंचकरि। संभरउप्परजात

॥नारनोलसय्यदसुनी। रमाविलुट्टनबा

त ॥ ७४ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूउ

रूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रे

ऊनविंशो १९ मयूख: ॥ ७ ॥ ७

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७

॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७

७०५० ॥ जाजवसंगर जित्तिसाह अतिग

द्धसल्लरयो। संभर पि किवसहायधराजि

त्तनमनधाखो ॥ हुसनअलीसय्यदनबाब
आदिकसम्मतकरि। जित्तिसजवजोधपुर
धायदक्खिनसाहसधरि। कूरमकबंधअव
नीपइतअमररानपुत्रिनपरनि। खलनाप्रचा
रिलुट्टनप्रथमपत्तेलगिसंभरसरनि॥ १ ॥
दो० ॥ नारनोलपुरसेनपति। हुसनअली
केभ्रात ॥ घिंसीखानरुनूरदी। तेंहँपत्तीयह
बात ॥ २ ॥ ष० प० ॥ हुसनअलीसय्यदन
बाबसुभटनअग्रेसर। नारनोलकेफौजदा
रताकेसोदरभर। घिंसीखानरुनूरदीन तिन
बत्तसुनीयह ॥ लुट्टनसंभरनगरसुपहुकूर
मकबंधसह। सजितबहिसेनद्वादससहँ
सरुमानगररक्खनचलिय। इतनृपनलुट्टि
संभरसहरकहरकालबेहालकिय ॥ ३ ॥ दो०
॥ पुरहिंलुट्टिदुवनृपकढत। सय्यदपत्तेआ

खानरूनूरदी। दुवमध्यदलियमारि ॥ सह
समूरदूहैंश्रोरके। भीराधोररवगभारि ॥ ९ ॥
इमहूरमरह्योरनृप। पुरसंभरजयपाय ॥ दि
लीगहिलेउनदई। लहैंगेश्चंदरलाय ॥ १० ॥
सोरठा ॥ निजनिजदेसनश्राय। दुवनृप
संभरलुहिंवैं ॥ थांनादियेउठाय। श्रालम
केकीरिकारिश्रमल ॥ ११ ॥ दो॰ ॥ इतको
टापतिभीमदिय। कुंदियकटकबिगारि ॥
जुज्योजुमियरामहद। मारिमरदलरवा
रि ॥ १२ ॥ थानरगंगारामपुनि। सेनानाथ
कहोय ॥ कोटाउप्परउप्परयो। उनारिच्चम
लितोय ॥ १३ ॥ कायथघासीराम किय।
पंचोलियपरधान ॥ मंत्रिबनिकहरिरा
मकिय। गुज्जरकुमतिगुमान ॥ १४ ॥ श्र
लीखानश्रभिधानइक। जवनरुहिल्लाल

ह्लि ॥ पंच्च सहँस पति रक्खयो । खमग पत्त
कत्तखुह्लि ॥ १५ ॥ यह सुनि कग्गर भीमनृ
प । धावन्न तिप्पठवाय ॥ बाबाधावरहमकु
कौं । रक्खहिं बूंदियराय ॥ १६ ॥ जान्यौं धा
वरनीतिजड । गुज्जरगह्लगमार ॥ बाला
कहिकढ्डिं लिखव । भिरैं न सोरन भार
॥ १७ ॥ दैंमिल्लान बक्कु दिन रह्यो । लबधाव
रन्यहिल्ल ॥ आलियखान को हक चढ्यो ।
डोयपासदिनतिल्ल ॥ १८ ॥ पद्धतिका ॥
लहि समय भीम तब कियउपाय । बकुबिन्न
रहिन्नहितपठाय ॥ आकिदयधाकप्रति
बदकुबैन । हलकेकुनतो अब हमलरैन ॥
१९ ॥ धावरहिं किहियय हम आलियखान ।
जल किय कुटक गुज्जर अप्रजान ॥ बुंदिप्प
टल्लुह्लि ऊक हियरक्कु । लिलिसबहिजवन

हक्कबिन्नदेहु ॥ २० ॥ जोबिक्खननोहय्य
करभटारि । सबयाहिंदक्कुभरनौंबरारि ॥ सु
नियहकुमंत्रदुर्मनसिपाह । चढिचढिसम
स्तलगिघरनराह ॥ २१ ॥ तुरकननदियधा
वरकैदघल्लि । यहखबरिदेसदक्खिनकु
चल्लि ॥ सुनिनृपतिबुद्धआयसपठाय । न
हिलेकुमुद्दधावरछुराय ॥ २२ ॥ बहुदिन
तबधावरकैदलिन्न । हरिरामसाहपुनिअ
रजदिन्न ॥ तबक्कुकमपायजवननचुकाय
। हरिरामलियउधावरबुलाय ॥ २३ ॥ को
टानरेसइमखग्गझारि । हैबेरकटकदिन्ने
बिगारि ॥ इतकामबरवससोदराहिंभारि ।
निजअमलदेसदक्खिनबिथारि ॥ २४ ॥
दरकूंचउतरिरेवादुरंत । उज्जैनिआयकरि
ञातअंत ॥ गिरिबरमुकुंददरमध्यहोय ।

पुरपट्टनिचम्मलिलंघितोय ॥ २५ ॥ ल
क्खेसिय गिरिद्दरकढि सुभाय । अजमेरपीर
मिटनचलाय ॥ सकसत्तत्तक्कमुनिइक्क
१७६७ मान अजमेर आय दिन्नौं मिलान
॥ २६ ॥ तबबुद्धसिंहप्रतिकहियसाह । कू
रमकबंधकिन्नौंगुनाह ॥ संभरहिंलुट्टिलिय
सघदेस । तसमातजंगमंडकुनरेस ॥ २७॥
कहिनृपजियतअवरंगसाह । हिंदूनकि
यउसासननिबाह ॥ यहआहिमुलकहिं
दुनअसेस । बिनुनीतिअमलकरनौंनबे
स ॥ २८ ॥ फरमानदैरुदोउनबुलाय । अ
ब्बीनहिंरुक्कहुकुंनआय ॥ अवरक्कुअ
नायकियभुम्मिभाज । तिनसबनसमप्प
हुरवस्वराज ॥ २९ ॥ यहकहिपठायफर
मानतत्त । संभरकुलिखियदुवनृपनपत्त ॥

हमकहिगुनाहसबकियउदूर। आवहुनिसंक तुमअबहजूर ॥ ३० ॥ यहसुनिकबंधकूरमचलाय। अजमेरसाहभिंल्योसुआय ॥ तबकहियसाहगिनिअप्पतोर। संभरदुहूनलुहियसजोर ॥ ३१ ॥ कूरमकबंधतबकहियएह। निजस्वामिनिमकरक्खहोसनेह ॥ आज्ञाअधीनअबउभयआँहिं। जहँस्वामिकामतहँलरनजाहिं ॥ ३२ ॥ आलमसिराहितबदुवनरेस। दोउनलिखाय दियसबस्वदेस ॥ दतियादिराजअबरहुँलिखाय। सहदेससबनदिल्लिबुलाय ॥ ३३ ॥ इमहिंदुन्रपनविस्वासिसाह। गहिनीतिसबनअप्पियगुनाह ॥ दिनकछुबितायअजमेरठाम। अबआयतरवतदिल्लियउमंग ॥ ३४ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूरसलद्येदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रे विंशो २० मयूखः ॥

कटअजीम ॥ ११ ॥ बिनुबिक्रमअरुनीतिबिनु । रहतपिक्खिदिल्लीस ॥ दक्खिनकाबलदेहुदिस । सीमादबियसरीस ॥ १२ ॥ इतआलमतैंसिक्खलै । चितइच्छतघरचाव ॥ चलिअमनोहरदुंगतें । बुंदियदिसबुधराव ॥ १३ ॥ छ० प० ॥ इक्ककनफटानित्यनाथकउलनआचारिज । हरिहरधरमहटायकरनअधमनमतकारिज । छात्रबकुलतससंगसुभटहयगयसिविकासह ॥ जावतदक्खिनदेसनृपहिंमगमाहिंमिल्योवह । गजमुखहपुरोहितनृपतिकोकउलमग्गसेवतरहत । तिहिंजायनाथभिट्योत्वरितपरियपायकित्तियकहत ॥ १४॥ दो० ॥ नित्यनाथकोंगुरुवनमि । गजमुखनृपहिंगआय ॥ सिद्धसन्तिगोरक्खसम । महिमाकहियबनाय ॥ १५ ॥ यातैंस

सकतिप्रसन्नअति । याहिसकतिबरदिद्ध । देम
नबंछितयहकरत । सिस्यहुकोंसमसिद्ध ॥१६॥
अनुष्ठानजपहोमअरु । मंत्रजंत्रमतिमंत ॥
कहैंजाहिप्रसमहुकरैं । कहैंजाहिमुवकंत ॥१७
॥ कियनृपगजमुरवकथितसुनि । नाथनिकेत
प्रयान ॥ बुंदियको बिगरनसमय ॥ अरुभावी
बलवान ॥ १८ ॥ नित्यनाथढिगजायनृप ।
पयपरिकरियप्रनाम ॥ कहियसिस्यमोकोंक
रहु । धरहुभेटधनधाम ॥ १९ ॥ लक्खरुपय्य
नकरसुलभ । ऐसेग्रामअनूप ॥ गहहुदच्छि
नाछत्तगिनि । रहहुइहाँगुरुरूप ॥ २० ॥ नित्य
नाथयहसुनिकह्यो । हमदच्छिनबसवान ॥
गुरुमृतसुनिद्रुतजातहैं । नरहैंतासनिदान ॥
२१ ॥ हमभवदीयपुरोहितहिं । मुख्यमंत्रदे
जात ॥ यातैंसिच्छालहुतुम । देहुयाहिबसु

ब्रात ॥ २२ ॥ यहकहिमनुगजमुखहिंदे। गयोकनकटादेस ॥ छतबुंदियढिगकुंचकरि। आयोवुड्ढनरेस ॥ २३ ॥ जबकाबलनृपबुड्ढ हो।तबनिजसोदरजोध॥ चढितरंडगुनगोरिदिन। कियजलकेलिकुबोध ॥ २४ ॥ सुभट सचिवअनुचरसकल।बैठेपोतनतत्थ ॥ नचिगावतपातुरिनिकर।स्रुतिस्वरतारनसत्थ ॥ २५ ॥ गजइकलिंगप्रसादइक।इहिंअंतरभयमत्त ॥ निजदायजआयोकुतो।उदयनैरतैंअत्त ॥ २६ ॥ वहबारनअतिदानवक। जलपीवनतँहँआय ॥ तालपिक्खिपोतनतिरत।कुपिचल्योअतिकाय ॥ २७ ॥ सत्थसकलआपानथित।किन्नोकछुनउपाय ॥ निजपोतहिपकरीनिठुर।एतेमैंगजआय ॥ २८ ॥ धाइआतनिजसंमहो।तासभयोइक

वार ॥ एतेबिचउलटायइभ। बोरीनावसुबा
र ॥ २९ ॥ नियतिजोगसबतिरिकढिय। अ
सुबसुल्वीरितअवेरि ॥ धाइअातअरुअप्प
दुव। रवस्चतनिकासेहेरि ॥ ३० ॥ निकसन
खिनगुज्जरमरिय। असुनिजकत्तुअवसेस ॥
सोवउत्थितसमानसो। पत्तोमृतपरदेस ॥
३१ ॥ अनुजरानजयसिंहको। भीमसुतायह
तास ॥ जोधनारिसहगमनकरि। पत्तीदिव
पतिपास ॥ ३२ ॥ यातैंपुरप्रबिसतअवहु।
सोदरसुचनसमाय ॥ सतितथापिसंबोधिम
न। इमपुरदिगनृपआय ॥ ३३ ॥ सुनिनृपपाहिं
आवतसुभट। सनिर्बन्धसमुपेत ॥ बुंदियपुर
सननिकसिसब। सम्मुहआयसहेत ॥ ३४ ॥
नगरजैलगढलालतट। रहिनृपअंत्यमिला
न ॥ प्रातपुरहिंप्रबिसतप्रकटि। गृहगृहभंग

लगान ॥ ३५ ॥ कोटारननिजभटमर्‌यो । जु
थ्थियरामनिसंक ॥ ताकोसुतसालमलयो ।
गजारूढनृपअंक ॥ ३६ ॥ इमअालमकेपे
सरहिंपंद्रहवरसबिहाय ॥ हयरवदसत्रह
१७६७ भद्दसित । प्रबिस्योबुंदियआय ॥ बुं
दियपुरप्रबिसतसमय । सउनकिइमगरुड
॥ नियवालालरुजसवल । पिकवीसम्मुहजुड ॥
३८ ॥ इत्यादिकअसउनबिबिध । मनमन्नेन
हितन्न ॥ प्रबिस्योउत्तरद्वारपुर । जाजवजय
उतसन्न ॥ ३९ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचं
पूरत्तरूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंह
चरित्रेएकविंशो २१ मयूखः ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥
॥ ५०५० ॥ बुंदियगादियबैठिबुद्धिगजमुख

हपुरोहित। मन्त्रिगुरुवसुनिमंत्रकउलमारग
चाह्योचित॥लक्खरुपैयनमुलकहत्थिसिवि
काहयअप्पिय॥गद्दियलकअधिकारवरव
सिगजसुखगुरुथप्पिय। आचारअधमअद्द
रिरहिय पंचमकारनमुदितमन। बुंदीसबुद्धि
बिगरीबिबिधकउलकम्मलग्गोकरन॥१॥
जबकालबुंदीसकुतोआलमअनुगामी।
तबहिरानजयसिंहगयोपरलोकसुनामी॥
तासनरवतअमरेसरह्योरानोंकछुबच्छर।
पत्तोवहपरलोकसुनीबुंदिययहसंभर। ले
सिक्खतबहिपटरागिनीरानाउतिपीहरग
ई।उम्मेदकुमरितत्थहिअचिरभावीबसि
असुबिहुभई॥२॥दो०॥पटरागिनिपंच
त्वइम।लयोउदैपुरजाय॥अयारिलक्खमु
द्रामित।रह्योतहाँतसराय॥३॥इहिँअ

तरहुंदीसप्रति ।सगपन हितसरसाय ।।पुरम
नायसहोरके। नारिकेलहुतआय ।। ४ ।।सो
सगपनस्वीकारकरि ।नारिकेललियफेलि।।
मनपरंतुलगिकउलमत।प्रथित बेदमतपे
लि ।। ५ ।।रहतचक्रपूजानुरत। बिधिनय
धरम बिसारि।। आलसमद्यप्रमादकरि।बि
गरिराजसम्हारि ।। ६ ।।इहिंअंतरलाहोर
तैं। दिल्लियआयप्रकार ।।सूबाबिचदलबं
धिसब। सिखमिलिकरतबिगार ।। ७ ।।
नामकमल अनुगामिसिख। अजितसिंहीत
नईस ।। सोमंडलआपनअमल। सूबाखंडि
सरीस ।। ८ ।।षट्०प०।।सुनतराहदिल्लीसम
दकदिनकटकअगंजित ।सजिचल्लियद्रु
लसाहसाह उद्धतजयरंजित ।सबहिपुत्रनि
जसंगफुरख बेगमसबहजारि।तीनलक्ख

तुरुकवारभारसतपंचतोपभरि। संक्रमितसाह आलमसबलक्रमप्रबेसलाहोरकरि। बहुअ जितसिंहसबसिखनहनिदंडिखाडेलिन्नोंप करि॥ ९ ॥ दो०॥ त्रासितकरिसबसिखन तैं। नानकपंथछुराय॥ मुंडितडड्ढीमुच्छकरि दंडिदयेनिकसाय॥ १० ॥ सालमारउपवन निकट। रह्यो कछुकदिनसाह॥ अबअभाग तुरकानको। उलटीकरतइलाह॥ ११ ॥ ष०प० ॥ कलिजुगभूपनकुमतिनिलयनारिनभरिर कखैं। रहैंइकअनुरत्तअवरजारनतबचक्खैं। यौंहीआलमसंगनिकरनारिनअतहपुर॥ ति नमैंबेगमइक्कलज्जलंघियकामातुर। संहस नसिपाहजामिकरहतरुकततेन्हनकामरय। निसदीहजारइच्छतनिलजसरमाजिमसारद समय॥ १२ ॥ दो०॥ गायकआवतगनगृह।

सिखवननारिनगान ॥ तिनबिचपिकव्योरूप
नर। गायकइक्कजवान ॥ १३ ॥ ब्बेनैंताहिक
हार्थकैं। रक्ख्यो विकलदुराय ॥ प्रतिसीरापल
टायप्रु नि। लिक्ष्योंरक्ति बुलाय ॥ १४ ॥ दिनर
क्वैमंजूसधरि। रक्ति निकारैंताहि ॥ योंबेगम
दिल्लीसकी। चिपीकलावतचाहि ॥ १५ ॥
पिक्खिसचिनइक्कोंमुक्कवीआलमछुगा ॥
सुनतप्रसादीसाहथकि। लयोतासमुहमग
॥ १६ ॥ साहागसेबेगमसुनत। छन्नैंसंगलगा
य ॥ जायसउच्चसंकानिलय। आईताहिदुरा
य ॥ १७ ॥ पादाकुलकम् ॥ छहिंछलरआल
मतहँआयो। लियसुक्लनतसकरनाहिंपायो ॥
तबसचायसोतिनदूतारा। मजचोलदेखैसे
नहसारा ॥ १८ ॥ सुलरिससाहअभिविपबेगस
सन। सैंबिरकादब्रुक्षविकलमन। सहसुने

गायकमिच्छु बिचार्यो। खंजरदोरि साह हियमा
र्यो॥ १९ ॥ रीढक फारि पार वह फुट्टो। छिन अंत
र आलम असु छुट्टो॥ नियतिजोग इम लेकु नि
हारें। दिल्ली सहिं गायक हनि डारें॥ २०॥ गायक
कूं नारिन गहि मार्यो। साहकु विधि मरि सुजस बि
गार्यो॥ अंत हि पुरतल वजि आचालक। इत उत
रु दल राग उर आनक॥ २१॥ ष॰प॰॥ कुररमहार
शृंगार तोरि रु रतन तोबा करि। झारि झारि वंगारिन पर
तलु द्दत उद्धत परि॥ मोजदीन पह पकुमार यह सु
नि ठुल धायो॥ सुत्तो कुमर अजीम मुहूता कें ह हनि
आयो। लघुभ्रात दोय तिन सिर निलज पिल्यो द
लहलकारिकें। दोउन मराय गद्दियल ई आजम
अनय बिचारिकें॥ २२॥ दो॰॥ आलम मरन
अपुब्ब कुव। फुट्टी दिस दिस बत्त॥ मोजदीन अथ
भ्रात हनि। बैठो तखत प्रमत्त॥ २३॥ ष॰प॰॥

आलममृतसुनिअजितसिंहमरुदेशनरेसुर ।करिफोजनदरकुंचआयअजमेरनिडरउर। लिन्नोंबिंदुलिदुग्गसाहथांनोंहनिसंगर॥ सूबादहिसजोरभयोबिनुसंकगब्बमर। इततकिछिदकिलनअवनिमरहट्ठनबलमंडयो।जिततितउठायदिल्लियअमलहालिकातरपनछंडयो॥ २४ ॥ दो० ॥ मतिप्रमादआलममरत। दिल्लीतियबरजोर॥ तक्कीमारिकटाच्छदृग। सहरसिताराओर॥ २५ ॥ षं० प०॥ देदेसदेसमन्धिदंगचंगभूखनचमकाये।पुरपुरथाटिप्रपालपयनघुंघरघमकाये।अलसअेसअन्यायहावभावनबिसतारत॥आसवपानअपारमारआतुरस्सगमारत। गनिकानबिभवअधिकारगलचंडातकघुम्मररचिय। दिल्लियनवोढदुलहनिबनियसहरसिताराबरनप्रिय

॥ २६ ॥दो०॥मोजदीनइतभ्रातहनिबैठि
तरवतबनिबीर॥ निलजदूरकिन्नौंअनरिव
।आलमसाहवजीर॥ २७ ॥ष०प०॥हुसनअ
लीआलमवजीरकरिदूरकुसिकबन।जुलफ
कारखांनामअवरथप्योलरिवङ्कवन।तजि
पत्तनलाहोररचियदरकुंचगेहसुख॥अतिज
वदिल्लियआयपट्टपायोसुपरमसुख।आसव
बिपानअनुरत्तअतिहठप्रमत्तनयभ्रातहनि
।गनिकानसंगगीदररहतदिल्लियपादपदीम
बनि॥ २८ ॥दो०॥नायकलाडकपूरहूक।
गायकगहिरगुमान॥तासलालबीबीबहि
नि।अधिकरूपगुनआन॥ २९ ॥पद्दहुस्मत
कौंकरी।मोजदीनबसहोय॥गलबांहींछिन
छोरिकैं।कम्नसुनैंनहिकोय॥ ३० ॥पादाकुल
कम्॥नारिनसंगफिरतकांतारन।नारिनहि

मैंहल निकारन ॥ इकदिन बाग रीझसवा
री । नाजरसंग लथ्यासब नारी ॥ ३१ ॥ पानकापि
साम्हआतिकिन्नौं । साम चढन मासन पुनिदि
न्नौं ॥ डिंल्ला जसिकेलि बिहाई । अपर अहि
संध्या अक आई । ३२ ॥ मोजदीन अतिपान
किन्नौ । रहसि लाल बीबी अनुरत्तो ॥ सोधि
तास सिविका बिच सोयो । जा - रिन काहू
नहिं जोयो ॥ ३३ ॥ असवारिके समय अपान
क । इलउलबजे चढन के आनक ॥ काहिकहित्वि
रादरोलान किन्नी । सब हुरमन सिविका कसिदि
न्नी ॥ ३४ ॥ लैलैचलेकहारनृजानन । जोपतपि
रत साहकों सबजन ॥ भटनलालबीबिय हिप
भास्यो । खोजनतब तहँ जाय निकास्यो ॥ ३५ ॥
खोलि बधसिविका इक नाजर । आन्यौं साह
भटनके अंतर ॥ अतिअचेत सिविका बिच

पूरवपुरपत्तनाँसुसाहफूरुकअजीमसुत ॥ त
बपत्रनमिलितहिभिरतआन्योंदिल्लीभुव।
रनमेंजदीनतासलविरचिभजिदिल्लियअंद
रगयो। लगिद्रिढुसाहफूरुकसजवआयत
हिहनिअंकुरयो ॥ २ ॥ दो० ॥ सकनवरवद
सम्वत् १७६९ समयबिक्रमहयनबह ॥ मोज
दीनकोंमारिकैं। बैठोफूरुकपह ॥ ३ ॥ जुलफ
का रवाँसचिवतस। हन्योंसोकुहमगीर ॥ स
य्यदफूरुकसाहकिय। हुसनअलीसुवजीर ॥
४ ॥ पलटीगद्दियतीनक्रम। बरसइककेमाँ
हिं ॥ आलमपिक्खेंमोजदी। अबयहफूरुक
आँहिं ॥ ५ ॥ बुधनृपकेयाहीबरस। भयोकु
मरकुलभान ॥ कछवाहीरानीउदर। देवसिंह
अभिधान ॥ ६ ॥ होतजनमदिसदिसदये।
लक्खनद्रम्मलुटाय ॥ जातकरमअरुदानजप

।सबबिधिपुब्बसधाय ॥ ७ ॥कुमरजननमख्या
मेरपुर।सुनिजयसिंहनरिंद॥पठयेकुलपहि
रावनी।दसहयदेयकरिं ॥ ८ ॥मासतीन
रहिकुमरवह।छोरिगयोनिजदेह॥बिगरिवा
ममगबुद्धमति।आलसगहिय ॥ ९ ॥
ऐसोआलसअवरगत।सुन्योंनपिक्ख्योर
च॥सातोंप्रकृतिसम्हारिनहिं।बिगरतस
बहिप्रपच॥ १० ॥पुरअनायसंबंधभो।तिहिं
परलगनलिखाय॥रट्ठोरनकौंखबरिदिय।
आवतबुंदियराय ॥ ११ ॥बिप्रपुरोहितनि
जबिबुध।नामभवानीदास।मह्डूकेसोद
सपुनि।कुलचारनमतिकास॥ १२ ॥येदुव
भूपतयारकरि।पठयेनगरअनाय॥लगनबे
रहमआयहैं।दिल्लीरहककहाय॥ १३ ॥हिं
जचारनदुवजायकें।भाखिलगनरहितत्थ॥

इतनृपकौंआलसअधिक।उपजतबिबि
धअनत्थ॥ १३ ॥ वहैलगननृपचुक्किकैं।
द्वू . लगनदिखाय॥लगनपंचइमचुक्कयो
।ब्याहनग. मनाय॥ १४ ॥ द्विजचारनम
तिदहियतब।पतिमनाय्यकरिरीस।अब
तुमसिरकन्याहनों।कैआनहुबुंदीस॥१५॥
तबचारनतत्थ रह्यो।द्विजआयोनृपपा
स॥कह्योअबमरिहौंनतो।ब्याहकुआल
सबास॥ १६ ॥यहसुनिद्विजसंकोचकरि।
गोनृपनगरमनाय॥परनिसुतारठोरकी।
बिबिधत्यागबढाय॥ १७ ॥बुंदियदिसपु
निकुंचकिय।अतिआलसअलसात॥
आलआतमगमांहिरुकि।बहुमुकामरहि
जात॥ १८ ॥चलतरुकतरुकिचलतइम।
नगर ालपुरआय॥तहँतड़ागअंतरउत

रि। कटकमुकामकराय ॥ १९ ॥ ब्याह्योमासत
परयबिच। साह्योअलससुगाढ ॥ रहतमालपु
रतालबिच। आयोसिरआषाढ ॥ २० ॥ ष०प०
गरज्जिमेघघनघोरओरउत्तरसनआये। अधि
कमंडिआसारबिहितसंभरबरसाये। आयोज
लजबतालतबहिस्यदनमगायइक ॥ तिहिं
उप्परथितहोयरह्योबहुदीहआलसिक। मा
लपुरसचिवयहसोधिमनकूरमपतिप्रतिपत्र
दिय। उनकहियनीरपरिवाहमगकहूकुतलयह
इनकरिय ॥ २१ ॥ गीर्वाणभाषा ॥ उपजातिः ॥
इत्थंसवर्षोऽयसैकपीठे। रयस्थितोमालपु
रेतडागे ॥ बहून्यहानिह्यवसत्प्रमत्तश्चिरक्रि
यो बिन्दुमतीक्षितीशः ॥ २२ ॥ अनुष्टुप् ॥
तत्रैवकूर्मकेशाहे। जातेभट्टसहस्रभृत् ॥ स्वा
मिदर्शनसाकांक्षो। जैत्रसिंहःसमागतः ॥

॥२३॥ वंशस्थः ॥ ततोनृपः आवणिकेसमागते। बुन्दींसमागत्यविश्रमबुद्धिभृत्॥ आलप्रभा॰ न्विरक्तियेश्वरो। वसद्यथापूर्बमवस्थित:पुर: ॥ २४ ॥ मा॰ मि॰ ॥ दो॰ ॥ इतमरुनृपअजमेरलिय। तबबिग्रहकुबराक॥ रूपनगरराठौरनृप। राजसिंहकियटेक॥ २५ ॥ मरुभूपतिसोंनहिंमिल्यो। हठपूरबहमगीर॥ साहहिंगिनिमानेजसुत। भोवहदिल्लियभीर॥ २६ ॥ याकेअरुमरुईसके। बनींनहिंजबबत्त॥ तबरजधानीसंगले। दिल्लियपुरवहपत्त॥ २७ ॥ बुंदियहूतबआयवहे। राजसिंहराठौर॥ नहिंकिन्नोंसतकारतस। बुद्धअलसबरजोर॥ २८ ॥ राजसिंहनिजपुत्रिका। सगपनहितकहिबत्त॥ सोहूनृपमंनीनहीं। अलसनारिअनुरत्त॥ २९ ॥ पाव

अनादरतब गयो। कोटापुर रट्ठोर ॥ कन्याभी
महिं ब्याहिकैं। जुरि मंड्यो इकजोर ॥ ३० ॥
रूपनगरपति रीति इहिं। भीम हितु करि सं
त्र ॥ निजरजधानी । दिल्लियुग्य उस्व
तंत्र ॥ ३१ ॥ मरुनृपके बनि बनि पिसुन।
अनय साहसों आकिव ॥ साहलगत भाने
जसुतयातैं अहरराक्वि ॥ ३२ ॥ पद्धति० ॥
इतबैठि पट्ट फर्रुकसिताब। की सचिवहु
रय्यसय्यदनबाब ॥ फुरमान देस देसन पठा
य। सतकार पुब्ब सब नृप बुलाय ॥ ३३ ॥ बु
धसिंह पास नति सहित लब्ब। निजहत्थ मंडि
पठयो सुपत्र ॥ हुतसद्दलआय सत्रुन लिवाई
। खादावर कुमम्मघर स्महारि। ३४ ॥ सो हु
न पत्र मन्यौं नरेस। विधि जोग राज कुहुन वि
सेस ॥ किय छग्ग महल दिढ सतत बास ॥ अ

बहुसुभटसंगिलिकबसलाय रास ॥ ३५ ॥ दो० ॥
चारनकेसोदाससौं । इकदिनअक्खियबुद्ध ॥
मरुनृपजोअपनमिलैं । जुरैंसाहसौंजुद्ध ॥
३६ ॥ तुंदियतजिउतहमचलहिं । वेआव
हिंकुलरोग ॥ तोअबमगमाँहिंमिलि । ध
रदलहिंहितलोग ॥ ३७ ॥ महड़केसोदासत
बयहसुनिगोअजमेर ॥ मरुनृपसौंमिलिकैं
कह्यो । अबनहिंकरकुअवेर ॥ ३८ ॥ हेरत
हैमरुनृपयहाँहि । कोऊमिलहिंसहाय ॥ या
तैंहुलदरकुंचकरि । बुंदियतरफचलाय ॥ ३९
कुंवरलीनमरुनृपकारिय । चढ्योतथापिनबु
द्ध ॥ तबआलसअनेतगिनि । फिरयोकबं
धकुबुद्ध ॥ ४० ॥ दिल्लीपतिफरमानइत ।
नहिंमिलैंबुंदीस ॥ यातैंअनरवबिचारिउर ।
रचीसाहहूरीस ॥ ४१ ॥ रूपनगरपुरभूपको

तबहीलग्गोदाव ॥ संभरकोमरुपतिसहित। घरच्योपिसुनचवाव ॥ ४१ ॥ ष० प० ॥ रूपन गरपतिकहियसुनहुमम वत्तसाहसुत। रूपपतिअरुबुंदीसजुरतमिलिउभ । मेंअतुल। कोटपुरपतिभरदवाहिउनहकोअहर ॥दैतिंहिंबुंदियदेसप्रबलपिल्लहुतिनउप्पर। कूरमनरेसजयसिंहकेंहंछदलिखायहि यप्रीतिद्ध कि। उज्जेननगरसूबाअरपिलख पठावहुनीतितकि ॥ ४२ ॥सुनतशाहदि ल्लीसपत्रलिखिभीमबुलायो। म रावकु हिमिलिरुबहुतसतकारबढायो। दैतिंहिंबुं दियदेससाहपिल्ल्योदोउनपर॥ तहिंतबकु लअयसेनसाजियहितसंगर। इतसाहप्रे रिअमेरदलजयसिंहहिंहुकमदिय। सूबासम्हारिउज्जेनपुरकरहुजाहुमम हुर।

रहीमैं हम समुझिहैं। लिन्नी बिबिध बिचारि॥
५०॥ सक अंबर रिखि सत्त ससि १७७० फग्गु
न द्वादसि स्याम॥ कछवाही उर कुमर कुव भा
वतसिंह स नाम॥ ५१॥ भागिनेय हित हर
ख करि। करिय कुंच कछवाह॥ पकुंचावन बुंदी
सहू। चल्यो तुरग हित चाह॥ ५२॥ चढत बा
जि प्रासाद सिर बुल्यो बिकट उलूक॥ काक
न कंकन कुक्कुरन। किय फेरंडन कूक॥ ५३॥
यह असकुन चिंतन चित। चल्यो चढि च कु
वान॥ कूरम कौं पकुंचायकैं। मुरयो अलस
समान॥ ५४॥ नाथाउत नगराज को। गु
ढा नाम इक गाम॥ मातुल कुल चकुवान को
। किन्नें तत्थ मुकाम॥ ५५॥ सक अंबर रि
खि सत्त इक १७७० फग्गुन मेचक भूत॥ को
टापति लै दल कढ्यो। बुंदी पर मजबूत॥ ५६

इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूरूपेदक्षिण
यनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रेत्रयोविंशति
तमो२३मयूख:॥ ७ ॥ ७ ॥
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७

षट्पदी॰॥ पोतनचम्पलिछायघायबज्जि
गनिसानघन। पक्खरघंटघमंकिबेगहल्लि
यहयवारन। साधानीसबसगभिरनअवर
कुअनेकभट॥ सहँसबीसहयसाज्जिभीमआ
युडवटउल्लट। निसघटियदोयरहतैंनिड
रलरनघेरिबुंदियलई। प्रातहिपुकारबुंदीस
प्रतिभयबिहालहाजरिभई॥ १॥ सुनतए
हबुंदीसचलियचढिबाजिबुद्दमन। खबरि
इतेबिचआयघेरिलिन्नोंअरिपत्तन। तब
हिभूपटरिबामलंघिअसलोलीभूधर।आ
ससुरधपुरकरियरनदंतादरसनबर। गज

मुखहपुरोहितकहियतबमैंतोजावतलरन
रन। भीमसोंभिंटि दिखरायभुजनगरद्वारर
न्हिहोंमरन॥ २॥ यहकहिगजमुखआय
प्रबिसिपच्छिमपुरतोरन। दक्खिनतोरननि
जनिकेततहँजायरच्योरन। भरिभरिबाहल
तुपकपिक्खिनृपभीमकहाई। दोउनकैंतु
मदंघमिलकुकरिबंधलराई। गजमुखहुपाय
तबलोभगतिमंदजायभीमहिंमिल्यो। पकराय
तबहिलिन्नोंनिपुनगुरुतामदतबद्विजगिल्यो
॥३॥दो॰॥गजमुखकोंपकरायइम।तोरन
अररनफारि॥ आयतरवतकोटसआरि। बुद्धि
यअमलबिचारि॥ ४॥इतनृपसोंसालम
कह्यो। मरनउचितइहिंजुद्ध॥जोनरुचततो
लरहिंहम।हमहिंसिक्खअबसुद्ध॥ ५॥य
हकहिसज्ज्योजायगढ़। निजपुरकरउरनास

॥नृपसुसुरथपुरतैंमुररि।गोमेवारनगाम॥
६॥मेवारहिंपुनिदाहिनैं।कीरगोमालवदेस
॥सालकभिंट्योजायतेंहं।पुरआमेरनरेस॥
७॥इहिंअंतरउनियारपति।नरुवबंससंग्रा
म॥नैंननगरकेगामकति।दब्बेतकतकुकाम
॥८॥कारातैंगजमुरलकुंकढि।गोमालवनृ
पपास॥तबहिंअनादरतरजिनृप।अंतरभो
उदास॥९॥छिनिअखिलअधिकारत
स।द्विजसिवदासहिंदिद्व॥कउलमग्गगुरु
सिरकहर।कोपबिगरिअबकिद्द॥१०॥को
टापतिबुंदियमुलक।इतसमस्तअपनाय॥
आनायनलकरउरसमुझि।घेस्यो सालमजाय
॥११॥बुंदियपुरअवरोधतैं।रानियबिपति
विरत्त॥इकबेग्रमआमेरइक।पुरभनायइक
पत्त॥१२॥अवरलोकअवरोधके।बिभव

सचिवतिहिँवार ॥ सबबेघमपुरसंन्चरै । देव
सिंहकेद्वार ॥ १३ ॥ रवरस्चरुपय्येअहसत ।
अरपिनित्यतिन्हएव ॥ इकहायनबुंदियबि
भव । दुभरनिबाह्योदेव ॥ १४ ॥ इतनृपमाल
वजायकैँ । लिन्नैंतुरगअनाय ॥ बेघमपतिप्र
तिभोलकी । कुंडियदि न्नपठाय ॥ १५ ॥ देव
सिंहवहबन्दिदल । गिनिसगपनव्यवहार ॥
दिन्नीहयसोदागरन । मुद्रातीसहजार ॥ १६ ॥
बिपतिबीचइमबंदगी । चुंडाउतकियचाहि
॥ अप्पनसिरस्तनकियअधिक । बुंदियबि
भवनिबाहि ॥ १७ ॥ इतकरउरपुरभीमनृप
। रह्योबिंटिरनरत्त ॥ अट्ठारहअहअंकुस्यो ।
मुस्योनसालमसत्त ॥ १८ ॥ पलपलबिच्चगो
लनपरिग । प्राकारनबिचपंथ ॥ सबकरउरतो
पनसिलगि । कुवभ्राष्ट्रकहरिमंथ ॥ १९ ॥ मुक्कु

कम्मकुलउमरावइक । सुखसिंहहचहुवान ।
जुग्गहिं हैं घर विभवपद । कियकसायपरिधान
॥ २० ॥ चह्व आनिन्ह बिचरत फिरत । कोटा
दल बिन्ह आय ॥ मिलि गद्दियत जि भीम नृप
दयो ताहि बैठाय ॥ २१ ॥ कह्यो भीम करजो
रि तब । मो सिर करहु निदेस ॥ सुखसिंह हु यह
सुनि कह्यो । चढ़ि घर जाहु नरेस ॥ २२ ॥ तब
हि कहैं सुखसिंह कैं । वह चढ़ि बुंदिय आय ॥
लतो किलो करउरनगर । लेतो हुतहि हुराय ॥
२३ ॥ पादाकुलकम् ॥ कोटापति सुखसिंह
काधेत किय । जान्यौं लोकन सालम जित्तिय
॥ कूरमपति इत मंत्र बिचारयो । जामि पबुंदिय
हीन निहारयो ॥ २४ ॥ अमररान के पट्ट उदैपु
र । जगतरान संग्रामधर मधुर ॥ तिहिं प्रतिद
लसल सिंह पठायो । स्वकर मंडि सतकार सिवा

यो॥ २५॥हेनृपतुमभीमहिंसमुझावहु।बुंद
हिंबुंदियदेसदिवावहु॥यहमोसिरअैसानक
रहुअब।तुमरोहुकमभीमस्वीकृतसब॥२६॥
तबहिरानयहपत्रबिचार्‌यो।कूरमपतिसंको
चसम्हार्‌यो॥निजकाकातरवतेसबुलायो।बुं
दियभीमसमीपपठायो॥ २७॥तबहिआय
तरवतेसभीमप्रति।अकिवयबिबिधरानकी
बिन्नति॥बुंदियतजिनिजगेहपधारहु।मोसिर
यहअैसानबिचारहु॥ २८॥यहसुनिभीमक
ह्योधरिगबहिं।बुधनृपतैंबुंदियनहिंदबहिं॥
जमीसमस्तसाहकीजानौं।तजिहौंतोहैहैंहुर
कानौं॥ २९॥यहकहिसिक्वदईतरवतेसहिं
।तजतभीमनहिंबुंदियदेसहिं॥तबदेसहिं
सालमलमिलुट्टन।कोटापतिथानन करिकुट्ट
न॥ ३०॥दो०॥मेवावतसामंतहर।इनहुं

नणहिलेस ॥ झुंदियड्गिपुरजैतगढ । लुट्टिय आयसदेस ॥ ३१ ॥ तिनपरपठयोभीमनृप । धा ह्भ्रातभगवान ॥ वानैंजायधनावपुर । किन्नोंहद घमसान ॥ ३२ ॥ सेवावत सामंतहर । मरेबहुत कारिजंग ॥ धाहूभ्रातभगवानकैं । घायबिलग्गे अंग ॥ ३३ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्व रूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रे चतुर्विंशो २४ मयूख: ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ छ

पद्धतिका ॥ संग्रामरानसादरकहाय । सोभी मनांहिंमन्नियसुभाय ॥ तकसीरतासमेटन विचारि । कोटेसउदयफत्तनपधारि ॥ १ ॥ सी सोदियेंदिसंग्रामरान । दियभीमतत्थकछुदि नमिलान ॥ अट्ठालसीसइकदीहआय । बैठे दुह्वनपरिखदबनाय ॥ २ ॥ आसादतासके

हेद्दपास। इकनदियआयकिन्नोंतमास॥कोटे
सकुजसकरिकाहिक्कुबन्त। बुल्लियसालमजस
चढ़िबरन्त॥ ३ ॥ सोसुनतभीमकरमुच्छघ
ल्लि। लैसिकवआयकुंदियउझल्लि॥रव्हौरसुभ
टजयसिंहनाम। सालमसिरपिल्ल्योजयसका
म॥ ४ ॥दलसँहँसबीसलैतदुरूह। जयसिं
हबिद्धिधसजितोपजूह॥करउरसुजायबिंटि
यसजोर। इकमासरहियघमसानघोर॥ ५ ॥
करउरसजपूतनइमउपेत। सरपूरसरधिजिम
सोभदेत॥जयसिंहपुरसुलुट्टतनजानि। मन
सोधिश्रेयसामहिंप्रमानि॥ ६ ॥सालमसमी
पलिखिदलपठाय। अबसामहमहिंतुममि
लहुआय॥ अरुतुमरेसुतसोंहअजेय। ममदु
हितासगपनहैबिधेय॥ ७ ॥मालमकहाय
तबइनअनीक। पर तोरनअंदरमिलनठीक॥

मनौयहैकुरङ्गोरतत्थ । पुरद्वारगयोलैतुब्बस
त्थ ॥ ८ ॥ उसलैंबढिसालमसदलआयारङ्गो
रलियउअंदरबुलाय ॥ सालमसुमिल्योजा
लमजनून । कुवघटियआइबैठकवुहून ॥ ९ ॥
दो॰ ॥ बीससहँसदललैंबचै । औसोकरउरहीन
॥ यहिनजालैंकूंमिल्यो । भीरुकबंधभिरयोन ॥
१० ॥ सालमसुलपरतापसों । स्वीयसुतासंबं
ध ॥ करिबुंदियगोकुम्बकारि । सुजयसिंहहत
संध ॥ ११ ॥ जायोजुगियरामको । अंकुरिक
रउराम ॥ जेरनदोहूवेरमें । भावीमिटैसुकेम ॥
इतकूरमकहिसंभरहिं । उज्जयिनीहमजाल ॥
जोलौंतुमअत्थहिरहहु । हमकरिहैंभुवहाल ॥
१३ ॥ यहकहिवहउज्जैनगो । सूबापतिसरसा
थ ॥ आमनामकायत्थिया । रह्योसुबुंदियराथ
॥ १४ ॥ कूरमरुपलिनिजभटनपुच्छिलरिव

समयमंत्रकिय।मिलिअप्पनकूरमनआम
संभरपुरलुट्टिय।अबकूरमपतिफुट्टिभयोस
बासिरस्वामी॥राकाकीअप्पनाहिरहेदिल्ली
सहगामी।अवरनउपायसुकृतअबहिउचि
तआहिदिल्लियगमन।सुंदरबिबाहिसाहहिं
सुतारहैंसदासिरकूरमन॥ १५ ॥दो०॥अमर
लिखाइउदयपुर।मेटिरीतिलिवहमुद्द॥पुत्रिनसें
दैंपहुमिपुनि।लग्गोरक्खनलुद्द॥ १६ ॥निज
तनयातबसंगलै।यहकुमंत्रउपजाय॥अजि
तसिंहदिल्लियगयो।पर्योसाहकेपाय॥१७॥
तबहिंदुनजिनतासकी।सुताबिबाहीसाह।
अजितसिंहकोंइक्कठे।किन्नीमाफगुनाह॥
१८॥साहबनायोसय्यदन।यातैंबेहमगीर॥
कुसलअलीइच्छितकरैं।कहिबेमात्रवजीर॥
॥१९॥तिनसौंसाहफुदाबिरहत।सम्मुहराज

ततसत्थ ॥ हुसनअलीके हुकमकों। मिट्टनको नसमत्थ ॥ २० ॥ हुसनअलीकहि मुक्कल्यो। यह मरुभूपतिपास ॥ संभरपुरभाई हनैं। बैरबिमंगों तास ॥ २१ ॥ यहसुनितब मरुपतिगयो। हुसनअलीकेगेह ॥ कर नजोरि अरु सपथकरि। अरुदी तिहिं अति एह ॥ २२ ॥ मैं कूरमबरज्यो। बहुत। साहसतदपिसम्हारि ॥ जयसिंहहिं पुरलुट्टिगो। भ्रातरावबेरमारि ॥ २३ ॥ सपथवृथा करिहूम मिल्यो। सय्यदसौं मरुमोर ॥ सय्यदतबसागस गिन्यौं। जयसिंहहि बरजोर ॥ २४ ॥ जयसिंहहु यहसबसुन्यों। मरुपतिसय्यदमेल ॥ तबउज्जइनीनीतितकि। अंकुरिरहिय अठेल ॥ २५ ॥ इहिं बिच दक्खिनदेसकी। पत्नीआनिपुकार ॥ मरहट्ठे लुट्टतमुलक। करिकरिबिदिधबिगार ॥ २६ ॥ व॰प॰ ॥ हुसनअलीस

य्यदनवाबदक्खिनपुकारलहि।पुरअवरंगा
बादचल्योदरकुंचबिजयचदि।सारधलक्ख
तुरंगसंगसतदोयतोपसजि॥आवतघनजि
मउमडिबबनिकरंबतनितबजि।उज्जैननिक
टआयोजबहिकूरमपतिइकनीतिकरि।पैंती
सकोसदरकुंचकोदुलहनिब्याहनब्याजदरि॥
२७॥दो०॥सरत्रिकोसउज्जैनतैं।इकचकुला
ननगाम॥तिनतनयासगपनकियउ।कूरम
सोंसहसाम॥२८॥वहसगपनमनचिंति
अरु।सय्यदगिनिबरजोर॥बिनुहिलगन
ब्याहनगयो।कूरमकुलसिरमोर॥२९॥
गीर्वाणभाषा॥वंशस्थ:॥लग्नंविनोद्वाहचि
कीर्षयागतो।नीतिस्थआमेरपुरस्यभूपति:
तत्तस्यपत्नीरवलुचाकुवाणजा।पलङ्कपाथा
बलयान्यधारयत्॥३०॥भा०मि०॥दो०॥

कूरमकौंपरिनायहुम । सय्यदसकिवनयत्त ॥
नवब्बरतब उज्जैनपुर । आयेपरनिउमत्त ॥३१॥
ष०प० ॥ नवब्बरआयअवंतिजानिसय्यदद
क्खिनगन । लिखिबिन्नतिमुक्कलियसाहकू
रुकहजूरतत । बुंदीपतिआयनस्वामिआय
सलुध्यो किन ॥ आलमकेअतिसोकनाँहिंफर
मानलयेहुन । बुंदियलिखायखबरबसकुइन
हिंसिरसदकुकअन्नखायहे । फरमानदेहुक्क
कुछुघहिंअबहजूरकुलआयहे ॥ ३२ ॥ दो०
॥ यहसुनिसाहनबाबहूक । नामदलावरखान
॥ लिखिलपठायुतमुक्कल्यो । कूरमअरजम
ान ॥ ३३ ॥ आयदलावरखानतब । कूरमस
चिवसमेत ॥ बुंदीलैकुलभीमसौं । अर्प्योइन
हिंसहेत ॥ ३४ ॥ प्रथमसाहकियखालसे ।
कुहहिंनदहुसमाप्धि ॥ कोटाकेउत्वायकौंथा

नाँनिजइनथप्पि ॥ ३५ ॥ सुलाभनायअधी
सकी। रानीजोरदुवारि ॥ सुतानामसूरजकुमरि
।कुवताकैगुनगोरि ॥ ३६ ॥ सकअंबरहयसत्त
इक १७७० । अमारुफग्गुनमास ॥ कोटापति
बुंदियलई। गिल्योसुदुज्जरग्रास ॥ ३७ ॥ स
कजालेमेंहयसत्तइक १७७२ । अगहनद्वाद
सिस्याम ॥ आईपुनिबुंदीसकें। बसुधाकुलटा
बाम ॥ ३८ ॥ बुल्लिसच्चिवबुंदीसके। फेरिबु
द्धनृपआन ॥ देबुंदीदिल्लियगयो। जवनदला
वरखान ॥ ३९ ॥ अदरदेसबुंदीसकें। आयो
सबहिबहोरि ॥ भीमनगरचारौंमऊ। द्वैधरग
नाँनछोरि ॥ ४० ॥ तदनंतरफरमानपुनि। पठ
येसाहजरूर ॥ बुद्धसिंहजयसिंहनृप। बुल्लेउ
भयहजूर ॥ ४१ ॥ ष०प० ॥ फरमाननहुलके
लिसज्योकूरमनरेसजब। बुंदीसहिंबुलवाय

कह्यो आहृतउ भयअब ॥ १ पिक बद्ध फरमान चल
कु दिल्ली हमसत्थैं ॥ लैहैं साहरिझाय मुकुट हूँहैं
अरिमत्थैं । कूरमनरेस यह कहि चढ्यो बुदीप
तितदपिन चढत । आलस अचेत मति मंद
अति पलपल मति चलिहैं पढत ॥ ४२ ॥ सुन
त ए ह जयसिंह आसु बुंदिय दल आयो । जालि
पहुहिं कहिय सालसाजि मोद सिवायो । अब
नृजान आरुह कु चलहिं धरि खंधभृत्य हम ॥
निज असुसपथ दिवाय एह आकिबय नृप कूरम
। लंको चतास चकु बानत बचढि तुरंग तिनसं
गहुव । इहिं रीति छोरि मालव अवनि दिल्लि
थल्लिय भूपदुव ॥ ४३ ॥ दो० ॥ कढि मुकुंद
दरउमेर । चम्मलि पट्टन ओर ॥ लक्खैं वैरि थागि
रिलंघिकैं । आय ग्राम अनघोर ॥ ४४ ॥ क
छु दिन तत्थ मुकाम करि । चरमुक्कालि इत

चां...।राभरनिजउमरावसब।देदल
लिनबुलाय॥ ४५ ॥प्रथमइंद्रसल्लोल
भटनगरइन्द्रगढनाह॥मेघसुवनछिल्लर
मरद।आयोअधिकउछाह॥ ४६ ॥छिल्ल
रसौंजयसिंहनृप।मिल्योनबत्यनघल्लि।
इनअकबोतुमआमर्द।हममिलिहैंअव
हल्लि॥ ४७ ॥हमकहिकूरमसौंमिल्यो।
देपयगहियसीस॥इक्कसूरपनअनुस
र्‌यो।अनरिवइन्द्रगढईस॥ ४८ ॥करउ
रपतिआयोतदनु।मिल्योउररउद्योत॥
सालमजुग्गीरामसुव।भटमुकुकमसिंहो
त॥ ४९ ॥रनकरउरपत्तिपचिरह्यो।सु
नृपभीमहतसंध॥यातेंदोउनअहस्यो।
सालमघप्पालिरवंध॥ ५० ॥सुभटवे
रिसल्लोतसजि।नगरधनोधीनाह॥जे

लसिंहजाजवजयी। आयोसरससपाह
॥ ५१ ॥ बैरिसल्लकुलउद्धरनहड्डारनह
मीर ॥ बलवनपतिआयोबहुरि। अभ
यसिंहअतिबीर ॥ ५२ ॥ पुररवातोली
पतिप्रबल। अमरसिंहअभिधान॥इंद्र
सल्लकुलउद्धरन। चाय मिल्योचहुवान॥
५३ ॥ मिल्योआनिउद्धतगुमर। चंडसमर
चहुवान॥सेरसिंहसामंतहर। भजनैरीपु
रमान ॥ ५४ ॥ नाथाउतनगराजहू। नग
रगुढाकोनाह ॥ पुनिहूजोनिम्मानपति।
आयोमिलनउछाह ॥ ५५ ॥ दो॰ ॥ सब
लमिलेउमरावसब। हमस्वामीढिगआ
य॥ सबहिसिरहिसरूपन। जयसिंहकुज
सगाय ॥ ५६ ॥ सबनकह्योदिल्लीसदि
य। छुंदियलिखिलिखाय॥ तेकग्गरपि

कैंवंहमद्ध। नवद्धन दिन्न दिखाय॥ ५७॥
पिक्खिपटासबहिन कह्यो। कूरमनृपहिंसि
राहि॥ मऊनगरबारां मुलक। रानपटाबि
चआहि॥ ५८॥ कूरमतबमुसिकाय क
हि। दुवहम दिल्लियजात॥ अबलैहैंकहि
साहसौं। सिन्नमुलकबसुआत॥ ५९॥ इ
मकहिअवरनसिक्खदे। चलेउभयनृप
तत्थ॥ सालमसिंहरुजैतसी। सुभटलये
दुवसत्थ॥ ६०॥ इमदुवनृपआमेरपुर। द
रकुंचनचलिआय॥ जामिपसालकप्री
तिजुत। रहेकछुकदिनराय॥ ६१॥ तहँ
करउररनरीफलकि। सालमहितबरबसी
स॥ नैंननगरकोपरगनों। सबदिन्नोंबुंदी
स॥ ६२॥ सालमकेइकलभई। पदुमिद
म्मनवलक्ख॥ कतिकनतबयोंकूकह्यो।

बनिहैंकबक्कबिपक्ख ॥ ६२ ॥ मुक्तादाम
॥ करीइमसालमकौंबरवसीस। गयेपुनि
दिल्लियदैअवनीस ॥ उभैहितसंगगयेपु
निआम । सजीनृपदोउनसाहसलाम ॥
६३ ॥ अनामयदोउनकोजबनेम । सिमला
थरपुन्छियप्रीतिबिसेस । उभैनृपअप्पन
अप्पनओक । सिराहहिँपायरवेहितसो
क ॥ ६४ ॥ उभैभटसालमजैतसमत्थ ।
बुलायउसाहुसभाबिच्चतत्थ ॥ नकीबनकी
कृतमामउभल्ल । परीलकरीइकसालमह
ल्ल ॥ ६५ ॥ दईपुनिसाहसनस्तनसिक्ख
रहीनृपकूरमकीअतितिक्ख । रहैइम
दिल्लियहैलरनाह ॥ सदारखिलिबनलबुला
बनसाह ॥ ६६ ॥ लयोनृपकूरमसाहरि
साय । मसनबफैहैंसुनरैहितपाय ॥ सुसा

हबसालमकौं करिमुद्द। पठायउ बुंदियपैं तबबुद्द॥ ६७॥ सभादिनइक्कबडीरचिसाह। बुलायउ आमसबैनरनाह॥ गयेजय सिंहहकूरम ईस। गयोबुधहड्डुनवंसअधीस॥ ६८॥ गरब्बलसाहनकेससुरत्त। गयो मरुईसअजित्तकुलत्त॥ गयोनृपसंभरथीमसदंध। गयोपुनिरूपपुरेसकबंध॥ ६९॥ गयेइमहिंदुवमिच्छअसेस। गयोपहिलैं तहँबुद्धनरेस॥ सलामकरीकासिपादिसठल्ल। लईनृपबुंदियपद्दमिसल्ल॥ ७०॥ गयेतदनंतरसर्वहिआम। सजीहितपूरवनम्रसलाम॥ बिलंबकलूकरिआयउभीम। लख्योहितहेतरचीतसलीम॥ ७१॥ सिरैलरिलक्खहिंमुद्दरिसाथ। जासो मनमाँहिंसुक्यो मिटिजाय॥ दईउतसा

रिरह्योतबतैंवहउज्झर। साहहुकमबिनुरा
नजायस्वच्छंदबसैं किम।। यातैंपठईअ
त्थअरजसंग्रामसिंहइम। अप्पहुनिदेस
बसवायअब चित्रकूटहूहेहमरहैं। सतपंच
सुभटपरवरैतममकथितकहोतंहं निबहैं
७५।।दो०।। नजरिहुत्थ्य करिहै किती। यहै
कहीजबसाह।। तबाहि सम्भ्रमयलक्खमि
त। अक्खेकूरमनाह।। ७६।। छ०प०।। सु
निसुरानमुक्कालियनजरिकुंडीत्रयलक्ख
न। कूरम किन्नीनजरिसाह पिक्खीसुमोद
सन। लियउपटालिखवायरह्योमहुरकुअ
वसेसह।। अरजइक्कपुनिकरियनगरअ
मैरनरेसह। बुधसिंहभीम बिग्रह बिरचि
छिज्जहिंलरिलरिपरसपर। दोउनमि
लायअबअप्पहुतभेटिबइरमंडहुमह

र ॥ ७७ ॥ दो० ॥ सुनत राह कोटेससौं ॥ दि
ल्लीसाह जु लाय ॥ करहु मेल बुंदीससन ।
जयसिंह हिंगजाय ॥ ७८ ॥ जो तुम छि
त्तौंहु फल लहि । सो सब पच्छो देहु ॥ राम
प्रमात रफत्त तुरि । सुनय साम करि लेहु
॥ ७९ ॥ हरिगीतम् ॥ बहु जोर यों प्रायस सा
हको सुनि भीम भीरुत थी भई । जयसिंह
के घन रूप देर लुजाय लिख्यति मेदई ॥ कछु
वाह कहि बारौं मजुम्म छोरि इन लिखि
दीजिये । बुंदीससौं मिलि साम कैं इकथा
ल भोजन कीजिये ॥ ८० ॥ तब साह यों
कछवाह है मन मैं न इक्क तजानिकैं । कोटे
स तौं मिलि देसदीनौं लेख करगर दानिकैं
॥ फेरि सु सन इक्क हि थाल यों भूपाल
नाहि हिं बिचस्यो नृप भीम उप्पर ख्योर ।

ओमनमाँहिं दोरवभस्योजस्यो ॥ ८१ ॥ सक
तीन हय रिखि इंदु १७७३ मैंयह बत्ततीन्न
कैंभई । इहिं बीच जट्टनकी पुकार अपार दि
ल्लिय उव्बई ॥ इक नेर थूहनि ईस जट्ट सुनाम
चूड़ामनि रहैं । धनजोर ओमन जोर जोर नजो
र फोजनानि ग्रहैं ॥ ८२ ॥ तब साह जट्ट पुका
र पैंकछवाह भूपति पिल्लयो । बुंदीस बिधु
स बसंग नृप करि सेन संचय ढिल्लयो ॥ इन
जाय तोपन मालकैंर चिजाल थूहनि बिंटई
। इतसाह बुंदियनाह बुल्लि रुरान बन्न रुप
च्छई ॥ ८३ ॥ बुधसिंह रान पठाय बिन्न
ति चित्रकूट बसावहीं । कियभेट दम्म त्रिल
क्ख ओ अपनों निदेस उठावहीं ॥ नयमंद
हड्डु नरिंद यों सुनि कुम्मका निकुनां करी ।
जयसिंह उक्कम पंच जानत हूय है कथ्थ उच्चरी ।

॥ ८४ ॥ वहदुर्गअकबरसाहरनकरिअ
च्छ ह्वादसौमैंलयो। हमआदिबकुतनरान
लजितबसीस साहनकौंनयो॥ वह चित्र
कूटबसाथकैंपुनिरानफैलप्रचारिहैं। अव
नीप हिंदुनफोरिअंकुरिसाहनाहबिसारि
हैं॥ ८५ ॥ यह राह क्रूरक साह सुनि वहप
अमीत बिचारयो। जयसिंहपैंइतभीमधूह
निजंगसोहप्रसारयो॥करजोरिकहिमम्ग
हपुत्रियआप्पउपयनकीजिये। कछवाहत
बजयसीह कहिकछुदीहअंतरदीजिये॥
८६ ॥ नृपबुद्धसोदरकीसुताहमपुब्बसगप
नकैंदरी। वहब्याहकरिदुलरावरेंहवनउप
नयअहरी॥जयसिंहयहकहिभीमसोंबुध
सिंहप्रतिदलपिछ्छयो। तुमब्याहमडकूबेग
मैंपुनिभीमकोबचफिछ्छयो॥ ८७ ॥ बुध

सिंहयहसुनिसाहसौंलहि सिक्खमूहनिसं
क्रम्यौं ।जलघोरसिंधुहिलोरज्यौंदलजोरज
हनैपैंजम्यौं ॥ लिखिपत्रबुंदियजोधसोदर
कीसुतानृपबुल्लई ।उम्मेदकुमरिसुनामजोप
रिनायकूरमकोंदई ॥ ८८ ॥कोटेसभीमङ्
अप्पनीतनयासुतत्थबुलायकैं ।बरजोरकू
रममेरकोंदियप्रीतिसहपरिनायकें ॥ मक
अग्गिहयरिखिइंदु १७७३ हायननेरमूहनि
जंगमैं ।कछवाहइमदुवब्याहकीनेबीरसुन्नि
रसरंगमैं ॥ ८९ ॥करिब्याहकूरमनाहयोंपु
निताबजहनपैंदयो ।हरिसिंधभाइकराज्यौं
तरकावतोपनकोभयो ॥ उडिकोटअड्डनमु
हयोंगढबहजहनकैंपरे ।कढिबेग बगहि
तेगवेसबसेनसम्मुहह्वैमरे ॥ ९० ॥जयसिं
हमूहनितोरिकैंइमजहचूडामनिहन्यौं ।अरु

बद्दन सिंहहिं रक्खिसरनैं अप्पजयछकउप्प
न्यौं ॥ जिहिं बदनसिंहनिकेतसूरजमल्लनह
सुपुत्त भो । जरबंटिकैं सिरसंटिलैभुवफोजल
रखनजुत्तभो ॥ ५१ ॥ द्वैकोटिआमदमुलक
दखिरु तावसाहनपैंदयो । धरिबीसकोटिस
कीयकोसमरोससत्तुनकौंजयो । लरिआग
रालहिमारि दिल्लियसाहकोसनलुट्टिकैं।
कियभरतपुर निजराजधानीजंग मिच्छनजु
ट्टिकैं ॥ ५२ ॥ गढभरतपुरकुम्भेर डिग्धरु
वैरयेत्रय निम्मिये । अैसान सिरआमेरकोपु
ह्योनजोजुइतेभये ॥ ताकेजवाहरमल्लपुत्र
सहायसूरकुजाहिले । बैठोसुमरुपतिविजय
सिंहकुइकगद्दियताहिले ॥ ५३ ॥ जिहिंपु
रनातियएभये तिहिंसरनकूरमस्वीकरयो।
गढफोरिथूहनितोरिसबनृपजोरि दिल्लिय

संचस्यो ॥ रसराहसूंरुधिराहसौं मिलि साहसों
जय अप्पयो। सिरमोर भूप समस्तमैं बरजोर
कूरम यौं भयो ॥ ९४ ॥ कछवाह साहउभै हि
इक गिनि व्याज भीम बिचारयो। जामात पर
रचि घात जड नृप सत्रु मंत्र सम्हारयो ॥ पुररू
पनगर नरेस अरु मरुदेसपति दुव ल्लिकैं।
मिलि इक्क सम्मति मंत्र मंडिय भूपतीनन अ
ल्लिकैं॥ ९५ ॥ लिखि पत्र सथ्यद पैं नतांकि व
नदेसदा किवन मुकल्यो। इत साहकी हित
चाहसौं कछवाह भूपति उज्झल्यो ॥ जयसीह
यह कछु दीह मैं अधिकार अप्पन पा' है। ब
निकैं वजीर समस्तमस्त कचंड घात चलाय है॥
९६ ॥ रहनौं तुम्हैं जु वजीर ह्वै अरु बंधु बैरनि
वेरनौं। तो बेग आव कुतेग मंडि प्रमंडि कूरम घे
रनौं ॥ छुल पिक्खि यह छदसज्जि सथ्यद सेन

सम्प्रदउप्पर्‌यो । सजि अग्गलोपन मग्गकोप

नलज्जलोपन संचर्‌यो ॥ ९७ ॥ उज्जैन आ

यरु साहकौं लमंडि ढूतन अप्पये । हम आनि

पूरब देससौं तुम पट्ट दिल्लिय थप्पये ॥ जय

सिंह नृप मम भ्रात मारक ताहि निज हिय ला

यकें, मम तुल्य भ्रद्दर भ्रद्दर्‌यो सुदये अप्प

भुलायकें ॥ ९८ ॥ कछु वास नहिं बिसवा

स हैं भ्रव बास आयरु भ्राकिवहो । रनधाय आ

यस पासमैं निज बंधु बैर नराकिवहौं ॥ सुनि सा

हयह निज मातसौं सब बात मध्यदकी कही ।

तब बात आकिवय घात यह जयसिंह उप्पर

है सही ॥ ९९ ॥ तिहिं दक्ष सादर सिक्खसौं

आमेर नेर पठायकैं । तब चक्र अप्प मौंहिं

नाँहिं लरौं जु मध्यद आयकैं ॥ सुनि साहयह

कछवाहसौं हिलधाह आकिवय सर्बही । तुम

जाकुदेसहिं सिक्खलेअतिफेलसय्यदकोमन
ही ॥ १०० ॥ जयसिंहआक्खियमोकरौ तुम
जुदीनहिंमारिकैं लेहैंसुआवलबेरयेसबऔर
त्रउतारिकैं ॥ तसमातमज्जकुसेनसम्मुहस
नुसय्यदसारिहैं । सबहिंदुपायनलायहिंदुस
थानआलबिथारिहैं ॥ १०१ ॥ कहिसाहतुम
हजाकुजेअतिजोरसय्यदजानिहैं । पुनितुम
हिंदुन्निमपंचकरि तिहिंमारिखेरप्रमानिहैं ॥
तबकहियकूरमरानहित फरमानजोवहनिर्म
यो । चीतोरदुग्गवसायबेहितसोससुकुर्नो
भयो ॥ १०२ ॥ बुंदीसबैननचिंतितबयहसाह
नाँहिंनस्वीकरी । कछुऔरमंगकुरानहितदेहैं
सुयहपुनिउच्चरी ॥ आमेरपतितबराहआक्खि
यरामपुरलिखदीजिये । फरमानभूपतिरानस
र्वसमान कीजिये ॥ १०३ ॥ दो० ॥ मालव

धरअंतरसुलक। नगररामपुरनामु ॥ चंद्राउत
रहि सोइतहँ। स्वामि नाम संग्राम ॥ याके पुरुखन
अगग अतिसेये दिल्लियसाह ॥ किये सुभट
तबरावकहि। राजबरसि हितराह ॥ १०५ ॥
तबतें बुंदियजोधपुर। पुरआमेरसमान ॥
नमानितसि सोदइ। सेवतरहि सुलतान ॥
१०६ ॥ तिनकुल यह संग्रामनृप। रह्यो सुररिल
हिकाल ॥ छिद्र यहै तकि गहन छिति। कहि कूरम
भूपाल ॥ १०७ ॥ षट्पद ॥ कहि कूरम करजो
रि सुनहु मम बत्त साश्वत। रामपुर पसंग्राम
रहियअबसुररिजोर जुत ॥ जनपद लेहु उतारि
रहै सु रैनदिना नाँ। रानहि देहु लिखाय अचहिँ
सेवन यह रनों। सुनियह लिखाय फरमान दि
य। कूरिस मुद्र जयसिंहकर। रानतुम दक्खिगढर।
मपुर सज्जहु सेनसुभटवर ॥ १०८ ॥ दो॰ ॥

रामपुरीं लिखवायइम। रानअरथ्यहितराह॥
सजवसिक्खकरिसाहसौं।नीच्चितुरकछसाह
॥ १०९ ॥जमिपदेरनआयकाहि।चलकु
करिसिक्ख ॥इहोंसमयकछुओरभो।रहैंनरा
जसतिक्ख॥ ११० ॥ष०प०॥सुनतरहबुंदी
सदिस्सुकूरम्मतिउत्तर।तुआयवलहिसि
क्खसजावसज्जितपद्धतिपर।हमहिंसिक्ख
अबहं कछुअंतरपरिजैहैं॥चलकुआप
तसमातसिक्खलछुतहमऐहैं।जयसिंहसु
सुनिआमेरपुरआयकटकबहुसज्जकिय।इ
नसदलआनदिल्लिय उमेंडिकुसलअलीमन
खातहिय॥ १११ ॥स्वसुरसाहकोमृतकअजितअ
भिधानधव्वपति।रूपनगरदृढ्ढोरजनकमान लवि
मंदमति।याहीकोजामातभीमकोटेसरामसुत॥
बंधुबगन्नयजानिबीचडारियबिसासजुत।

कहिसाहसामसय्यदबिरचिराजकाजनिबद्ध
कुसकल । नदियउडारिसय्यदश्रवनउनस
बफोरियसंबल ॥ ११२ ॥ एतीलहिअव
नीपलच्चिगअतिभुम्मिलुभाये । बदलिसाहसों
छनअधमसय्यदबिचआये । साहहिंदैबिस
बासइक्कबसरजुरिइक्कत । बैठेकनरहस्यस
हपंचमकीसम्मत । तबसाहतीनभूपनफक
रिबंधिजाहिकीपम्पकारि । मरवतूलपासिगल
नारिकैंमारिगिरायउगारिलारि ॥ ११३ ॥ हरिगी
तम् ॥ सकबेदहयरिखिइंदु १७७४ हायनमास
फग्गुनगोरमैं । हनिसाहअयनरनाहसय्यदचा
हहुवअतिजोरमैं । परिकूकदिसदिसकूरमरख
ननारितोबहउच्चरैं । आतंकसय्यदकोअ
तीवसुहव्यगोपनहूकरैं ॥ ११४ ॥ लैसबनकुसल
नदृ-यअन्नधरेसधींगहमैंधरयो । मरुईससुनि

बसुजुत्तपुत्तियबुल्लिलोभहिअद्दस्यो। सनि
त्तमुक्कालिधन्वदियतनयासुयोंमरुईसनें। अ
रुभीमसय्यदसोंकहीबुधसिंहवैररचैंघनें॥
११५॥जयसिंहजामिपहैयहैतुमसोंकुछल
करितोरिहै। तसमातमारकुयाहिसबमिलि
जोरछलयहजोरिहै॥सुनिएहसय्यदफेरिफो
जनबद्दबुंदियबंधयो॥अवनीनतीननअप्प
लेबुधसिंहडेरनपैंगयो॥ ११६ ॥बुंदीसयह
सुनिसेनसज्जिरुसेनसम्मुहसंक्रम्यों। तबजे
तआकिवयघोरयहअतिजोरसय्यदकोजम्यों
।लाहोरतोरनहोयनृपतुमजाकुकूरमदेसमैं।ह
मधीरग्गनहमग्गिरजुज्झहिंबीरजोरठवेसमैं॥११७
॥यहकहतआतुरआयरवलदलजानिबद्दल
लुंबये।बजिबीरआनकयोंअचानकरागसिंधु
वलग्गये।बजिडैरुडिंडिमडक्कओबहरक्कआव

फारक्काई। अहिभोगलेनलचक्कओधरनीसुथक्कनथक्काई॥ ११८ ॥ परिओरओरनरोरदिल्लियजोरजालमजंगभो। हटनारिहट्टनलग्गिपट्टनअंगरंगबिरंगभो॥ अजरातजातबजारबीथिनयोंअलातसुउच्छरे। जिममासखाकुलदरसपैंनेहालकासकरैंजरे॥ ११९ ॥ आकासधूमहधूलिधुंधरिभानभासनलुप्पयो। बजिकंकगिद्धसिवानपच्छातिरारिसय्यदरुप्पयो॥ अनिरुद्धसुतलबतेगझारतझीरमारलनिक्कल्यो॥ कुलबैरिसल्लजजैतसिंहसुसेनसम्मुहउच्छल्यो॥१२०॥ पुनिजोधराजप्रधानऊरुजआयरारनअंकुरे। लहिरोककोकनसोकमेपुरलोकओकनमैंदुरे॥ कमनैतफोजनमैंपरयोभटजैतहुहकारिकैं। रननैरदिल्लियकीरहीतियजालरंध्रनिहारिकैं॥ १२१॥ लखिनागिनिजैतकोबिसमोहसत्रुनकोंदयो।

दलजुद्धजावप्रबुद्धह्वैनृपतावतोरनलंघ्यो ।
निकसायस्वामियसंकरैंबनिओटतोरनपैंअरयो
।बजिहक्करनधमचक्कयौंबिनुमत्थजैतलस्यो
पस्यो ॥ १२२ ॥ परिबीरसत्रहसंगकेदलजामि
इकसुरुक्कयो । लरिक्रोधकैंपरिजोधऊरुजस्वा
मित्वनसबचुक्कयो ॥ लाहोरपद्धतिभूपकढिक
छ्बाहजनपदसंक्रम्यौं । इतजीतिसंगरधीरस
य्यदजोरदिल्लियमैंजम्यौं ॥ १२३ ॥ कियसाहना
मरफीलदोलामासछहबिचसोमस्यो । तबओर
कियदुवमासबिचतजिसोकुसंचरसंचरयो ॥त
बकियमुहम्मदसाहसाहसुचाहसय्यदकीभई
।यहयौंछहायनमैंछसाहनथापिदिल्लियसुग
ई ॥ १२४ ॥ष० प० ॥ सकबसुरवदहयइंदु
१७६९ मरिगआलनओरंगसुव । गुनहन्तरि
[illegible]

सुताहिहनिसकचउहत्तरि ॥ पच्चहत्तरियहमर
तअवरकियसोऽजगयोमरि। सय्यदवजीरपुनि
मंत्रसजिआलमनातीजानिजिय। तक्कुतरफी
लकदरहतनयसाहमुहम्मदसाहकिय॥१२५
॥ दो० ॥ सकसरहयसत्रह१७७५समय।सय्य
दथप्पिसुलाह ॥ पुरदिल्लीकेपट्टपर। धर्योमुह
म्मदसाह ॥ १२६ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहा
चंपूस्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहच
रित्रेपंचविंशोमयूखः ॥२५ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥
प०प० ॥ इतकूरमगृहआयसेनसय्यदडरस
ज्जिय। लिखितरामपुरपत्ररानअंतिकमुक्क
लिद्दिय। मुलकरामपुरदक्षिअमलमंडऽहुत
अप्पन ॥ दलपुनिसज्जऽजदुरंतमंतबलवंतथ
प्पिमन। हम्मसीसघातसय्यदनकतआतता

यिदलदर्प्पअति।जोपरहिंकामतोइतसज्जव
पिक्खुदलच्चित्तोरपति॥ १ ॥दो॰ ॥यहकहा
यसजिदलअतुल।इतकूरममतिमान॥गाम
सुटोडाभीमकैं।दिन्नंआनिमिलान॥ २ ॥इहिं
अंतरकूरमसुन्यौं।दिल्लियजामिपजंग॥लंघि
पहररवट्टआसनलिय।पुनिसुनिकुसलप्रसंग
॥३॥दि ल्लीतैंइहिंबिच्चनिकसि।रनकरिबुंदि
यनाह॥मिलियआनिजयसिंहसौं।टोडाअ
धिकउछाह॥ ४ ॥कोटापतिअग्गैंलियउ।
सोपुरमुलकछुराय॥इंद्रसिंहसोपुरअधिप।
निकस्योप्रानबचाय॥ ५ ॥गोरबंसअवतं
सयह।सोपुरपुरअधिराज॥आयोमिलिबुंदी
ससौं।कूरमदिगभुवकाज॥ ६ ॥उद्धुरः ॥
इतउदयपुरपतिएस।संग्रामसिंहनरेस।पुर
रामपुरलहिपच्छ।सजिसेनपिक्खियतच्छ॥ ७ ॥

तिनरामपुरलियघेरि। कियरारिखगानरेवरि॥
तबरामपुरनरनाह। संग्रामसिंहसचाह॥ ८॥
करबंधिनेरबिहाय। पयरानलग्गियआय॥
तबरानलखिनतएस। दियमंडिअड्डहदेस॥
९॥लहिअड्डभुवतबराव। कुवरानकोउमराव
॥भुवअड्डिछिन्नियरान। छितच्यारिपुरजुतथा
न॥ १०॥ जिम्मोदजीरनढंग। सजिकुकुटेश्वर
संग॥ लियनैरमीसचिनाम। कियतत्थसेनमु
काम॥ ११॥भुवअड्डलोइमरान दियफेरिअ
प्पनआन॥भुवअड्डपतितिहिंरक्खि। लिय
बंदगीरसचक्खि॥ १२॥खटसत्तहयइक
१७७६मान। लियरामपुरइमरान॥इतजोर
सय्यदकिन्न। गहिहत्थदिल्लियलिन्न॥ १३॥
दिल्लिपतिमुहम्मदसाह। ताकीनकछुजियचाह
॥कोटेसअरुमरुनाह। कियदेउबल्लिसुलाह॥

॥ १४ ॥ तुमजायनिजनिज देस। सज्जकुअनीक बिसेस॥ खगभारधारनखेरि। लैहैं वकूरसघेरि॥ १५॥ दुवसालजामिपमारि। आमेर ढुंदियधारि॥ रहिहैं निरंकुस होय। पिन्छैंन कंटककोय॥ १६॥ मरुईसस्सुनियह वत्त। मरुदेसआयउमत्त॥ लगि सेनसज्जनअंध। कढवाहसीसकबंध॥ १७॥ इ तभीमभुम्मिउमंग। ब्रजआयगोकुल ढुंग॥ गुरु गोकुलस्थ बिचारि। लियमंत्रवल्लभधारि॥ १८॥ दो०॥ वल्लभमतचहि मंत्रलहि। रजततुलाकि यदान॥ हुवसेवक ब्रजनाथको। कोटापतिचहु वान॥ १९॥ पादाकुलकम्॥ कृष्णदास निजना मकहायो। नंदगामकोटा लिखवायो॥ सेरगढसु थप्पिय बरसानौं। इननामनव्यवहार चलानौं॥ ॥ २०॥ कोटकोटअंतरकोटापुर। कियब्रजनाथ निवेदितआतुर॥ दानरुद्विजभोजनबहु किन्नौं॥

न्चिकनमाँहिंरहनौंपुनि लिन्नौं ॥ २१ ॥ दुस्योकि लवडेरनकेअंदर । बाहिरनायेपंद्रहबासर ॥ रोग रोगकाहिमृत्युउडायो । कोटापुरसुनिसोकअधा यो ॥ २२ ॥ माधानीमिलिचाहिन्नुद्धचित । सावधा नकोटाकियसज्जित ॥ द्वारनअररलगायथीरध्रु व । बुरजबुरजसिरमरनमंडिध्रुव ॥ २३ ॥ जान्यों मलभीमहिंसुनिऐंहैं । बुंदियकटककढिन्निगढ लैंहैं ॥ सोहिभईसालमसुनिधायो । लुट्टनकोटामु लकलगायो ॥ २४ ॥ दिल्लीतैंनृपसालबिहन्नरि । सालमपठयोमुख्यसचिवकरि ॥ इहिंतबअैसे राजअवेरयो । किस्योसमुझिबिनुफेरयोफेरयो ॥ २५ ॥ अबयेंहंसालछहन्तरिअंतर । मलमलसु निभीमहिंचालिसबर ॥ बुंदियतेंचढिबेगकुबुद्दी । रुपिसालमकोटाधररुद्दी ॥ २६ ॥ बिनुनृपआय सकोहबढायो । मारलूटकरिफैलमचायो ॥ सुसु

निभीमगोकुलसनचल्यो। गिनिसागसमुच्छलक
रयल्यो॥ २७ ॥ कोटापुरपत्तोनिसबेला। द्वारआ
यसुभटन दियहेला॥ खुल्लहु अररजियतहमआ
ये। प्रातसजहिकरिहैंमनभाये॥ २८ ॥ यहसुनि
अजबसिंहप्रधानी। प्रेमसुवनबानीपहिचानी
॥ हसितबआयउद्धारकल्हहर। अररखुल्लिभूप
हिंलियअंदर॥ २९ ॥ बंदियघरतबकुसलबधा
ई। इमसुभीमवहरत्तिबिताई॥ प्रातहिकटकअ
चानकसज्यो। गहिगुमानसालमसिरगज्यो॥
३०॥ पुरआटोनिहुतोवहसालम। पकुंच्योभीम
जोरिदलजालम॥ सालमदलहिंपिक्खबित्थर
सह। सबनसुनायभीमअक्खीयह॥ ३१॥ भुजंग
मम्॥ सालमदलबहुसज्जिमुलकनिजमारयो। आ
प्पनअबइहिंखेतलरनललकारयो॥ वृद्धनियं
तिबलवाननतोहल जिनिहैं। कोटापतिसकुटुंब

नतोयहँ बिन्तिहैं ॥ ३२ ॥ दो० ॥ अर्जुननातीहडु
होपुरबडोदपतिपास ॥ तिहिंअकवीनृपभीम
सौं । उलटीयहकिमआस ॥ ३३ ॥ भीमकहियजि
लैंबिनां । अप्पनजिंदलरहैंन ॥ अप्पनबिनुयहठ
ग्रहै । लैहैंबुंदियऐंन ॥ ३४ ॥ यहकहिबाजिनब
ग्याले । परयोभीमपबिपात ॥ स्वरकोननमनुचुग्गत
रिकन । भल्लीसैननघात ॥ ३५ ॥ मरुभाषा ॥ डिंग
लभाषत्येके ॥ असलस्जातीयेप्येवप्रसिद्धंगीलना
मकंमरुदेशीयंछंदः ॥ गीतिष्वपिसुपक्षोगीतः ॥ अ्सी
लावैरेलुआणेंडायों संपातिरूपराभडांलेलांलाणे
बागैंरूपरालग्यो लीह अधायोरवागैरेलीसमागरै
ऊपराआयोसालमेसनागरै धूपराअंमसीहघटा
बीजघटकीडतोलिखागांबीरघांचेरदांतंबाटकी
बांगांघोलेनागांरांडिदैकावेरामरैछदांबिहंग
सटकीदोलेफदासेनांबिराल्लेमाटकीफाडिफा

ड़ि ।।डांणां ओक ओक जोंगीजैतरारूडायाडाकी
तोकचंचोंकेबाणां ।छुडायावीरतालपांणांछोकसं
अरी असंखोंकेउडायप्रांणांबांणांसोकपंखोंकेउडा
याबूंदीवालकाटीपूंछफंडाले किसोरदूजेदाटीको
पिसेनाफटाफाटीमैकदारपंजांसाजि बैनतेयभी
मरीखपाटीतेराआगेंवचेभेगी जोगीरामरोत्रपाटी
गयेभाजि ।।२६।।श्रा० मि० ।।दो० ।।अहिसाल
मइअभ। झिगो ।फोजफटाकुफटाय ।। ब्याधिस
हतक्रमिबेरकी। अतिजवबुंदियआय ।। २७ ।।
कोटेसक्रुद्धुल पिछिलागि । लिन्नीबुंदियघेरि ।।सठ
सालमइकदीहलरि। गोभजिआयुधगेरि ।।२८
जायोजुगियरामको। आयोनगरफलाय ।।
कोटापतिइतलुट्टकरि। बुंदियदिन्नजराय ।।
२९ ।।फग्गुनबिसदचउत्थिसक ।रसहयसत्त
ह१७७६मान ।।बक्कुरिभीमबुंदियलई। इमफे

री निज आन ॥ ४० ॥ सबहि देस बुंदीसको। अडर भीम अपनाय ॥ लूटमाँहिं बहु द्रव्य लै ।इम पुनि कोटा आय ॥ ४१ ॥ पादाकुलकम् ॥ अवरहु भीम देस बहु छिन्नैं। चउदह सहँस गाँम निज किन्नैं ॥ अगैं लिखित कूरमहिं आ ग्यो।सो सब लुप्पि लोभ हिय घप्यो ॥ ४२ ॥ कुलसिरह अखिवय सुभटन हित। अब ब्रजना थकरहिं सब छिन्नित ॥ रनजयसिंह बुद्ध लरि आ रहिं। बसुमति आन असोघ बिथारहिं ॥ ४३ ॥ इकपुत्रहिं बुंदियगढ अप्पहिं। थिर इक्कहिं कोट गढ घप्पहिं ॥ इक्कसुतहिं सो पुरगढ देहैं। हम उज्जैन राज अवलेहैं ॥ ४४ ॥ तदनंतर सय्यद भ्रातिकग्गर।पठयो द्रुत लिखि भीम अप्पकर॥ इत दल सज व साज्जि हम आवत। उत तुम आव हु कटक अमावत ॥ ४५ ॥ पकरि बुद्ध जयसिं

हविपक्खन।लैहैंपक्कभिमारिभटलक्खन।।य
हलिखिसंगरभीमउमाह्यो।चमुसजिसँहंसबी
सजयच्चाह्यो।। ४६ ।।दो०।। इतसय्यदसोंसि
क्खलहि।अजितसिंहमरुआय।।जेंहंसुभट
नएकत्तजुरि।अक्खियमंत्रउपाय।। ४७ ।।
ष०प०।।मिसलअट्ठउमरावजबहिरट्ठोरइक्क
जुरि।अजितसिंहप्रतिअक्खिअनयकिन्नों
तुमअंकुरि।कूरमपतिसोंनोरिअप्पसय्यदच्चा
ह्योउर।।अज्जगईआमेरकल्हिजैहैंसुजोधपुर
स्वामिकोंमारिसय्यदसबलकानिनरक्खहिंअ
प्पनी।तसमातजोरिजयसिंहसोंधन्वपक्कभिर
क्खहुधनी।।४८।।दो०।।कूरमसोंसगपनवि
रचि।मरुधरबुल्लहुताहि।।रुचिरसुताअबरा
वरी।बिधिजुतदेहुबिबाहि।। ४९ ।।मरुपति
सोंयहमंत्रकरि।पठयोसुभटनपत्त।।कूरम

आवहु निडर। मैं हैं व्याहन अनुरत्त॥ ५०॥ कूरम सुनि पत्री कहिय। धरा अलप तुम थाम। रक्ख हुपुत्तिन जतन रचि। परहिं साहसों काम॥ ५१॥ यह सुनि इन पत्री लिखिय। हम तुम भक्खि हरि आहि॥ आवहु अप्पन द्रूकहैं। जावहु सत्रु सराहि॥ ५२॥ सुसुनि कुंच जयसिंह किय। सजि दल सबल सिपाह॥ बुंदीसे पुरन्नृप उभय। चलिय संग हित चाह॥ ५३॥ पादाकुलकम्॥ रस हित विनय परस परत्ते। तब नृपतीन जोधपुर पत्ते॥ राठोरन अक्खिय कूरम सन। लगन बेर अब चलहु विवाहन॥ ५४॥ मरुपति सों तब सब नरसम कवी। कूरमपति सुभटन यह अक्खी॥ हम नृप परनि पधारहिं जोलौं। हम बिचरहु जुध न्रपति तोलौं॥ ५५॥ अजितसिंह यह मन्त्रि रच्योयहैं। कूरमपति गो तव व्याहन कैंहैं॥ रनजि

मसज्जिकवचधारनकरि। बरदुलहनिरहोरि
लईबरि॥ ५६ ॥ दो॰ ॥ इक्कनबाबकलीजखं
। इहिंअंतरलहिकाल॥ दक्खिनसनआयोदु
सह। दिल्लीपररचिजाल॥ ५७॥ ष॰प॰॥ कु
सलअलीसय्यदवजीरसुनिएहबंटिजर।नाम
दलावरखानसुगलपिक्ख्योतिहिंउप्पर।नरउ
रपलिगज सिंहसंगसहसेनदयोसाजि॥कोटा
पतिप्रतिपत्रत्वरितलिखवायगज्जलाजि।मार
इकलीजखानहिंमरदखानदलावरसंगराहि
जयसिंहजरपिक्खौंकरहिंयहकरिजेरकलीज
आहि॥ ५८॥ दो॰ ॥ सुसुनिभीमसिरधुनि
कैं। दियदलअधिकजुराय॥ जान्योंतपजय
सिंहके। अंतअप्पनोंआय॥ ५९ ॥ जुट्टेबीर
नसंगले। तबयहमरनबिचारि॥ सम्मुहखान
कलीजसौं। रचनचल्योअसवारि॥ ६०॥रव

नद्दलावरभीमअम्भरु।नरउरपतिकछ्रुचाह॥
दरकुंन्दनचालिभिंटये।सत्रुनसबलसिपाह॥
६१॥मेकुलजाकेपारइक।तटिनीकोर्दीनाम
॥तीननखानकलीजसौं।सजियतत्थसंग्राम
॥६२॥छ॰प॰॥सल्लीजुरिदुवसेनकुलसिजु
ऊनबढिहल्ली।कादंबिनिचल्लीकिबाढ्धयम
कतघनवल्ली।दिट्ठिजुरतहयदपटिमिलिरन
रसिकमहाभट॥लववज्जिगलखारिभीरुभ
ज्जिगबटउब्बट।गिद्धनिसिचानसंकुलिगगन
रविमयूखअवरोधकिय।खुरतारमारजवधार
खुदिदिसदिसपुहबिदरारदिय॥६३॥लग्गे
जिमजिमलोहछोहतिमतिमउरछायो।धाये
जिमजिमधीरबीरतिमतिमभकटायो।जिम
खादितजैपालमथतअंत्रनद्भुतदुज्जर॥इम
कलीजदलअतुलमथ्योसायुधसयसंभर।

हैदराबादभटबहुलहनि। चिरग्रच्छरिरसच्च
रूवये। भूपालभीमकोटेससिर रुद्रमालन्नर
कवये ॥ ६४ ॥ हत्थीभज्जतहइचढ्योहयवर
रथचंचल। हयकहलपयचारबन्योंरवयकारम
हाबल। तोमरतुट्टततेगतेगतुट्टतकरिकत्तिय॥
कत्तियफट्टतकरदधोरछत्तियग्रीरिग्रत्तिय। दे
रव्योकलीजजीवनदुलभ मिलतग्रीसग्रहवसुदि
र। जिमजिमरवसीसरजरजरच्चियतिमतिमधु
न्नियसंमुसिर ॥ ६५ ॥ दो० ॥ मुनिहयसत्तरु
द्रक १७७७ सक। जेठरुपुसिमदीह ॥ पस्योद
लावरखानरन। सहितभीमगजसीह ॥६६॥
नरउरपतिजाजवभज्यो। पस्योइहांतजिमान॥
मारिहजारनभीमजिम। पस्योभीमचहुवान ॥६७
॥ष०प०॥ सुनिकोटापुरभयउभीतमरताहिनि
जभूपति। थाइभ्रातभगवानहुतोबुंदीसुजानि

हति । बुंदियविचबुधसिंहआनफिरवायसोधि
उर ॥ अप्पनसबथानोंउठायआयउकोटापुर
। सुनिखबरिएहमतिमंदसठसालमआयफला
यसन । जानिसन्धिवसुरस्यबुंदियबहुरिराजको
जालओकरन ॥ ६८ ॥ दो० ॥ तनयलीननृप
भीमकें । जेठोअर्ज्जुननाम ॥ अमरदानभानेज
यह । तबभूपतिकुवताम ॥ ६९ ॥ स्यामसिंह
मध्यमसुवन । लघुसुतदुरजनसाल ॥ राज
लोभनिसदीहरखि । कढतएहकाल ॥ ७० ॥
ष० प० ॥ हुसनअलीइतसज्जिछोहहूरमसि
रलायो । साहसुहुस्पदकोंसठायआमेरचलायो
। सय्यदअतिबरजोरसाहदुस्मनइहिंकारन ॥
चिंततहतउपायमन्त्रिनिहचैतिहिंसारन । त
दनामसुहुस्सदखानइकतूरानीतद्दयोप्रबल । र
न्हिपंजसाहतासोंरहसिमार्योसय्यदछेदिछल

॥७१॥दो॰ ॥तबपच्छेदरकुंचकरि ।हुसनअ
लीकोंमारि ॥ बनिस्वतंत्रइमसाहहु ।पुरदिल्लिय
पगधारि ॥ ७२ ॥ बरसतीननृपकैंबच्यो । भाव
तसिंहकुमार ॥ छुंडाउतिउरप्रथमभो । पद्मसिंह
सुखकार ॥७३॥ कुमरबधाईजोधपुर ।पत्तीस
मरपास ॥जयसिंहहुतत्यहिसुन्यों । सव्यद
सत्रुबिनास ॥ ७४ ॥ सुनतकुंचजयसिंहकि
य । बिनस्योसव्यदबैर ॥ सोपुरबुंदियनृपन
सह ।आयेपुरआमेर ॥ ७५ ॥ संभरकिय
ढुंढाहरहि । बसबानिबसथबास ॥ अनाहू
तजयसिंहगो । साहमुहम्मदपास ॥ ७६ ॥
अट्ठसत्तहयइक्क १७७८ सक । चित्तमहर
करिचाह ॥ अकबरपुरसूबा दियउ । कूरमप
तिकोंसाह ॥ ७७ ॥ पद्धतिका ॥ पुनिकहिय
साहकछवाहराय । क्योंनांहिंअत्रबुंदीसआ

स।रचिसाहमुहम्मदसुनतरीस॥ ८३॥इत
लहिप्रमादआलसअनंत।बुंदीसगामबस
वाबसंत॥तँहँकियअनीतिलोकनअपार।
दब्बियअनेकपरकीयदार॥ ८४॥ताडनरूलू
टतर्जनबिधाय।पत्तनप्रजासुकियदुखित
प्राय॥पुरजनसबलहितबदुखअपार।कू
रमप्रतिदिल्लीकियपुकार॥ ८५॥सुनिक
हियभूपकूरमहसेत।बसवासुगामअबहू
बसंत॥कहिपुनिवेजामिपअस्मदीय।सह
नौंसमस्तदुक्खहुगरीय॥ ८६॥तुममाँहिं
अबहुजोपरहित्रास।तोकहहुजायबुंदीस
पास॥ममढिगजोऐहोबहुरिभज्जि।देहौं
निकासितोताडितज्जि॥ ८७॥यहकहि
पुरवासिनसिक्खदिन्न।कूरमइमजामिपहि
तहिकिन्न॥मन्न्योनहुकमइतमरुनरेस।बल

सजिय साहतिहिं सिर विसेस ॥ ८८ ॥ मरुपि
खिवकृ दुरखान मीर। पिक्ख्यो पुनि कूरमपति
अवीर। इम दुव चलाय मरुदेस अप्रमान। मरु
पहुपति समुह किय प्रयान ॥ ८९ ॥ सयरुस्थ
खानि सह महीप। सजि आय मनोहरपुर समी
प। इतलैं सलेन मारन उपाय। जयसिंह वहा
दुरखान आय ॥ ९० ॥ मरुईस अतुल लरि साह
सैंन। भजि गो तजि डेरन अप्प ऐंन ॥ सक अं
कसत ह्यइक्क १७९७ कीन्ह। रन छोरि लगाई
सालि तीन्ह ॥ ९१ ॥ सुनि साह कटक अपति
जव चलाय। हुद्दीर विमव लिय लुहि आय ॥
संगर बिनु कूरम तकसु त्योंन। भजि भजिगो
संगर छोरि भौन ॥ ९२ ॥ अप्पौं जव अप्प समो
चलाय। अल्हनपुर लग्गो पय न आय। पुनि
अपप्पान करि लिखित दिन्न। सो मेटि साह ज्या

मात किन्न ॥ ९३ ॥अरु बङ्करि सय्यदन मिलि अ
धर्म्म। जामात साह हनि किय कुकर्म ॥पुनि अबल्ल
तीयरन समय पाय। पृतना तजि कातर गोपलाय॥
॥ ९४ ॥जयसिंह बहादुर लगिय पिट्ठि। इन राखिय
मंत्र गृह जाय निट्ठि ॥ रघुनाथ सचिव रट्ठौर सर्व। मि
लि कहिय राज गय अप्प गर्व ॥ ९५ ॥ करबंधि पर
कुम्भ बसाह पाय। जोयहु नदेहु कुमरहिं पठाय॥
भट सचिव मंत्र इम तब बिचारि। जयसिंह नरे
सहिं बीच डारि ॥ ९६ ॥ सुत अभयसिंह पहुप
सामत्थ। पठयो पुर दिल्लिय कुम्भ सत्थ ॥ रघुना
थ सचिव दिय संगताम। लहि साह जाय इन किय
सलाम ॥ ९७ ॥ गहि आकु कुमर सह कहिय साह
। आवत हम भङ्करन उछाह ॥ तब कुम्भ कहिय
यह गिनत आन। यह कोन दोस जन कहि प्रमा
न ॥ ९८ ॥ पुनि कहिय साह जोयहु अपन्न। तोज

नक हत्तकृतन हम सन्न ॥ यह सुनि उवाच्चक
कलाहहूसं । ह्वैहैं तु कुकमधरिहैं सुसीस ॥ ९९
॥ प्रह्लाद एह लुमहरि प्रमान । सरुपालि हिरन्य
कसिपु वसमान ॥ यहसीख साह सेवन वहंत ।
पितजनक हु हिंनय तौं नहंत ॥ १०० ॥ प्रह्लाद
कलन्कूरम सुनाय । इम अभयसिंहहित रिस उ
ठाय ॥ कहि साह हम हिं जोगिनतहूस । सुतते
अध अनकुजनकसीस ॥ १०१ ॥ रघुनाथ स
न्धिवकिय अरजतत्थ । सलकरहिं पाय आयस
समत्थ ॥ डेरन बहोरि लिय सिक्ख आय । दल
अभयसिंह पठयो लिखाय ॥ १०२ ॥ निज अ
नुज भ्रात वखतेस नाम । लिहिं प्रतिउदंत सव
लिखिय ताम ॥ यह मिच्छ जनक सिर कुपित आ
ज । लैहैं उतारि युवअन्वराज ॥ १०३ ॥ लहिरा
जमेल जो चहत लाल । तो भ्रात हनकुजनकहि

उताल ॥ देहौंतब तोकहँअद्ध देस। नागोरपुर पकरिहौं नरेस ॥ १०४ ॥ बखतेस मुद्दयह पत्र पाय। जनकसु निजमास्योसुन्नजाय ॥ हाकारजो धपुर नगर होय। रनवास अन्दानक उठियरोय ॥ ॥ १०५ ॥ सुनि मिसल अद्ध उमराव एह। गहि तेगकुमर बिंट्योसगेह ॥ बखतेस भीत तब नति बिधाय। दियअभय सिंह कगर दिखाय ॥ १०६ ॥ गिनितब समस्त यह मंत्रगूढ। अब कियनरेस चितिका अरूढ ॥ नाजरनसहित सुहांत नारि। चितिअग्नि भस्मकुव असियच्यारि ॥ १०७ ॥ सक गगन अट्ठ इन्दु को ऽब्द साल। यह रवजरि अई दिल्लिय उताल ॥ सुनिरी झिमरा तब बखतेस साह। कियअभय सिंह मरु देसनाह ॥ १०८ ॥ अरु कहिय राज्यजसवन्तजा य। पुनि आवहु सेवनमोदपाय ॥ मरुपतिजबा

आमेरहुतोबुंदीनरेस। पुनिकियउभूपकूरम
प्रबेस ॥ मिलितबहिसालजामिपसमोद। बि
रचियदुहूनकतिदिनबिमोद ॥ ११५ ॥ दो० ॥
सकससिबसुसम्रह १७८१ समय। कहिकुटहिं
कछवाह ॥ बिरचहुराज्यप्रबंधतुम। वाहनरच्छ
हिंसुलाह ॥ ११६ ॥ बिनुप्रबंधआलसबहल
। रहतनसुरपुरराज ॥ कहतहोतबुंदियकुनय।
अहप्रतिमहतअकाज ॥ ११७ ॥ बुंदीपतिअ
किवयतबहि। अच्छीकरहुबिचारि। पठवहु
कोऊनीतिपटु। सबजोकरहिंसम्हारि ॥ ११८ ॥
नाथाउतनगराजतब। नृपमातुलकुलजानि
॥ पठयोवहकूरमसुपहु। बुंदीबिबिधबखानि
॥ ११९ ॥ आयलंघिरकख्योनृपति। डिगुनरव
रचनिजसत्थ ॥ सबमेट्योनगराजसो। अहि
परिवज्योक्रमअत्थ ॥ १२० ॥ कछवाहीसेवनक

रत। श्रीहरिमूर्त्तिसुमंत ॥ कउलभूपवरजतकुढ
ल। तदपिनटेकतजंत॥ १२१ ॥ पतिपतनीकैया
हिपर। बनैंनहितकीबत्त॥ हड्डुनलोपैंतियहुक
म। तदपिकउलमतरत्त ॥ १२२ ॥ अगैंनवहय
रसइक १७७९। कछवाहीयहकिद्ध॥ लेसाल
मसौंसचिवपन। निजअनुचरकों दिद्ध ॥१२३
॥ रामनामनिजदासइक। सोकरिसचिवसुभाय
॥ इमरानीपतिहुकमबिनु। रहीराज्यअपनाय
॥ १२४ ॥ अइरवरचकदतलग्यो। नाथाउतलि
रवरूप॥ रानीप्रतितबगीतिरचि। भारदीबुंदि
यभूप॥ १२५ ॥ निजअनुचरप्रतिलिखहुतुम
रनकरिरकखहुगेहु॥ नाथाउतनगराजकों।
इंगनप्रबिसनदेहु॥ १२६॥ रानीइमसुनीतब
हि। रूकाहिंमोरनिदेस॥ सोकरिहैंनगराजजो।
काहिहैंकुम्भनरेस॥ १२७ ॥ यातैंअनुचररामप

ति।दियलिखिपत्रपठाय॥ननसौंपकुनगराज
कूँ।अप्पनगृहव्ययआय॥१२८॥तबबुंदिय
नगराजतिन।दिन्नौंप्रबिसननाँहिँ॥मकुरछाप
ईहिँनकह्यो।अधिपनिदेसनआँहिँ॥१२९॥
तिनहिँठिल्लिनगराजतब।प्रबिस्योबुंदियआ
य॥राजकाजलग्गोकरन।नूतनछापधराय॥
१३०॥आयरवरचसबलिखिलियउ।स्वंधावा
रसम्हारि॥स्वामिसमुझिबुधसिंहकौं।बिगरत
लिन्नसुधारि॥१३१॥द्विगुनरवरचमेटतकिय
उमातुलपरनृपरोस॥अच्छीमैंउलटीसमुझि।
दियकूरमसिरदोस॥१३२॥इतकूतजामिपरा
ज्यको।करिप्रबंधकछवाह।दरकुंचनदिल्लिय
गयो।सबिनयभिंट्योसाह॥१३३॥तदनंतर
मरुईसहू।जयनयराज्यजमाय॥दिल्लियभिं
ट्योमुगलकुल।साहमुहम्मदआय॥१३४॥कूर

अनीतिसह पतिकीहिय।समसद अति मासूर॥
जानकेतनहिंराज्यजुरि।करहु अप्पन जहूर॥
१३५॥परयोकूरमजोधपुर।तबनिजकदक्षसुत
ल॥रट्ठोरनसबकायरहि।कह्योतैंहँकुकाल॥
१३६॥कृतेभूपजयसिंहहैं।सुतासोयकृतदोय॥
कुनकुसालरूपनामतिन्ह।सावधानयतिहोय॥
१३७॥ज्येष्ठासुतसिवसिंहजो।मार्योजनकप्र
मत्त।अनुजईश्वरीसिंहतस।तातकथितकर
तत्त॥१३८॥सुताबिचित्रकुमारिइक।दूजी
कृष्णाकुमारि॥सुपद्रसालसंग्रामकी।जामैंश्रीति
उआरि॥१३९॥भयोबिचित्रकुमारिको।वयद
पंयमअनुसार॥जानिजनकजयसिंहजब।दिव
यव्याहव्यवहार॥१४०॥अभयसिंहमरुईस
सों।करिसगपनकछवाह॥सामग्रीकियउचि
तसब।नयपदुजैपुरनाह॥१४१॥सिक्खतद

हिलहिं साहसौं। दुवनृपमथुराआय॥ अंतहपु
रआमेरतैं। लिन्नों सकलबुलाय॥ १४२॥ सक
ससिबसुसत्रह १७८१ असित। अट्ठमिमहूबि
चारि॥ तनया ब्याहीमरुपतिहिं। कुम्भविचि
त्रकुमारि॥ १४३॥ मातानृपसंग्रामकी। राना
अमरकलत्र। चाहुवानपुरबेदलापतिकीत
नयातत्र॥ १४४॥ सस्सूवहजयसिंहकी। गंगा
न्हावनआय॥ सुरतमगामथुरामिली। ली
नीकुम्भबधाय॥ १४५॥ चाहुवानिपिक्ख्यो
रुचिर। बिदीतनयाब्याह॥ बरनिबिचित्रकु
मारिनव नवदुल्लहमरुनाह॥ १४६॥ षट्प॰
सस्सूकीजयसिंहकानि किंकर जिमकिन्नी। इ
कदिन गोकुलजातरथंधसिविकातसलिन्नी॥
इकबंसगहिहिअप्पंमरुपकरइक्कगहायो॥ मा
तासौंगिनिमहत बिहितसतकारबढायो। अ

पतौं गिनकुमोकों अदुगयहँ तीरथ हरिअव
तरिय ।तुम देहु कै दिहाटकतुला करन जोरि हम
आज किय ॥ १४७ ॥ दो॰ ॥ यहसुनि महिषी
अमरकी । बोलीनयमयबैन ॥ दुहिताकेबसु
लौंतुला । हमकोउचितसहैन ॥ १४८ ॥ रानस
तजामातप्रति ।पुनिअक्रिवयचितप्रेय ॥
पुलकालिंदीसरितपर । बंधौंसुगमबिधेय॥
॥ १४९ ॥ इनतबलिखिदिल्लीससौं । लिन्हों
कुकसंमाद ॥ सहिसँहेंसमुद्रारवरिच्चि । इनपु
लदियबंधाय॥ १५० ॥ कुमरसानसंथामकैं ।
जगतसिंहअभिधान ॥ ताकैकैतिहिंदिलतन
य ।भोम्रतापकुलभान ॥ १५१ ॥ सुतसुतसुत
कीमधुपुरहि । मुनीरवबरिच्कुवानि ॥ दियहा
टकलककन द्विजन ।मुदतबधाईमानि ॥१५१
हूरसपतिपठयोलदनु ।अंतहपुरआमेर ॥

इतपत्तीन्चकुवानिहू। निजउदयादिकनैर। १५२
॥ अभयसिंहजयसिंहए। दुवपुनिदिल्लिय
आय॥ हजरिसाहहजूरकुव। लाहविनयहि
तलाय॥ १५३ सककृगवसुसमह १७८२समयासे
यरिआयोसाह॥ सोहिकरतदिल्लीससब। क
हतजोंहिकछवाह॥ १५४॥ सूबादुवजयसिं
हकैं। आगरारुउज्जैन॥ अबसूबाअजमेरको
बकुरिदयोहितबैन॥ १५५॥ मतिमैंनयमैंसं
चमैं। सबमैंकूरमसेर॥ बिदुवजीरदक्षेबहत।
जबनहिंदुसबजेर॥ १५६॥ ष०प०॥ अभय
सिंहमरुईससुन्ये। निजदेसदवरदुरव। सिकव
साहसोंमंगिरच्यिदरकुंचगेहरुख। संगदिय
जयसिंहसेनवसुसेंहसकुलबर॥ राजामलनि
जसचिवकेरसिवदाससहोदर। कहिजायराज्य
मरुईसकोसजवजमावकुजोरसन। समुझाय

सब लिखि हुरस ठ पारक्कुछ मरुपतिपयन॥

१५७॥ दो०॥ आयो मरुपति गेह इम। सत्थस

खिब सिवदास॥ इतमेल्यो कूरम अधिप। तँहँ

इक हिंदुन त्रास॥ १५८॥ दिल्लीमैंयहदुसहदु

ख। साहि सब कहत काल॥ गहि गहि हिंदुन ब

रसप्रति। करसंगत चंडाल॥ १५९॥ बीसं दस्स

बहुमानसौं। इक्क अबसु सौं लेत॥ जनप्रति

देरत खपचजर। दिनप्रति यौं दुख देत॥ १६०॥

पादाकुलकम्॥ दिवाकित्ति तिनमैं इक नायक

। खपच ओरनस कथितकैं सब॥ दिनप्रति क

रि हिंदुन हरवल्ली। खपच कहैं स्वामि हिं जु रिस

ल्ली॥ १६१॥ हसंरीयह रैयत हैनायक। आईहा

सिल दैन इहाँ अब॥ तब वह आ कवि स्वामिजि

सउत्तर। कथित रीति सब हिंदु गहैं कर॥ १६२॥

कर गहि लिखि दै दलकंठन। यह लखि खपच

तजैंइक हायन ॥ दूजे बरस बङ्कुरि गहि लावैं । अ
हप्रति दंद मदंध उपावैं ॥ १६३ ॥ हिंदुन हेरत फिर
त हीन दल । करत रोहि दिन प्रति कोलाहल ॥ स्व
च्चन प्रनति करहिं हिन्दू सब । तदपि दंड अप्पहिं
छुट्टहिं तब ॥ १६४ ॥ दिल्लिय यह दिन प्रति दुस्स
ह दुख । सब कर दयैं बिना न लहैं सुख ॥ कूरम नृप
यह माफ कराये । लिखित लिखाय साह सन ला
ये ॥ १६५ ॥ छाप वजीर करैं नहिं उद्धत । बङ्क लबे
र सुनि टारि गयो लब ॥ द्विज इक दयाबहादुर नाग
र । सो जावत दक्खिन सूबापर ॥ १६६ ॥ जाको म
न सुब सत्त हजारी । तीन अयुत भट संग सुखारी ॥
तासों मिलि कूरम यह अक्खी । रहैं कानि हिंदुन
तव रक्खी ॥ १६७ ॥ कहि द्विज सिक्ख करन ह
म जैहैं । तब छपाय बल करि दल लैहैं ॥ जो अजी
र सम्मुह पिल्लैं दल । तो तुम करहु सहाय खंडि ख

ल ॥ १६८ ॥ यह कहि विप्र तास गृह पत्तो । संग
सबहि सुभटन अनुरत्तो ॥ वह वजीर वरखाल सु
कुम्मद । हुसन अली सु हन्यों जिहिं सय्यद ॥ १६९
॥ सुभट संग सँहँ सन तुरानी । दम बरजोर रहैं अ
भिमानी ॥ यह द्विज वीर गयो तस आलय । रोके भ
ट सु रुके न बडेरय ॥ १७० ॥ दै पय खान सु कुम्मद
गहिय । इहिं दल छाप करहु यह कहिय ॥ लखी
वजीर छाप यह लेहैं । जोर करैं अति बल हनि जे
हैं ॥ १७१ ॥ इम बिचारि पत्र सु छप्यो उन । द्विज भ
ट्टो तब तें कुरव हिं कुन ॥ सक गुन अद्दु सत्त इक
१७८२ अंतर । किय बरजोर समुद्र सु कग्गर ॥ १७२
॥ यह जयसिंह अपूरब किन्नी । नागर किति बंदि
इम लिन्नी ॥ बहु ऐसी किन्नी कूरम बर । कासि
हहिं सिर बाय गयाकर ॥ १७३ ॥ ष० प० ॥ कौटि
ल्य आदि विकल्प्य बिन्मय छिंगधारैं । अनुक

मअापन अवलिकैय निजनिज वित्थारैं। सोकू
साहहिं आक्खि प्रबल मेटी कूरमपति॥ इमकरि
किन्ति अनेक साह सेयो नय सम्मति॥ लहिधर
मसग्ग मनुमत समुझि श्रुतिनिदेस कछु अनुसारि
य। पटुबुद्धि भयो इहिं समय पेकहि हैं दस अनुचि
तकरिय॥ १७४॥ इतिश्रीवंशभास्करे महाचंपू
स्वरूपे दक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहचरित्रे
षष्ठविंशो मयूख:॥ २६॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥
दो०॥ इत कोटा अर्जुन नृपति। पायो निबरख
प्रान॥ स्यामरु दुज्जनसल्लकैं। भो भूहितथम
सान॥ १॥ अग्रज स्यामहिं मारिकैं। भो नृप दुज्ज
नसल्ल॥ बुंदीपर दावा बिरचि। हठिसु विचारत
हल्ल॥ २॥ इत दिल्लिय कूरम अधिप। साहन्नि हि

थल सेय ॥ सक चउ बसु सत्तह १७८४ समय। आयो निलय अजेय ॥ ३ ॥ करि अमात्य नगरा ज दिय बुंदिय कुम्भ पठाय ॥ बुंदीपति इहिं पर बि स्मन। रक्खत बिरस रिसाय ॥ ४ ॥ कछवाही म तिनृप कहिय। अनुज प्रबोध कुआज ॥ राज तु म्हैं जो रक्खलों। तोर क बक्क नगराज ॥ ५ ॥ भ्रातहिं कुमरानी भनत। कह्यो लसा कि कछवाह ॥ भगिनी कुमरी अभ्भिकी। चित्त न रक्खन चाह ॥ ६ ॥ जामि प अमल समसाद जुत। अरु तुमरी मति एह ॥ गेहहि भूपन बिगरले। बिगस्यो इक्कहि गेह ॥ ७ ॥ हम जान्यों बिगरत बिभव। लैहैं अब क्कु सुधारि ॥ तुम री पति अमसों हिंतो। हम कु दयो हित टारि ॥ ८ ॥ यह कहि नृप जयसिंह तब। लिय नगराज बुला य ॥ रंच सिरा ही रागिनी। इहिं पर बुंदिय राय ॥ ९ ॥ जुडजलि अरजे भयो। कुमर पदम अभिधान ॥

आमय बसि तिहिं दुनदिनल। किन्नमहाप्रस्थान
॥ नाथ।उतकूरमनृपति। बुल्यो बिबिधरिसाय
॥ राजकाजलग्गोकरन। बुंदियसालमआय॥
११॥ कछवाहीसन याहिपर। कछुप्रसन्न बुंदीस
॥ चुंडाउतिरट्टौरिसिर। यहहिरहीबनिईस॥१२
दिल्लीसनबुंदीसजब। दुंदा हरधर आय। चुंडाउ
तिरट्ठौरितब। लिन्नीहीबुलवाय॥ १३॥ कछवा
हीकेडरदुकुंन। रक्खि निवाइ नैर। पटरानीके ब
चनबसि। अप्परहियआमेर॥ १४॥ षट्‌प॰॥
बुंदीलोकन बहुअनीति आमेरसअकिय। सा
नाजर किसतूरनगरकुतवालसा...लिय। पकरि
पकरि पर दारजार बहु तन...हिरक्खी। मारसूब
मचवाय नगर लज्जासबनक्खी। सुनिसुनि...
नीतिकूरम सहिय कहिय कछुन बुंदीस प्रति। जि
मजिमसहीसुतिमतिसहु...

रनभाति ॥ १५ ॥ दो० ॥ दिन दिन अब कूरम दुसन । कह्यो रहू कुन जाय ॥ अंधु छांह जिम कछु अनख । रक्खी हृदय समाय ॥ १६ ॥ पटरानी नित प्रति करैं । सेवा श्रीगोबिन्द ॥ अन्तर रहत उदास अब । तातैं कूरनरिंद ॥ १७ ॥ चुंडाउति पर प्रीति अति । राखत गुन नरेस ॥ हित अनहित छुपि नहिं रहत । रूठत अंत असेस ॥ १८ ॥ कछवाही निज मात के । भरत रहत नित कान ॥ कर्म निरखि नृप बुद्ध के । कूरम करत प्रमान ॥ १९ ॥ तातैं नृप जयसिंह । रचि जामि प परीस ॥ हृदय बिचारत अ वर मैं । करिहों कोउ बुंदीस ॥ २० ॥ ष० प० ॥ याहि बरस जयसिंह नगर जयपुर बसवायो । सिलप हस्य ह्लादसिय मकर रबि लग्न मिलायो । सिलप तंत्र अनुसार सदहि व्यवहार सधाये ॥ बारह को सलिथार बिबिध प्राकार बधाये । रचि जुक्ति द

म्मकोटिनरवरत्रिपुरन्नपुब्बकिन्नौंप्रकट। हिंदु
वसथानदुज्जोनहिनसहरप्रातिबिंबकसुघट॥
२१॥ गीर्वाणभाषा॥ भुजंगप्रयातम्॥ विधा
यैवसम्ब्रप्युरकूर्मराजः। श्रुतीर्धीरस्रासेव्यलब्ध्वा
स्मृतीश्च॥ द्विजेन्द्रान्समादृत्यधर्मानुरक्तस्सव
र्म्मश्रमश्रेयस्त्राविश्चकार॥ २२॥ विधायाग्नि
होत्राऽद्धराद्येकयज्वा। नियम्याप्यधर्मंहृषीकेश
भक्तः॥ सितारेश दिल्लीश संस्पृष्टमंत्रः कृतीपु
ण्यभूमौबभूवाग्र्यनामा॥ २३॥ कृतोधीसरव्र
खानदौराभिधेन। प्रणत्यैव दिल्लीन्द्रसेनाधिपेन
॥ महात्मासविश्वात्मजःकूर्म्मराजोरराजारिक्ते
श्वर्य्यमेकोयथाह्नि॥ २४॥ कामक्रीड़ा॥ तंत्राव
पेपेतंस्कन्धावारंसर्वोच्चीकुर्वन्। वक्षाजश्री वि
ष्णुत्रातोनीत्यादिल्लीशौन्मुख्यम्॥ स्मान्वीक्षि
क्याधर्माख्यार्थेष्वितेराज्यङ्कत्वारिः सोजान्वारंभे

तेभूम्यूम्याशीर्भ्राजिद्भूसत्त्वा ॥ २५ ॥ नर्कुटकम् ।
मतिरुदुदारउत्तगाकुनीतिमिश्रहरिः । समिद
तलस्वर्गसर्वविलङ्घनएकतरिः ॥ जयनयधार्य
कार्य्यमलनाय्यंउदग्रगति । भुवियशसाऽराजजय
सिंहइलाधिपतिः ॥ २६ ॥ श्रा० मि० ॥ ष० प० ॥
इमकूरमजयसिंहहिंदुम्लिच्छनउप्परहुवं । जाप
धरमस्रुतिजजनभूरिश्रध्वरबित्थरिभुव । निंद
तनिगमपिछ्छानिजोरतुरकानभजारन ॥ सहर
सितारधीससंनिबुल्योतिनमारन । साहूनरेस
लहितबसमयदिल्लीपतिउप्परदुसह । संधिया
बहुरिहुलकरसुभटपिल्लेदुवदलश्रमितमह ॥
॥ २७ ॥ दो० ॥ नृपसाहूनवलक्खदल । सहरसि
ताराईस ॥ पिल्लेहुलकरसिंधिया । दछ्छनभुव
दिल्लीस ॥ २८ ॥ इनश्रवरंगाबादलरि । पहि
लैंश्रमलप्रचारि ॥ वहनागरसूबाश्रधिपदया

बहादुरमारि ॥ २९ ॥ इतगुज्जरधरजवन इक । सर
बिलंदसअसाद ॥ सूबापतिवह साहको । नगरअ
हमदाबाद ॥ ३० ॥ सुबसुग्रामसत्तरिसँहँस । आ
यसजासअधीन ॥ मरहट्टनसोंहू मिल्यो । लिखि
पत्रनअघलीन ॥ ३१ ॥ उज्जयिनीअकबरनगर
। अरुपत्तनअजमेर ॥ सूबानयजयसिंहकौं । सो
बुल्लतबलसेर ॥ ३२ ॥ इतखटकत दिल्लीउदर
। साहमुकुम्मदसूल ॥ कंटकअरिकाजीनकौं । अ
नयअैसअनुकूल ॥ ३३ ॥ मंदनपुंसकरतमुदि
त । योंहीपुनिअनुचार ॥ रत्तकाफिसायनरह
त । सचिवकुमंदसमार ॥ ३४ ॥ मोजदीनतैंइ
क्कसे । भयेपंच दिल्लीस ॥ दिनदिनबोरिकुरा
नदिय । रच्चिवनबीपररीस ॥ ३५ ॥ इतबुंदिय
पति बिनयकरि । रच्चिसालकसनसाम ॥ बिद्दी
क्षितजयसिंहबरि । आरंभियउपयाम ॥ ३६ ॥

नगरनिवाईहिंतुलिय।रानीउमयबुलाय॥सु
ज्झकुमरिजयसिंहकों।प्रथितदईपरिनाय॥३७॥
संगानेरसमीपयह।बुंदीपतिकियब्याह॥दायज
वसुनयलक्खदिय।अधिकदिखायउछाह॥
३८॥सकञ्चउवसुसत्रह१७८४समय।तिथित
पस्थसितआदि॥कूरमइमजामातकिय।पतिच
हुवानप्रसादि॥३९॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहा
चंपूस्वरूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरि
त्रेसप्तविंशो २७ मयूख:॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नाराच:॥इतैंअरीनजावदारव्यनेररानकोहन्यों
।सुनीअवाजकूर्मराजसज्जभीरकोंबन्यों॥मनं
किमौंरमौंरकेठनंकिअंदुगेगुरे।कुदारनैंनन्दार
केतुरवारसज्जसंजुरे॥१॥चमूहजारअब्बा

नलै कृपानभानकी। रिसायकुम्मराययौंचल्योस
हायरानकी॥ बुलैं नकीब दोयसे झुलैं हरोलहौंकरैं
।रुकैं भटालिभीरत्यौं रुकैं समीरसौंकरैं॥ २॥
बजैं निसान नादसो दिसा दिसान बित्थरैं।मह्
कदंदसूक कीफटा हजार फुंकरैं॥मवासबासम्मा
सपासजासत्रासकंपये।चकारचीसकैं पुरीसादि
करीसचंपये॥ ३॥चले मतंग अद्रि अंगस्या
मरंगसज्जके।कुरंगफांदकेचलेतुरंगजंगकज्जके
॥चलेदुबाहकेसिपाहस्वामिधर्मसीसले।चली
सुतोपसद्दित्यौं चटद्दि वक्रचीसलै॥ ४॥मिले
प्रबीरपत्रबाहपत्रबाहबेधते।कमानपत्थकेक
मानपत्थकीनिसेधते॥ मिरे भुवालभुम्मियांसु
भागधेयभेटलै।कहौं नओजउद्दयोजुतासफोज
फेटलै॥ ५॥फरक्किकेतुगैनयौं बिजैयबैन बि
त्थरी।सहायदैनकुम्मसैंनरानऐंन संचरी॥

सुनीसुरानकालत्यौंप्रयानसम्मुहोकियो। हिले मिलदुहूंनेरसहेतकुल्लस्योहियो॥ ६॥ ष॰प॰
॥ सिन्धुरनधाटिप्रपातरानजनपदजावदसुनि। पूतनासहँसपचासचंडकोधनजोधनचुनि। आ बेरोनरनाहपसहितचाहउदेपुर॥ दहबारील मसालआयसम्मुहमुदआतुर। महिपालउभय हियसायमिलिसुखसहपत्तनसंचरिग। करिदल मिलानकूरमरहियसुपकुरानमहलनसरिग॥
॥ ७॥ दो॰॥ सकसरबसुसत्रह१७८ पसम। लहिकूरमनिजभीर॥ अतिआदररानौंकियउ हैअग्गवनहमगीर॥ ८॥ इकजामिपपुनिदल आतुल। बहुरिबल्योलहिकाल॥ यातेंलहं मतिनअति। भयउरानभूपाल॥ ९॥ इकआ लकिन्होंआसन। पुहुरीतिसबपेलि॥ कछुअंत तरहितमैनकिय। हियतबहिंदुनहेलि॥ १०॥

कूरमहूकरजोरिकहि। प्रतिनतिकरिपलराव॥
मन्नकु अप्पनसुभटमुहिं। जिमसोलहउम्राव
॥ ११॥ मैंइन हूसों अनुगत। मम हित नहिंमर
जाद॥ बिधिसबकेहोंबंदगी। पैहोंरान प्रसाद
॥ १२॥ यह कहि कूरम्म चमरगहि। किय उरान
सिरउट्टि॥ रचि अंजलि तबरानहू। बरजेनि
ट्टि हित बुट्टि॥ १३॥ इत्यादिक किय अनुगप
न। कूरम हित निकरंब॥ आमिषबिन्दुरानकुज
प्यो। अवरनमम आलंब॥ १४॥ षं०प०॥ कू
रमप्रति दिनइक्क कहिय सीसोदजोरिकर। रा
मपुरपसंग्रामबदलिअबरहतटेकवर। नैंकन
करतनिदेसभुम्मिअईपुनिअनुगात॥ सुनि
अकिवयजयसिंहवाहिहूनिहोंरनउद्धत।
रामपुरदेकुमोकहेंनृपतिमैंसेवनकरिहोंमुदित
। कहियहसलामजयसिंह कियमुलकलैनल

क्ख्नप्रमित ॥ १५ ॥ महासुंदरी ॥ सुनियों
मलरानौं खिसानौं महाअहिअस्त छुछुंदरि
कैलौं पर्‍यो । दुवबेर कही हमरो हीकुतो तवदम्म
त्रिलक्ख दै लैनौं पर्‍यो ॥ सुनियौं कैसलामकू
रीजयसिंह नयो तबरानकौं नैनौं पर्‍यो । लिय
साहवैं सेवजो रामपुरासु छती कछवाहकौं दै
नौं पर्‍यो ॥ १६ ॥ दो॰ ॥ नीति निपुन भुवलोभ
लगि । इम कूरमतैं हैं आय ॥ लियउ रामपुर
रानसौं । करि जुति लिखित कराय ॥ १७ ॥ रान
सचिव कायस्थ तैंहैं । कग्गर छाप करीन ॥ तवकू
रमगृहजायतस । पाई नीति प्रबीन ॥ १८ ॥ पटु
प्रपंच इम रामपुर । लियउ नीति लगि लाह ॥ ब
कुरिरानसन अनुगवनि । कियरहस्य कछवाह
॥ १९ ॥ छ॰प॰ ॥ कहिय मंत्र कछवाह दइव हिं
डुलसुभदायक । मिटत जानियत मिच्छ निगम

निंदकभुवनायक। कबहुनसुनतकुराननहिंन कलमों निमाजनत॥ काजिनउप्परक्रुद्धमुद्धन नजातमहज्जत। रतपानकापिसायलरहलमा सूकनजानतमहल। बिधिथप्पिसंडमोहनबह तच्चितप्रपंचकछुदुनचहत॥ २०॥ अलबिन्दा रिलमरहमंत्रिबुल्लतमरहट्ठन। सजिअपंचति लसंगलोरि तुरकानहिंदुबन। हलूपहिंदुनहिलि अप्पहूककल्लरहकुअब॥ दुग्गकोदेल्लियमुम्मि सच्चिवहमकरहिंजेरसब। मरहट्ठपारमंडहिंअ मलअप्पनचम्मलिवारहूत। यहअरिदेवबुरि कूरमअधिपबिन्नतिकातिमहिइयआमित॥ २१॥ दो०॥ कछुदिनरहिकौतुककरत। नृपकूर मतिहिंनेर॥ पायरानसनसिक्खपुनि। आयेपु रआमेर॥ २२॥ गोकुलमजबरानगृह। कुंततम हिबुंदीस॥ सहकुटुंबआमेरसन। रच्चियअप्प

नसरीस ॥ २३ ॥ द्विजबर गुरु जयसिंहको रत्नाकर अभिधान ॥ कानीखोह सुगाम तस दिन्नेतत्थ मिलान ॥ २४ ॥ ष० प० ॥ जिहिं रतनाकर बिप्रसुगुन जयसिंह सिखायो । स्मृति रु निगम खट सत्थ बिबिध नृपधर्म बतायो । चउदह पुनि च्चउसट्ठि कला बिद्या पटु किन्नों ॥ जयसिंह गदारिहू जेम भूसुर जिहिं भिन्नों । धारन कराय सब कुल धरम कलि भूपन सिरमोर किय । जिम जिम मलापकृत मजग्यो आचारिज तिम अद्दरिय ॥ ॥ २५ ॥ बिनु त्रिसंध्य जलपान जग्य पंचक बिनु भोजन । बिनु स्मृतीन ब्यवहार ख्यात नय बिनु बसु खोजन । द्विज सुपात्र बिनु दान ध्यान हरि हर बिनु धारन ॥ बिनु बिधि काल ब्यवाय मंत्र नय बिनु अरि मारन । बिनु न्हान निगम पाठन बहुरि बिनु प्रपंच संगर बिकट । इहिं द्विज प्रसाद कूर

मइते ननरकवेनिजभुवनिकट ॥ २६ ॥ जनकूर
मजोधपुरचल्यो ब्याहन नयचातुर । तबसय्यद
डरतक्किपुब्बपठयो अंतहपुर । नगरकरौलीनाह
भूपजदुबंसजासभुव ॥ द्रगबहादुरदुगधीस र
क्ख्योसुतत्थध्रुव । अवरोधसंगहे द्विजथहकुति
हिं तंहं दिल्लीं देहतजि । तब कुम्भनाम जेंगो नथ
भूसुर गंगारामभजि ॥ २७ ॥ गंगारामकुअमिलम
ति । भो द्विजराजसुभाय ॥ बकुमरबनृपकिअजास
बल । दलि जैपुरबसवाय ॥ २८ ॥ निवसपधक्का
नीखोहनसं । रहियआव ढुंढा त ॥ कछवाही
आमेररहि । रचतस्वामिपरीस ॥ २९ ॥ ष० प०
॥ इतकूरमगृह आयकालकोबिदप्रपंचकिय ।
मरहट्ठन छन्नमिलि दई अरजी पुनिदिल्लिय ।
रचतदोरमरहट्ठलूटमंडत बआलिलग । जोभे
जहुबलबिन प्रबलहमलराहिं मंहिपय । सुनि

साहपुच्छि सचिवन सबन उचित मंत्र यह उच्चर
हु। कथ तादखान दोरौं कहिय कहत कुम्भ जिम
तिम करहु॥३०॥ इति श्रीवंशभास्करे महाचं
पूस्वरूपे दक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहचरि
त्रे अष्टाविंशो २८ मयूख:॥ ॐ ॥ ॐ
॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ
॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

दो॰॥ इतकोटापति नृप उमँडि। संभरदुज्जन
सल्ल॥ पायो कुम्भ ज्जुराम पुर। हटि लुट्यो रन ह
ल्ल॥ १॥ पा॰ कु॰॥ पंच अष्ट मुनि ससि १७८५
सम्मित सक। इक लिय इहँ कोटा कुल औन्द क
॥ सेवा उतहडुा मद छिल्लर। प्रबल सिपाह बल्ले
छक उप्पर॥ २॥ महाराव भट यह मैमन्तम
न। घटीपति राउन्तगढ़ थन॥ कछुक बन्त उप्प
रवह कोप्यो। तज्ज रु स्वामिधरम सब लोप्यो॥

॥ ३ ॥ करउरअग्गलरद्योजोरनकरि । तिहिं
कबंधजयसिंहहिं संहरि ॥ रत्तिनिकसिहड्डा
सुबडेरय । रामपुरपसंग्रामसरनगय ॥ ४ ॥ को
टापतिसुनिगढ़कढ़ाई । सरननरकवक्रअचारस
हाई ॥ चंद्रावतसुसुनीनधरीचित । तबधकि
कुज्जनसल्लचढ्योतित ॥ ५ ॥ हरिगीतम् ॥
करिहल्लदुरजनसल्लनृपतबरामपुरपरउप्परयो
। बजिनद्दमद्दलहद्दसद्दलभद्दबद्दलज्यौंभरयो
॥ उडिकेतुदंतिनपंतिपंतिन । सिंधुतंतिनल
गाये । नरवालचालनबाजिजालनज्वाल
मालनजग्गये ॥ ६ ॥ ठननंकिघंटनघोरत्यौं
रननंकिकंचनकीकरी । सननंकिसत्तिनल
ससासझनंकिपक्खरझल्लरी ॥ किलकैतबीरपटे
तकढ्ढकमनैतसज्जितसंकमेरनसैंनलखि
लगिलैनकेगलगैनगिद्धनकेभ्रमे ॥ ७ ॥ इगम

मि॰आ।ह्नेनक्रूटततसेतुसागरलुप्पयो।दरदि ह्रिदेभुवपिट्ठिकच्छपनिट्ठिनिट्ठिनरुप्पयो॥ नउबत्तिनादनबीरबादनढोनिछादनबित्थरयो।जिमभट्टसंबरधूलिडंबरएसअंबरउच्छरयो॥॥८॥फक्कारिकुंडिनमत्तगैनभचत्तपच्छि नकेकरैं।जिनमानपच्छ्यआनगच्छयदाननि ज्झरनिज्झरैं॥असवारतोकितुरवारकेमरत्थचक्र चारफिरावहीं।अबलौंसुसिक्खतपौनपेवह गौंलरंचनआवहीं॥९॥जिनधारमारभयार मारहजारभोगपजक्कयो।खुरतारअयनभु म्मिफुट्टतज्यौंउदुंबरपक्कयो॥१०॥खुरलीसु खिल्हतबीरकेमुरलीसुसिंधुवउच्चरैं।किलका रिजुग्गिनिसंगछेहलकारिभैरवकुंकरैं॥११॥ भटभीमलौंनिजसीमतैंसुतभीमयौंचढिसंच रयो।लियघेरिदुग्गसुरामपुरदलफेरिसंगर

वित्थस्यो॥ लगिअगि तोपन कालकोपननैर
लोपन मंडयो। खगिगोरवजालन सौधसालन दु
ग्ग गोलन खंडयो॥ १२॥ जरि हट्टपट्टन बट्टवट्ट
न धूमधोरनिधुंधरे। दुरिओक ओकन सोक कैपु
रलोक संसयमैं परे॥ प्राकारगिरि गिरिजात कंडुं
छिकि बप्र कपि सिर उच्छटैं। कंकुं फुट्टि खोभन
लोमगिरिपरिखान पूरिसु उप्पटैं॥ १३॥ दगिदाव
तुट्टिलदाव मंडप आव गिद्ध निज्योंचटैं। प्रासाद
पत्थरसोर सत्थर ह्वै थरत्थरकेकटैं॥ छकिछिन्न
तोपन कूटके परि कूट गोपुर तैं गिरैं। फुल्लिंग फाल
न अग्गि ज्वालन चित्रसालनके किरैं॥ १४॥
छहरात गोलन धमके थहरात अत्रिन छुट्टिकैं।
छिकिजात छप्पर छज्ज कोटि किजात छप्पर तुट्टि
कैं॥ अंगार द्वार अगार द्वार बजार वीथिन उच्छरैं
। नरहैं निवानन छिज्जि नीर समीर औरदसलोंस

रैं॥ १५ ॥जरिजालपर परिजात गिद्ध निडोरितुद्द लचंगज्यौं।करिजालरुंडन दंडके गिरिजातकेकियभंगज्यौं॥धकिधामधामन धुम्मतैं पुररामबिब्भलकुक्कयो।इलहल्ल दुरजनसल्ल करि हरवल्ल कल्लन झुक्कयो॥ १६ ॥ दैदैनिसैनिन बीरके हम्मीरभ्रहनपैंचढे।केतोरिभ्ररन तोरिभ्रग्गलपोरिमग्गलगेबढे॥बहहुड्ड छित्तर भ्रायचत्वरधीरधारनसैंधस्यो।करिजंगकछु बिधिफारिखग्गुफारिफोजहिं निक्कस्यो॥ १७ ॥ संग्रामनृपयह्काम सुनितलुरामपुरतजिभज्जयो।इत जितिदुरजनसल्ल हल्लन लुट्टिपत्तनगज्जयो॥ बलजोरकूरमभोरकों गिनिभी तिमानससोंगिरी।जयसिंहलियबहरानसों इमभ्रानभ्रप्पनलौं फिरी॥ १८ ॥ दो० ॥ कोटापतिनहिं भ्रमलकिय।कूरमनृपभयभार॥लुट्टिरामपुरजामलग।

आयउ अप्प अगार॥ १९ ॥ष॰प॰॥ चंद्रावत
सीसोद नृपति संग्राम सिंह इत। पुर बिंसोली आ
यरह्यो चिंतत प्रपंच चित। मातुल हो पर मारि नाम
विक्रम बिंसोली॥ इहिं कारन तँहँ आय रहत भ
ज्जत कलि खोली। धनकुमरि नाम जननी कुलस
ही पीहर इमलत्थ रहि। दिन कछु बिहाय दिल्लिय
गयो साह मुकुन्द सरन गहि॥ २०॥ दो॰॥
कछु बसु हुंडी नजरि करि। लिय निज भुम्मि लिखा
य॥ दिय कोटा आमेर दुव। बनि बनि पिसुन बता
ताय॥ २१॥ कछु दिन रहि निज पुर भम्यों। पटा
मुलक सब पाय॥ सरनि अभ्य जयसिंह सो। माखे
चूक कराय॥ २२॥ ष॰प॰॥ तदनंतर सक जान
अट्ठ सत्रह १७८५ संवच्छर। आसाढ़ अहरमनि
पोस भयउ पुनि सुत कूरम धर। रानी उदित सोठ
रज नाम माधव नृप नंदन॥ सुनत रव्व रिज्झ्यो

सिंहसुलिखि मंडिय उच्छव घन। दिय द्विजन दान
छप्पय श्रुत कथित रीति जपजज्ञ करि। सुतप्र
सत्कर्म सदिय सकल आम्नाय अनुसार सरि॥
॥ २३॥ षट्॰प॰॥ तदनु ईश्वरीसिंह सुपक्व जय
सिंहपट्टसुत। सालकुमर जगतेस सुला ब्याहो
हित संजुत। सरबसु सत्तह १७८५ साल माघ
सित लगन मिलायो॥ जबहि उदैपुर जाय उचित
उपयम करि आयो। इत दक्खिसु लकमाल व किय
उमरहट्टनखंडु आमाल। आजलौं दूरसुन तेइन
हिं मंलिसन अवलसों प्रबल्ल॥ २४॥ दो॰॥
रन अवरंगा बादचि। पहिलैं कटक मचारि॥
दया बहादुर विप्र वह सूबापति लिय मारि॥
२५॥ षट्॰प॰॥ इहिं द्विज दिल्लिय अग्गसेति
हिंदुन दुख दिन्नों। साहहुकम पुनि पाय कुंबद
किसन सिर किन्नों। तीन अयुत तुरक्क वार सुभट

निजसंगसिधारैं। कोटानरेसभलिपत्रलिखिदु
ज्जनसल्लकुसंगदिय। इनजावसरितोरवाउतरि
कछुदिनपारसुकामकिय॥ २६॥ कोटापतिऋरि
कपटतल्थकछुकालबिहायो। द्विजद्विग निज
दलरक्खिअप्पकोटाचलिआयो। उत अवरं
गाबादलुहिपरहट्टचलाये॥ द्विजनिबेरदलपि
ल्लिपिल्लिरच्चकहराये। अतिजोरबढियमर ह
ट्ठअरितबद्विजसम्मुहजिल्लये। पासकछुपान
चोपरिमथित खेलप्रानपनरिबल्लये॥ २७॥
दयाबहादुर बीरबिप्रनागरसूबापति। सूबदा
रिरनखग्गमारिबहुसत्रुमहामति। तिलतिलते
तनलुहि बिरच्चिअच्छरिगलबाँहीं॥ गंजिआरि
नकरिगरदमरदपत्तोदिवमाँहीं। जिमजिमप्रमा
दमिच्छनजगियभोगनजिमजिमभुल्लये। तिम
तिमकटच्छतिरछेबिरच्चि दिल्लीजारनघुल्लये॥

॥ २८ ॥ दो० ॥ मारि छिन्नहिं मंडल अमल। रेवा
लंघि रिसाय ॥ मरहट्टन मालव लयो। उज्जयि
नी लगि आय ॥ २९ ॥ लै मंडू दस उरलियउ। निज
निज थानाँ रक्खि ॥ सूबा पति गुजरात को। सो हु
मिल्यो हित साक्खि ॥ ३० ॥ तब के आवत दक्खि
नी। सुलदक्षत बरजोर ॥ अब कूरम कहि मुक्कल्यो
। तज कूराम पुर मोर ॥ ३१ ॥ जानि इन कुजयसिंह
को। राम पुरसु दिय छोरि ॥ अवर देस उज्जैन लग
। बढि बढि लिन्न बहोरि ॥ ३२ ॥ कूरम तब मुक्कालि
कटक। अमल राम पुर किन्न ॥ मरहट्टन सन छन्न
मिलि। दिल्ली सिर अरदिन्न ॥ ३३ ॥ इति श्रीवंश
भास्करे महाचंपूके उत्तरायणे दक्षिणायने नवमराशौ
बुधसिंहचरित्रे ऊनत्रिंशो २९ मयूख: ॥

॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀

॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

दो० ॥ अभयसिंह मरुईसइत । मरुधरराजअनाथ
स्वामिधरमबहि साहको । अलिजव दिल्ली आय ॥
१ ॥ इत नृपकानीं सोहरहि । चुंडाउति परनेह ॥ स
करसबसुमुनिइंदु १७८६ मित (सुवउदंतअबएह
॥ २ ॥ ष० प० ॥ असितपक्खअषाढ मासशनि
बारचउद्दसि । चुंडाउतिउरकुमरभयोदहमासज
ठरबसि । धात्रेयीनृप निकटउल्वसहितलिगहि
आन्यौं । इडुनधरयहरीतितबहि निजसुतपहि
चान्यौं । करिजातकर्मकुलबेदबिधिगणकन
बहुबसुब्रातदिय । बहुद्विजनधेनुहाटकतुरग
मणिपटसहितप्रदानकिय ॥ ३ ॥ बहुरिनृपति
बुधसिंहकुम्भनृपसोंकुकहाई । सतमतरुप्पव
सब्बनदईजयसिंहबधाई । पुनिकहिपठईएह
छांडिममस्वसाधर्मरत ॥ चुंडाउतिसंगबसिरु
पुत्रउतपन्नकरियतत । अबचहहुराज्यबुंदियक

न्न लोमम कथित प्रमान करि। यह भयउ पुत्र अ
पकु हमहिं भुंजउं जातिसन रहहु टारि ॥ ४ ॥ अरु
हमर कवहिं गोद लाहि निजसुत करि मानहु। मम
भगिनी संगर हहु याहि निजहित करि जानहु ॥
संगहि दिय इक सचिव नाम ताको हीरामल॥ ति
हिं संगिय यह तनय देहु कुमरहिं चाहहु भल।
अकिलचारि साय लुंदिय अधिप पुत्रहुकें हुं मंगे
मिलत। बरजोर लेहु हो तुम प्रबल हमर न इच्छ
नरवगहत ॥ ५ ॥ दो० ॥ कहियह सुत उत्सव
करिय ॥ धरिय नाम उम्मेद ॥ सो सुनि नृप जयसिं
हके। भयउ अमित चितखेद ॥ ६ ॥ षट्प० ॥
सुनत एह जयसिंह थक्कि कर मुच्छ रिसायो। पन्न
गपय हख्यो किखु थित सहूल रिझायो। लसकि
लनत काल सचिव राजामल बुल्ल्यो ॥ कयोक
हाकर नव खिज्झि अकउल छल खुल्ल्यो। कारि

उचित लेहु रवत्री कह्यिय गृह वासि नइ नह न कुन न । इच्छित हिं राज बुंदिय अरपि मथित निवाह हु अप्पपन ॥ ७ ॥ दो० ॥ तब छित्वर प्रति इंद्रगढ । कुम्भ लिखी यह चाहि ॥ देवसिंह भेजहु कुमर । बुंदी अप्पहिं ताहि ॥ ८ ॥ प्रथम राज तुम कों मिलत । जो यह तुम हिं रुचैन ॥ तो हम अवरहिं अप्पिहैं । बद हु न पिच्छों बैन ॥ ९ ॥ छित्वरसिंह हु तब हि लिखि । पठई कूरम गेह ॥ हम किंकर बुंदीस के । अनुचित करहिं न एह ॥ १० ॥ अब रहु गोपीनाथ कुल । नस्यो अनुक्रम पाय ॥ कुंदील कूरम तबहि । सालम लिन्ह बुलाय ॥ ११ ॥ कह्यो अप्पहु तुम रो कुमर । बुंदीगढ्यि जीर ॥ थप्पैं नहिं संशय धरहु । हम सहाय हम गीर ॥ १२ ॥ सठ सालम यह लोभ सुनि । बुल्यो कुमर प्रताप ॥ नय विचारि सो हु नस्यो । उच्चरि दुरित्त अमाप ॥ १३ ॥

जइसालम बुल्ल्योजबहि। मध्यमकुमरदलेल
॥करउरतैंआयोकुटिल॥मनइच्छितलहि
मेल॥ १४ ॥अभयसिंहइतमरुअधिप।ब
खसिसाहबसुभ्रात॥सरबुलंदसिरमुकल्यो॥
देसूबागुजरात ॥ १५ ॥ दिल्लीतैंमारवनृपकु।
आयोजैपुरअत्थ॥बररवनलगजैपुरबस्यो।
होजयसिंहकुतत्थ॥ १६ ॥तबदरकुंचनआ
यतेंहैं।मरुपतिदिन्नमिलान॥इहिंसुनिकानी
खोहतैं।चढिआयोचकुवान॥ १७ ॥मरुप
तिसोंअतिहेतमिलि।कहिसबकुम्मकुकाम॥
जयनिवासउपबननिकट।कियबुंदीसमुका
म॥ १८ ॥ मुक्तादाम ॥ मिलेमरुभूपरुबुद्धवि
नोद।परस्परडेरनआयप्रमोद॥सुद्वैकरिगो
ठिनजिम्मनसाजि।दयेलियदेउनबारनबा
जि॥ १९ ॥मरुप्रभुडेरनकुम्मकुआय।सुता

पतिजानिमिल्योसरसाय ॥ कह्योकरिपावन
जैपुरजेब ।ममालयभोजनकैंचलियेब ॥ २० ॥
कह्योमरुभूपहुयोंसुनितत्थ ।चलैंहमबुद्धब
लापतिसत्थ ॥ ठगेइनकौंतुमजानिप्रमत्त ।हमैं
इनतैंहितहैयनअत्त ॥ २१ ॥ यहैसुनिकूरमअ
क्खियराह ।तुकोमिलिजामिपतैंयहदेह ॥ य
हैकहिलेमरुभूपहिंजाय ।दईबिनुजामिपगोठिं
जिमाय ॥ २२ ॥ चल्योलहिकूरमसिक्खककबंध
।बद्योनृपबुद्धहिंफेरिप्रबंध ॥ रह्योतुमकूरमकौ
यहजानि ।कबूकरिहैसमपमद्रमभानि ॥ २३ ॥
सुतोसबगोतुमरीकथसंग । अबैंननरक्कबकु
राज्यउमंग ॥ चलोममसत्थहिजोचकुवान ।
ततोइन्हठिल्लहिलैतुमथान ॥ २४ ॥ यहैकुन
मन्नियबुंदियईस ।रचीमरुभूपतिहूकछुरीस ॥
क्रम्योंकरिकुंचनधन्वकबंध ।रच्योअसगुज्जर

लैनप्रबंध ॥ २५ ॥ इतैंसठसंभरमोहअरोह । कर्यौंनिजडेरनकानियरबोह ॥ दईपुनिकुद्दहिं कुम्भकहाय । भयेसुतऔरससौंपकुभाय ॥२६॥ रुलैसुलसालमअंकदलेल । मनौंइहिंपुन्नगिलौंलहिमेल ॥ नमान्नियफेरिकुबुंदियनाह ॥ कुप्येगहिमुक्कुतबैकछवाह ॥ २७ ॥ दलेल्लबुलायउसालमनंद । मिल्योनृपकूरमप्रीतिअनंद ॥ बरछ्छरगहिय पैंछ्छूटारि । कह्योतुमबुंदियभूपहकारि ॥ २८ ॥ अबैंतुमकोंदुहिताहसमप्पि । थिरानिजभुग्गनभेजहिथप्पि ॥ बिराजकुबुंदियगहियजाय । सबैहमरानससेतसहाय ॥ २९ ॥ रह्योअभिषेककुतौलहिकाल । सबैसधिहैपुनिसत्रुनसाल ॥ बहैकहिसालमसिंहबुलाय । प्रबोधितबुंदियदिनपठाय ॥ ३० ॥ कह्योबुधसिंहहिंआननदे

कुसबैतसराज्यरज्जूकरिलेइ ॥ सज्योतबसालम
बुंदियसीस। हरामतजीनयधर्महदीस ॥ ३१ ॥ दो०
॥ यहसुनिकानीखोहतैं। बुद्धनरेसहिंछोरि। सु
रिमुरिसालममैंमिले। बहुभटसचिवबहोरि ॥
३२ ॥ पज्झटिका ॥ इकब्बनिकनामआनंद्अ
धर्म। कियसुख्यसचिवजोरलकुकर्म ॥ यहजो
धराजजासिजअनीति। एलच्योसठसालममैं
सप्रीति ॥ ३३ ॥ सुखरामनामकायत्थस्थान।
भरिलोभचोधरीउदयभान ॥ नागरइकद्विजज
गदीसनाम। हड्डापुनिरिंतुबहुवहराम ॥ ३४ ॥
भटअनयपुंजहड्डाभवान। थितनैरडुगारीजासथा
न ॥ पुनिधाइभ्रातसुभरामपाप। सुरिकियउडुप
सालममिलाप ॥ ३५ ॥ अरुसठअलोदपुरपति
अमान। मातुलसुमहारामाभिधान ॥ इत्यादि
चिवभटसठअनेक। दरिदरिसालमकियविवेक

टेक॥ ३६ ॥इतकियप्रपंचकछवाहराय।दिल्ली
सुअरजपठइलिखाय।बुंदीसबुद्धआलसब
हंत।चितअबनसाहसेवनचहंत॥३७।नहिं
पुत्रआहिइनकेनिकेत।तसमातभ्रातजहिंरा
ज्यदेत॥सुकुकम्मबंससालमअठेल।बरकुमर
तासमर्थ्यमदलेल॥ ३८ ॥अतिगुनप्रपंचरनप
टुउदार।बिक्रांतसुभगबरमतिबिचार॥बुंदीस
राज्यअबदेतताहि।अरुमरुपरानहममतिकु
आहि॥ ३९ ॥तसखातपटामुद्रितकराय।सम
निकटदेकुहजरतपठाय॥सुनिसाहमुकुम्मद
अरजएह।लिखवायपटापठयेसनेह॥ ४०॥
बुंदियदलेलसिंहहिंसमप्पि।बुधसिंहपदइ
हिंदेकुथप्पि॥तुमजाकुकुम्ममालवसुदेस।
आवतगिनीमरोककुअसेस॥ ४१॥पठये
इमरुप्पयत्रिसससिलक्ख।इनबलअनीकबि

चरकुअपकव ॥ उज्जैनवारआवननदेकु । लग्गिप
ट्ठिसमस्तनमारिलेकु ॥ ४२ ॥ कूरमनरेसतवभुज
भरोस हिंहमनिच्चिंतअतिमुदितहोस ॥ इमलि
खिपठायफरमानसाह । कछवाहबंचिमंडियउछा
ह ॥ ४३ ॥ ष० प० ॥ बंचिसाहफरमान हररिबिजय
सिंहमहीपति । रुप्पयतेरहलक्खपायमंडिगद
लदुम्मति । मनतैंमिलिदक्खिनिनआक्खिउ
प्परसाहायस ॥ कियमालवपरकुंचबुल्यिआ
मिरवजिमबायस । संगहिदलेलसालमसुवन
लेमंडिगदक्खिनचलन । बुंदीसइतसुबिग्गस्यो
बिबिधमन्निनउग्गनअत्थमन ॥ ४४ ॥ किय
बुंदीसबिचारजानमालवसालकजिय । बिजय
सिंहजिनअनुजकुम्भकारागृहरुक्किय । जाहि
कढ्ढिबरजोरथिरहिंजैपुरनृपथप्पहिं ॥ करि
फौजनएकत्तयाहिदारिदअबअप्पहिं । यह

कियप्रपंच बुधसिंह इतसो सब नृप जयसिंह सु
नि। वह बिजयसिंह सोदर अनुज पठयो हनिक
रि अनय पुनि ॥ ४५ ॥ घरमधार जयसिंह कर
म अनुचित यह किन्नो। बिजयसिंह हनि अनु
ज भेजि जामिप ढिग दिन्नों। कहिपठई पुनि कु
अजामिअ तरुतव सालक ॥ आयउ यह म
मई स प्रथित छुंढाहर पालक। इहिं बिधि कहा
य वह निज अनुज कटक छुंढ ढिग दग धकिय।
पुनि लिखि पठाय बुंदिय पुरहिं प्रति सालमय
ह संचिय ॥ ४६ ॥ दो० ॥ हम जावत सालव
प[illegible]। मिलि[illegible] कन मर हह। बुंदियधर तुम
[illegible]तन बल[illegible] करि[illegible] कछु नाहिं कह ॥ ४७ ॥ सा
ह मुकुन्द तुम महिं[illegible]। बुंदियधर दिय धीर ॥
[illegible] कहाहिं दे कुनध सन। हुं[illegible]नपति हमगीर ॥
४८ ॥ सालम प्रति यह लिखि सबल[illegible] लै निज

संगदलेल ॥ मालवउप्परउप्परयो । मरहट्टनहि
यमेल ॥ ४९ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्व
रूपेदक्षिणायनेनवमराशौबुधसिंहचरित्रेत्रिं
शो ३० मयूखः ॥ छ ॥ छ ॥ छ
॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥
॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

दो॰ ॥ सकरदटबसुसन्नह १७८६ समय । उ
ज्जमासअवदात ॥ कूरममालवकुंचकिय ।
मनसिज्जतिथिउमहात ॥ १ ॥ सुतामनायअ
धीसकी । बुंदियपतिलघुबाम ॥ चूंडाउतिहि
तैंअनरिव । रहिकरिपृथककमुकाम ॥ २ ॥
सासूयहजयसिंहकी । सुजनकुमारिमसूति ॥
पलटाईकूरमन्रृपति । अबनवीनरचिऊति ॥
३ ॥ पज्झटिका ॥ रह्वौरिनिकटजयसिंहराय ।
पहुदियदलेलसिंहहिंपठाय ॥ कहियहसुपुरुष

तुम्हरे कुमार । इहिँ गिनहु राज्य थंभ न उदार ॥
४ ॥ सुनियह दलेल सन अति कसूर । कहि पु
न मिली रहौ रिकूर ॥ इम कूरम संग निर आय ।
सरसूपलटाई छल सहाय ॥ ५ ॥ इम दुव दलेल
कूरम अमान । मिलि नैर निवाई दिय मिलान ॥
बुंदिय लिखि पठई पुनि बिचारि । सालम तुम मं
ड कुधर सम्हारि ॥ ६ ॥ हम मिलन प्रथम आव हु
हजूर । पुनि धुग्ग कु बुंदिय कटक पूर ॥ सुनियह
सठ सालम अनय साम । कूरम ढिग आय उमिल
न काम ॥ ७ ॥ मिलि उभय गाम ऊडवा मिलान
। दिय कुम्भसाल महिँ रितख दान ॥ कहि जाव
हु बुंदिय तुम निसंक । अब तब कुमार सिर पट्ट अंक
॥ ८ ॥ इहिँ लेहु मालब जात आज । सूबा प्रबं
ति रक्खन समाज ॥ सालम तुम जावहु गृह सधी
र । कुम्हहिँ न मलिस न देहु बीर ॥ ९ ॥ यह अ

क्विसालमहिंसिक्वअप्पि।मालवचलिकूरमकुं
चमप्पि॥दलभरनभुम्मिफुट्टतदरारि।चंचलभलं
गहल्लियचिकारि॥ १० ॥बहिसजवतराएनले
तबाजि।उद्धतभटमंडनकपटआजि॥रच्चिइम
दरकुंचनकूर्मराज।कोटाधरसंकथिप्रथितकाज
॥११॥नदिकुसकतीरपरिदलअनंत।दिसदिस
नफुहिगय्ययहउदंत॥कोटानृपदुज्जनसल्लकूर
।हितसचिवदोयपठयेहजूर॥१२॥नागरद्विज
बेणीरामनाम।रनचतुरव्यासदोलत्तराम॥इ
मदुवपठायकूरमअनीक।कोटेसरच्चियप्रनति
यकितीक॥१३॥ष॰प॰॥कुसकछोरिपुनि
कुंचरच्चियअग्गैंनृपकूरम।सिंधुसरितनिवस
ध्यबडोदकियतंहँमुकामक्रम।उज्जयिनीके
अनुगगोडउम्मटसमरगन॥अरुकबंधकछ
वाहसुपकुरिवाच्चियपुनिसेवन।सूबाधिनाथ

कुम्भहिं समुझि नृप ये सब आयउ निकट। सजि सजि मिलाप जयसिंह सन किय सासन मृगि सिर करट ॥ १४ ॥ दो० ॥ निजगढ सोपुर गोड नृप उम्मद पहलि ईस ॥ कोटापति चंडासि कुल। सं मर खार बलीस ॥ १५ ॥ गढ़ राघव बज्रंग गढ़। ये रिवच्छिय चक्कुवान ॥ नरउर पति कछवाह नृप। सुत गजसिंह सयान ॥ १६ ॥ पति ईडर रतला सपति। दुव रट्ठोर दलेस ॥ इत्यादिक उज्जैन के। आये अनुग असेस ॥ १७ ॥ पादाकुलकम्॥ सूजा नुग नृप समय सयाने। मिलि जयसिंह सं वाहिसन माने। अरु कोटेस पटालय आयो। भीम जनक भव सोक भुलायो ॥ १८ ॥ जान्यों द ईदलेल हिं बुंदिय। होयय हैइनकै स्वीकृत हि य। इम बिच्चारि कोटा अपनायउ। बक्कु सुद डेर न जाय लहायउ ॥ १९ ॥ जयहरि लैइम सबन

बेंडजव।मंडुवपुरप्रबिस्यो धरमालव।।प्रकटदि
खातसाहकिंकरपन।मिल्यो कितवअंतरमरह
ट्टन।।२०।।कछुदिनसमरब्याजतँहँकड्डे।ब
हुलपिक्खि दक्खिनदलबड्डे।।लुब्धिकटकअ
प्पनलुटवायो।मरहट्टनकेंहँबिजयमिलायो।।
२१।।कछुधनवसननिवेदनकिन्ने।लोभल्लल
टिलकबचलिन्ने।।ह्वैकूरमइमसाहहरामी।कि
यमरहट्टमिलभुवकामी।।२२।।दो०।।तदनंत
रकोरिसिकखगो।कोटापुरकोटेस।।अवररहे
हम्भारिअखिल।नरउरआदिनरेस।।२३।।
इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूस्वरूपेदक्षिणाय
नेनवमराशौबुधसिंहचरित्रे एकत्रिंशो ३१
मयूख:।। ॐ ।। ॐ ।। ॐ ।।
।। ॐ ।। ॐ ।। ॐ ।। ॐ
ष०प०।।इतबुंदियअवनीसचाहिकुट्टहनृप

चल्लिय। कानीरवोह्मुकाम छोरिबुंदियदिस
चल्लिय। रसजसुसन्नह १७८६ सरतपायअग
हनसितपंचमि॥ कियस्वदेसपरकुंच्चमुल्लिज्यों
मृगथलजलभ्रमि। चहुसूनिवाईमग्गचलि
भगवतगढमोरोरहिय। इतसुनिउदंतसाल
मयहसुबुंदियतज्जिसम्मुहबहिय॥ १ ॥
उग्रबथिककछवाहसम्थसरथिरुसरसाहस।
ढलगुनसाहनिदेसचापचलुरंगरंगरस। बन
हुड़ोतियविकटखानसालमदलेलसह॥ कु
बन्चबागुरालग्गिगाहसतकउलफंदग्रह।
सुद्दपनअलसलहिमोहसनबुद्धसुमंत्रविवे
कबिन। उनमत्तपानसंभरअथियपइव्वातजल
बुंदियइरिन॥ २॥ दो०॥ सुनिइतआवतसं
भरहिं। बनिसालमबुंदीस॥ लैदलसम्मुहउ
ल्लट्यो। खासिहरामसरीस॥ ३॥ लहिसीस।

बुंदियमुलक।अट्टोठट्टोआय।।यहसुनिसठबु
दियअधिप।बामसुर्यो बिहसाय।। ४ ।।जैतसि
हजाजवजयी।दिल्लियरनअसुदिन्न।।तासदेव
सिंहहतनय।भक्तिस्वामिरसभिन्न।। ५ ।।नग
रपलोधीधामनिज।बैरिसल्लभवबंस।।कुसथल
पंचोलासपुनि।थेहुवपुरउत्तंस।। ६ ।।साहसम
प्पेसंभरहिं।चोवनगढगहिबाँहिं।।कुसथलपं
चोलासए।उभयइजाफामाँहिं।। ७ ।।तबसंभ
रदियजैतहित।कुसंथलपंचोलास।।सय्यद
सनदिल्लियसमर।किंन्यो जिहिंदिवबास।।
।।८।।तासदेवसिंहहतनय।स्वामिधरमरतसूर
।।ताकेपुरकुसथललबहि।आयउबुद्धजरूर।।
।।९।। बिष्णुसिंहतनयाबकुंरि।अनुपमतल
याआय।।येसंगहिरानीउभय।पतिप्रमलगग
तिपाय।। १० ।।पुरबाहिरपृतनापरिग।घन

जिमडेरनधेर ॥ देवसिंहमहिमानिदिय । बुद्धहिं
गोटिडिलेर ॥ ११ ॥ परिडेरनलगपामेरे । धाम
स्वीयपधराय ॥ निजसरबस्वनिवेदयो । देव
सिंहहिलदाय ॥ १२ ॥ यहसुनिपुरबलवनअ
धिप । अभयसिंहअतिधीर ॥ निजदलसजि
आयउनिडर । बुंदियपतिढिगबीर ॥ १३ ॥
अथयदेवयेभटउभय । बैरिसल्लभवबंस ॥ स
अलिकुवबुंदीसकैं । देहअरपिसजिदंस ॥ १४
॥ यहउदंतसुनिइंद्रगढ । सुभटइंद्रसल्लोत ॥ दे
वसिंहछितसुवन । आयउदलउद्योत ॥ १५ ॥
कछुकिसोरबयबलिकछुक । क्रूरमसलहि
दूर ॥ देवपृथकडेरादये । दलसभरतजिडूर ॥
१६ ॥ इतसठसालसपिट्टिपरि । कतथलचिंति
कुकाम ॥ पत्तनफंचोलासढिग । किन्नेलरनमु
काम ॥ १७ ॥ कुलवधवमुक्कम्मके । मिलि

सबसालममाहिं ॥ पद्दोलीपुरपतिप्रथित । मि
ल्योजवानसुनाँहिं ॥ १८ ॥ तोपनइकअंबूरस
त । हैसतसजिबंदूक ॥ मिल्योआनिबुधसिंह
मैं । अनुचरधरमअचूक ॥ १९ ॥ त्यौंहीइक्कनग
राजतँहँ । सुकुकमबंसवतंस ॥ सालममैं नमि
ल्योसुभट । पटुबिख्यातप्रसंस ॥ २० ॥ छ०प०
॥ सुनिइतरनजयसिंहभीरसालमदलभेजिय
। तीनसँहँसतुरबारपंचउमरावमुख्यमिय । ई
सरदापुरईसनामकोजुवनिसंकनर ॥ सारसोप
पुरस्वामि बिदितफतमल्लबीरवर । साँवलसुह
डपुरपति सबल अबलअचल नानेडिपति ।
बहादुरसिंहकूरम बकुरि बुझानीपुरपतिबिर
ति ॥ २१ ॥ सो० ॥ अजमुलबासीसुभटबलि । नि
रुपबंसककवाह ॥ नामधेयसिरदारनिज ।
सोदियसंगसिपाह ॥ २२ ॥ पृथ्वीसिंहरुकरन

पुनि। उभय नरुवअवतंस॥ घासीराम रसोर पति। बलिभट कूरमबंस॥ २३॥ सेरसिंह रवि रक्षिय सबल। पुनिज द्रवपरताप॥ हरितोंवर अल्ला कुकम। मारव करनमिलाप॥ २४॥ उदयसिंह पुनि रूपअरु। जोधसुरतभटजत्थ॥ सालमहि तकूरम सजे। सोलंखी चउ सत्थ॥ २५॥ आमे रूपपठये इते। लरिहुंदियभुवलैन॥ बियहबड्ड रिप्रवासबसि। सब्बरक्खियढिगसैन॥ २६॥ नरउरपति गजसिंह सुव। जयसिंह हिं तेहं जंपि॥ समर मपंची ममसचिव। चाहत जयअरिचंपि॥ २७॥ भेजहु तिंहिंइनसंगभल। कूरमलबहु सिकाय॥ संगहिदियनरउरसचिव। नामसुखं डेराय॥ २८॥ ष० प०॥ सुभट मानसिंहोत्तक लहइम पंच मुरव्य किय। अवरहु सुभट अनेक सेन सम्मलि हुतसज्जिय। कारियह दलदर कुंचमुल

कमालवत जिमंडुव ॥ जुरिआयउजंघालभीर
सालमकुसथलभुव। करिदल मिलानसालमक
टकहुडुनपतिढिग मिलनहित। इनपंचभटनआ
यरुकहिय। इहश्रवनधारहु बिदित ॥ २९ ॥ दो॰
॥ अभयसिंहबलवनअधिप। पहनिभज्जिगएह
॥ भीमहिंतुअतिमत्तिभय। इल्लभमन्नतदेह ॥ ३०
जाकेबलजयसिंहतैं। अबरनरचहुनएहु ॥ दिन
प्रतिरुप्पयदोयसत। रहिहंदाबनलेहु ॥ ३१ ॥ न
हिबुल्ल्योबुंदियनृपति। कमसबसहियकुबैन ॥
राजाउत पंचनसरिस। निठुरदिखायेनैंन ॥ ३२ ॥
ष॰प॰ ॥ कूरमपतिभटकुबच्चप्रकटसुनिसुनिब
लवनपति। अभयसिंहअतिबीरभयउघकिप्र
लयरुद्रभति। कररिविमुच्छडसिअधर निरखि
पंचनउफनायो ॥ पन्नग पय चंप्योकिमत्तमृगरा
जखिजायो। बुल्लयोबिदितभुजठोकिबलवा

सवजतगीदरडरें। बुधसिंह आनकूरमबलहिं
केहरिकम गहुरिवरें ॥ ३३ ॥ दो० ॥ आतनअमें
हसमजत। गहरन अनुचितगाय ॥ अवरनतेर
नआकुरत। पद्यहहुन पाय ॥ ३४ ॥ इमहकारि
बलवनअधिप। सुरिअद्विगगहिसुच्छ ॥ फदादो
पमंडिगपनडुं। पकगदद्यलपुन्छ ॥ ३५ ॥ तवकूर
मसुभटनतमकि। सजियजायनिजसैन ॥ जुत
सालमसणइक्कजुरि। लगिदलबंधियलेन ॥
३६ ॥ देवसिंहछिल्दरसुवन। इंद्रगढपसुनिएह
॥ भिरुसक्निजयसिंहमय। गयोसपरिकरगेह ॥ ३७
॥ हदयनरायनहरियकुल। येबंधवउमराव ॥ कर
नगिरिबुंदीसकी। कुलआयेरनदाव ॥ ३८ ॥ रहे
मेवसासंतहर। मायवहरमटमोर ॥ कुलबलन
अरुनाथकुल। येचालुकनृपओर ॥ ३९ ॥
सुदमाकृतभाषा ॥ आर्या ॥ क्लिइह अरो

(१)हाँलिगी अणुअंबुंदीसपहवंपिक्ख॥सालमअत्त
पञ्भावे।जिट्ठोमिलिओबुहेणभूवइणा॥४०॥आ०
भि०॥दो०॥राजसिंहअन्वयरतन।बंधव निज
नरबीर॥दोलतिसिंहहुसज्जिदल।भटअायउ
नृपभीर॥४१॥हाजरिभटप्रथमहिहुते।महासिं
हकुलमोर॥असितपक्खकेइंदुजिम।लग्यो
घटनदलओर॥४२॥दसहजारपृतनाबदलि
।सबकुवसालमसंग॥दसहजारनृपनिकटद
ल।रहियरचावनरंग॥४३॥उभयपक्खअरि
मित्रतजि।समयजोरदरसाव॥रहियइंद्रगढ
आदिबहु।उदासीनउमराव॥४४॥सालमहि
गतेरहसंहंस।नृपढिगदसनिरधार॥इलकुथ्यो
बलबनअधिप।भुजधरिबुंदियभार॥४५॥

(१) विविधानेहाधिनकी अनुजम्बुन्दीशपदृपस्प्रेक्ष्य॥सालिमपुत्रः
प्रतापः ज्येष्ठो मिलितो बुधेन भूपतिना ॥४॥

बुद्ध नृपति वरजत रह्यो। दोउन सपथ दिवाय॥ इ
क्के भज्जन नों सुनैं। लग्गी अंदर लाय॥ ४६॥ अभ
सिंह अरु देव इत। अरु कछु संभर सैन॥ जिहिं
किय भट सज्ज किय। वरनत तिन्ह कवि वैन॥
४७॥ महाराम मातुल कुलज। मुख्यो जुसालम
मल॥ वाको जुत संग्राम इत। सो कुसज्यो गहि से
ल॥ ४८॥ अमरसिंह सज्ज्यो प्रथित। नाथाउत र
जपूर॥ बरदसिंह जगभानु बलि। सजे हल्दु अति
सूर॥ ४९॥ सांवलदास सजोर सजि। गोरबंस
उजिआर॥ जोर राउर कछवाह जुरि। परसुराम धोरे
हार॥ ५०॥ वरजत नृप बुंदीस कें। सहठ दिखाव
त सोहें॥ अभयदेव संग हि इते। भटन तनां किय
ओहें॥ ५१॥ देवसिंह अभमल्ल दुव। दुल्लह ललि
त उदार॥ अच्छारि दुलह निअदहिय। जन्य इते जु
झार॥ ५२॥ अथ भटन पिक्ख्यो समय। सालम अ

युतअयुतअनीक ॥ छोरकुनृपहिनइक्कछिन।
कोजानैंबकितीक ॥ ५३ ॥ जोभूपकु सिरघातज
ड़। कूरमयल्लहिंकूर ॥ तोसबस्वामिसमीपही। स
त्नुनजंगहिंसूर ॥ ५४ ॥ स्वामिदयेनलरनसपथ।
बलिनृपतजननबेस ॥ नयबिचारिइमइननिकट
। सकलरहेसुभटेस ॥ ५५ ॥ बीरजितेपहिलैंबदि
य। तिननममन्नियसोंहँ ॥ अभयसिंहसंगहिउ
ठिय। भयदफुरावतभौंहँ ॥ ५६ ॥ कहिकुबैनउ्ठि
कूरमन। निजदलपिल्लियजाय ॥ यहसहीनब
लवनअधिप। लगियसोरदिन्वलाय ॥ ५७ ॥
अभयसिंहआदेवदूत। कुप्पिचलियजिमका
ल ॥ सिरघरसतअजलोकसों। पयपरसतपाता
ल ॥ ५८ ॥ सालमअरुकूरमसुभट। जुरिइतप्र
बलजरूर ॥ बुंदियदलसिरबग्गलै। सकल
लेबढिसूर ॥ ५९ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहा

चंद्रूस्वरूपे दक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहचरि
त्रेद्वात्रिंशो ३२ मयूख: ॥ ७ ॥ ७ ॥
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७
॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

दो० ॥ सकहयबसुसम्रह १७८६ समय । माघ
वदरस मिलाप ॥ घटियरुद्रबिकेचढत । उल
हिसपुद्दनआप ॥ १ ॥ दुर्मिला ॥ दुवसेनउद
ग्गनरवग्गसमग्गनअग्गतुरग्गनबग्गलई । स
चिंगउतंगनदंगमतंगनसज्झिरनंगनजंगजई
॥ लगिकंपलजाकनभीरुभजाकनबाककजाक
नहाकबढी । जिममेहससंबरयोंलगिअंबरचंड
अडंबरखेहचढी ॥ २ ॥ फहरक्किदिसानदिसा
नबडेबहरक्किनिसानउडैबिथुरैं । ररनाअहि
नायककीनिकसैंकिपराक्रलहोरियकीप्रसरैं ॥
गजघट्टनंकियभीरिमनंकियरंगरनंकियकोच

करी। परखरानफनंकियबानसनंकियचापस्तनं
कियतापपरी॥ ३ ॥धमचक्करचक्कनलगि
लचक्कनकोलमचक्कनतोलकढ्यो। परखराल
नभारखुभिखुरतालनव्यालकपालनसालब
ढ्यो॥डगमगिसिलोच्चयश्रृंगडुलेफगमगि
फुपाननश्रगिफरी। बजिरवल्लतबल्लनहल्ल
उफल्लनभुम्मिहमल्लनघुम्मिभरी॥ ४ ॥मचि
घोरनदोरदुश्रोरसमीरनजोरउमीरनघोरज
म्यों। श्रभमल्लउछाहनहड्डुहटीकछवाहनगाह
नचाहक्रम्यौं॥सुवजैतईतैंभटदेवसहीकरि
स्वामिमहीहितसंगसज्यो। दुकूंश्रोरकुलाह
कतोपदगीलगिमद्दबलाहकनद्दलज्यो॥५॥
उमतैंकछवाहनउग्रउछाहनबेगसुबाहनबग्ग
लई। बनिबुंदियनालमजंगसुजालमसंगहि
सालमदोरदई॥परिरिट्टिफुपाननचंडचुहान

नगिद्धिउडाननगूदगहैं। गनधीरगुमाननपीर
प्रमाननबीरकमाननतीरबहैं ॥ ६ ॥ बढिबु
त्थिनबुत्थिछईबसुधालगिलुत्थिनलुत्थिप
रैंभजरैं। घटसेलघमाकनरंगरमाकनहुड्डुसुह
कनहोसहरैं ॥ लखिखग्गउदग्गनमग्गलगी
जुरिश्रच्छरिजग्गप्रजापतिज्यों। गलबाहँक
रैंकरिबीरबरैंगमनैंगनगोवरकीगतिज्यों ॥ ७ ॥
छननंकिउडाननबानछयेठननंकिगयंदन
घंटघुरे। फननंकिदुबाहनदीपफटेरननंकि
सिपाहनकोचरुरे ॥ डुलिभेरवडेरुवतेंडहकीड
रिडाकिनिसाकिनिचौंकिचली। नचिनारदनच्छ
बिसारदज्यौं बिबिवारदभांतिमिलेखुरली ॥ ८ ॥
कटिखग्गकलापरुदंतकढैंफदिकुंभमउत्तिन
मेहफुरैं। तरितातनुतेगलहांतरकैंघनगज्जमतं
गजगज्जघुरैं ॥ बकपंतियदंतियदंतबढेचकुंभो

रु अचानक अब्भ बढि। कटिकैं उडि चातक घंट
कढे प्रतिपक्खरभेक अनेकपढे ॥ ९ ॥ यह आ
निसुमाकर भैंवरखाबढि माधवमास अमाबिधु
ख्यो। लखि नायकसूरन हूरन हूरन अंगन अंग
अलगक्कुख्यो॥इतसूरनचंदन अस्रचढ्यो रसकैं
इतहूरन रागरचे। उमहे इतसिंधुनकीध्वनितैं स
मुहे उतसिंजितसद्दमचे॥ १० ॥ इतडाकिनिदू
तिकजाकिनि ओइतसाकिनि नाकिनियास
सखी। सबहूरसुहागिनि इक्क अभागिनि बुद्ध
बिभागिनि सो बिलखी॥द्रुतहारसिंगार बिगा
रिदयेधुपि अंजनरोदनबारिबह्यो। करकंकन
फोरिमरोरिकलापहिं छोरि अलापहिं तापस
ह्यो॥ ११ ॥ यह आइयडाकिनिकीसिखई धव
हीनभई अबछोहछई। अतिआरति अच्छरि
कीलखिकैं हसिडाकिनि डिंडिमडक्कदई॥सह

नाइ्‌यसुंडिनकीकरिकैंगनबावनगावनमैंग हकैं।कटिमुंडरुरुंडकिरैंइतकौंचउसद्विनकुंड नचैंचहकैं॥ १२ ॥परवरालतुरंगनपूरकिते नरवरालकुरंगनफालनचैं।भटवारकटारन धारकैंअजिझारअंगारनमारमचैं॥फटका रिमतंगजसुंडिफिरैंकटकारिचुहाननझुंडझमैं।हलकारिचुरैलिनिहोसहरैंललकारिभयंक रझूलभ्रमैं॥ १३ ॥खगधारनधाररिवैंरसटकैं पलचारनझुंडझटैंझपटैं।खुरतारनभाररबुदैंप झुमीअसवारनवारदटैंदपटैं॥उपकारनका रकिलेउमहेसिवधारनकाजगहैंसिरकौं।दल भारनभारसिलेदुवधांसदबारनबारचलैचिरकौं ॥ १४ ॥यमसाननबानउडाननलैअरिभान नपीवतकालअही।चकुवाननकेवरकोउथ लापवमाननभानसहौं निबही॥करवालनवं

डउडी चिनगी भटजालन भीर भिरैं भुरसैं। बढि ज्वाल करालन लोक बरैं दिकपाल कपालन सालबसैं॥ १५॥ गजराजन ढाल ढहैं ढरकैं रतभाजन घाय भरैं भभकैं। लगि लाजन सूरल रैं लटकैं छुटकैं भुवकाजन लोह छकैं॥ कटिकालिकपी हकिरैं कलिमैं फटि मस्तक खंड उडैं फबिकैं। जिम सैलन शृंग खिरैं बिखरैं प्रतिमल्ल पुरंदर के पबिकैं॥ १६॥ मथि मंथनि मत्थ गहैं गलि सोंगन गिद्ध निगोद गिलैं गहकैं। मनु ग्वालिनि मट्ठ दही मथिकैं नवनील निकारन बारन कैं॥ बहि मार दुधार चलैं चमकैं असवार तुरवार कटैं उलटैं॥ फटि मद्धुन ऊरु फटैं उछटैं कटि बाकुल बाकुल बाकु कटैं॥ १७॥ दो०॥ इहिं रन बिच बलवन अधिप। अभयसिंह अति बीर॥ फतमल्ल हिं खोजन फिरत। फुलसिंहहु हृपगीर॥ १८॥ जबहिं

चजयसिंहके।येकूरमउमराव॥बुंदीपतिअग्गैं
विदित।कुल्लेकुवचबढाव॥ १९ ॥इनहूमैंफत
मल्लयँहँ।सारसोपपतिसूर॥कहिकातरअ
ममल्लकौं।गह्योबकुतमगस्टर॥ २० ॥इहिंका
रनअमल्लअब।तिहिंहेरतगाहितेग॥कुप्यौ
कहाँकूरसदार।बीरबतावकुबेग॥ २१ ॥छ०प०
॥जिमनागहिंखगराजमृगहिंमृगराजमहाबन
।जंभहिंजिमजंभारिमधुहिंमानहुंमधुसूदन।
पानीजिमपावकहिंतूनहिंपावकजिमतक्कत
॥सजवकपोतहिंसेनहननहेरनजिमहक्कत।
आखुहिंबिडालतिमिरहिंअरुननरंकहिं
दारिद्रनिम।फतमल्लहूपपोमिनिफिरितइम
हेरियअमल्लहम॥ २२ ॥दो०॥ सम्मुखपि
क्खिफतमल्लसों।इमआक्खियअमल्ल॥गी
दरगालबजायकैं।अबकिनकरतउझल्ल॥२३॥

इमहकारिबलवनअधिप। मंडतबाननमेह॥
उफनावतआयोउमंडि। दंसनमावतदेह॥ २४
॥ छ॰ प॰ ॥ पयदछ्तअहिपुच्छमुच्छअैंचत
मयंद जिम। सोरमनकुंसावातअग्गिलग्गत
प्रचंडद्रुम। हेल्लिमत्रूवहजारजेठद्दुपहरजनु
जग्गिय। मलयउग्र जिमप्रथितलायअंखि
नअतिलग्गिय। काननप्रमानबाननकरखि
क्रूरमदेहसुसेहकिय। मदमत्तलखकुहहुमरद
गुंडपदअंगदगातिय॥ २५ ॥ मुक्तादाम ॥
जुरयोअमभल्लहतैंलपिजुद्ध। अरयोफलभल्लउ
तैंकलिक्रुद्ध॥ उभै निज स्वामिन कीमुवआस।
तकावतअक्कहिंचक्कतआस॥ २६॥ उभैरन
दच्छबडे उमराव। उभैउमंडे रसबीरउगाव। उभै
जय भथ्यनहारिउथप्पि। उभैउफनायकुबैनन
अप्पि॥ २७ ॥ [illegible]लडुल्लहसज्जितअंग।

उभैमरश्रौंचतमुच्छश्रभंग ॥ उभैश्रनुरूपरि
झावतरंग । उभैरनश्रंगनकेजयखंभ ॥ २८ ॥
उभैसिवदारिदमिहनहार । उभैपलचारनकेउ
पकार । उभैझमकावतखग्गउदग्ग । उभैचलि
मेतहसावतश्रग्ग ॥ २९ ॥ उभैमवनैंतजिमो
हश्रलुद्द । उभैश्रनछिल्लिलगावतउद्द । उभै
लुमबाहकुबाहकुश्रछिन्न । उभैकरिसूरजकों
निजसाखिन ॥ ३० ॥ उभैकनकाचलपायन
बंधि । उभैदमउद्धतसंहरिसंधि । उभैतुलसी
धरिमस्तकश्राय । उभैजलगंगउमंगश्रचाय
॥ ३१ ॥ उभैछरवजानिजुरेइकधेनु । उभैकरि
राजकिइक्ककरेनु । उभैइकसिंहनिज्यौंवनई
स । जुरेइमक्रूरमहज्जुजयीस ॥ ३२ ॥ मिलेपहि
लैंजुवतीरनमार । कहेसरदोउनभेदिकरार ॥
चढ्हिंचंडप्रतंचनचाप । उडैंसलश्राजिमेरो

यञ्जमाप ॥ ३३ ॥ जहांकरिबाननयौंरनजोर। मि
लेपुनिसेल्लनह्वैभटमोर ॥ सुकंकटभेदिकढैघट
सारि। किधोंतरुतेजनञ्जग्गकुदारि ॥ ३४ ॥ च
लीञ्जभमल्लबरच्छियञ्जच्छ। पस्यो छिदिकूरम
बाजिदुपच्छ ॥ वहांहयञ्जौरचल्योकछवाह। रु
प्योञ्जभमल्लकूपच्छयराह ॥ ३५ ॥ बरच्छिनजं
गञ्जपुब्बबिधाय। लईञ्जबखापनतैंहिमला
य ॥ किधोंघनतैंकढिबिज्जुकराल। किधोंबि
लतैंकिलकुंडलिकाल ॥ ३६ ॥ किधोंनभतैं
ससिह्वैजकलाकि। कढीयमकेमुखतैंदसना
कि ॥ हलीकिकुतासनतैंकढिहेलि। मयूखन
भोमनितैंञ्जपवेति ॥ ३७ ॥ कढैध्वनिब्याल
तितैंकिसकास। कढैमतगातनतैंकिसमास॥
कटाच्छकिधोंकुलटादृगकुंज। पयोभवकोरक
तैंञ्जलिपुंज ॥ ३८ ॥ कलिंदकतैंनिकसीजमु

नाकि। प्रजापतितैंपरिपूरप्रजाकि।। गुनत्रयतैं किंचलेमहदादि। महानटकीजटतैं प्रम थारि ।। ३९ ।। हिमालयतैं जिम गंगहिलोर। कटीश्व रकेमुखदंतुलिकोर।। अनंतकआननतैं जि मजीह। सटाधुनिथंभहितैं नरसीह ।। ४० ।। नवोढनकेउरतैं किउरोज। उदैगिरितैं कि दि वाकरओज।। किअंजनिकेउरतैं हनुमान। प रासरनंदनतैं किपुरान।। ४१।। सुराधिपकेक रतैं जिमसंब। कढेधनुगांडिवतैंकिकलंब ।। सहीकपिलाननतैंजनुसाप। लयायनगायन तैं किअलाप।। ४२।। धपीजनु नीरदतैंजल धार। महाबलमाधवतैंमनुमार।। त्रिलोचन केकरतैं कित्रिसूल। मउन्तियसुत्तियतैं किअ मूल।। ४३ ।।कढेइमदोउनखापतखग्ग। मि लेमलयानलतैंरनमग्ग।। उभैकरलाघवदाव

दिखात। परस्परदेतप्रहारनिपात॥ ४४॥उभै
फिरिमंडलटारतवार।मचावतमार दुधारनमा
र॥दईथपिसंभरदाहिनअंस।पर्योकटिकू
रमख्यातप्रसंस॥ ४५॥दो०॥ हटिकूरमफ
तमल्लहनि।अभयसिंहचहुवान॥कूरमको
जुवरामकों।पिक्खतगाहकमान॥ ४६॥ई
सरदापुरपतिअतुल।वहकोजुवकछवाह॥
अप्पहिंखोजतइकिवकैं।अभिमुखरच्चिगउ
छाह॥ ४७॥मिलिदोउनकिन्नीमुदित।ना
गफेनमनुहारि॥अक्खीपुनिअभमल्लइम।
कूरमसुनहुहकारि॥ ४८॥सबतुमसिलिह
मेरसुनत।भूपहिंडारीभीति॥तुमहूमैंफतम
ल्लतैंहैं।अक्खीअधिकअनीति॥ ४९॥का
कोदरहिंकुपायकैं।कोउनजियतसकोप॥फ
ननहन्योंफतमल्लकों।अबतवसिरआटोप

॥ ५० ॥ फबत बान फत भल्लके। छत्ति अभय छतछेक ॥ जनु छान न जय अरु अजय। बन्यो तितजस बिबेक ॥ ५१ ॥ यातैं कोजुव राम अब। मिलि जुट्टयो रन माँहिं ॥ जिनके बानन तुम छिदे। तिनतैं गब्ब इतु नाँहिं ॥ ५२ ॥ ष॰ प॰ ॥ यहै सुनत अम मल्ल खग्ग कोजुव सिर झारिय। सजि कोजुव इत संगि हक्कि उरतक्कि प्रहारिय। याके खग्ग उदग्ग कहि ब्रा कुलकर कह्यो ॥ वाकी संगि अपुट्ठ चक्कि वहियरीढ कच्चह्यो। अरि तब सिराहि बलवन अधिप पुनि असि झारियमत्थ पर। कटि टोप सीस कहिय सकलमनहु बिबंधव बंदिघर ॥ ५३ ॥ दो॰ ॥ कोजुव राम सु सिरकटत। बेग बसन न सनबंधि ॥ करइ कहि अ सिबर करारिव। सिर झारि जयसंधि ॥ ५४ ॥ कोजुव कोइ किवन करसु। इम कह्यो अमभल्ल

॥ यातैं गहि कर बाम असि। झारी बहुरि उझल्ल ॥ ५५ ॥ टोए कट्टि तिरछ्छीतर कि। तुट्टि परिय तरवारि ॥ अकिवय तब अमलड्डम। ब्राहकुनें कबिचारि ॥ ५६ ॥ जिहिं कर तैं असि बरजुरत। तिरछ्छीतर कत तुट्टि ॥ जनि ताकों हरखें जननि। क्यों बहु धालन कुट्टि ॥ ५७ ॥ काहि इमकोजु बरामपर। असि झारिय अमलल्ल ॥ सिवगहि लिन्नों उड्डत सिर। ढर्यो यह कुरनढल्ल ॥ ५८ ॥ ईसरदाके पतिहिं इम। बलवन पतिहनि बेग ॥ सांवलदास सुहाडपति। तद्धये। झारत तेग ॥ ५९ ॥ मुक्तादाम ॥ चवीय हद्दू तन भूतन चास। सुनी सब कूरम सांवलदास ॥ उदायुध उग्र दिवाकर अस। रहैं इत नीस हि क्यों रघुबंस ॥ ६० ॥ मिल्यो अमलद्द उद्धतमान। धपावत धार हिं दै बलिदान। ध

थोकु बलाय्य किधुंघुहिंधारि। किधोंरनराव नरासहकारि॥ ६१॥ किधोंनलपैंबलबास वक्रुद्ध। जटासुरपैंकिवृकोदरजुद्ध॥ कुअत्थ अभावत हत्थकृपान। दिखातसंकरकोअति दान॥ ६२॥ सुहाडपहूइतमैंगहिसंगि। मिल्योअसमल्लहिंमल्लउमंगि॥ नचातेंहंता लिनचोसठिनारि। रचीइमहट्ठसुकूरमरारि॥ ६३॥ जहांतहंआवहिआवहिंजाप। जहांतं हंखूटतखग्गनखाप॥ जहांतंहंप्रेतडका रलजोर। जहांतंहंघायलघायनघोर॥ ६४॥ जहांतंहंनारदकोअतिनञ्च। जहांतंहंसूरन कूरनसञ्च॥ जहांतंहंभूतनभूखप्रकास। जहां तंहंगिद्धनिगूदबिलास॥ ६५॥ जहांतंहडा किनिडिंडिमडक्क। जहांतंहंधारनकीधमच क्क॥ जहांतंहंहत्थिनचंडचिकार। जहांतंहं

फेरत्रिकानफिकार ॥ ६६ ॥ जहाँतँहँ फुट्टतभू
अतिजोर । जहाँतँहँ त्रंबकतंडवतोर ॥ जहाँ
तँहँ दिग्गजकातरगज्ज । जहाँतँहँ सोहतसूर
नसज्ज ॥ ६७ ॥ जहाँतँहँ कातरकूकतकूक ।
जहाँतँहँ चाहतचंचलचूक ॥ जहाँतँहँ फुट्ट
तफीलनमत्थ । जहाँतँहँ सूरनहूरनहत्थ ॥
६८ ॥ जहाँतँहँ खग्गनखंडखिरंत । जहाँतहँ
गेवरगंजगिरंत ॥ जहाँतँहँ जुग्गिनिकोजय
कार । जहाँतँहँ रुंडनमुंडनमार ॥ ६९ ॥ जहाँ
तँहँ साकिनिसोरसुनाव । जहाँतँहँ पंडितजं
गप्रभाव ॥ जहाँतँहँ हत्थिनबत्थनजुट्टि । ज
हाँतँहँ तेमतरक्कतुट्टि ॥ ७० ॥ जहाँतँहँ
सोनितसोंबढिसाद । जहाँतँहँ प्रेतनभ
च्छप्रमाद ॥ जहाँतँहँ चालचुरैलिनिचोंकि ।
जहाँतँहँ भैरवभज्जतभोंकि ॥ ७१ ॥ जहाँतँ

हैं हड्डुन जालम जोर। इतैं जँ हैं दुस्सह क्रूरम ओर॥ सुहाड प क्रूरम साँवलदास। मिल्यो भ्रम भम्महिं पुंज प्रकास॥७२॥ कहैं दुव बाहु कुबाहु कत्थ। रचैं रनत्यों र बिरुक्क तरत्थ॥ सरैं जलजंत्र कि धायन सोन। जुरैं इन दे उनतैं तँहँ जोन॥७३॥ लरैं भ्रम मल्ल सु बुंदिय लाज। करैं उत क्रूरम जैपुर काज॥ जहैं असि बान बरच्छिन घात। परैं मनु भद्दव बिज्जुव पात॥७४॥ थेइत्थेइ नच्चक बंधन थूल। बनैं तँह कातर पत्त बबूल॥ मलंग तभैरव सो नितमत्त। छलंग लगि द्रुवलैं सिरछत्त॥७५॥ नचैं निकसे हिय पैंक दिनैंन। सरोज कि सोन सिलीमुख सैन॥ कढैं फटि बुक्कन दुक्क बिकास। मनो सुम किंसुक माधव मास॥७६॥ उड़ैं सिर अंबर पच्छिन पेलि। करैं जनु कालिय कंदुक केलि॥

॥उछ्छहिँढालनमैँकढिअंत।भुजंगटिपारनमैँ
किभ्रमंत॥७७॥रुरैँसिरअद्धफह्यो इहिंरा
रि।दयोजनुजुग्गिनिखप्परडारि॥सिखा
कटिसूरनकीफहरात।किधौँजयकेतुप्रभं
जनपात॥७८॥किरैँफटिटोपनतैँकख
ल।फटाबिनुलेतभुजंगकिफाल॥सुहाव
तकेगरिनक्कसमूल।फबैँइसमासमनोँति
लफूल॥७९॥लगैँअसिओठगरैँकटि
लाल।पकेजनुबिंबकिपुंजप्रबाल॥उडैँक
टिदंतनओघअखंड।खिरैँफटिहीरनके
जिमखंड॥ ८० ॥किरैँसहसुंनिमहारनु
कान।बनैँसहसुंनिसुसुन्निबिधान॥जहां
गरिहत्थिगिरैँअतिजुद्ध।किधौँफनपंचक
केअहिकुद्ध॥ ८१ ॥ तिरैँबहुस्वेदकसोनि
तताल।मनोँकिसरस्सतिकच्छपमाल॥

रुकैं बड्डुसूर ऋटक्कनभार। गिरैंजिमश्रासव
मत्तसमार॥ ८२॥ डरावतडाकिनि दंतदि
खाय। जरावत साकिनिलावतलाय॥ति
न्हैंभटनाटकवेनटतोर। गिनैंरसश्रद्भुतही
नहिं घोर॥ ८३॥ गिरैंककुंभञ्जतभीरुन
सीस। उठावत पूर्ब बिहावतईस॥ गिलैंति
नकोननगृद्धगिद्ध। बुरेइमजेकिमेरभय
सिद्ध॥ ८४॥ मिलेंदुवयागतिकेरनमांहिं
। जन्हैंजुरनौंतहँनांहिंमुनांहिं॥ लगीगर
बुंदियजेपुरलाज। करैंनहिंश्रग्घसरैंनहिं
काज॥ ८५॥ भयोबलसांवलकोबलभा
व। दयोश्रभमल्लपुरंदरदाव॥ चलीपबिकी
छबितैंश्रसिचंड। खुल्योसिरसांवलज्यौं
गिरिखंड॥ ८६॥ ष० प०॥ श्रभयसिंह
सुतश्रत्थप्रबलसुगतेसरुपूरन॥ दासी

औरसदुवहिचलेचाहतअरिचूरन।सार
सोपंकेसुभटबढ्ढि पकुँचेसुहाडबल॥भटसाँ
वलकेभंजिदव्विनाँनेडिलयोदल।इन्हह
नतपिक्खिकूरमअचलदोउनभुग्गनक्कर
दिय।उभपुत्रमरतअभमल्लअबलरिअच
लेससमीपलिय॥ ८७ ॥अचलसिंहत
रवारिपरियअभमल्लबाजिपर।ऊरतरबंध
हयझुकियइनकुऊारियइहिँअवसर।सूर
अचलकोसीसतरकितुट्यो असिउच्छ
ट॥लियउझेलिलगिलाहनच्चबकुमंडिम
हानट।अचलहिंबिदारिअभमल्लइम
सुतनबैरकढ्ढ्योसकलबिनुबाजिजाय
गज्योबलियबुद्धानीपुरपतिप्रबल॥८८
॥दो॰॥बीरबहादुरसिंहतब।बुद्धानी
पुरनाह॥अश्वरहितअभमल्लकोँ।इकल

तरन्धिगउच्छाह ॥ ८९ ॥ बेगहयहिंझपटा
यबलि। सम्मुहआरियसंगि॥ अभमल्लहिं
यहलगियइस। अगसिरपबिकिउमंगि॥
९० ॥ छ०प० ॥ लग्गतसंगिअभमल्ल छ
त्तिफुट्टतननछोहिउ। बिरचिबपाबरवसी
सडकिकूरमदलडोहिउ। छिनातुरगहठब
धितुमुलकोऊनहिंतक्कत॥ यहअचिज्ज
सहिसंगिबच्चोसम्मुहजयबक्कत। जिम
तुलादंडखंभहिंजुरतउरप्रबिद्धअभमल्ल
इम। कुछानिनगरईसहिंसबिधितुल्लिपट
क्कियअवनितिस ॥ ९१ ॥ दो० ॥ परचो
बहादुरसिंहइत। इतसुपरचोअभमल्ल॥
इमकूरमभटपंचअरि। हनिसुत्तोहरवल्ल॥
९२॥ पज्झटिका ॥ चक्कवानदेवसिंहहिं
बिचारि। सिरदारकुम्भनाथनसम्हारि॥

नाथा उत चालुक प्रेम नाम। किय आहव
नर उर सच्चिव काम ॥ ९३ ॥ संग्राम नाम
चालुक्य संग। जुरि करन सिंह कछवाह जंग
॥ परिहार परसु धर बल प्रचंड। दिय जोधचा
लुक हिंदुसह दंड ॥ ९४ ॥ गंज्जन अरि सां
वलदास गोर। उडि रूप सिंह चालुक्य ओ
र ॥ जोरावर नारव कुम्भ जत्थ। सुरतेस बीर
चालुक्य सत्थ ॥ ९५ ॥ बखतेस हड्डु असि
करत बाह। चलि उदय सिंह चालुक्य चाह
॥ जगभानु हड्डु अति चित्र जंग। सजि कूर
म पृथ्वीसिंह संग ॥ ९६ ॥ दो० ॥ इमबुंदि
य आमेर भट। रच्चित पर स्मर रारि ॥ जुट्टमि
ले जल दुहु जिम। प्रच्छन क्रम उपारि ॥ ९७ ॥
मुक्तादाम ॥ सज्यो इत देवसु नैंसिरदार।
परे सिर से ... चंड प्रहार ॥ ... सीआसि बान

बर छिन्न चोट। लगे कति लेत कबुत्तर लोट ॥ ९८ ॥ उलट्टिय सत्त समुद्रन आप। अकट्टिय कूरम कोयँ हँ पाप ॥ थरक्किय त्यों अतलादिक थान। लरक्किय सेसफ टाल चकान ॥ ९९ ॥ तरक्किय कच्छप पिट्ठि सत्रास। बनैं जनु अंड कटाह बिनास ॥ टिक्यो किरि तुंड हिं दंत्रु लि टारि। चिक्यो दिक कुंजर पुंज चिकारि ॥ १०० ॥ छुटैं सर छत्तिन छत्तिन छेकि। कढै बन तैं जिम कुक्कत केकि ॥ करक्काहिं कोन्चन कों असि काढि। फरक्काहिं बिज्जु कज्यों घन फाढि ॥ १०१ ॥ खरक्काहिं ढालन के कटि खंड। दरक्काहिं तालन से ध्वज दंड ॥ धरक्काहिं छोनिय छिन्न रत्त। बरक्काहिं बाकुल टोप बिघत्त ॥ १०२ ॥ झरक्काहिं इक्काहिं इक्क झटक्कोथ

रक्कहिंरुंडलरक्कहिंथक्कि॥गरक्कहिंखं
जरपंजरगोदि।जरक्कहिंजोरमहाभटमो
द्दि॥ १०३॥प्लवंगनप्रोथसनंकियस्वास
।भनंकियभेरिबलाहकभास॥रनंकिय
कोचनरोचनरुड।ऊनंकियअक्खरप
क्खरऊंड॥ १०४ ॥खनंकियहड्डुनहड्डु
नखग्ग।फनंकियफेनिलसेससमग्ग॥
छनंकियबानउडाननछूट।ठनंकियघंट
करीकटिकूट॥ १०५ ॥इतैंतहँदेवउतैं
सिरदार।हमल्लनभल्लनदेतप्रहार॥उभै
ऊपटावतसत्तिनसूर।उभैअधिबीरमहा
मगरूर॥ १०६ ॥दो॰॥महाचंडअरु
चंडमनु।दोऊभटजमदास॥असुदलगा
हकअंकुरे।रनमारीभवदास॥ १०७॥
छ॰प॰॥देवसिंहकेसुभटहनियसिर

दारसिंहखट। नारवकेरनरुप्पिदेवस
ह्यिय द्वादसभट। द्विगुनओरलरिवद्दुतहि
अक्कपहिलें तिन्हअहरि॥ अरुमंडलभि
रवायप्रथमपठयेसधर्मपरि। डाकिनि
पिसाचयह कूकदियसुसुनिसोरनारव
सुभट। दसमानउग्गअड्डेदुसह बक्करि
आनि ठट्टे विकट॥ १०८॥ दो०॥ सुभ
टअरु निजसंटिकैं। देवसिंहद्दुतदाय॥
नारवकेतेदसनिगलि। नारदलियनिय
राय॥ १०९॥ छ०प०॥ अबउन्नतत
मअसउपरदिन करआरोहत। चिगजं
मदियवच्छुमुदितसारथिसहमोहत।
देवसिंहसिरदारजयरुराठेयमिलेजहिं
॥ विरचतदुवदलबंधितुमुलथलरगजं
मतहँ। सत्तनरवलीनरवंधियअरुन। चु

क्किसकतिफनिपतिचकिय।ढुक्कनाम
अधिकसंजोगसुखतदिनचक्कचक्किन
लकिय॥ ११० ॥जिमद्रोणाचललेनउ
ड्यो अंजनिसुतलासक।अच्चवनजिम
अंभोधिबिदितआतापिबिनासक।चं
डीजिमचंडपरखानमुष्टिकसंकरखन॥
पन्नगपरकिसुपर्ण गरबिलमहिमकरया
सन।इसबैरिसल्लकुलउद्धरनलरिसमीप
नारवलियउ।मानोंकिभीमहृदपयमुरारि
दुस्सासनउप्परदियउ॥ १११ ॥भुजंगप्र
यातम्॥मिलेबन्हिकेभानुकेबंसमज्जी।दु
हूंफौजमैंओजतैंमोजदज्जी॥दुहूंतोरके
जोरतेंभुम्मिदब्बी।इतैंगोमुखाभेरिबज्जेअ
रब्बी॥११२॥भयोसेसरंकेसकेबेसभिन्नों
।किटीदंतुलीटारिकैंतुंडदिन्नों॥कढ्योव्या

लपातालन्नातानकोऊ। सस्यो बन्द्र बीम
न्छुद्रैलेयसोऊ ॥ ११३ ॥ हठीजूटतैंमेरु
केकूटहल्ले। चद्रंकोद्दसलोदकेन्नोतचल्ले
॥ भूजेलोकस्वर्गादिलोकेसभोंनैं। लोई
सकैंहीसकेलाभलौंनैं ॥ ११४ ॥ मथेरा
गतिंधूनकेलागमिन्ने। नचीजुग्गिनीता
लकेतालदिन्ने ॥ रिवैंहडुपैंसवृग्गबुलैंच्य
रवेंडे। मनोंफग्गमैंजच्छरीदंडमंडे ॥ ११५ ॥
उमेमंडलीधावलाजीउडावैं। उमेबारकी
मारमैंनांहिंन्नावैं ॥ इतैंलज्जबुंदीसकी
रोकिरिल्लै। उतैंन्यालज्जेसिंहकेजोरखि
ल्लै ॥ ११६ ॥ उभैजेठकेभानकेमानउस्सो।
परैंफौजकेन्नोजकेन्नंसुपूस्सो ॥ ब्रकीडा
किनीडक्कडैरैंबजाये। चलेभेदकेभेदमैंहैं
न्नघाये ॥ ११७ ॥ फिरैंफेकरोनंडफेरंडफ़ु

झे। भिरैंभूतकेसत्तमैंमत्तमुल्ले॥ भ्रमैंगिद्ध नी चिल्हनीमदभकवैं। रमैंपंकमैं कंकनौं संकरकैवैं॥ ११८॥ तपैंरंगबाजीनकेतं गतुद्दैं। छपैंभीरुबिद्रावकेंचावछुद्दैं॥ जल हीनदीलोंगिरैंकोउक्षुद्दैं। फिरैंरीसकैंई सकेसीसफुद्दैं॥ ११९॥ कटीकेपताका उडीअभ्रकद्दै। चमूमेघकेजोरज्यों मोरचद्दैं॥ फुकैंफंडबेतंडपैंबातरूपैं। किधौंसेल केस्रृंगरवञ्जूरिकंपैं॥ १२०॥ जल्यों संकुली सल्यलेबत्थबांहीं। निभ्योपानपैं ल्हौ सदाभीनगांहीं॥ गहैंकोदकेदारकेपार गोदैं। खुरौंबाजिकेधुम्मिकैंभुम्मिखोदैं॥ १२१॥ फिरैंकेगदामारिमैमत्थफोरैं। नि रैंकंअमत्तौनकोंरंकच्चोरैं॥ कटैंहत्थिहो दनकउद्दकच्छी। सुरैतारकीतग्ग[illegible]

रमच्छी ॥ १२२ ॥ किते कुप्पि होदेन में भूरकुद्दैं। मरोरैं निसादीन के कंठ मुद्दैं ॥ भिदें त्यों गजाजीवकेजीवभुल्लैं। बढे मोह मैं केप दथ्थरत्न झुल्लैं ॥ १२३ ॥ नदैं भंभ की कुहि भेरी नगारे। बढें के बिदारे हहाहाय हारे ॥ नहीं अग्गि जंगी चिनंगी चमंकी। सिकौं भार संसार की बुद्धि संकी ॥ १२४ ॥ तपैं प्रक्खरी बाजि दज्झंतर क्कैं। जपैं राम के घुम्मिरैं घुम्मि जक्कैं ॥ खिरैं हड्डु के तुंड के खंड खंडी। मनों बुद्धि औरन की मेघ मंडी ॥ १२५ ॥ चलैं रोपत्यों चाप जीवा चटक्कैं। नचैं खेचरी भूचरी प्रान नद्दैं ॥ बहैं बेग तैं तासकें हब्बद्दैं। किधों संख्यु की पंति मैं तोतरद्दैं ॥ १२६ ॥ झरैं सुंडि हत्थीन के तुंड तुट्टैं। कटैं सोथ बाजीन के कंठ कुट्टैं ॥ भ

ईरुधिरत्रैलोक्यकोंधुंधिभारी।छईस्वर्गकीसीमलौंभीमछारी॥१२७॥तकैंबीरकायासआयासतंद्रा।चढीरातिसोपेअमानष्टचंद्रा॥सजीदेवत्रैजामकेपुष्पसंझा।बनेंभानुकैंबिष्फुरीचंद्रबंझा॥सबेसंकुलीध्वांतसंग्रामसीमा।भचक्रीफिरीझारअंगारभीमा॥दिपैंह्वांकटारीउडीअभ्रदीसी।सुहीचंद्रकोंमोहिनीरेहिनीसी॥१२९॥जरैंगैनगिद्धीनकेनैंननक्की।सुहीम्रग्गकीतीनताराथरक्की।उडैंहीरजोकालिनीइक्कउग्गौं।अभाजासअंधारपैंमारपुग्गौं॥१३०॥कसैंगैनकेमल्लज्यांजोरकड्ढे।महाकारिआदित्यजेच्यारिचड्ढे॥छुट्योकाहिंसेसूलउड्डीनछोहैं।सुहीतीनतारीनतेंपु

घसोहैं ॥ १३१ ॥ छुटैंचक्कहै बक्कआया
स छानें । भद्दंसीभजो पंचतारेनभ्राजैं ॥
गहा कारिहूं पच्चअंगारउड्डैं । मघाजोमनों
हंकिआईहड्डैं ॥ १३२ ॥ जरंतेउडें का
लिकापालिकापे । तिपुब्बोत्तराफग्गुनी
रिच्छबेहे ॥ उडेंओजरैंहत्थलग्गीअं
गारी । भपंचालजोहस्तनक्षत्रभारी ॥
१३३ ॥ चढैंअब्भुन्नीबनैंइक्कचित्रा ।
अबालाचढैस्वातिइक्कैपवित्रा ॥ धकं
लीकबींअब्बतैंअब्भयावैं । बिसाखत्तु
चौरिच्छकारवाबनावैं ॥ १३४ ॥ उडें
त्यों तितेमानकेकेअंगारे । तिज्यों मित्र
भ नच्छत्रकेंधारितारे ॥ चलीकानतेंकुंड
लीओमचीनैं । सुनासीरकेरिच्छकेतं
भतीनैं ॥ १३५ ॥ इलीबक्कपैंकद्दसंरच्छ

लासेनभालेनभुल्ले॥१५०॥भज्योबैरिसल्लोतस्तेसआयो।जग्योदेवक्रब्यादद्जोजैतजायो॥नरूजातसैंगातयोंलीलिलिन्नों।नहींईसजज्योसुपैसीसदिन्नों॥१५१
॥दो॰॥गिरतगिरतनारवगजब।क्कुतअडिगसिरदार॥देवसिंहकियछकितदेख्यसिउपवीतउतार॥१५२॥अबसुदेवहनिनारवहिं।खायइक्कतसरखग्ग॥धक्योमबलहरवल्लधुर।फिरतमचावतफग्ग॥१५३
॥छ॰प॰॥अग्गैंतच्छकउरगबक्कुरिपयपुच्छबिद्दिय।अग्गैबरबारूदक्कोहिपावकलिरछिय।अग्गैंदिनकरअसहसुरिउत्तरमगलिद्दो॥अग्गैंछुधितमयदलद्विरिबिच्छियअलबिद्दो।अग्गैसुदेवअाहवअडरअरुनारवअप्रतिउफन्यो।जयसिं

हमानभंजकसजवबेताललनरंजकबन्यौं ॥
१५४ ॥ निःशाणी ॥ नारदकौंदेवानिगलि
अगौंउफनाया। इतनरउरनृपकेसचिव
चालुकचंपाया॥ प्रेमसिंहहूदैपलटदुलदा
वदिखाया। झल्लरिलोंफननंकतेतेगातर
काया ॥ १५५ ॥ सूरौंहूरौंसत्यहैगलबत्थ
मिलाया। खंडेरायखिलारहूरनफगारचा
या॥ पातगदाकेपुट्टलीफटकारफबाया।
घायहबक्कैरंगकेजलजंत्रचलाया॥ १५६॥
रवेहगरहीमेहलोंअबीरउडाया। फूलफले
जेफिप्फरेफबिफाकफुलाया॥ गोलीगोट
गुलालकेचकुओरचढाया। डेरौंडिंडिम
डाकिनीडुफडक्कबजाया ॥ १५७ ॥ गानि
काज्यौंचिनंजुग्गिनीथेईथरकाया। भैरौं
गायकभायकैंआलापउठाया ॥ नाथाउ

दोऊजुरिजमदाव घावरवगधावधुमाये॥
बहुबिमानअच्छरिनलुब्धिआयासलु
भाये।बीररुरउद्दबीभच्छबलिआतिअधि
कारसउप्पज्यो।नच्चतअनेकरुंडननिर
रिविआलचंद्रतद्दिनभज्यो॥ १५५ ॥करम
नञीवाकटतउनहिंबेतालउठावत।आंत
तंतआरोपबीनलयलीनबजावत।मनु
जनमुंडमृदंगढोलबज्जतहयठठ्ठर॥गो
मुरवगातिगजसुंडिमच्चतसंगीतमनोहर।
गावतपिसाचजुग्गिनिगहकिअहकिसु
सिरआनद्दलत।करितालखंडसीसक
किलकिहल्लीसकडाकिनिहलत॥१५६
॥दो०॥रनदोऊयाबिधिरच्चत।साजि
करनरुसंग्राम॥आजिनरुकेलैअडर
ताजिनवगातमाम॥ १५७ ॥कुप्पिहनि

यकूरमकरन। सोलंखीउरसंगि॥ प्रतिभट
परप्रतिभटयहक्क। इततैंबढियउसंगि॥
१५८॥ झारियखग्गचालुक झपटि चलह
यदपटिअचूक॥ कियसिरकूरमकरनको
। टोपसहितद्वैटूक॥ १५९॥ हनियाहिल
फल्लाकुकम। खिच्चियसेरखपाय॥ लिय
अबगासरसोरपति। घासीरामनिराय॥
१६०॥ कूरमघासीरामतब। सिरझारिय
समसेर॥ कहतखिनवहसिरकियउ। सि
वनिजमालसुमेर॥ १६१॥ समरपल्योसं
ग्रामकों। देवसिंहहुतदेखि॥ कूरमघा
सीरामकों। पूगोसम्मुहपेखि॥ १६२॥
देवसिंहकेउरदुसह। हुलकूरमखग्गदीन
॥ पैठोकटिनागोदपुनि। लरकिंपेसुलीती
न॥ १६३॥ इहिंअंतरदेवकुअतुल। त

ससिरझारियतेग ॥ हनिरसोरपतिकौंकु
लसि। बल्योबकुरिअतिबेग॥ १६४ ॥हरि
यसिंहतौंवरहनी। पुनिजद्धवपरताप॥कर
नसिंहछोरकुल। येअरिपिक्खिअमा
प॥ लिखितइन्हैंमानकुंलिखे। खगासि
चानरखरकोन ॥ १६५ ॥आयोदेवसुउ
प्परहि। मलयमाँहिंजिमपोन ॥ १६६ ॥
तबहिदेवकेखंधतकि। तौंवरझारियते
ग॥ तीननइनहनिखैतरु। बीरनमोहलबे
ग॥ १६७ ॥जैतसुवनकेइमजबर। तोंल
रियतरवारि॥ अरुरवटभटआमेरके। र
रदलयेरनमारि॥ १६८ ॥ अवसुदेवअ
तिलोहछकि। परयोमूरछितप्रान॥ हूरन
कौंहोंसछिरही। येंहुआयुहिबलवान॥
१६९ ॥सालमदलसागरमथ्यो। अभय

देवअतिलाग ॥ तोउन लद्धोजयरतन। यँ
हँबुंदीसअभाग ॥ १७० ॥ सठसालमइ
करवालबिच। दुस्योरहोभयदाव ॥ बुंदिय
दलसम्मुहबढे। आमेरेउमराव ॥ १७१ ॥
ष० प० ॥ परसुरामपरिहारजोधचालुक
अतिजुट्टिय। सांवलगोरसजोररूपचा
लुक्यअकुट्टिय। जोरावरनरुबंसलरि
यचालुक्यसुरतसह ॥ बलिहड्डाबरवलस
उदयचालुकलियअग्गह। जगमालुह
डुउड्डतजुरयो कूरमपृथ्वीसिंहसन। सजि
माँहिंमाँहिंदुवदलसुभटलग्गोइमरव
गानलरन ॥ १७२ ॥ नि: श्राणी ॥ दो
ऊओरदुबाहयोंअसिबाहअलक्कें। डैरों
डाहलडिंडिमीडक्कोंडफडक्कैं ॥ सेलभचक्क
क्कैंसंकुलेअतिघायउबक्कैं। सीसकपाली

संग्रहैंकालीसुकिलक्कैं॥ १७३ ॥खूब
बजाईखग्गनैंधाराधमच्चक्कैं।कुक्कैंको
डकराहिकैंकमठेसमच्चक्कैं॥ नीसासा
नासानुगीआसागजतक्कैं।भोगीभोगन
झिलिसक्कैंभुम्मीअकबक्कैं॥ १७४ ॥
च्चोहांदिसरोहांरुकेछोहांभटछक्कैं।ज
डुजंजीरनजरेबडुगजबक्कैं॥ ताजीतंगन
तोरिकैंफालोंफररक्कैं। मिहअडंबरमंडती
रजअंबरढक्कैं॥ १७५ ॥केसूरनघक्कै
कलहकेहूरनतक्कैं। गालनमादैंगिद्धनी
गिलिगृदगजक्कैं॥केधायकपायककटैं
सायकसकसक्कैं। खंधेखेल्हरिवल्हारके
भटसेलमचक्कैं॥ १७६ ॥ खंडच्चूटक्कैं
खुप्परीलगिलुत्थिलटक्कैं।सेलोंमारसु
मारहैअसवारउचक्कैं॥ थुकिहत्थीधीर

नथरैंजंजीरनजक्कैं। लक्कलक्कैं बरझीलग
तल्लिघायछक्कैं॥ १७७ ॥ रीसक्कैं
ग्गांगकेकैसीस पटक्कैं। केकंकट संकट कटैं
केतेगतरक्कैं॥ सिरफट्टैं घरउल्लटैं कढिनैं
नफक्कैं। हयहट्टैं पयउच्छटैं रथमग्गरुक्कैं
॥ १७८ ॥ लोहीवृठनिलालकीधाराधक
धक्कैं। केडाकिनिखप्परभरैं केसाकिनि
छक्कैं॥ चंडडपानीचंचलाचढिअब्बाच
मक्कैं। योंअंबरआयुधउड़ैं जिमनागलट
क्कैं॥ १७९ ॥ बीरोंबीरबरब्बरीतरवारि
तरक्कैं। दोहत्थनमारैं दपटिकेबत्थनक
क्कैं॥ केतेबक्कबककजौं केढोलढमक्कैं।
केजंबुकमंडैं कवलकेकंककिलक्कैं॥
१८० ॥ केबद्दीबुल्लैंबिरुदरसबीरउबक्कैं
सूरढरक्कैंसम्मुहीनमहूरथरक्कैं॥ तीरट

सूरों निकद्वसौं रन धीररट क्कौं ॥ केमातरमा
तर कहैं केकातर चक्कौं ॥ १८१ ॥ सोरस
लक्कौं संकुलीलपिघोरतुपक्कौं । केकंकट
टोपकेकेटोपमन्चक्कौं ॥ धायेबद्दलधूमके
छायेछितिढक्कौं । झंपिफरक्कोंकेजुकेपयक्क
पिलरक्कौं ॥ १८२ ॥ धायहबक्कोंकेहकैंह
त्थीनहलक्कौं । गीतअलापोंजुगिनीलेजा
तलक्कौं ॥ यामसुपेगंधारमैतीखेस्वर
तक्कौं । ज्योंनरत्यों हैवरउडें । ज्योंगेवरजक्कौं
१८३ ॥ धाताजगनिम्मानकेअभिमानअ
सक्कौं । पानिखुक्खिपतालतौंजिमथालथर
क्कौं ॥ अधेअधेहोकुयों वैडेभटवक्कौं । त्यों
त्योंपयपच्छेलगौं छत्रीधकधक्कौं ॥ १८४ ॥
समयघोरसंहारकोइहिंरीतिउवक्कौं । कौं
नपिताकोपुत्रयोंनातेसबथक्कौं ॥ उब्बीरबे

भैं इक्कसे मनभीत मुरक्कैं। जिम तिम प्यारे जीवकौं तजनौं न नतक्कैं॥ १८५॥ कलब ल्ली बानी कढैं भ्रमि भीरु भटक्कैं। पायन्अटक्कैं पगा डोलरि लुत्थिलटक्कैं॥ अंत उलज्जै आंत सो जिम फंद जरक्कैं। इक्क झटक्कै इक्क कौं परवैरत पटक्कैं॥ १८६॥ केते हैदनक्कं गुरौं खुरताल खनक्कैं। कंपि कलेजे कक्कढैं केठ्ठूरठक्कैं॥ पिट्टि मच्चक्कैं पसुली रीढक बरक्कैं। केते झूलक्क पान की बात लबक्कैं॥ १८७॥ फट्टैं मुंडन फांक ज्यौं दारिम दरर क्कैं। कंधक फाणी कर कटैं करको न्चकरक्कैं॥ कट्टै किरतनि तंबके जिम कच्छपजक्कैं। क टि जंघा सत्थी कटैं। हत्थी हनिहक्कैं॥ १८८ व्यंजन प्रेत बनात केगहकात गुटक्कैं। केते होण कटाह कैं पयलो हित पक्कैं॥ उंबी सिंबी

नाचनजुक्केंडडक्किनीलेडाचडचक्कें। ज्वाल
झरक्केंकेजरीगजढालढरक्कें॥ १९३॥ बीर
बक्कत्तरपारकेतीरतसक्कें। दंलदसक्केंहीर
लोंच्छिनगीक्रिच्चसक्कें॥ सत्तलोकउप्पर
रिक्केंथरसत्तथसक्कें। परिप्पट्टिदिक्पाल
केकप्पालकसक्कें॥ १९४॥ केतुक्केंगाफि
लकढेलागिनैनपलक्कें। सेसकरक्केंसंकु
लीफनपंतिझरक्कें॥ घायनसत्थेंस्वासके
रिफेनभभक्कें। छोहगरूरीछोरिकेसिर
फोरिसक्कें॥ १९५॥ सुल्लिमटक्केंकेंमिर
कतिरवानकटक्कें। सहिताफ्यमंजीर
नोंहिंजीरठसक्कें॥ बंदठहक्केंजीरमेंकेंत
बनहक्कें। पिट्टिकसक्केंकच्छपीथरघुग्गि
थसक्कें॥ १९६॥ बंदंतुलिवाराहकीब
कुबारबरक्कें। लेकेघायललकललकीस

टिनि छिसर छक्कें ॥ करज भूतों बल कढे धूतों
परिथ छक्कें । पल खर छक्कें जुगिनी करत्त छर छक्कें
॥ १९७ ॥ तक्क्यो जिन तैसो तुमुल ते फेरिन्
त छक्कें । तद्दिन पञ्चोलास पैं नर नासन थ छक्कें
॥ यों बुंदी आमेर की अति लाज अमट छक्कें ।
इड कूरम इल्लसों हर वल्लन ह छक्कें ॥ १९८ ॥
दो० ॥ इहिं अंतर अवसेस अब । दुवनाडी दिवसेस ॥ बुंदीभट छिज्जत बढ्यो ।
बिजय कूरमन बेस ॥ १९९ ॥ इतिश्री वंशभास्करे महाचंपूस्वरूपे दाक्षिणायनेनवमराशौ बुधसिंहचरित्रे त्रयस्त्रिंशो ३३
मयूख: ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀
॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀
दो० ॥ नृप के दरजा तजे निडर । अभयदेव जिम आय ॥ तिल तिल बुंदिय बीर ते । तु

द्वेअसिनअघाय॥ १॥ तिनमैंइकजैत
हतनय।देवालरनउदार॥ मिझ्झुनतउम्म
रक्किभरद।सुत्तोत्रिअसिसमार॥ २॥
छ॰प॰॥परयोअभयहरिप्रथमपारिपंच
हिराजाउत।पुनिनिजसंगहिपरिगसु
गतप्ररनदेउसुत।हडुदेवपुनिहनिय
नरुवसिरदारस्वतंत्री॥ रिवजिपुनिरव
डेरायमारिनरउरपतिमंत्री।हनिपुनिर
सोरपतिवहकुलसिंकूरमघासीरामकलि
।जद्दवककंबंधतोंवरजुरेबड्डेतेअरिलीन
बलि॥ ३॥ दो॰॥रवग्गनहमउमराव
रवट।मारिदेवबसिमोह॥ रिपुरुंडनमं
चकरसिक।लरिसुत्तोछकिलोह॥ ४॥
करनकुकमअरुसेरइन।तीननहनिब
लतेग॥नाथाउतसग्रामनर।बिनुसिरन

च्योहेग ॥ ५ ॥ वद्दलैं हूय हबप्पके । नाभी
उदल्यो नाँहिं ॥ सीस अरथ बुधसिंहकैं ।
देप्न्तो दिवमाँहिं ॥ ६ ॥ ष०प० ॥ परसु
राम परिहार पर्यो चालुक जोधहिं हनि । चा
लुकरूप हिंचकि विपर्यो सांवल गोरन म
नि । जोरावर नरुजात सुरत चालुक हनि सु
तो । उदयसिंह हनि परिग हड्डु बरवतेस न्हि
रुतो । जगभानु हड्डु जुझत हन्यो वूरम पृ
थ्वीसिंह कैं हं । लगि माँहिं माँहिं छिज्जे
लरत तोउन कोप समातें हं ॥ ७ ॥ दो०
॥ वुंदीपति को भट्ट बलि । नाम सुजं द्वौ राय
॥ ज्ञाति उड्त हनि पंच अरि । लुद्दयो असि
नग्न थाय ॥ ८ ॥ बारहसै इत्यादि बलि ।
दुर्द्दि सह अरि दुबाह ॥ भट हजार थायल
भये । निडर देव तिन नाह ॥ ९ ॥ छ०प०

कुसथल पंचोलास भयउ इम जंग भयंकर। जय
मअ्र द्विढिग चपल हंकि पहुंचत रबि हैवर।
बिरवम रारिकुव बन्धबुत्थि पत्थरि बटउ छट
॥ दुवघाँसोंलरविदाव रवेत रवोज न भेजे भट
। कुणपन कसानु चिति होम करि लाये डेरन
घायलन। जयपुर नरेस जयसिंह जय बुंदी
पति अ्रन जय बिमन॥ १० ॥ दो० ॥ त्रि
त्तो इम आहव बिकट। जित्तो सालम जोर
॥ सोधत अ्रब घायल सुभट। आगम निस
दुहुं ओर॥ ११॥ त्रि असि घायजे तहत
नय। देरव्यो घुम्मत देव॥ निज सिबिका
पठवाय नृप। अ्रान्यो वहढिग एव॥ १२॥
सुनत पराजय रवग सजि। रिवजि तँह भो
परववास॥ पास वान रघु दुहुं न पुनि। बिर
च्यो लरि दिव बास॥ १३॥ बरजत हूति

लातिल बढ्यो। कढ्हि अरिन अतिकोप।।
स्वामि हारि सहि ना हि सक्यो। भलभलनापि
त ओप।। १४ ।। कछु अनीक बुंदीसको।
अभय संग इम लग्गि।। यह रन करि अब
ढ्ढरि गिनि। पलट्यो ढोहन पग्गि।। १५।।
समय घोर परखे सुभट। दद्दे सब नय वोय
।। धायकु सेठ्ठ धायल्लन। सालमद्दल बि
च सोय।। १६ ।। रहे मनुज बुंदीस ढिग।
कछु सहस अनुकूल।। सालमद्दल बिच
न बसहँस। मुस्यो बढ्ढरि अघमूल।। १७।।
तहिँ अंतर अंधार अति। कुक्कु निस आ
सनलीन।। बुंदीपति मतिमंद बुध। नींति
रीतिलवलीन।। १८ ।। ष० प० ।। जिहिँ बुं
दिय हित देवसिंह सैन्न नरन मारिय। जि
हिँ बुंदिय हित समरसिंह बरदुर्ग बिथारि

य। जिहिँहितसूरजमल्लरतनरानाँखिजि खद्धो॥ जिहिँहितभोजसजेतलरिरुसुरति जयलद्धो। जिहिँहितजयीससमरसता साहजिहाँकाँसीसदिय। बुधधवहिँ बोरि ज्ञारनविरवयतद्दिनवहबुंदियतकिय॥ १९॥ दो॰॥ बुंदीपतिबहुबिधिबिगारि। ऐसोभयउअसत्त॥ अचविनुहलजिम अंधकी। दरसीजायनबत्त॥ २०॥ कूरम दलइतबिजयकरि। सालमसहितसहा स॥ अमलकिन्नआंमेरको। कुसथलपं चोलास॥ २१॥ इमकुसथलआनिरुद्ध सुव। पायअनादरउच्च॥ बिलनारन्हिबि तायकैं। कोटाकाँकियकुच्च॥ २२॥ संभ रदेवसुजेतसुव। आसिन्नयघायलअंग॥ बुंदीजानिसचलीयछिति। सिविकाचहि

क्कवसंग ॥ २३ ॥ ष० प० ॥ चढि चल्लिय च क्कवान छोरि बुंदिय छत्राधम । कोटा निबस छमंगरोल किय तंहं मुकाम क्रम । हीदुव रानिय संग पुरसु कोटा पठवाई ॥ पठयो सालक पास कुमर निजरु यह कहाई । तुम देव सिंहजि हिं तिहिं तरह याहि जिवावक्कुछ क्कम्मव । जयसिंहजोर पिक्खवक्कुजबर गुमर तोर मंडल गजब ॥ २४ ॥ दो० ॥ सेवासु हरी ग्रामको । गुज्जर गेदा गोत ॥ जिहिं निज धावर धाइ जुत । पलनों लिय धरि पोत ॥ २५ ॥ चुंडाउत सीसोद भट । भारत नाम सुभाय ॥ कढत छन्न नृपकुमर कें । सो दिय संग सहाय ॥ २६ ॥ पालकुल कम्म ॥ धाव रभारत सिंह पिधाये । चम्मलि उत्तारि सजव चलाये ॥ डब्भिय नाम बिन्दु

मतिश्रामह । आयउ हाँ बिरञ्चिय विश्रामह
॥ २७ ॥ जँहँ दलसिंह हड्डु भोजाउत । जल
नन रक्खे गोह निनय जुत ॥ कुमर उमेद रत्ति
तँहँ कढ्ढी । प्रात लगिय बेधम मग पढ्ढी ॥ २८
॥ गिरिवर घंटिय लंधि बेगगति । पहुंच्यो
बालनेर बेधम प्रति ॥ देवसिंह मातुल सु
हड्डुत । जाय बधाय लयो उच्छवजुत ॥
२९ ॥ इत सालम लगि पिछ्छि उडायउ ।
मंगरोल बुद्ध हिं पहुंचायउ ॥ पच्छो मुरि
आयउ बुंदिय प्रति । अमल स्वकीय किय
उजय उन्नति ॥ ३० ॥ दिन्नो मुलक दले
लहुहाई । सठ कों नृपता अधिक सुहाइ
॥ छत्रमहल बिच्चरहि छत्राधम । कियउ
राजधानी भुगन क्रम ॥ ३१ ॥ छुल्लि गुन
हइम अैस भुलायो । मन कुं राजपी ढ्ढिनतैं

पायो ॥ कुच्छतकर दासिनफक्कोरना क

नक फतुलकनकहिंडोरन ॥ ३२ ॥ मंगरो

ललैं इतअतिमुद्दह । बिनुसुधिचल्यो

करभजिमद्दह ॥ स्यंदनसतबारन

बत्तीसह । बहलदलडेरा इकबीसह ॥ ३३ ॥

पुनिसतसत्तरिसकटप्रमानह । रुचिर

पालकीतरवतरवानह ॥ इत्यादिकब

हुरवतसुहाये । रवरचहीनतत्थाहिर

हवाये ॥ ३४ ॥ अप्पचल्योजितमुह

तितऐसैं । धैनबिचारकोनगृहपैसैं ॥

गहनलंघितारजागिरिथंटिय । भूरुन

भंजिबलहिंजरदिटिय ॥ ३५ ॥ राजाइ

मफुंच्योअमादरढ । ग्रामग्रेमपुरहूंमधु

करगढ ॥ कछुदिनतत्थरह्योकउलेस

ह । देरवनचहोरानकोदेसह ॥ ३६ ॥

दो॰ ॥ असिलजेठतेरसिदिवससिद्धि योगरबिवार ॥ मधुकरगढलैबुद्धनृप। पुरिचल्योमेवार ॥ ३७ ॥ कुसलसिंह भटरानको। भैंसरोरगढधाम ॥ तत्थवंभ नीसरिततट। किन्नेजायमुकाम ॥ ३८ ॥ पादाकुलकम् ॥ सगताउतभट भैंसरो रपति। बकुप्रजकुसलसिंहरचिबिनति ॥ सम्मुहआयनजारिहय किन्नौं। अरुति हिंनृपकुबाजिइकदिन्नौं ॥ ३९ ॥ रत्ति इक्क पिच्छें बेधमरहि। चाकुवानगोरुद यनैरचहि ॥ आयरानसंग्राममत्तिसुह। मोहिल्लानगरीलगसम्मुह ॥ ४० ॥ मिल तहिंमुदबुंदीसबढायो। चरनरानप्रतिह त्थचलायो ॥ रानसुहत्थपकरिअनुरत्तो। मुसकिलायक्षत्तियमयमत्तो ॥ ४१ ॥

इहिं बिधि प्रकट कियो अति अद्दर। अरु बिसना कूरम हित अंतर ॥ प्रबिस्यो पुनि कुहि लै पत्तन। महिमानी पठई संको चन ॥ ४२ ॥ इति श्री वंशभास्करे महाचंपूस्वरूपे दक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहचरित्रे चतुस्त्रिंशो ३४ मयूखः ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

दो० ॥ इत कूरम माल व अवनि। सुनि कुसथल संग्राम ॥ कदन मन्नि निज भटन को। कुप्पि फिस्यो जय काम ॥ १ ॥ पादाकुलकम् ॥ मनहुं बंध बिच्छिय चट का यो। जानि प्रलय भूतेस जगायो ॥ कुञ्ज कलह जयसिंह मानि किय। कोटा सीस मुकाम आनि किय ॥ २ ॥ होदलेलसा

गहि सालमसुत। चढ्यो राज जिहिं स्वामिय
रसच्युत॥ वाजुतनू कूरमउ फनाये। छम
हुतसरित कुसकतट आये॥ ३॥ कुस
कहि गयो मिलन कोटापति। बिरचिय
समय जानि आति बिनति॥ हयगज ब
सन नजरि करि हड्ड। तजि नृपथरम रवु
च्यो अघ रवड्ड॥ ४॥ पज्झटिका॥
पुनि तिहिं मुकाम कूरम प्रवीन। कमजुत
दलेल अभिषेक कीन॥ कोटेस हत्थ प
हिलें कराय। बलि तिलक हत्थ अपन
बिधाय॥ ५॥ करि बहुरि आप करति
लक कुम्भ। सिरधरिय छत्र नगलोलित
लुम्भ॥ पुनि ढोरिय चामर आप्पपानि।
बुंदीस राव राजा बखानि॥ ६॥ अग्
कोटापति सौं कहि अठेल। बुंदीस गिनड

अबयहद्दलेल ॥जोआवहिंबुंदियसुभ
टखुट्टि।तोताहिनरकवकुलेकुलुट्टि॥
७॥इयअट्ठसमइकं१७८७अवसा
न।बनिबिसदजेठतेरसिबिधान॥इम
करिदलेलअभिसेकअंक।समयानुकू
लयकूरमनिसंक॥ ८ ॥निजकृष्णाकु
मरितनयासुनाम।लांगलिफिलायता
केललाम॥मन्निसुदलेलजामातस्वी
य।गजइकअरोहिदोऊगरीय॥ ९ ॥
कोटेसपटालयकियप्रयान।थिरकुंवर
थइक्कहितरखतथान॥सिरुपावबाजि
कुंवदुवनवीन।कोटेसदुकुलकीनजोरि
कीन॥ १० ॥तदनंतरकूरमतोरतिक्ख
।कोटेसहिंकोदा[illegible]उसिक्ख॥उज्जैन
अनुगअवकुंअरेस।दैसिक्खरूपठ

येस्वस्वदेस्स ॥ ११ ॥ कूरमदलेलजुतबि
रचिकुच्छ। आयउसुन कुसथलयुमरउञ्छ ॥
संग्रामभूमितहँ लरिबिसमस्त। आलीय
भटनबंटियअनरस्त ॥ १२ ॥ दो॰ ॥ ह
ठुअभयपहिलैं हरिय। सारसोपपतिस्वा
स ॥ वाकेसुतरतनहिँदियउ। पत्तनपं
चोलास ॥ १३ ॥ अजितसिंहकोजुवत
नय। ईसरदापुरईस ॥ कुसथलपुरताकों
दयो। हठि जयसिंहमहीस ॥ १४ ॥ सां
वलदाससुहाडपति। सुतसोभागसना
म ॥ वाहिपलोधीपुरदियउ। कूरमनृपज
यकाम ॥ १५ ॥ नाहनगरनानेडिकों।
आहवमृतअचलेस ॥ सुवनतास
हरिसिंहकों वसुग्रामकदियलेस ॥ १६ ॥
सुवनबहादुरसिंहकों। पुरकुन्नानीप

॥ दसग्रामकतिहिं हितदये। ढुंढाहरगि
निढाल॥ १७ ॥ घासीरामरसोरपति
। पुनिहिंग्रामकपंच॥ दियभूपतिजयसिं
हहुत। पकुरन्हिनीतिप्रपंच॥ १८ ॥ अ
थयसिंहआत्मजअथम। नाथूरामहना
म॥ पलट्योसठरनकेप्रथम। सालसमों
कारिसाम॥ १९ ॥ यातैंनहिंवलवनलि
खउ। मिल्योजानिइनमाँहिं॥ नाथूरा
महिंमन्त्रिनिज। किस्वास्योगहिबाँहिं॥
२०॥ देवसिंहकीमेदिनी। इमबूंदीक
छवाह॥ देवहुगिनिबुद्धहिंअथन। को
टागयउ सचाह॥ २१ ॥ पुनितजिपंचो
लासकों। कियजयसिंहप्रयान॥ प्रवि
स्योजैपुरनिजनयर। उद्धतविजयअमा
न॥ २२ ॥ सोरठा ॥ स्वीयजननिकेस

त्थ। उदयनैर हीजो अबहि॥ तनया अहि
य तत्थ। कारन व्याह दलेल के॥ २३॥दो॰
॥सुत समेत जयसिंह सौं। रानाउ तिसुरि
साय॥ बररव छिंयासी माघबिन्च। पत्तीपी
हरजाय॥ २४॥ हीतब लैं तत्थहि सुन्यो
। अब तनया आह्वान॥ सालम सुत के
व्याह कौं। यातैं पठई सान॥ २५॥ कूर
म पुनि कहि मुक्कलिय। नहियह सालम
नंद॥ है अब यह बुंदीस सुव। अधिपद
लेल अमद॥ २६॥ हुकम साह लिख
वाय हम। दियइहिं राज्य दिवाय॥ जि
र कवन हम रान जुत। सब कछवाह सहा
य॥ २७॥ यातैं कछु न विचार अब। इ
ललाट नृप अंक॥ तनया देहु पठाय तुम
। सोक विहाय निसंक॥ २८॥ नितरा

नीप्रतिपत्रइम। पठयोकूरमपाल॥ पैकु
मरिकधुरोगमग। आयसकीनहिहाल॥
२९ ॥ इतिश्रीवंशभास्करेमहाचंपूरस्व
पेदक्षिणायने नवमराशौ बुधसिंहचरि
त्रे पंचत्रिंशो ३५ मयूखः ॥ छ ॥
॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥
॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥
दो० ॥ इतनृपप्रविस्योउदयपुर। स्वसुर
हवेलीपास॥ औंघेदुज्जनकेमहल। उ
तस्योतत्थउदास॥ १ ॥ मोदकफलभा
जनअमित। पुनिरुप्पयसतपंच॥ माहि
मानीइमसुक्कलिय। रानबिरच्चिहितसंच
॥ २ ॥ बिपतिअतीवबिचारिकैं। इक्क
तकारिउमराव॥ कहियरानबुधसिंहकैं
।लुतधरआवनदाव॥ ३ ॥ पंदनकहि

तबरानप्रति। बिधिकोटेसबुलाय॥
अंबरच्छकुनृपतीनमिलि। पत्रुभीलैलउ
पाय॥ ४ ॥ पादाकुलकम्॥ पत्रुबिचा
रिइमरानमंत्रपन। कोटापतिबुल्लियइ
हिंकारन॥ पुनिगिनिबुद्धहिंजनकजा
सिपति। अंतहपुरबुल्लियमंडियमति
॥ ५ ॥ रीतिसुसुनिकूरमपतिरानी। रा
नसहोदरजामिरिसानी॥ जनकजामि
ममभुवाजियतनन। अंतहपुरबुल्लहु
जिहिंकारन॥ ६ ॥ बिनुकारनबुल्लहु
ननबुद्धहिं। कछुमन्नहुकूरमपतिक्रुद्धहिं
॥ जामिबचनसुनिरानसोचिजिय। बुद्ध
हिंनिजअवरोधनबुल्लिय॥ ७ ॥ इहिं
अवरोधगमनअवरोधहु। सुनिहुगमन
न्हिंयो। बिनसोधहु॥ बिशुसिंहपुरबं

सवहाला। भगिनीतास गुनरूपसमाला
॥नामगुमानकुमरि सुभलच्छन। बकुरिसी
लगुन बिनय बिचच्छन॥ बच्छर दुवके
पुब्ब बिधाई। संभरपति सों तास सगाई॥
॥ ९ ॥ संपति बिनपुनि ब्याह सुहायो।
पन दूत कुल अगा पठायो॥ मांगिय सिक्ख
रानप्रति सुद्धह। बरजिय तदपि रान नृप
क्रुद्धह॥ १० ॥ पकुमी निजहित मंत्र प्र
चारन। कोटापति बुल्लिय तुम कारन॥
अरुहम भद्र कु घरनतजि आये। अप्पन
हितहम मंत्र उपाये॥ ११ ॥ तुमकों रुचत
आन वसर उपनय। मन हुतो इक बंचन नी
तिमय॥ ममसा लियपानिग्रह मंडकु।
बंधुनकें और कुतनया बकु॥ १२ ॥ जोसि
खरुचाहिंहें ब्याहित तिहिं अत्थहि। सजकु

परान ॥ १७ ॥ सावन असित सत्त बसु
संबत । सद्धि लगन एकादसि संगत ॥ ब्या
हिय विष्णुसिंह भगिनी बत । राउल अज
बसुतार मनी रत ॥ १८ ॥ बहुविधि राउ
ल हरख बधाये । स्वागत सबन अपुब्ब
सधाये । रत्नि बरात भ्रात्थिल लगि राखि
य । अरुपुनि हय गय धन अभिलाखिय ॥
१९ ॥ धरियबनितत्थ हि अधानह । य
यातें तहँ राखिय चहुवानह ॥ अभय
सिंह रुपयरनेरस हूत । चहि दिल्लीस नि
देस अनन्दित ॥ २० ॥ सूबापति गुज्जर
धरस्वामी । ग्रामसहस सत्तरि अनुगामी
॥ प्रबल अहम्मदाबाद नगर पति । सरबु
लंद जित्तन करि सम्माति ॥ २१ ॥ सकसु
नि बसु अत्थ हि १७८७ मासक्क सा कुत

हंकियगुज्जरातपक्कमिदिस॥ बिदित बिजयदसमीसनिबासर। लिंदिअहम्मदा दादलयोबर॥ २२ ॥ जंगकछुकतोपनर चिजाहिर। बुल्योबक्कुरिडाकदेबाहिर॥ लरिबेआवलरढ्ढारलरनहित। चहिरन सबहंकियप्रसन्नचित॥ २३॥ ऊदाउत चंपाउतउड्डल। मेरतियाकुंपाउतदृढ्ढम त॥ जैताउतपुनिजैतमालउत। बल्ला उतकरनोतजोरजुत। ॥ २४ ॥ पालाउत रुकलाउतप्रतिभट। बढिधूहडरालाउत रनबट॥ भद्दाउतरुमहेचेबिनुभय। रूपा उतरुसताउतअतिरय॥ २५ ॥ गोगाउ तरुकरमसीउतजंहं। देवराजरनधीरबं सितंहं॥ चाहडदेवउतरुपोकरनां। दा उतक्रमंडिदृढमरनां॥ २६ ॥ जोधेरतन

पराव ॥ १७ ॥ सावन असित सत्तबसु
संवत । सद्दिलगन एकादसि संगत ॥ ब्या
हिय छिप्पु सिंह भगिनी बत । राउल अज
बसुतार मनीरत ॥ १८ ॥ बहुबिधि राउ
ल हरख बधाये । स्वागत सबन अपुब्ब
सुधाये ॥ सुन्दिवरात आख्विल लगि राखि
य । अरु पुनि हज्जा बहुलन अक्खिय ॥
१९ ॥ धरिय करनि तत्थ हि आधान हु ।
याते तं हैं राखिय च्चहुवान हु ॥ अभय
सिंह समयर नरेस हुत । चहि दिल्लीस नि
देस करन्नित ॥ २० ॥ सूबापति गुज्जर
धर स्वामी । ग्रामसहँस सत्तरि अनुगामी
॥ खंडल अभ्रमदाबादनगर पति । सरबु
लंदखिलन करि सम्मति ॥ २१ ॥ सक्कसु
नि बसु अत्थ छिति १७८७ मास इस क्रुत

हंकियगुजरालपङ्कुमिदिस॥ बिदित
बिजयदसमीसनिबासर। लिंहिअहम्मदा
बादलयोबर॥ २२ ॥जंगकछुकतेपनर
चिंजाहिर। कुल्योबङ्कुरिडाकदेबाहिर॥
लखिअावतरट्ठोरलरनहित। चाहिरन.
सबहंकियप्रसन्नचित॥ २३॥ऊदाउत
चंपाउतउद्धत। मेरांतियाकुंपाउतदृढम
त॥ जैताउतपुनिजैतमालउत। बल्ला
उतकरनोतजोरजुत। ॥ २४ ॥ पाताउत
रुकलाउतप्रतिभट। बढिधूहडरालाउत
रनबट॥ भद्दाउतरुमहेचेबिनुभय। रूपा
उतरुसताउतप्रतिरय॥ २५ ॥ गोगाउ
तरुकरमसीउतजंहं। देवराजरनधीरबं
सितंहं॥ चाहडदेवउतरुपोकरऔ। संदा
उतक्रमंडिदृढमरनौं॥ २६ ॥ जोधेरतन

केसरीकुलभव। धंधलअरु सिंधलअरि
बनदव॥ भूपतिउतरतनोत बडेभर। मंड
नउतभुंडाउतअसिकर॥ २७ ॥बरसिं
होतनराउतअतिबल। सोहडरायपा
लउतभटमल॥रनमल्लोतमंडलेरनरत
। मुदितमारमल्लोतलरनमत॥ २८ ॥ब
द्धरिचंद्रसेनोतमहाबल। इत्यादिकसंजु
रिचितउज्जल॥नृपअभमल्लहिंहत्यादि
रवावत। लगेलरनमुच्छनकरलावत॥
२९॥सरबुलंदसूरजकरसकिवय। निड
रमिच्छउतहितेहयनकिवय॥ओकुलभो
गसहंसअकुलानें। डगमगिपन्नगकूंदडु
लानें॥ ३०॥ घनेघुमड्डलगाइचिजोरना
रारिमचिगमिच्छनरक्षोरन॥ किलकप्रे
तडाकिनिगनकिन्नी। लास्यध्वनिअट

सद्विनलिनी ॥ ३१ ॥ डिगिबोचिनसिंधुन
जलडोह्यो। अरुनअक्षसमकनअवरोह्यो॥
फटिकंकटनिकसतअपुकैसें। जिमगगन
कंचुकतजिजैसें॥ ३२ ॥ कटिकटिकुंभति
रतसोनितकिम। जलअगाधघटउडुप
पृथुलजिम॥ अलीइसामहोतउतआ
रव। इतहरिअच्युतभूतनाथभव॥ ३३॥
भूतकिलकिककुहयभरकावत। गोकिचो
रलरिखग्वालचलावत॥ ककुंभटचरनर
कावनउरमत। मूढन्हिसमोगनजिमझूम
त॥ ३४ ॥ फहितकेतुइमनफहरावत।
रंभातरुकिअहिलहरावत॥ गुटिकाग
मतरीतियहरकिवय। मनहुंकुइसरया
सियमझिवय॥ ३५ ॥ निकसतगोदक
पालहितुइम। मंजुलदलमधुजालहितु

जिम ॥ बकु आयुध आयुधपर बज्जत । लखि रक्खरि देवालय लज्जत ॥ ३६ ॥ इम रनकरि रद्दोरबढे अति । म्लिच्छन हनत धन्वपति सप्पति ॥ सरबुलंद लखि प्रबल भज्यो सठ । हास्यो तजि गुजरात सहित सठ ॥ ३७ ॥ बलि दिल्लीपति अमल बढायो । इम मरु नृप जित्ति रन आयो ॥ मुदित भयो सुनि साह मुकुम्माद । सरबुलंद दक्खिन गय दुम्माद ॥ ३८ ॥ बुंदियपति इत स्वसुरगेह रहि । दुलहनि तत्थ्य दिरक्खिगमन चहि ॥ कत्तियमास कुच्च अप्पुन किय । दायज बसु बकु बिधि राउल दिय ॥ ३९ ॥ दंति य गड्डू राव सु दत्तह । मास रहत बारह मयमत्तह ॥ नृपके इभ पालन वह नायो । अप्रैचत निगड जोर उक्कनायो ॥ ४० ॥ यह

सुनिरानलयो वह हत्थी। सहंसमेजिरुप्प
यंन्दरसत्थी॥इतकोटेसउदेपुरआयउ।अ
धिपरानसहमंत्रउपायउ॥ ४१॥मथाराम
सिप्राधपतत्थहि।बुल्योकुबचक्कुनयअ
थसत्थहि॥कहारानपुच्छतकोटेसहिं।
दब्योइनपहिलैंनृपदेसहिं॥ ४२ ॥इ
नकीलरिवअवरनमनचल्यो।तबहुइ
ननसुच्छकरघल्यो॥कगरलिरिदजय
सिंहकथितकिय।इनहिंपुच्छिलेहोकि
मबुंदिय॥ ४३ ॥यहसुनिमहारावथकि
उठ्यो।रानकु दिअअधमपररुठ्यो॥इम
नृपकाजबिगारिबिप्रयहँ।पठ्योम
गहिमध्यसमरपहँ॥ ४४॥इमपुनिबु
द्धउदेपुरआयो।बिपतिजोरसबगुमर
बिहायो।सम्मुहआयरानहितसज्जिय

पिनदारखें ॥ अकिलियपुनि बुंदियजलच्छे
हैं। तुमहिं भूपजावननवदेहैं॥ २ ॥ अब
निदेन कूरमप्रतिअकरवहिं। रानांपनकोरा
छनरकरवहिं ॥ जबस्वाधीनराज्यनिजओद
हिं। सुरवसहँ निंदहमकुलबसोवहिं॥ ३ ॥
तोलों रवरचरखकीयमानतत। छिनप्रतिद
स्सपंचसतपहुंचत ॥ कहिनृपकूम्मरसुश
मदिकैहो। लगि हमरेहितबुंदियलैहो॥
४॥ अनयरावरेतैं कूरमपलि। समप्रभुवजोदे
हैंनटेकमति॥ तोरनकरिलैहो कितलछि
न। प्रीतितथाकरिहोपरपाछिवन॥ ५॥
सुनियहरानसुजाननीतिसम। कहियअ
जदिल्लीकरकूरम ॥ अकबरपुरअजमेर
अवंतिय। सूबातीनअधीनसाहकिय
॥ ६ ॥ मित्रखानदोराजिहिंमन्नत। सिन।

नीजुजवनपतिसम्मत।। साहकुजासक
थितसिरधारत। बलिअवरनजिहिंसम
नबिन्धारत।। ७ ।। सुनिजिनबानिबनि
रसुरसालप्रिय। अकबरतेंअबलोंधन
संचिय।। अरुबहुमुलकअप्पननऐ
सो। जासमचिवराजामल्लजैसो।। ८।।
रायरूपारामकुवकीलरत। जासकथित
जवनेसनलुप्पत।। गृहजाकेदिल्लियउ
मीराल। पहुँचतकरजोरतकिंकरपन।।
।।९।। जिनकोअरजसाहप्रतिजंपत।
वसुअधिकारमिलततिनकोंवत।। द्वैद्वै
सतसिविकाजिहिंद्वारह। बढिपंतिनढ
किजातबजारह ।। १० ।। बैठकजाहिरव
सखिलबनिय। रमतसाहसतरंजकुलासि
हिय।। जिनकेघरऐसेवकीलजन। थिरन

उथप्पिस्वामिजयच्छप्पन॥ ११ ॥जंगबिर
च्चितिनतैंकोजित्तहिं। बिनुहितकाहि
बिगारहिबित्तहिं॥इहिंकारनतिनतैंरन
उच्चितन। अवरउपायरच्चहिंबहुअप्पन
॥ १२ ॥भेदउपायकेहुनहिंसंभव। लग्गैं
नहिंबिनुसमयजासलव॥ यातैंसामदा
नअनुसरिहैं। क्रूरमसैंतुमसौंहितकरि
हैं॥ १३ ॥ बिनुनयसमयहोतनहिंचाही
। समरटेकनाहककतुमसाही॥ निजहठजो
ममराज्यनसैहो। असतुमहुकोफलतब
लैहो॥ १४ ॥ सज्झकहतनृपमुक्खरिसायो
। चलनहुकमसत्थहिंपहुंचायो॥ हैसब
अनुगमूढहथजोरे। नचलहुइमकाहू
ननिहोरे॥ १५ ॥सकबिक्रमअष्टदसब
सुसत्रह १७८८ । बाहुलमासकृष्णक

रिबिग्रह ॥ अनरिविचल्यो संभर अज्ञानी
। करजतरह्योरानहितबानी ॥ १६ ॥ जद
पिहुवोनरानतउसज्जन । गजभूरवनसि
रुपावबाजिगन ॥ पठयेमितदसतूरबुद्ध
अलि । इतआकिवयहमकरजदारअलि ॥
१७ ॥ इनकेदम्मपठावकुयातैं । जनिकल
देहमकरजबियातैं ॥ तिनकीतीससहंस
मुद्रातब । जानिक्षिपत्तिरानपठईजब ॥
१८ ॥ करजभारितिनकरिकउलसह । बु
द्धदलियपसुमतिनरबेसह ॥ द्रुतबाकुलमे
चकचउत्थिदिन । आयउचलिश्रीद्वार
कहुइन ॥ १९ ॥ इकरतदम्मभेटहरिअप्पि
य । थांवलगामसुकामसुथप्पिय ॥ बसित
त्तहुवमासबितायो । लंघनपुनिचालीस
लगाये ॥ २० ॥ अधिकअफीमबढ्योनृ

पच्छगें। पैसेत्रिमित नित्य हितपगें। पुनि
तिम मद्य अवद्य कुपीवहिं। जड बिनु भूख
आयु बलजीवहिं॥ २१॥ असनलेतसन्त
मअट्टम दिन। तुच्छबकुत सोपैद पचैतिन
॥इहिंबिधिअन्नअरुचिपरआये। लंघन
तब चालीस लगाये॥ २२॥ तबहि अफीम
मद्य कुव त्यागे। लैपुनि मत्थ्यलोमसुद लागे॥
बिरचिकुच्च बहग्राम बिहाये। लुहनरानों
मुलक लगाये॥ २३॥ सठनृपनहिंपरि
करसमुझायो। बहुबहु लूट प्रपंच बनायो॥
रानइसुनि गिनि सुद्धरिसानों। बुद्धरुद्ध
लनहत्थ लिकानों॥ २४॥ दुवमिलानन
कुंपासणिकिन्ने। दुवनयपुरगंधेरकुदिन्ने
पथइहिंरुक्कतचलतप्रमन्तो। पुरबेघम
ससुरालयपत्तो॥ २५॥ बहुसुबसुलनाह

कलितसंवत १७८८। गउरचउत्थिस
हरणमासगत ॥ भंजुगिन्योनजुद्धकरिमर
नौं। ससुरअन्नोदनलियसरनौं ॥ २६ ॥
परदुखप्रदयहृदयदेवकुपुनि। सालक
निजबुद्धहिं आवतसुनि ॥ अभिमुखजा
यमिलालयआनें। बिनयप्रीतिकरजोरि
बुलानें ॥ २७ ॥ बुद्धमुकल्यमहलनब
सवायो। अपलालबारियकढिआये॥
रावतसुराजबागरिबलराकिवय। अब
कैसोंनिमित्तहिं कुनअकिवय ॥ २८ ॥ बुं
दियलोककिन्नार बिहीनौं। कमलुद्दन
तस्यहिं अतिकीनौं ॥ रावतदेवतिनहिं
जनाये। मैनरहे तब्बग्रहनपठाये ॥ २९
॥ रावतबुद्धकुसुनिसो किनर किवय। उपा
लंभदेवहिं अतिअकिवय ॥ धरनिबिप

त्तिलोकममधारत। बलिअत्थहिआ
धारबिचारत ॥ ३० ॥ लुहनखानदेकु
तुमसालक। क्योंमोरनपकरातकपाल
क ॥ जोसुनिदेवतबद्धकरजोरे। माफक
रकुओयुनकहिमोरे ॥ ३१ ॥ अतिस
हनलदेवअबलीनों। बुद्धहितुबनिआ
धिकअधीनों ॥ पंचहजारिग्रामदियपं
चक। रुप्पयअट्ठनित्यसुनिसंचक ॥ ३२
॥ निबहनकोंयहदेवनिवेदिय। जडसंभर
तोउनथप्पतजिय ॥ करजकुकोरिरक्खे
नहिकोऊ। समुझौतुच्छमूढनृपसोऊ ॥
३३ ॥ अग्गत्रिलक्खहजारअमतरह। उग
तेदम्मकरजसहिभारह ॥ बसुसतनित्य
दयेइकबच्छर। तीससहँसहयहितउवार
तर ॥ ३४ ॥ बिप्रदेवजिहिंकरजबिलायो

तो ऊ अब गृह नजरि बनायो ॥ हो सब हे रुल थल रूप हुड्डा । बिरचिय तदपि देव हित बड्डा ॥ ३५ ॥ मनोहरम् ॥ बुंदीके बिनाम ति किलारि दै बेय जे तिन्हें रारिव बक्र बेरन बिपक्षि बिढ लायो लों । याही तें रिसाय रान हीनि लीनों बेघम कहायो नाँहि रकवक तथा पि त्रास तायो नाँ ॥ पाघपाव लीन को रूपैसिलदी पनट्ठ कि लैपै मजबूती मानि बन रूरमायो नाँ । चौंडासों सपूत बप्प राउल के बं सकों ऊ थल थुरधोरी धीर देवा सो दिखायो नाँ ॥ ३६ ॥ इति श्री वंशभास्करे महाचंपूस्व रूपे दक्षिणायने नवम राशौ बुधसिंह चरि ते सप्तत्रिंशो ३७ मयूख: ॥ ॥

॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥

॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥

पादाकुलकम् ॥ याद्विवरसदुरभिच्छभ
योअति। नहितनअन्नधनीकुधरैंनाति॥
इकरुप्पयउपधान्यजतनइत। दुल्लिदिये
हैसतटकेनसित॥ १॥ अबनृपतजि
जनजाननलोइम। तरुअपत्रअफलहिं
पच्छियतिम॥ मनहुंतालसुकैंजलम
च्छे। इमनाहिंयोक्सातकअच्छे॥ २॥
यादिगजादिरखतअबआये। मंगरोल
रकर्योसुमगायो॥ नृपकोटेससोकुपट
योनन। खानखरचदैजाकुकह्योघन॥
३॥ इमठांठांबकुलिभवरह्योअब। सं
भरकोंनिंदतजिहानसब॥ पैअफीम
आसवतजिपक्के। छुधाबढायअसन
नवकुछके॥ ४॥ अगाहितजिकोटा
पतिआकृति। आइनिजपीहरबुंदाउ

लि॥ कोटापुर हिरहीकछ्ब हि·य। अबसु
नृप्फु बेघम अवगाहिय॥ ५॥ जेतसु
वनउत देव जंगजय। गिनि कुद्वहिं अधन
रु कोटागय॥ तत्थहि घाय अच्छु कुवत
त्तो। पुनि कोटेस सभाव हपत्तो॥ ६॥ म
हाराव तब कहिय दर्प मत। सारधलक्व
पदा तुम रोगत॥ हम दुवलक्व पटा अब
देहैं। अरु अच्छुव तुम रे घर ऐहैं॥ अब
कुंदीस नाम कुनअक्वकु। रीति अदब
दुगुनों यहैं रक्वकु॥ यहै सुनत देवा रिस
आयो। दर्दीकरि जिमपुच्छ दबायो॥
८॥ उठ्यो भट भुजकों किअ यानक। इत
उलपरि गि सभा विच औदक॥ अरु उत्त
र कुल्यो असंक उर। पति कूरम अग्गें रि
हिपुर॥ ९॥ बुद्ध भीम उभया कियइ

क्रृत।त्रयनृपइक्कथालजिम्मियतत॥
हेममजनकजैततँहँहाजरि।कह्योतिन
हिक्रूरमपतिहितकरि॥१०॥सुभटजैत
तुमभिलडुभीमसन।अबजनबिरोधसाम
डुवअप्पन॥सुसुनिभीमअग्योकर
किन्नों।इतहिजैतउत्तरतबदिन्नों॥११॥
इहुनकीजननीरअयहिय।भामिनि
गिनिडुंदियतैंभुग्गिय॥यातैंस्वामिह
रामअधमआलि।मिलहिंतोहिकिमध
रमस्वच्छमति॥१२॥कहिइमदियउठ
लिताकोकर।वाकेसुतहिँकहतइमअ
कवर॥अप्पनस्वामितोहिनसुहावहिं।
तोनहमहिंतवआश्रयभावहिँ॥१३॥
देवनइमपरिरवदबिन्चदह्यो।फिरिधसि
उठतघायइकफह्यो॥महारावक रजोरि

नायो। यह मन्योन मुरारि उत अायो ॥ ९४ ॥ फटल घाय अंतक गद फैलिय। कतिक मास त्रिदिव बास किय ॥ इम भट देवधर अव आयो। बिपति साहि रुध लय विडायो ॥ ९५ ॥ कलिजुग का लखयो यह भीखम। हैं इक जीह कहैं कोलों ॥ होवत कुल सुकृत्य हरामी। तिक स्यो बैरि सल्ल कुल नामी ॥ ९६ ॥ बुधइत रस जानि नव बाला। ब्याहि जु रक्खिव अंस बहाला ॥ ताके उदर कुमर उद्भव धरिय नाम जिहिं चंद्रसिंह धुव ॥ ९७ ॥ मधु गत अमा सत्तदसु १७८७ संबत। सा खल यहि काल यह भोवत ॥ इहिं असु ... मास अठारहि। बेघम नाय सक्यो रुकवारहि ॥ ९८ ॥ बुंदाउ तिरा नियइ

तबेयम। गर्भधस्योसुभयोपुनिउद्गम।।
संबतमान अंकवसु सत्रह १७८९। अ
रुसितबकुलभालचंद्रअह।। १९ ।।
भूरुवासरजसकुंवकुमारभव। दीपसिंह
नामकअरिदलदव।। इतजैपुरसाह
सअधिकाई। बलिजयसिंहअसुता
बुलाई।। २० ।। कृष्णाकुमारिनामअ
तिअगाह। अभयसिंहमरुपतिसाली
यह।। माधवबहिनिबडीलहिमेलहिं
। दईसबिधिपरिनायदलेलहिं।। २१।।
तबकूरमघरब्याहअनन्तर। बसिजामा
तसुताइकबन्तर।। अंकअष्टसत्रह
१७८९ सकआगम। सिकरवपायजय
सिंहजनकसम।। २२।। आइआबुं
दियकछवाही। वाहररहियहदेकनिक

ही।। स्वसुर स्वकीय पापमति सालम। छ
क्कभ्भ महल्लरहत जु छत्राधम।। २३।। जोयह
राज्य हत्थ निज जानैं। काहू को न कथित उ
र आनैं।। सुततिय जानि रुमा नि स्वसुर सु
ह। सोतिहिं बेरगो कु नहि सम्मुह।। २४।।
कछु वाही इहिं अनरव रिसाई। क्रूर स्वसुर प्र
तिय है कहाई।। मैं बुध सिंह तनय की नारी।
किंकर तुम मम भारिवत कारी।। २५।। स्व
सुर लक्खि सम्मुह सर नायउ। करजोरि नृ पुनि
विनय कहायउ।। नृपमहल्लनरहिं कैं अति
उन्नति। भुग्गत राज्य अंध बनि भूपति।।
२६।। बसहु छोरि महल्लन पुर बाहिर। जो सु
ख नहत तहाँ कुकढि जाहिर।। चविइ मता
हिं निकारन चाही। बकुसि पाइ पठगे कछ
नाही।। २७।। सुनि सालम निकस्यो अ

तिसोचन। निजनसहित करजोरि अधि
कनत।। जान्यों अबहि प्रतिष्ठा जैहैं। कछु
वाही इच्छित अब कैहैं।। २८ ।। इम बिचा
रि पुर बाहिर आयो। बलि तत्थहि निज नि
लय बनायो।। स्वबसि राज्य इम करि हठ सा
हिय। अब महलन प्रबिसौ कछु वाहिय।।
२९ ।। प्रथमहि फल सालम यह पायो। अ
ब नव नव पैहैं अकुलायो।। इत मरुपति
गुजरात बिजय करि। धरमारव पुनि आ
यगार बधरि ।। ३० ।। बुड्ढउ दंत सुनि रुलि
रिव कग्गर। पुर देघम पठ्येस्वर सत्वर। देघ
म रहे मरुप चर मासन। तउ न ज बाब लिख्यो
जड़तासन।। ३१ ।। इम दस बेर मरुप दल
आयउ। पै इक दलन बुड्ढ सन पायउ।।
यह सुनि भो मरुभूप उदासह। रहि इतके

अरु नृपकु निरासह॥ ३२॥ बुद्धिबिगरि उदबेग बढ्यो अति। रहनलग्यो एकांत मंद मति॥ स्वीयजनकु नहि निकट सुहावहिं। कामपरहिं तब टेरि बुलावहिं॥ ३३॥ इति श्रीवंशभास्करे महाचंपूस्वरूपे दक्षिणायनेनवमराशौ बुधसिंहचरित्रे अष्टत्रिंशो ३८ मयूख: ॥ ॥

॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥

पादाकुलकम्॥ इत जयसिंह प्रताप बढ्यो अति। अथिलकहैं सुकरैं दिल्लियपति॥ अदबकु लिखैं दिसेससाह अब। क्रमरुहिं लिख्यो कुजो न कब॥ १॥ जंह राजाधिराज उपपदजुत। लिखन राजराजें लग्यो हुत॥ तिम तिम बढ्यो सबनसि

रकूरम। तहाँ अवर कोउन हुव तासम॥ २
॥ कियरुप्पयकोसनकोबिनधन। सहँसन
गजहयन चतुरमंदुरन॥ जोनहिसाहबजी
रकौरसकै। सोजयसिंह करै बलसंभरि॥
३॥ स्मृतिनसुधायन्यायबिसतारैं। बिप्र
नअघबिसेसबढारैं॥ बाहिरइमघरमा
तुगदीसैं। पैसुरन्योनापिष्टकहँपीसैं॥
४॥ जोनिजधरमरच्योकूरमलिय। क्यों
तबकर्मअधर्मइतेकिय॥ हन्योंप्रथम
सिवसिंहस्वीयसुत। जोकुतासजननी
निजतियजुत॥ ५॥ पुनिजननीनिज
स्वर्गपठाई। भटबरबिजयसिंहबलिभाई
॥ पुनिसंग्रामरामपुरस्वामी। हन्योंदगार
चिह्नायहरामी॥ सत्तअट्ठसत्रह १७८७
मितसंबत। तिह्मलच्छसाहरुप्पयतव

॥ ६ ॥ लैग्रह कितव मिल्यो मरहट्टन। सो
मुरलीन ग्रबलग ग्रधर्म सन॥ साहतासबि
स्थासहिर कैवें। यहतउ मंत्र दक्खिननि ग्र
कैवें॥ ७ ॥ ग्रैसीलरिव ग्राक्खिवयनिंदा
हम। ग्रह ग्रच्छी द्रुकरी बकुक्रम। ग्रबन
वकुल सँग्रह मितसंवत। ग्रायेपुनिमाल
वग्ररउद्धत॥ ८ ॥ ष० प० ॥ ग्रबहायन
लवग्रह्व ८९ बिसद बाकुल दर्पकदिन
ग्रायउ पुरउज्जैनि ग्रवनि दक्खतक्रूरमइ
न। सत्तल कच्छवसाहसन व्याजरुप्पयमग्ग
यब्बलि॥ मरहट्टनकियमेल कियनहिल
साह मंडि कलि। दललिरिव यरानसंग्रा
मग्रतितुमकु सेन भेज कुग्रतुल। यह ग्रा
यग्रासिदक्खन समय मिलि मरहट्टन बलाबे
पल॥ ९ ॥ दो० ॥ सनतरानसंग्रामय

ह। दलपठयोसुदराज॥ सब्बनसिरोमनि निजसचिव। धाइभ्रात नगराज॥ १०॥ लिखुसादडिअरुबेदला। सर्वसुभटदियसंग॥ तेदसउरआयेत्वरित। अवनीलोभउभंग॥ ११॥ दसउरतैंपुनिकुंवरकरि। आयउपुरउज्जैन॥ कूरमसौंहितमिलनकरि। संगरहियसबसैन॥ १२॥ ष० प०॥ बुल्ल्योतबनगराजदेवसिंहकुबेधमपति। तबहिदेवकरिकुंवरचल्योसहसत्थवेगगति। तबकुमंदबुंदीसचल्योनिजसालकसंगहि॥ सोधीयहकुम्मसनमिलिरुलैहैंस्वकीयमहि। जयसिंहब्याहितनयाजुपैंपहदलेलहिंथप्पिंदिय। पिक्खकुतथापिजडबुद्धमतिलैंनजातनिजबसुमतिय॥ १३॥ दो०॥ देवसिंह

निजजामिपहिं। आतदेखिअकुलाय॥ नगरसल्लअरिनाहप्रति। लिखिदलअग्गपठाय॥ १४॥ जामिपआवतसंगमम। निजहठमन्नतनाहिं॥ कूरमकोआसयलिखहु। यातेंइमथितआहिं॥ १५॥ सुनिकेसरीसिंहजब। नगरसल्लअरिनाह॥ पुच्छियइहजयसिंहप्रति। कहियकुप्पिकछवाह॥ १६॥ तुमसुरानरानघरसुकव्वभट। अरुञन्नैनहियेकु॥ चिंतिसुबत्तउरहकुचुप। अबलनसुंदनदेकु॥ १७॥ सुनिसल्लअरिपतिलिखियदेवसिंहप्रतिपत्त॥ आवनदेकुनबुद्धयहें। रसनाहिकुप्पविरत्त॥ १८॥ ष० प०॥ देवसिंहतबयहदंतबुधहितुनिवेदिय। तबकुअंबुदीसनाहिंपच्छो प्रयानकिय। यहलिखि

देवउदारकुंचबिरचियबेघमप्रति ॥ ताहिबि
गारनलबहिंमुख्योबुधसिंहहीनमति । यह
सुनतरानसंग्रामधकिदेवहिंतुबेघमलई
। सहूतबिमूढजामीससुखसालकबिचथ
हगतिभई ॥ १९ ॥ दो० ॥ नगरफुरक्काबा
दपति । नाममहुकुम्मदखिन्ह ॥ कूरमपति
वासों कियउ । अगबइररनइन्छ ॥ २०
अबबुंदियअमेरकैं । जवनवहैलखिजु
द्ध ॥ मलकगारभेजतभयो । बेघमपुरप्रति
बुद्ध ॥ २१ ॥ सहजरामरवत्रियसचिव । ता
कोलैदलतत्त ॥ बेघमआयरुबुद्धसों । मि
ल्योलख्योसुप्रमत्त ॥ २२ ॥ वहतहँअपि
बहुदिनरह्यो । मंग्योदलसुमिल्योन ॥ ह्वै
उदासनिजगेहतब । गोरवत्रियकरिगोन ॥
२३ ॥ सकनमनवसग्रह १७९० समय । हा

दसिमाघवलच्छ ॥ तज्जियरानसंग्रामत
नु । दानसमयजयदच्छ ॥ २४ ॥ तबहिं
उदैपुरपद्दलहि । कुवरानाँजगतेस । बुद्ध
सुद्दलदेवहिंबिपति । अदयदईजडएस ॥
२५ ॥ सकनवेनमेसत्रहसमय १७९० । अ
वफग्गुनअवदात ॥ मंगलबारचउत्थि
तिथि । प्रकटतसमयप्रभात ॥ २६ ॥ बुंड
उतिरानीजठर । रहिनवमासप्रमान ॥ दु
हिताकुववुंदीसके । दीपकुमरिअभिधा
न ॥ २७ ॥ ॥ इतिश्रीवंशभास्करे
महाचंपूउत्तरायणेदसिणायनेनवमराशौ
बुधसिंहचरित्रेएकोनचत्वारिंशो ३९
मयूख: ॥ ॥
॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥

ष० प० ॥ इतयह हड्ड प्रताप सिंहसालम
जिट्ठोसुव । अनुजहिं गिनि अवनीसभू
पसम्मालि कुसथलभुव । आयो तब नृपथा
हिनोंहिं अद्दरिसु हलायो ॥ अगतिहिंको
टाआयरानि गति मंत्र रचायो । बिसवासि
ताहि तिय कुड्डी कलुवाहीयह मंत्र किय
। हसदेत रवर चलुम जाय हठि बल दक्खिन
आनकुबलिय ॥ १ ॥ तब प्रताप हठि ति
रवसिल्यो दक्खिन मरहट्टन । लखि श्री
मंत अलीक अतुल आरंभ मुदित मन । बा
लापंडित राम चंद्र संध्याराएं जिय ॥ पु
लापतिके पास वान वलभै पतिए किय ।
इन तैं कुआधिक श्रीमंत के दल मालिक
उमराव दुव । आनंदराव परमार अरु
मलकार गाव मलार हव ॥ २ ॥ दो ॥

इनच्यारिन दलमुख्य लिखि। मिलि
श्रतापश्रतिमोद ॥ दम्मलक्खरखटदैन
किय। बुंदियपरसबिनोद ॥ ३ ॥ इतकू
रमकछुकज्जबसि। मालवश्रवनिबिहा
य ॥ सालमसुवनदलेलसह। जैपुरपत्तो
जाय ॥ ४ ॥ मरहट्ठनपरतापमिलि। दे
रवटलक्खसुदम्म ॥ दलदुस्सहलायोल
रन। कल्लबुंदियकम्म ॥ ५ ॥ सकइक
नवसत्तहसमय१७९१। श्रमारुमाधवमा
स ॥ बुंदीबिंटियश्रानिकैं। गहतश्ररक्
तमश्रास ॥ ६ ॥ भुजंगप्रयातम् ॥ जढे
दकिल्लीत्यौंलगेनैरबुंदी। रवुरोंपक्खरों
धुम्मिहेसुम्मिखुंदी ॥ फगीज्वालिकादी
पकीमालिकासी। दूगीनालिकाकालि
कानालिकासी ॥ ७ ॥ इत्योपोनइंडेन

मैंगोनहक्यो। बढ्योघोरअंधारसंसारहूं क्यो ॥ चलैलोलगोलाझँगँअगिझारैं। दुबाजूछिकैंकोटदैदैदरारैं ॥ ८ ॥ परैंगोरव अट्टालतुट्टैपताका। उडैंछुट्टकेअट्टमैंज्यों बलाका ॥ छिकैंत्योंगिरैं थंभप्रासादछ्वी। पताकाउडैं अभ्रह्वैह्वैपतत्री ॥ ९ ॥ उडैंगैनगिद्धोलगैंपच्छअग्गी। लखैचंगकेपुच्छज्यौंरालरलग्गी ॥ डिगैंकोलत्यों व्यालपातालडोलैं। अकूपारकीभारसों पिट्टिबोलैं ॥ १० ॥ चलैंतोपप्राकारको लोपमंडैं। रिवैंरवोमकेतोमकेरंडखंडैं ॥ जरैंहट्टबाजारयोंहेतिजग्गी। मनोंराल कीतूलमैंअग्गिलग्गी ॥ ११ ॥ कहोंदग्धपाटीरवारीकैंवारी। कुझाबैककौंडारि कैंनीरनारी ॥ छिनंगीउडैंछिन्नसारीनचं

हैं। मनौं थाग खद्योत प्रद्योत मंडैं ॥ १२ ॥ ब
टे पट्ट अट्टालिका पात्त बज्जैं। धनी बालिका
पालिका छोरि भज्जैं ॥ कहौं झारसौं धेनु हंमा
रकट्टैं। बरैं द्वार आगार पैं छार बट्टैं ॥ फर कैं
कहौं गोख प्रासाद फुट्टैं। नर कैं ध्वजा दंड के
खंड तुट्टैं ॥ गिरै दोहरे तेहरे गेह गोलैं। धने
पीठ पल्यंक बीथीन डोलैं ॥ १४ ॥ धुनें धू
गोपान सों खप्पराली। उडै मेद पैं इद्ध ज्यों
गिद्ध आली ॥ कुते ज्यों रहे त्यों सबै लोक हा
रे। मिली ओट बुंदी परे कोट वारे ॥ १५ ॥
इतैं दुग्ग पैं बीर दैदै निसैंनी। बढे बुंदरी
सेन ज्यों लंक लैनी ॥ भज्यो साल भांजो
छोरखूंबछोकियो। जनोनां लुट्यो रारि थानों
नरोक्यो ॥ १६ ॥ कितै बीर जैसिंह जे अ
त्तर क्खे। तके समुद्द्राग पैं जानि तक्खे॥

हरामीन हड्डुन की हारि होतैं। जनी अप्प
नी विप्फुरे अंग जोतैं॥ १७॥ मची मारवा
जारमें बाढ बज्ज्यो। लग्यो कंपभी रुनकों
नीर लज्ज्यो॥ मिले दक्खिनी क्रूर मीबीर
मस्से। कराकैं बजे हाडकी आड कस्से॥१८
॥ बढ्यो घस्स आरस्स बीथी बजारैं। उडैं मुं
ड त्यों रुंड नच्चैं अखारैं॥ कढे नैन नच्चैं गि
रैं ओहु काला। मनों कंजके ओरपै भौंर मा
ला॥ १९॥ बढै हत्य केते बनैं लुत्थि बत्थी
। बनैं अच्छरी तैं घनैं लुत्थि बत्थी॥ बजी
चापटंकार भंकार भेरी। घने दक्खिनी क्रूर
मी सेन घेरी॥ २०॥ कुचैं सत्थ है हत्थ तैं
मत्थ क्रारैं। कुलाली किधौं चक्क भंडा उतारैं
। कढैं पार लै लार अंतैं कटारी। मनों गार
रुनागिनी हत्थ मारी॥ २१॥ बहैं नारि

न्छीकिअच्छीबरच्छी। मिलैंकोचकों
फारिज्योंबारिमच्छी॥ बजीरीठबुंदीसुबे
सारखऋद्दे। सजेदक्खिनीलावकेघावसद्दे
२२॥ घलैंचक्ककोंदेखनैंअक्कचाह्यो
। सुपैपव्वमैंगाह्कीराहसाह्यो॥सक्योंदे
खियोंनाहिंसूर्भानुसारें। नतोतद्दिनांजा
नआछोंनिहारें॥ २३ ॥ कहूंमोहआरो
हकुंकैंकथासी। बकैंबाखनीभस्त्रज्योंआ
सबासी॥ कितेउल्लटैंफाटिछातीकेंबारे
। मनोंद्वारभंडारहीकेउघारे॥ २४ ॥भरक्कैं
कढेंखुपरीफुट्टिभेजे। फरक्कैंकहूंफिप्फ
रेकेकलेजे॥भिरेदक्खिनीयुद्धकेकाजभा
री। मिलीजीतिआकूरमीसेनभारी॥२५
॥ष०प०॥ मिलिअलापमरहट्टजिति
छुंदियजसलिन्नौं। गहिसालमनिज

जनकबंदिद्दुलकरबसिकिन्नो। सालमको
सरबस्वसज्जनिजकरनसुहायो॥नगरनै
नवाजायदईनिजनामदुहाई।बुंदिय
द्दुरायमरहद्दइतरसमुकामतत्थहिरहि
य।दिसदिसनबत्तफुहियद्दुतहिकबिन
दाहदकिवनकहिय॥२६॥दो०॥सह
रलुटियसालमगहिय।फिरियबुद्धनृप
आन॥अरुचउसतद्दुंद्दुंओरके।घेरसुभ
टगतमान॥२७॥कछदाहीकोटानगर
।यहसुनिबुंदियआय॥दियमहिमानी
दकिवनिन।दुवदिनसेनरखाय॥२८॥
कछवाहीमल्लारकर।रक्खीबंधियरानि
॥अरुताकीतियकीअतुलकियभावज
समकानि॥२९॥तंहद्दुलकरमल्लार
तब।सधालियहितपगि॥बुंदियज्जोजे

हैंबहुरि। लैहैं तोहठलग्गि॥ ३०॥ अव
रकु अयदलके अधिप। तिनहूकों हितधा
रि॥ दिन्ने हयसिरुपावबहुत। रानीसुनयवि
चारि॥ ३१॥ कछवाहीप्रतिसिक्खकरि
। तदनंतर जयतोर॥ प्रवलबीरपच्छेप
लटि। उमडियदक्खिनओर॥ ३२॥
कटकसुंड छियग्गामकढि। रहिकिंफो
लियनरैं। बेघमकग्गर बुद्धप्रति। लिखे
मिलनजससैन॥ ३३॥ ष०प०॥ मि
लननआयउ तबकु बंचिकग्गरबुंदिय
पति। तबउप्परिमरहट्ठ गयेदक्खिनस
बेगगति। इतबेघमतजिमहलबुद्धआ
रामबासकिय। रानकटकतिनदिनन
आनिलत्थहिमिलानदिय। हितिजानि
रानसग्गामकोनृपकुसोकअकवनगयउ

। मिलिधाइभ्रात नगराज नमि करनजोरि हाजर भयउ ।। ३४ ।। दुव दुव हय सिरुपाव नृपहिं नगराज निबेदिय। आयशान मृत जानि नृपति यह अकिय नांहिं लिय। तह तुसाह पुरईस नाम उम्मेद जंग जय। तासुजनक तिन दिनन मरियया तैं तत्थ कुगय। केसरीसिंह डेरन तदनु गिनि सलूमरिप तांहिं गय। इम रानभटन सनमानि अब नृप निज उपबन आहि गय ।। ३५ ।। दो॰।। धाइभ्रात जिम नजरि किय। इन कुडुकुंन तिम किन्न।। नांहि सुलिय बुंदिय नृपति। दुव तिनहिं तहय दिन्न।। ३६ ।। इत बुंदि य लिन्नी सुनत कुपि नृपति कछवाह।। बीस सहस चतुरग बलि। पठये सज्जि सिपाह।। ३७ ।। सालम सुवन प्रताप तब।

चतुरंगहिसुनिचास ॥ नैननगरतजिभ
ज्जिगो। पुनिमरहट्टनपास ॥ ३८ ॥ अरु
कछवाहीसुनतयह। आवतभ्रातअनी
क ॥ बुंदियतजिबेगमगई। रहीनटैकर
तीक ॥ ३९ ॥ सोरठा ॥ कछवाहीनि
जकिन्न। इकमासबुंदियअमल ॥ लरैं
बिनुहिपुनिलिन्न। इतहिआयजय-
सिंहदल ॥ ४० ॥ कूरमकोटकराय।
थाहिबरसपुरटौंकइत ॥ दोसादुग्गब
नाय। प्रथितनिवाईदुग्गपुनि ॥ ४१ ॥
हरिगीतम् ॥ इतकोंउदेपुररानन्रृपज
गतेसकालहिजानिकैं। ब्रजकुमरिनाम
कुजासिनिजतिहिंब्याहजोग्यप्रमानिकैं
॥ कोटेसदुरजनसल्लकोंदरितहिब्याह
नबुल्लयो। इनलिखियकूरमउग्रहैअब

कासउद्दहकोगयो ॥ ४२ ॥ यहजानिरा
नपदाय प्रतिबच्च कुम्भजो अबकुप्पिकैं। ह
मोह ब्याहन आत तुम भुवलैंहिं लज्जहिं
लुप्पिकैं। इकलिंग आनह धैं कुलो तुम मों
हिं छैरनरोरिहैं। जोपै भुवापतिजै पुरैसत
थापितगनतोरिहैं ॥ ४३ ॥ कोटेसयहसु
निकुच्चकरिफुंच्यो उदै पुर प्रीतिसों। जगते
सतिहिं निजआमि दियपरिनायहितर
सरीतिसों ॥ यहब्याहचंद्र अंकसमरु
इक १७९१ संवतमैं भयो। आसाढमेच
कपकरवनवमियलग्न उच्छव उन्नयो ॥ ४४
॥ कोटेसनृपइमब्याहि दुलहनिस्वीयप
त्तनसंचरयो। इकजानिरानहिंयाहि इत
जयसिंहजालमहूंजरयो ॥ इतरानभट
जयसिंहसगताउत्तबग्गहपुत्तहो। कि

हिंग्राम पिप्पलियाजु स्वामियकामस्यं
दनजुतहो ॥ ४५ ॥ दुवपुत्तहिं तुवकी
लउत्तमहो उदैपुर कोवहै। साहसितारा
धीसपैंजु अनीसअब्दनतैंरहे ॥ तिहिं
तत्थसाहुवछत्रपतिआदाबआतिकरि
ऋहरै। बड़बारिगाढ़िय कोनपैं काकाक
हैंरुकहीकरैं ॥ ४६ ॥ संग्रामरान निपा
तसुनि तिहिं सिकवसाहुवसों चही। ज
यसिंहसोंयहजानि बाजेराय मंत्रियकूक
ही ॥ मम मालपूरवजात जातजु न्हानति
त्थविधानसों। तिहिं लेउदैपुरजाहुएह
उदंतअक्ववहुरानसों ॥ ४७ ॥ तुमरान
कूरमसों कहायय है कहीवहुसाहसो। मम
मालकासियजालजो दैहैनकरहिराहसो
॥ स्वच्छंद मम हुमैं कहोंरह्लिकि हैन दलजुत

जायहै। पुनिफल्गुगयासिरपारिपिंडन
अध्वहूञ्छितआयहै॥ ४८ ॥जयसिंह
कच्छनंदयोंसुनितासमातहिंसंगलै।
आयेउदैपुरओमिल्योवहरानहिंउम
गलै॥करजोरिअकिवयपसवानृपसाकु
मंत्रियआहिजो। तसमातआवतरावरे
घरपुब्बतीरथचाहिजो॥ ४९ ॥सुनिए
हसम्मुहजायरानअतीवअद्दरअद्दरी।
महिमानिमंडिदिवायडेरनकानिमातहि
लोंकरी॥अवरोधमाहिंबुलायप्रीतिबढा
यबिन्नतिअक्कवई। सुनिरानबिन्नतिवा
तमंत्रियमातमोदमईभई॥ ५० ॥गजबा
जिवस्त्रबिसेसराननिवेद्दिताहिघनोंन
यो। पुनिजायडेरनसिक्खदेसंगसीयसे
नकुकौंदयो॥नगरीसलूमरिनाहकेसरि

सिंहसुरव्यसुसंगभो।जयसिंहपुनिवहब
ध्धनंदनसंगउञ्चउमंगभो।। ५१।। खुरता
रमारनभुम्मिदेतदरारदारिमपक्कज्यों।
वलवरवदलपालेमंत्रिजननीचंडसंगहि
लक्कज्यौं।।लहरक्कदंतिबडेनपैंफहर
क्किफैलतसीफिरैं।झिलिफेटफंडझपेट
मैंपवमानचंचलहूचिरैं।। ५२।। श्रियसं
तमातसुखेनयोंसहसैनजैपुरसंचरी।क
छवाहरायकुम्भायसम्मुहकानिरांनहिलों
करी।।जयसिंहप्रीतिबढायतासदिवाय
डेरनमोदसों।लिलदबाजिउदंडदुवकिय
भेटवंदिविनोदसों।। ५३।। मोहिमानिदे
स्प्रतिम्मागधसोंम्मवरोधमध्यबुलायकें।
सकुटुंबसम्मुहजायमंदिरलायमत्थहिना
यैं।।बहुबारिगाहियताहिम्मपुनम्मत्य

आसनपैंरह्यो। नगबस्त्र नव्यनिवेदिकैंइक्क दासकूरमयौं कह्यो॥ ५४॥ तनयसुकृष्णा कुमारिअप्पनजो दलेलहिंअप्पई। गहि लाहिहत्थनकुम्भयौं थिरतासअंकहियप्प ई॥ कहिमोर पुत्रियतुंदिभूपदलेलराज्ञिय हैयहै। तसलज्जपुम्मिसुहागकौतुमकोसु अज्जअभैयहै॥ ५५॥ तिहिंलायहिय श्रियमंतमातकुअक्किअमीलिपरापयौं। रूप येपञ्चीसहजार छोरियजेलबुंदियकौंलगैं॥ जबकुम्ममालवपत्ततत्तसुसाहदत्तहिं मेलकैं। निब्बे हजारलिखायलियइहराय दम्मदलेलकैं॥ ५६॥ तबदक्खिनिनृ पसाहसौंअरजीकरायनिदेसतै। यहञ्जं कथप्पियबुंदिपैंकहिकोउनांहिंबिसेस लें॥ तिनमांहिंलौंश्रियमंतमातबछोरि

दम्म इतेदये।पुनिअकिवपुत्तियलाय
छत्तियनेहदीजबयेनये॥ ५७ ॥ अिय
मतमातहिंरक्कियोंजयसिंहजयपुरमा
सलों।पुनिसाहहिंतुलिखायमगकरमा
फतासमबासलों॥ बलितासडेरनजाय
कूरमरायबंदनकेंबली।सजिस्वीयसेन
कुलंगरेवहपंथपूरबमुक्कली॥ ५८ ॥ भ
टरानकेसरिसिंहओजयसिंहतत्थहिएर
हे।दलओरसंगहितासदैपुनिमासजेपुर
जेरहे॥नगरीसलम्मरिनाहकेसरिसिंहचु
रअधीरयों।जयसिंहबगधहनंदहोयह
केरपाउकधीरलों॥ ५९ ॥ सनमानदोउ
नकोंनयोंनखवाहडेरनजायकें।हयह
त्थिकूरमसोंतिलैपहुंचेउदैपुरआयकें॥
महाराणाहमारये करिकैदसालमकों

रुप्पय देहिं पैगृह लैहिं तो लिखितो दई ॥
॥ ६३ ॥ हलकारन जामिन बीच जो नहिं देहिं
तो हम देहिंगे । बलिरान भूप बलिष्ठ जे इन
तौं निदरि कुलै हिंगे ॥ परमारयों लिखि प
ठ्ठ जो परमार कुलकर कौं दयो । निज संग
कुलकर दास भट्ट महा दिदे वसु पैलयो ॥
६४ ॥ पुनि जेउदैपुर आय दक्खिन सेन
सौं हम सिक्ख कैं । सुनि रान चाहि सिराहि
दौलत सिंह कौं लख सिक्ख कैं ॥ लिखि प
त्त हुंडि रलेल कौं दपु दम्म सालम मंगये ।
कुलको दले लकुल मैं हिं तु कपर्द दोय कुनां
दये ॥ ६५ ॥ लखभट्ट दौलत सिंह जुत्त क
रि सिक्ख सालम रान सौं । चलि नैन वानि
जनेर आय उभी रुउझ्झरि मानसौं ॥ निज को
सौं कुल कर्ज रुप्पय देस दक्खिन मुक्कले

पुनि कुम्म आय सपाय दोउन कों हि दिन्न प टा भले ॥ ६६ ॥ ससि अंक सत्त रु इक्क १७९१ संबत मास कत्तिय गोर मैं । कछवाह किय सब भूप इक्कत जानि दक्खिन जोर मैं ॥ मेवार सैं अ गौंच नाम क ग्राम सर्व मिले तहाँ । अरजी लि खाय पठाय दिल्लिय सेन भेज हु गे यहाँ ॥ ६७ ॥ सुनि साह सेन समस्त संजुत खान दौरह सुक्कल्यो । यह मास अगहन कृष्ण पंचमि चं ट चक्र हिं ले चल्यो ॥ द्रुत आय मालव देस मैं बुलवाय कूरम हूलयो । बिनु रान तब सब भूप संजुत सो हु मालव मैं गयो ॥ ६८ ॥ तिहिं साल बिच इत नैर बेघम पोस मास अभा जहाँ । कछवाह रानिय देह हानिय दान कै रु करी तहाँ ॥ इत कौन बाबरु कुम्म मालव मैं मिले अति प्रीति सों । सब हिंदु भूपन स

त्थलेरन मंत्र मंडियरीतिसों ॥ ६९ ॥ अभ
मल्लनृपमरुईस वीकानेर भूपतिसत्थही।
कोटेसदुरजनसल्लसोपुर भूपगोरसमत्थ
ही॥रतलामरु छुवकेरु ईडरकेकबंधकुसं
जुरे।बुंदेलनृपदतियादि भूपभदोर मंडप
विप्फुरे॥७०॥रचिमिल बीर बघेलबंधु
वभूपसम्मिलिसज्जयो।नगरीकरोलिय
भूपजद्दवसेनसंजुल सोठयो॥पुनिरूपने
रकबंधभूपजुपायलग्गियआनिकैं।पुनि
आयनैरमनायभूपतिजोर मिच्छनजानि
कैं॥७१॥बजरंगराघवदुग्गकोमहिपा
लखिच्चियहूमिल्यो।नगरीसिरोहियदेव
रानृपआनिआयसकोंझिल्यो॥रचिचक्क
टहियआयमहियनैरजेसलमेरको।ब-
लिलैरमहानिलूपउम्मटआयआतहिबेर

को ॥ ७२ ॥ कच्छवाहनरउरनाहमिच्छनबा
बहूकितनेकहूं। मिलिखानदोरहसूंसबेप
रितत्थरुंधिदिसाचहौं ॥ सबकौंसिराहिरु
खानदौरहसेनदक्खिनपैंसज्यो। मरहट्ठसे
नकुपिक्किकैंचहिरट्ठसम्मुहहूंगज्यो ॥
७३ ॥ रचिमन्त्रपंडितरामचंद्रमलारश्रोपर
मारत्यौं। राणंजिसस्मिलिसंधियाबदिजंगजी
तविचारत्यौं ॥ दलमांहिसौंपरखैरतश्रद्व
हजारकद्विरुयौंकही। तुमजायजैपुरदेसलु
ट्टकुत्यौंहिमिच्छनकीमही ॥ ७४ ॥ असवार
अट्ठहजारवेतवसीमजैपुरजायकें। टोडारु
टोंकबिगारिलुट्टियकुम्मश्रानउठायकें ॥
नगरीनिवाइयलुट्टिकैंपुनिलुट्टिमालपुराल
यो। लंबारुडिग्गियलुट्टिपट्टलिदावट्टुट्टवैंपै
दयो ॥ ७५ ॥ तिहिंमारिजारिनरानेरम्मा

यसा लियलुट्टई। मोजादपत्तनलुट्टिकैंहल
सूरियत्तनदेलई।। इमरारिखगान झारिमारि
किगारिजैपुरदेसमैं। पुनिनैरसंभरआदिलु
ट्टियसाहकेअवसेसमैं।। ७६।। जिमकुम्भ
सोयँहँसाहकोमरहट्ठ नाहिं गिनेमिले। तिम
तेकुदाखिवनवीरमञ्चिरुग्रामजैपुरकेगिले।।
असवारसातहजारअट्टन लूटयोंइतमंडई
। उतरावचंद्रमलारओपरमारबग्गनकोंल
ई।। ७७।। निससुत्तसाहअनीकपैंपबिपा
तपक्षयज्योंपरे। बजिबंबआनकत्योंअस
नकूटिबिब्भलरकरे।। तबज्योंकुतेति
सराहकेउमरावभीरुकभग्गये। तचिकुम्भ
कोरहखानदोरहलज्जिमगगाहिलग्गये।।
७८।। तबसेनभज्जतसाहकोदखिनीनख
सानखंडयो। उडिरेहअबरयोंछईजिमबे

हसंबरमंडयो ॥ अचलाकुलकवनफोजकी
थमचक्कथक्कनलैंथुकी । बढिव्याधिदिग्ग
जदंततुट्टिसमाधिसंकरकीचुकी ॥ ७९ ॥
फररक्कि फीलनकेतुत्यौंथररक्कि अंबरअ
च्छरी । बररक्किदड्डबराहभृद्दररक्किक
च्छपमोदरी ॥ तरवारिदक्खिनसेनकी
दलमारिदिल्लियकोदयो । दृगमीचिभज्ज
तसाहकेदलराहबुंदियकोलयो ॥ ८० ॥
लगि पिट्ठिदक्खिनके अनीकनलागच
म्मलिलोंकरी । इतअग्गआयरुसाहकी
पृतनाधुनीवहउत्तरी ॥ तजिभानपुरको
टानदीलगसेनभज्जतहीगयो । जवतु
लरुप्पयइक्ककोइकसेरतद्दिनबिक्कयो
॥ ८१ ॥ अतिहीछुधातुरसाहकोदलआ
पगाइमउत्तरयो । पुनिआयबुंदियखात

पानदलेलसालमकैंकस्यो ॥कछवाहना
हरुखानदोरहसर्वभूपनसत्थही।रहित
त्यमंडियमंत्रदाकिवनसेनमन्त्रिसमत्थही
॥ ८२ ॥कछुदेसअज्जदयें बिनाँउनकोन
हीमनधप्पिहै।तसमालअकवकुसाहसौं
सुनिसाहमालवअप्पिहै॥तबखानदो
रहमंडियोंपटवायकिन्नतिसाहकौं।लि
खिदेहुमालवकौंनतौरवलआतदिल्लि
यसाहकौं॥ ८३ ॥यहमंडिओइतसेन
दक्खिनपैंकुकग्गरमुक्कल्यो।उमलेकु
मालवसाहसौंकरिसामसंचितजोफल्यो
॥सरहद्दबीरनबंधिकग्गरबत्तमालवकी
करी।जवनेसहूसुनिपत्रमालवदैनबत्त
हिअहरी॥ ८४ ॥लिखिपत्रमालवदे
नकोजवनेसहुंदियप्रेरयो।सुनिखान

दौरह कुम्म मोरह सो हि दक्खिन कौं दयो ॥ मरहट्ठ तत्तह बंचि पत्तह लेअ्रवंति खुशी भये। नदि नाँहि चम्मलि उत्तरे सुररेति माल वही गये ॥ ८५ ॥ मधुमास चंद्र रु अंक स त्तरु इक्क १७९१ संवतयों भई। तब खान दौरह सिक्ख भूपन देरु दिल्लिय ही लई ॥ तब चाह कैं कछवाह भूपति दुग्ग बुंदिय देखनें। चढि कैं दलेल समेत हत्थिय इक्क सीर कुलै घनें ॥ ८६ ॥ प्रबिस्यो सु उत्तर द्वार पत्तन पंति पिक्खत संचर्‍यो। चढि दुग्ग हत्थिय पोरि है नव ठान को कहि उत्तर्‍यो ॥ सठ पाप साल सु आय सम्मुह जोरि हत्थन कौं नयो। इम राज मंदिर पिक्खि कैं पुनि कुम्भ पव्वय पैं गयो ॥ ८७ ॥ नरसिंह भूपति आ गा बंधिय दुग्ग जो बिगर्‍यो लख्यो। कपिसी

साभिन्तिरुखातिकाकहुंखोमतोमपस्यो लख्यो ॥ कछवाहनाहदलेलसूंनवदुग्गबं धनकीकही। सुनिसज्जमन्त्रिदलेलहूखसुरे सउक्तकियोसही ॥ ८८ ॥ रहिदोयरत्ति रुप्रकिवयोंजयसिंहजैपुरसंचस्यो। नव दुग्गबंधिदलेलहूइतसज्जबुंदियकोक स्यो ॥ इहिंसालअग्गहनमासमैंजगलेस रानहुजानिकैं। दियनेरबेघमदेवसिंह हिंफेरिकग्गरठानिकैं ॥ ८९ ॥ दुवलक्ख रुप्पयदंडकेलियरानराउतदेवसों। सहि दुःखदारिदविग्गस्योइमसालजामिपसेव सों ॥ पुनिरानकामसुराजकोनगराजसों सबछिन्नयो। लखिवृद्धकोबिदजोबिहारि यदासकाथथकोंदयो ॥ ९० ॥ जिहिंअ नादिछिंयजायकैंसबरानकामसुधारयो

गुजरातजित्तिउछाहसौं।अरजीकरीकर
जोरिबुद्धहिंदैनबुंदियसाहसौं ॥ ९४ ॥ तैंहैं
खानदौरहुऔनबाकुजबाबपेसनहोनदै।जय
सिंहकोमतिमित्रयोंअरजीसुलगानजोनदै
॥नवमासबुंदियकाजयोंमरुभूपदिल्लियमैं
रह्यो।बरबसीसकिन्नबिसेसपैयहतोनसाह
कस्योकह्यो ॥ ९५ ॥ तबकुप्पिकैंबिनुसाहआय
ससेनधन्वपसज्जयो।सबदेसलुट्टतसाहको
मरुदेसगर्बितह्वैगयो।दुवअंकसत्रह१७९२सा
कयोंसितपक्खफग्गुनमैंभई।इतसाहदक्खि
नमैंमिल्योयहजानिकूरमकीलई॥ ९६ ॥ तबही
नबाबउमीरखांबुगलीसुदेउनकीकरी।प्रभु
खानदौरहुकुम्ममोरहयौंहरामियअहरी॥मिलि
सत्रुसेननसौंगयेअरुलाभदक्खिनतैंलयो।दु
वकोटिरुप्पयदेसमालवमंडिसाहुवकौंदयो॥

॥९८॥ चुगली सुजानि रुकुम्मह। पुनि एम्मद
किंनसुक्क ल्यो॥ अियमंतअक्ककुबेग ग्रोहम
दोरदिल्लियकोदल्यो॥ अियमतहून्रपसाहमंत्रि
यवचिपत्रजुदेगले। दलदर्पदुद्दर बंधिकैंगति
कालकीलियतेगले॥९९॥ दोहा॥ न्रपसा
हुवनवलावरवदल। नगरसिलारानाह॥ सज्जि
तभोताकोसचिव। बाजेरायदुबाह॥१००॥
षट्पदी॥ बाबापंडितरामचंद्रकुलकरमल्हा
रहारांणंजियसंध्यारूप्रथितअानदपमारह
। अबक्कमुख्यकरिइनहिंचढिरूअियअत चला
यउ॥सालमसुवनप्रतापसेइसंगहिंभटअा
यउ। कूरमहिंअानिअाह्वानकरइनदलकिन्न
सनउप्पारिय। तहिंनअपारदलभारतकिफन
पतिफेननफुंकरिय॥१०१॥गारदगैनबित्थरि
यजरदजमजनकरंगकिय। मरदमंत्रिउमीदि

यरूरद्भद्दारव्हु दिय। पंचश्रयुतपक्खरिय सहँसदंतावलसज्जिय।।दलपदातिदक्खि न्नियगरबिदुबलख्खगरज्जिय।।बक्कबिधिनि सानभेरियबज्जियबलनकीबहुबलबढिय। पेसवाप्रथितबिप्रसुबलियचाररखरऊपरचढिय।।१०२।।इतिश्रीवंशभास्करेमहाचं पूत्तरद्विदाक्षिणायनेमलअरासौबुधसिंहच रित्रेचत्वारिंशो ४० मयूखः।। ।।

|| छ || छ || छ ||
|| छ || छ || छ ||

दोहा।।कटकबिप्रदरकुंचकरि।आयउलोंनाड।।सुसबरानजगतेससुनि।लग्गिबधावनलाड।।१।।जबकाकानिजजनकको।बुल्लितरवतअभिधान।।बहुरिसलमरिनाहबिय।गठयप्रेमप्रमान।।२।।मिलनगयेश्रीमंत

बेगनेहबियरुयोनयो॥ ८॥ दोहा॥ तबद्दुद्द
रमच्छन्नतक। आयउसम्मुहरान॥ दूजीगद्दि
यविभहित। बिछवाईसुविधान॥ ९॥ तिहिं
उठवायरुपेसवा। बिनुगद्दियगयबैठि। रच्यो
अदबयहरानको। प्रीतिअतुलहियपैठि॥
१०॥ गद्दियपररानाँरह्यो। सिरदुवचमरढ
राय॥ चमरइक्कदुवबिप्रसिर। बलिहितबल्ल
बढाय॥ ११॥ रानकहियनमनीयतुम। तबद्वि
जकहियसच्चाव॥ मोहिगिनहुनृपरावरो। जि
मसोलहउमराव॥ १२॥ रानतबहिजरजीम
जुतं हयचउहत्थियएक॥ नगजरायभूखनन
वल। बिप्रहिंदियससबिबेक॥ १३॥ सहुलक्ख
इकसालप्रति। स्वीकारिदक्खिनदम्म॥ दियउ
परगनबनहडा। तिनमैंलिखिहितकम्म॥
१४॥ तालमध्यइकरानकैं। जगमंदिरप्रासाद

॥ताहिदिखावनकीकही।बासरदूजेबाद॥१५
रानपिसुनबनिकोउतब।बाजेरावहिंअक्खि
॥ऐसोवतसारततुमहिं।रानकपटहियरक्खि
॥१६॥दक्खिनमंत्रियएहद्विज।होतथापिसु
निएह॥सूरखसच्चीमन्त्रिकैं।कियरोखरानदे
ह॥१७॥पठईयोंकहिरानप्रति।मैंछलघात
सरौंन॥कलहिमंडसज्जहुकटक।करहिंसाम
अबकौंन॥१८॥पज्झटिका॥यहसुनतरा
नकुवसोकलीन।पठयेपुनिदुवभटबेप्रबीन॥
तरवतेसरुकेसरिसिंहतत्थ।जोअरुद्विजबंदि
यजोरिहत्थ॥१९॥कहिरानअधिकसनमान
कीन।अप्पुननहोहुअमररवअधीन॥किहिं
मूढकहियवहझूठकत्थ।सोकहहुअपसनतिं
धिसमत्थ॥२०॥जोकहहुनाँहिंतसिंहुरो
स।नाहकनदेहुअभिसापदोस॥प्रियमततद

तिरक्खि ॥ २६ ॥ परई कहि बिप्र हु न हि प्रमा
न है रान सुप क्कु साहू समान । जे कबहु नि च्छ
अनुचर बनैं न अनुचर सदा हि तुम लाभ अैं
न ॥ २७ ॥ जिहिं हेतु मेंहु कौं अधिक जा
नि पै मिलहिं अज्ज सम लाभ मानि । तुम जा
नत गहि य दे उठाय पै नैं ह हिंदु वइ क पीर पाय
॥ २८ ॥ हम लस्य कुद क्खिन ओर हीय देवा
म तुमहिं इम मिलहिं दोय । जयसिंह कुंय
ह सुनि प्रबल जानि इक आसन स्वीकारि मि
लिय आनि ॥ २९ ॥ चढि उभय बक्क हु ब
सज्ज आय तिन बीच इक पटगृह तनाय ॥
तामाँहिं मिले दुव गजन छोरि बैठे इक आस
न जानु जोरि ॥ ३० ॥ द्विज कियत हैं इक
जंत्र पान लगि धुम्म कुम्म मन बिचारि सान ।
पुनि सुभ्भट मुख्य निज निज बुलाय बैठारि मि

सलन्नायतश्रनाय ॥ ३१ ॥ दक्खिनभट्ट ला
जरिसबहि लत्थ इक्कनमलारआय उसमत्थ
। संथाजिहिं बुंदियलेनलिन्नद्विजबाजेराय
कुबचनदिन्न ॥ ३२ ॥ श्रियमंतयहाँमिलि
पलटिपोन कछवाह बुंदि छोर कुकथ्योन ।
सालमसुलसजुतआसुउद्धिइहिं कारनकुल
करचालियरुद्धि ॥ ३३ ॥ श्रियमतकुम्म ।
कूमसुभाय अब निज निज डेरनउभयआय
साँहँ सुनिय बिप्ररुद्धियमलारगच्छतबहिनि
होरनप्रकटिप्यार ॥ ३४ ॥ अक्खियतल
कुलकरअत्थ आयतुमबुंदिलैन न किय
उपाय । करिसपथलैन पुनिदेहु लैन तुमसंग
नतो अब हम चलैंन ॥ ३५ ॥ नृपसाहुस
पथलब बिप्र बुल्लिलैहौं अब बुंदियलेगतु
ल्लि । विश्वनैंकछु बासरजानदेहु दोउनमनों

आये सोभठानि लैहैं पुनिबुंदिय लेक्कुमानि

छुंडीसमिलनहित कछुकहाय टारीसु बिप्रइ-

मछ्लिखाय ॥ ४२ ॥ तदनंतर दक्खिनहि

जमगतगोहक्कु प्रतापक्कु संगतत्त । इतदिल्लि

महूरमकुजस उहि क्खियभिंत मिलनसुनिसा

हरहि ॥ ४३ ॥ लवसाह निजामनमुलकछु

ल्लि आयउ नबाबसुनि तेग लुल्लि । होयहकली

जखाँनामबीरगाजुद्दीखाँसुतरनगभीर ॥ ४४

॥ वहअद्भुत दिल्लियनेर आय बलिसाहहिंतु

सिजदाविधाय । जवनेसहिं कूरमकुपितजा

निपुनिलिखियपत्रदक्खिनप्रमानि ॥ ४५ ॥

अवसर अब आयउ भुम्मिलेन क्खियमंतवे

गआवक्कुसरोम । यहसुनत बज्जि जिततित

निसान उमडिय अनीकसागर उफान ॥ ४६ ॥

फहराय अडहत्थिनपरक्कि भहरायभज्जि

भीरुकभरकि। सज्जतभटबाहुलकवचटो
पत्रप्रतिकायचरक्खनचढलतोप॥ ४७ ॥
खुरसानधारआयुधखंकिपावकप्रचंडभा
रतभनकि। दक्खिनअनीकगज्जियछुरंत
छहिरींतिवीरसज्जियअनल॥ ४८ ।संब
तत्रिअकहयइक्क १७९२ मानइसमासवि
जयदसमीउफाल। सक्कमियसितारावीलसे
नअभिअमतसुरव्वलगिमुम्मिसेन॥ ४९॥
अतिकायबाजिफौदलअकासमिटिजा
तदुग्गपहुरमबास। रविलियउढंकिखुर
तारखेहभड़ियकिअहइआसारमेह॥ ५० ॥
किलकिलतसंगअलियकरालखिल्लखिल्ल
तमत्तमत्तखेचपाल। झुम्मिझिजमातिजय
जयतिजापेझपटतझुकंतबेतालझंपि॥ ५१॥
दकजकतसंगजावनप्रमत्तस्वच्छकतगिद्ध

सिरहोत छत्त। डमरूकडक्क डाहलडमंकि
ढहलाय क्रूर नूपुर ढमकि ॥ ५२ ॥ सजिचलि
असंग भैरव त्रिसूलन फर किय सिचान हियअ
लान फूल। आतापि अोघ ढंकत अकासफैरं
उफलंगत गिरन आस ॥ ५३ ॥ इमचलिय
संगपल चर अनेक कटकट बिराव प्रेतनकि
तेक। लगि अतल बितल सुतलन लचक्क
मुरकत बराह दंतुलिमचक्क ॥ ५४ ॥ ग्रावन
तुरतालन झरत अग्गि जिहिं रव समाधि भ्र-
मकेस जग्गि। अकबकत सेतुसागर उमंगि
भुल्लत दिसान नरमद कि भग्गि ॥ ५५ ॥ लरर
किभुम्मि छेकत तुरवार दरर कि देत पब्बय
दरार। ललन किराद ककटकरीन छलन किहो
लजालन दनछीन ॥ ५६ ॥ उडिजात उपल
जनन भनत गडिजात तिमिर छनन दिगत।

इभराजअंदुअैंचतअभंगरअू किरखेत्र
फलमपनरंग ॥ ५७ ॥ बहिचलियधातुअ-
द्रिलअनेकसलसलियपंथगजदानसेक।
इमहलियसेनदक्खिनअनंत दिल्लीसमुलक
दब्बतदुरंत ॥ ५८ ॥ सुनिसाहसेनसज्जिय
सिताबबलमुख्यउभयरक्खियनबाब ।
इकरवानकमरदीनिजदजीरबलिसंगनिजा
मनमुलकबीर ॥ ६० ॥ इुवचलियसेनह
रवल्लहंकि घनघोरघंट पक्खरधमंकि । कु
लटाकनीनि बिधितरलवाजिउड्डुतमलंगि
आगामिआजि ॥ ६१ ॥ मनकेरुपवनकेजे
मित्रचलतरसधावमंडत विचित्र। खंधनवि
नम्रचढतखलीनमरवतूलबगजारजिल
हजीन ॥ ६२ ॥ बिरचतनिकम्मनजिरे
... हजातझंपितउसदशारवंध। दलम-

ध्ध्वजनकेपलटन दिखात तिमिमच्छमन
कुंभर्लगिनिरात ॥ ६३ ॥ भुवकौंतिप्रबलनव-
रच्छन भरंत कालिनिगरलग्गलजानि कंत। सा
दिन सुखसाधिल सहजसध्य फिरिजात छत्र
की छाँहमध्य ॥ ६४ ॥ असवारचहतजिहिं
रूपरुच्छनाछिकदिखातसु हिरूपनव्य। रन
अजिरलज्जजिनकेरकाव हरखात चढाकन
मनहिराव ॥ ६५ ॥ इमचलिय अश्वथेइन
थरक्कहुं किय अनेकहत्थिनहलक्क। चंच
ललितिपच्छिनकरतचोट जिनअग्गअंबु
दकलतअगोट ॥ ६६ ॥ अतिबीतपायरो
पल अडोललगिवकुरिडाकवढिजातलो
ल। जंजीरलंबखैंचतसजोरसिरच्छलमों
रसुंजारसोर ॥ ६७ ॥ आधोरनरकवलबकु
विसासिहिंकलालयापि उद्धतकुलासि। इम

हलियसाह पृतना अभंग दक्खिन दल सम्मु
हरचनदंग ।। ६८ ।। सुनि इनहिं आत दक्खि-
नदलेस द्रुत बढिय बिगार तसाह देस । खटमा
स बद्ध आवत बिताय चक्क सु अब दिल्लिय सि
र च्चलाय ।। ६९ ।। ग्वालेर लुट्टि बक्कु अरि नगं
जि अब चलिय अग्गारस बीर रंजि । मग चुक्कि
अग्गाकल्लिगच्छ मिच्छ इन आनि लई दिल्लि-
य खच्छ ।। ७० ।। सक बेद अंक सत्रह १७९४
सुभास अष्ट मिबलच्छ मधुमास आय । दि
ल्ली पुर बाहिर पृथुल दोर अति रुचिर शिल्प
[illegible] ओर ओर ।। ७१ ।। थित इक्क कालिका
देविया न मेला तहें तद्दिन हो महान । बहिर-
हियतत्थलक्खलबनिज्ज जिन्ह लखत होत
धनदहिं अचिज्ज ।। ७२ ।। दक्खिन दल आ
य खगान खंडि मेला वहलुट्टिय जुल ममंडि

कढिकढि तब बिब्भल बनिज कार तजि द्र-
व्य जियकालिंदिपार ॥ ७३ ॥ कोदिन ध-
नादि ल्लियकहर कुप्पि लुट्टियमर हट्ठनका-
ति लुप्पि । बकुजलज हीर मानिक बिथारि
अति मुक्त लाल मरकत अपार ॥ ७४ ॥ इत
मकुर छन रुप्पय अनंत भूखन जराय कुंडल
कुलंत । कोटीर तिलक आपीड केक अरु ता
डंक नूपुर अनेक ॥ ७५ ॥ सिरपेच हारके
यूरस च्छ ऊर्मिक अवाप कटि सूत्र अच्छ ।
अकुमारि हट्ठ लुट्टिय बिजाज सन सूत्र मय रु
रोंक बसन साज ॥ ७६ ॥ कौसेय पग्घ साटिन क
लापनी सार नव्य थुरमों अमाप । अत्तार बि
पनि लुट्टिय अनेक कर टीरु बीति पुनि भक्ष्य
केक ॥ ७७ ॥ हार बकुव दिल्लिय हल हलं द
लक दिय तत्थ पुरतैं दुरंत । इतर चत कूदड

जहँजुग्गिनिकेलिरास ॥ ८३ ॥ जितति
ताहिमत्थउड़िपरतजत्थतुंबाकितरलअ-
वधूतहत्थ । नहिगगनटोपचमकहिंअने
कलुट्टिजायरजाततननंकितेक ॥ ८४ ॥ सत्थ
गिरतभिन्नबाकुलसमेतअहिपंचफनकिंकुं
कुकरुपेत । जिरहनलिच्चकदिद्दृगफदकिजा
हिंसानकुँअरबदासनजालिमाँहिं ॥ ८५ ॥
कटिकटिगिरंतकहुँमुच्छकंदरंगेम्रुगनाभि
किलोजिवृंद ॥ नारोदफट्टिककुँकद्धलगत
सोन्यातरुलैंजिमगर्भपत्त ॥ ८६ ॥ कंकटछि
दारिप्रविसतकटारखिलबीचपन्नगाकिमक्क
नार । खंजरकढ़िपंजरपारजातसोनितसन्धी
सुन्यतिकविसुहात ॥ ८७ ॥ मालकुंगवाक्ष
रजदिनदिरवानकरपट्टुक्रियाकिजावकछु-
हान । दिपिगुरजमत्थफारतदरारबौरकिंत

रवूजनमुद्दिमार ॥ ८८ ॥ चलअसिनहोत
गजकुंभचीरजगदीसभन्तजुत्तकिकरीर। स्रो
नितितिरातधमनिनसमूहजलअरुनजालि
अलगर्दजूह ॥ ८९ ॥ सरघासमछुट्टलबि
सिखब्रातमधुजालछुत्तमत्थनबनात। खि
चिजातसरासनकरनकानिजमराजनपन
जलुहालजानि ॥ ९० ॥ लिलिजातफोटिल
त्तकमचक्कि सुकुमारनारि लंपकिलनचक्कि
। तुसीरतुट्टि उड्डतप्रमापक्किकीनकेकिचं
द्रकलाप ॥ ९१ ॥ संघलसधनुलिच्चको
सुहातदड्डाकिकालआननदिखात। रवग
करतफूलधारनखलनकिलुटिपरतचापचिलन
नलनंकि ॥ ९२ ॥ ढालनपरपथ्यकटिट्ठहरिज
तकच्छपपरमंदरसमसुहाल। छलिजालक
रिघायनघचकिछुटिजालपानकहुंला

हल्लाहि ॥ ९३ ॥ जिनबदनइक्कनारिन उक्किहक्कंकुत मृणालतिन उदितइह ॥ मनिकलकअंचलिंदकअमान तेस्सरधूरिसज्जासयान ॥ ९४ ॥ बहुबीरबैठिअच्छरिबिमान तांडवउपेलसुनिगानतान। चितमुदितआरिगलबाँहचाहिस्वकबंधललरतपिक्खत सिराहि ॥ ९५ ॥ हियतिरतअंत्रजुतनिक्कसिहाल मानहुँसनालनलोहितमृनाल ।उरगिद्धपाहिलधसलआयबैठेगृहीकिबलभीलनाय ॥ ९६ ॥ भटगिरतपायअटकतरकाबघुम्मतघनेकिउक्कलसराव ।तुटिजाततंगअजरतपलानकटिपरतबाजिगलओछवान ॥ ९७ ॥ कढिजातकुंतपक्खरबिदारिबहिजालरुहिरजिमजंत्रवारि ।कटिकाँसिनकेतुउक्कलअकासमानहुँमयूरगन

भट्टमास ॥ ९८ ॥ इमपरतरवग्गनक्कुमत्तनऋं
गभ्रमतकिपटीरतरुपरभुजंग । झुममचिय
घोरआहवअनूपबक्कुकटिदक्खिनभटकुव
बिरूप ॥ ९९ ॥ उडिचलियअग्गिजढिओ
रओरजमुनाजलसुक्कियतापजोर । सकुलि
यमच्छरवलभलिसुमारपन्नगकिआहितु
डिकटिपार ॥ १०० ॥ यहँभयउदैलदिल्ली
सओरघनकटियजंगमरहट्ठघोर । लूटकु
समस्तलिन्नीछुरायदक्खिनबिहार । कअ
बलदाय ॥ १०१ ॥ श्रियमंतभीतगतिभी
बिसरिभज्योसुक्योनबंभनभिखारि । झहि
भजतभज्योदक्खिनअनीकघनबिक
हाकहियेघनीक ॥ १०२ ॥ मूररवनभिक्खुसो
ध्योनमत्थबनिकांदिसीकभरिजियन
त्य । उद्द्रावतावबिब्भलअनेकरनुचिभरिय

यअभ्यासवमत्त। अट्टाहट्टकतिकनकरिय अपानरक्खियतत्त॥ २ ॥खानकलीजन-बाबयहयथायाबनीजीम। जिहिँअग्गैंग जसिंहजुलमरवेदलावरभीम ॥ ३ ॥जिहिं अक्खियसहबुद्धिजोरहिहैसाहतिहार।बे गहिंबंदरनक्खिहैपुरदिल्लियप्राकार ॥ ४ ॥ यहसुनिसाहसिराहिकछुपच्छोपारियरोस ।पैथप्पिनक्किगरयोसमयमोनलखैंअपसोस ॥ ५ ॥मोजदीनसोंइक्कसेभयेपंचदिल्लीस ।फलकापिसायनमुदितहियइच्छतरतही स ॥ ६ ॥मनोहरम् ॥ गानमैंगडजेबात कालमैंबड्डेअवारनीकलइक्कायेतेउमंडन छनैलगे।रैय्यतकीरमनिरजोलीजौनिंहारें लोखिलनकुलावरव्यातहैडैयारवनैलगे। कवितकुरानकीबिसारिबैठेबालिसभने

जोरीतिकीतोचुपमूढभारवनैंलगेदिल्लीके
घरानेंउलटीकरिइलाहसोंबबुलिकेठिकानैं
पंडपायुराखनैंलगे॥ ७ ॥ दोहा ॥ जुमांम-
हज्जतजातननसुरामत्तसठसाह। रहैंअखि-
लदिनरत्तिकीलहैंसुरतरसलाह ॥ ८ ॥ इक
दिनकाजिय्यदियअरजउचितमहज्जतआ
न। कोउविधिवैठीमुचितजत्थविचारियजा
न ॥ ९ ॥ षट्पदी ॥ तद्दिनरचिआपानअ-
धिकआसवबनिउद्धतसंगहिलैसंडगनअरु
सबपत्तमहज्जत। विरचिविरचिंगलवाँह
साहउत्तरबाहेंनमेसब। यहकोरीतिअपुब्ब
तरकिजंपियकाजीतब। सुनिहासिलरहअ
किवयसबनरेननाहिंदजानतरुचितसासह-
जननआसिकमिलनआदिरीतिसुनियत
उचित॥ १० ॥ दोहा ॥ काजीतबहिकुरान

पटकि जोर कछु साह पर । सेनापति तुम सोय हम
वजीर अवइ कछुव ॥ १८ ॥ षट्पदी ॥ हम तुम
सम्मलि हनहिं खानदोरों कपटी खल । लब सेनाप-
ति तुमहिं साह करिहै गिनि सबल । सुसुनि सआ
दतखान सेन सज्जित पूर बसन ॥ लगि सेनाप-
ति लोभ आय दिलिय चहि अप्पन । अठ स
त ८०० तोप जिहिं बसि अतुल दगत बेर को
सन दहत । लहि राहहे तुला कें हरे दल ककहर
भाड भुंजा कहत ॥ १९ ॥ दोहा ॥ आयस-
हाद लरवान वह मिलि कलीजा सह मोद । इक
बजीर रु अप्प है किर च्यो कपट विनोद ॥ २० ॥
षट्पदी ॥ नादर साह सुनाम तपत ईरान जा
नइत प्रबल सबाहिं प्रत्यंत जाहि अत जित
हीतित । गाजुदीज कें कलीज भाडभुंजा जुत
भाये ॥ बुल्लन नादर साह पत्र ईरान पठाये । आ

न ॥ २६ ॥ आगास हसन यूसफ अली हु दरि-
यावखान पुनि मोजदीहु ॥ २६ ॥ याकुब अ-
लीरु अम्मन इमाम नौंसेर असद पुनि नूर ना-
म । इत्यादि साह भट बर अक्ख सहस त्रिय कि
नइ कृतसमस्त ॥ २७ ॥ सब भटन साह नाद-
र सुभाय दिय तब कलीज कमगर दिखाय । कहि
अबन जोर मुगुलन निकेत दि त्रिय कटाक्ष म-
म अोर देत ॥ २८ ॥ अवरंगजेब मिरजा मरेत
ध्धर हिंदु धवन धार कृत अंत । सचिवन नबाब भ
ट सानुकूल मिटि गयउ रसूलमजहब समूल
॥ २९ ॥ गायक हन्यौं हि आलम अजान पुनि
मोजदीन अतिमद्यपान । मिलि बहुरि हिंदु
सय्यद बिमंद फ़रुख़ हिमाकोंपासिफंद ॥
३० ॥ मुगलेस दोय पुनि सालमज्झ जाहलनु
हने जे इन अबद्ध । सय्यद अभीनपुनितपन

याबनी भाषा ॥ मस्तदिलाँ अज्जा मैं शराबे दिल्ली अफुल दू बसू ने रुबाकः सुहबत बदाब दाना दिलान ताजीमत ह मुलमुकू बिलाँन ॥ ३७ ॥ गहदरनगुजारद शहरबाब प्रेताँ नशीनदू रहसबाब । अफ बाजिदाबन आ-सद बजोन कुजराय कला गर दीद कोर ॥ ३८ ॥ किश्शुल्क कसाँरापास जाँनमर दसू बज मानंदर अमाँन । इनू साफ अदलर कृतह ब-ज्योर अजू ख्वासु आस आमदू बशोर ॥ ३९ प्रायों देशी प्राकृत मिश्रित भाषा ॥ राजा नि-माज कलमाँनर नमहरीन संगजाडरत नम न्त रेवारुअदक बिचपृथुलराजरचनय-बिहीन बिगरत समाज ॥ ४० ॥ मालवलि-यक किवनदलन आय दिल्ली लग लुट्टि वु सहदाय । बिनु चेत मुगल बासर बिराय-

अकबरसमरआयोसुमरनअत्थहिअधा
म ।पुनिबारिवअत्थकछुरोगपाइदिल्लीहन
लोदेलेमिलाय ॥ ४७ ॥ यौंमुगलयाहिघरक
सुत्तामदिल्लीपुरकिन्नमहिसकतथाम ।तोअ-
बजीमअप्पनसाहारिबंधहिंप्रपञ्चआयस
बिचारि ॥ ४८ ॥ गोगनसकैंनजोग्वालरक्खि
अवरहिंलवअप्पतरसोंमिसआक्खि । करिबग-
नसिकादिकओबरैंनतोभूखिन्यापदुनउचित
दैंन ॥ ४९ ॥ जोरक्खिसक्कहिंतुमहुकमजोरि
अहैंतोदिल्लियदैबहोरि । तामाचकुलीयह
कहियतत्थसुनिसजियसाहनादरसमत्थ
॥ ५० ॥ इतिश्रीवंशभास्करे दक्षिणायनेन
वमराशौबुधसिंहचरित्रे द्विचत्वारिंशो ४२
मयूखः ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥
॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५

जीनसजाया।बैंडेहस्थिनझुंडकेधुजदंड
झुकाया नादरसाह उछाहकैंसहसेन चला-
या ॥ १३ ॥ सत्यलोकलगऔरुयेंपाताल
पचायाफह्हारीढकसेसकाफनमाल फिरा-
या। हल्लीजुगिनिसंगहीथेईश्वरकायाफाल
फलंगीडाकिनीकरतालबजाया ॥ १४ ॥ का
बलसीमाह्रैकेंद्रकअटकनिरायाह्लाक
परीहिंदवानमैंसबसोकछायाया। लंघिअटक
पंजाबकाथाँनाँघनघायासूबानायकसाह
कासबफोरिमिलाया ॥ १५ ॥ आनचला
याअप्पनाँमुगलानमिटायासूरइरानी संचरे
मगरूरमचाया।यौंनादरअतिबेगसौं दिल्ली
सिरआयापानीपथकिरनालपैंझंडालझुका
या ॥ १६ ॥ दोहा ॥ सोरमचिगदिल्लीसहर
जोरइरानिनजानि। साहमुहम्मदअबसुनी

सबसज्जकरीप्रतिहारनकीबनहाकपरी। बल
पायनिसानन घायबजेलखिजेघनभद्दवनद्द
लज्जे॥ २७ ॥खुरसानन फूलकृपानखिरेचमका
तचिलंगीलबाढखिरे।झननंकिकुलासनधारझ
रीघुनन किलजीगजघंटघरी॥ २८ ॥परदैत
पटैत घने उमहेकमनैतकटैतनजातकहे। घ
कुलाजियलाजियसज्जबनैजबजानमनोंपब
मानजने॥ २९ ॥नाकचच्छदकन्नमनोंकाले
कालकपयालललखैंभुजगावलिका।सहनाइसु
रोजिन मोथसदापयलोलमनोंगनिकाप्रमदा
॥ ३० ॥कलिजित्तनकंधरलंककसैंकुलटाकि
कियापटुलंककसैं।हरिजातउडातकरीटक
रीसकरीझिसिखानबनैंचकरी॥ ३१ ॥बिछुरे
राजमाहनलीजितजेजबकेबलराहनकीजित
जे। परखेजरजीनसजेसबरेनकिमंडतचेल

केमरवरे ॥ ३२ ॥ धरिधोरितवल्गितधावधपैं
मनकीगतिजेछिनमाँहिंमपैं। छलिगातचला
नुनातछिलीकिलकोटछली बिचबक्तकिती॥
३३॥ भटकेमनभायफिरैंलटके थटकेनिपजेकि
चलानटके। कुलसैंकरि बिज्जुलिकीहसनारुअमैं
नजुतकिन्यकीरसना॥ ३४ ॥ खुरराजतराज
तपत्तखरे जिनपक्कमहायसनालजरे। लगि-
यौंखुरसौंखुरतालनसैंगहिकैंस्वरभानुकिचं
दग्रसैं॥ ३५ ॥ चलबोधितरुच्छदसेचमकैं झ-
पटातकनीनियज्यौंझमकैं। असवारचहैंसुकरैं
अनुठीमलपैंबनिफालगुलालमुठी॥ ३६॥
परिसंगकुरंगनजेपकरैं छितिचोकरमैंपलटा
छकरैं। बपुजोरउझक्कतप्रोथबजैंसफरीपल
टानउडानसजैं॥ ३७॥ रसलेहरवलीनअथौं
नहैंगतिमैंभरिबल्गनभुम्मिगहैं। करिझंपब-

॥४३॥बद्दरखावनरावनआनबनैंजलऐंच्च नकाजअग्गस्तिजनैं।मरवल्लनकलापकअं- धकसेलगिगत्तबरत्तननहुलस॥ ४४॥ज्ल जगियहोदनसज्जभयबलमच्चरपेनहिपैपठ ये।कटसुंडिकलापकरग्गरच्छेबद्धच्छित्रच्छित रनकेबिरचे॥ ४५ ॥बकूच्छिनिदतउच्च पनेभजजूलरुपेजमद्दूलमनें।बलकेसिरत जमहालतजेसलिसाहूलमोगनसामलजे॥

मदछादनछुम्मतपैंडमतेबलबाढहि माचलसौंबदते।हनमानबडेतरुतोरतजेम- ननेरबिकेतुमरोरतजे॥४७॥कनकाचल लडूलगोटगिनैंरबिच्चदमलोदनगोटगिलैं किलकारततारनपैंकररेचलसुंडिचलातघले चरे॥४८॥कटपैंकरुबिंदप्रकासकरैंसनि भोममेरजजुलग्गिगरे ... हरितालसु

ढालकस्योगुरुजानिबिधुंतुदपासिपस्यो ॥ ४९ ॥ चरखीनचिकैंनचलाहटपैंउडिजात अचानकआहटपैं । कतिबीरनकुंतलगैंक टसोंबलिनिढ्ढिबढ्ढोरतउब्बटसों ॥ ५० ॥ ज-नकोंनियरायरचैंजबरीबढ्ढिखैंचतबग्घन कीखबरी ॥ अनलगरपायधरैंजितनैंजमकी हुकारजुबढ्ढबनैं ॥ ५१ ॥ सिरपैंमनिहाटक जातसिरीभरमाचलसोंभलतीकिसिरी । इमइ कइजारबडेहमजे निकसेसजिबढ्ढलकेनि भजे ॥ ५२ ॥ तुरकानतयारभयोरनपैंफरके भुजदंडफनीफनपैं । खगउद्धतसय्यदसेरख खिलेभिरजामुगलानपठानमिले ॥ ५३ ॥ भुजदंडकमाननकेकधरैंसलुलायपरवालन बेधकरैं । बहुबीरबंदकनदावरचैंक सिलजु रैंस्यशुनाहिबचैं ॥ रिकेक आगन

जान्हविब्रह्मंडकटाहकतैं बरखाकिउदीचि
बलाहकतैं। रचनाकिगुनत्रयतैंबिकसी छल
नाइमदिल्लियतैंनिकसी॥ ६६ ॥ कुवहाक
नकीजहजारनकीहलकारबढीप्रतिहारन
की। मगडोरिनमप्पतफौजचलीउरमीजि-
मसागरतैंउफली॥ ६७ ॥ उमडातडुमात
बलीबलकों भ्रमकातधुजातरसातलकों।
इकअकबहिंनादरकोंगहिहैं इकअकन-
हिंदूरनमेंरहिहैं॥ ६८ ॥ इकअकबहिंनि-
ज्जिइरानलई इकअकबहिंमंत्रिनसाहमई
। इकअकबहिंखानकलीजफट्यो रुवजीर
सहादनपैपलट्यो॥ ६९ ॥ इकअकबहिं
अप्पनसेनपतीसबजित्तहिंतोरिइरानत-
ती। इकअकबहिंजित्तहिंनादरहीप्रति दि-
ल्लियबुद्धिप्रमादरही॥ ७० ॥ इसछंदनत्थ्यो

दल दिल्लियको हठ जानि हरामिनके हियको । कम्मिआरगसत्त मुकाम करे पथ पानियसों ब-
समीप परे ॥ ७१ ॥ खट कोस इरान अनीक रह्यो क्रमलथ्थ चमूप मुकाम कह्यो । असवार
हजार असी ८०००० उतरे अरु बीस २०००० कबीनन सज्ज अरे ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ दिल्लि-
यपति अब उत्तरिय परिय अनीक प्रपात । रहसि खान दोरांर हिय बदन इरानिन बात
॥ ७३ ॥ दल ईस खानदोरां लिखि पत्र पठा- या ईरान ईस अग्गैं पुनरसीस सुनाया । तुमतो-
रके तरारे चलुरग चलाया लाहोर आदि सूबा करफैल फटाया ॥ ७४ ॥ पंजाब पेस थांनों नि-
ज आनन भाया हिंदू सबै हराली सीनें सुलगाया । दिल दोर और औरैं कर जोर लगाया गैनि-
इस्पहान बुद्धी पर लोभ लुभाया ॥ ७५ ॥ और-

तअनूप दिल्ली लिखि दाव चलाया जानीय-
हैनको ऊबर तास बनाया। सैतानके सिखाये
मगरूर मचाया दिल्लीस सोंनसंको दिल मस्त दि
खाया ॥ ७६ ॥ सुलतानकी जमी पैसमसेर स
जाया कसजीरकी फतैकै मुलतान लुटाया।
दरियाव कों दगासों लहि नाव लंघाया पाया
पुकार सो पै सुलतान पचाया ॥ ७७ ॥ चाहो-
सुलाह जो तो कारिजा कुपयानों जो जगकी ज-
रूरी तो देर न जानों। दिल्लीसकी गुलामी प्रति
रोज प्रमानों सुलतान दर जमानैं बरनाय बभा-
नौं ॥ ७८ ॥ इम पत्र खान दोरां पठये तिपठाये
ईरान साह मंत्री उमराव बुलाये। एकांत लै इ-
जोंके अहवाल सुनाये भेजे ति खानदोरां दत्त
खोति दिखाये ॥ ७९ ॥ ईरान साह अकवी
माताच कुलीसों तैंही वजीर आनें अफगाजि

खुलीसों। रातोनंहीं निहारेततबीरडुली
सों आलाबजोर आयेसमसेंतुलीसों॥ ८०॥
हिंदूनरावआयासबसोरडरानैंतोहूबला-
ख १००००० ताजीपरबैरेतपलानैं। हत्थी
हजारमत्ते घनरूप घुमानैंलक्खौं सवार अ-
च्छेबरकूलखुमानैं॥ ८१॥ तोपैंहजार दोयैं
नीसानफिरानैंछोहैंलगेछलौनोंमद धीर भि-
रानैं। लक्खौंपयाद जंगी समसेर सजानैंखुद
मोजारबान दोरांबर फोजरबजानैं॥ ८२॥ राती
रूमीजरबाकानाहकफोरनहैगाफिलजरा
तादिल्लीजरजोरजेवहै। सबहीसुलाहमंडै
करलौंकिजंगनांउनतोयहैकहांईहमकोंदि
रमलौं॥ ८३॥ ईरानसाह अकबी सबकोंसुना
यकैं उमरावलीरखोलेमनामंत्र लायकैं। निसुर-
तअलीकहाजीकाजीकरीअमेगाजीहुसेन

रुस्तुमरोसनरहीमसे ॥ ८४ ॥ बुल्लेकलीजखाँ
पैंअह्नवालपठावैंपाजीसुक्यों बुलायेवरजो
र सुनावैं । जाहिलदगाजनायोनांकिस्न
नाकहैंहमह्रहरामतोपैंकातिलकजाकहैं
॥ ८५ ॥ ईरानसाहरोसैंलिखिपत्रपठाया
आयाकलीजखांपैंइनमंत्रउपाया । जुरि-
मेलखांकमर्दी दिल्ली वजीरजोदूजोसुभट
भुंजाजालमूसरीरजो ॥ ८६ ॥ मिलितीन
मंत्रकीनोंअपनीजमीनहैंअरुसाहपैमुड्ड
म्मदअपनेंअधीनहै । इनसोंनरखानदोरां
दुसमनमरायकैंकछुदंडदैरुपैयेदैंहैंपठा-
यकैं ॥ ८७ ॥ इमसंत्रमंडिपच्छोतंहूंपत्रपठा
योडरियेहजूरनांहींहमकामनबनायो । सज
रांवरेरजूहैंतुमसोंनरारिहैंइकनांजखानदो-
रांपर्दाहिमारिहैं ॥ ८८ ॥ तुमजामकोकहा-

वो न कबूल मामलै तब सज्जुरखानदोरां औ-
हैं तमाम लै। हमरावरे भटोंसैं मिलि
रिहैं ईरानकी दुहाई बजमों विथारि हैं।। ८९
।। सुनि एह साह नादर बरजोर कहाई पदांहि-
खानदोरां तुमसों बलराई। सुनि एह खानदो
रां सब सेन सजाई दुकुं ओर होत अैसें वह र-
त्ति बिताई।। ९०।। अब प्रातकाल आयाक्क
रबाकु कुकानें अरबिंद तैं उडे के अलिरत्ति
रुकानें। परदार कोरि छातीन रजार पलाया
गिरिराज की गुफामैं तम तोम चलाया।। ९१।।
दर घंट देहरों मैं बर नाद बजाया चहिं भोग च
क्र चक्की सुख मेल सजाया। तारेन मंद तेजी-
द बिंब बदुराया मंथान ग्वाल गेहों घन घोर घु
राया।। ९२।। तजि पंथ चोर तक्के छिपनों दरी
नमैं गहि मोन घूक बैठे तरुकोटरी नमैं। उदया

द्रिपैं अनूठीइकरोचिलखाईचलचाटकेर
चौंकेचहकानिमचाई ॥ ९३ ॥ दोहा ॥ सेन
खानदोरांसजियस्वामिधरमधरिसीस । अ-
नयसहादतमंडिइतरच्चिगसाहपरीस ॥
९४ ॥ षट्पदी ॥ कहियसहादतकजलबा-
सलैभवममलुट्टतदेहुसाहआदेसनरलनाह-
कसिरतुट्टततबलयअक्खियसाहपृथकलर
नौंनउचितअब ॥ इक्कहोयअंकुरहिंसज-
हिंतुमहमकलीजसब कहितदपिभाडभुंज
ककुटिलसबकातरदिल्लीसदलपिक्ख्यौंन
जातहमतैंप्रबलबिरचतलूटइरानबल ॥ ९५
॥ यहसुनिअक्खियसाह पृथकलरिमरहु
सहादतअधमसुनतद्रुतउट्ठिभाडभुंजककु
तिउद्धतचढिनिजदललैचलियखानदोरां
प्रतियोंकहि । दीजेहमहिंसहायचहमूंअधिरा

संधाकि सलक्कैं । आवाज तोप उड्डैं जिम संख-
सानुसौं ज्वालाकराल जगैं बढि चंद्रभानुसौं
॥ १०५ ॥ आकास तूटि कैं डेउडि जात ओरसे
समसेर मेहन ज्यौं नभमत्त मोरसे । कट कूट का-
टि डारैं गोले अराति की मानों पिच्छानि पारैं ग-
जभद्र जाति की ॥ १०६ ॥ हुसियार खान दो-
रौं समसेर चलाई फुम्मी सुरंग पिक्खी लगिर
चलाई ॥ फूटैं कपाल भेजे तरवारि तरक्कैं के-
कुंल के फटें मैं गात सालगरक्कैं ॥ १०७ ॥ केते तु
खार कढ्ढैं असवार उलट्टैं कढ्ढैं कटार भूरे बड्डि य
कालिकच्छैं । नागेद्र खान फुट्टैं भरकातर नढ्ढै
टंकार चापल ज्यौं चिल्ला सुचट्टैं ॥ १०८ ॥ घ-
यल अचेत घुम्मैं लक्के कराब सौं मानो गगनारम
तो सरस सराबसौं । कांटे किप्फूरे कलेजे कौं परि फों
कफुराव्वैं हैं सारस मों हिकेरह जिम अंबु क्नावैं

॥ १०९ ॥ सुंडाकरीनकट्टैंजिमपन्नगकारे सं
भ्रमयानबढ़ैंभदमिन्ननगारे। आकास आमि
परेसुरलोकउजारेमहरादिलोकवारे जनलो
कसिधारे ॥ ११० ॥ बिनुचेतबीरबकैंबकुदं
तबजावैंघोरेअनेकघुमैंसुरपकगाहलावैं।
धारालबालबढ़ैंअतिबीरबकारैंसमसेरकोसि
राहैंसुरवमारउचारैं ॥ १११ ॥ पंचासलोय ५२
मैंलिलकारलगादैंलै लैललामलोहिचउस
ट्ठि ६४ चढावैं। केसीसईसलैकैंगलमेदसिर
वैंकेअच्छरीअनूठीबरमालगिरावैं ॥ ११२ ॥
षट्पदी ॥ तीनपहरतरवारिखानदौराँबरब-
ज्जियअनियमोरिईरानसबलदिल्लियजय
सज्जिय। रविअत्थतरनरुक्किय...
अड्डरह॥ खेतसहादतखानलखन हेरियअ
कुबारहपाप्पियकहोंनपायोतदपिदेख्योसब

जायछिरलखो ॥ १२२ ॥ मांगोंसुदेरुपैयेभांति
मोनकरावोकीनी तुम्हैंजुमोसों क्यौंसोवक-
हावो। सोंअकिवरखानदोरांबपुसद्यबिहा-
योसुनिसाहपैमुकुम्मद अतिसोकअघायो
॥ १२३ ॥ अबरवांकलीजकोंहींसेनापति
कीनोपैअत्थभाइभुजककेअत्थनदीनों
इलकोंकुसाहनादरअकुलायविचारीउ-
मरावइक्कूकिल्लीमसेनदुखारी॥ १२४॥
तबहींकलीजखांपौलोरिबपत्रपठायालेदं
डकेरुपैयेयहमगोनउपाया।सुनिसोकली
जखांकूअतिमोदबढायारकातसाहअ-
मौंअबपंचबनाया॥ १२५ ॥दोहा॥क-
हैंकलीजरुकमरदीसाहअग्गकरजोरि।
सेनापतिजास्योसमुझिदेकुललनअबछोरि
॥ १२६ ॥ इक्ककोटिदमदम्मलैनादरपच्छो

लजोबुंदीसभोज कियबाकुल॥१६४॥सो
हीराकुक्किन्निलियनादरतरवलदम्मनवकोटि
९०००००००० मुद्रबर।आयुधअतुलबसन
भूषनप्रियअच्छेसबइत्यादि छिन्नि लिय॥
१६५॥रहिदुमासदिल्लियइमनादरकरिगय
कुच्छसेनसहसादर।अबइलखानसहादतजा
नीमेंहरामयहसाहपिछानी॥१६६।जिय
तनहिंछोरहिंजरतइथयहबिचारिबिसरद
यनखोसद।साहसुकुम्मदलेजनसाबोलगि
कुमग्गासबबिभवलुटाये॥१६७॥दिल्लिय
निबलसबनअबजानियपुनिमरहट्टनहल्ल
प्रमानिय।इतबुधसिंहदेहअबछोरखोबुं
दियराजउदधिबिचबोरयो॥१६८॥दोहा
॥पुरबेधअसनकोसत्रय२नामआयपुरग्राम
।तत्थदेहसंभरतजियनिजबिथारिउदना-

म॥ १६९ ॥ संबतरवटनवसत्तइक१७९६, अमा३० रुमाधवमास। इमसुबुद्ध अनिरुद्ध सुवकियपरलोकनिवास॥ १७०॥ मेलकरम सब बिधिसाधियमोनभूमिगजदान। बसुभा- बिनुकिहिं घरबनै बैदिकमृतकबिधान ॥ १७१॥ रम्यमहल १ सर २ बाग ३ रचिकरन नामबयकाल। सेवनआलमसाहको भवितो बुद्धनृपाल॥ १७२॥ कछवाहीरानीकियउ पुरबिरचनआरंभ। जयनिवासअभिधानक- रिथप्पनभुवजसथंभ॥ १७३॥ बिंदुअमृ- तमंदिरबिरचिपुरताकेचहुंपास। रानीरघ- बिचारिकियजैपुरउपमितिजास॥ १७४॥ हैगनेसघंटीबिहितताकेबाहिरतथ्य। दिस उत्तरकेदारलैं लग्योबसनअतिअत्थ॥ १७५॥ बिचबलरतहँबनिसओपकुपक्कआलय॥

ह। बिनुबुंदियरुकिबोबद्धरिलुगनभोनभ-
लीह ॥ १७६॥ निलयजोधरहिनृपअनुज
न्यायविस्तरिवसुबार। पुरतैंपच्छिमकोसपर
कामनरन्योकासार ॥ १७७ ॥ नामजोधसा-
गरसरसनिवसथ्थरचितनवीन। बागमहलस
सेतुबिचप्रभुमंदिरछिपीन॥ १७८॥भूप-
तिभावरगंगभो जिहिंपुरपूरबजत्थ। बिरचे
उपवनबापिकाअधिहजारनअत्थ॥ १७९
॥ कोलवालनृपकोकथितरामचंदअभिधान।
बिरचैबापीबागजिहिंपुरबिचपच्छिमथान
॥१८०॥ गजमुखभूपपुरोहितकृपपच्छिमदि
सपुरपास। दधिमतिदेवीकोसदनबिरच्यो
बिमलबिलास॥१८१॥ तत्थहिवेदरूपा
पिकाश्रीबिययजिहिंकीव। पुरकेदबिरवन
स्रातपुनिजंचेमहलअतीव॥१८२॥नृपदा

बकुदलबलवत। हैहाजरिभटलक्खकटारे पैहोमिलिनभलोफलप्यारे॥१३८॥काहू कीनसाहस्तुतिकीनी चल्योमिलनसेनहुकर हिंलीनी।संगसुलेयपंचसत ५०० सादीपानी पयइलगयउप्रमादी॥१३९॥पावकोसलग नादरपुलकुगयसम्मुहबेसररथजुत्तह॥ इमईरानअनीकगयोयहडोढीलगआय उसम्मुहवह॥१४०॥जायसभाबैठेइकच्छा सनभाईकहिकुवदुवसंभासन।तबनादरदि ल्लीसहिंअक्खहिंसचिवकुसचिवमिलेहि तरक्खहिं॥१४१॥तुमवजीरकुल्लीकुय- हंयातैंहमवजीररक्खहिंइतताते।तब दिल्लीसपत्रलिखिनिजकरभुह्योरवीयवजी रपापपर॥१४२॥यहकागरनादरकरअ- प्पियनादरताहिबुलावनअप्पिय।तबपत्री

आयउ होय निरंकुस तोर चलायउ॥१४८॥
साह मुहुम्मद खान सहादत बहुरि वजीर सु रंक
कलीजबत। रच्यारिहि केदी करि आनेँ ईरानी दिल्लिय अबिसानेँ॥१४९॥ अध्य मुरब्ब
महल्लन निवास किय दलमिल्लान नगरै अंतर
देय। तत्थ हि हत निस दोय बिताई पैसेना अ-
सन अकुलाई॥१५०॥ कोउन बनिक हट्ट खोलैं बैठे हरि गेहनन न बोलैं। दलनादर प्र
ति अरज दई तब अत्थ बनिक बेचैं न अन्न अ-
र॥१५१॥ नंहैं किय अरज मह बंदी जन रा-
जा जुगल किसोर प्रीति पन। दलइरान दह स्लि
गन डोलत तयानैं बनिक बजार न खोलत॥१५२
तब नादर पठइ कहि जाहर बसक जाय मसद
पुर बाहिर। त्व आदेस अधीन कढक चढि
हिर पुर के जा लग्यो बढि॥१५३॥ तिहिं